Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगनाश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
167951

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

भग्नाश

देश का दुर्भाग्य है कि यह मानव को पशु बनाने का प्रयास भारत जैसे ज्ञान-प्रधान देश में चल रहा है। इस मानवविहीन पशु निर्माण करने के कार्य को बहुत तेजी से किया जा रहा है। इस निर्माण-कार्य में लीन व्यक्तियों का यह मत है कि मनुष्य को इसके भयंकर परिणामों से अवगत हो इसके विरुद्ध खड़े होने से पूर्व ही यह ढांचा पूरा हो जाना चाहिए। परन्तु क्या यह सम्भव है? यह बात सन्देहात्मक है। मानव को कुछ काल के लिए मूर्ख बनाया जा सकता है, परन्तु सदा के लिए नहीं।

श्री गुरुदत्त

सभी मनुष्यों को सदा के लिए सब कामों में पशुवत् काम पर लगाया नहीं जा सकता। अतः मनुष्य इस ढांचे से बगावत करेगा। इस बगावत में कभी असफल होना भी हो सकता है। इस असफलता की ही 'भग्नाश' एक कहानी है, जिसे गुरुदत्त ने बड़े ही प्रभावशाली शब्दों में उकेरा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

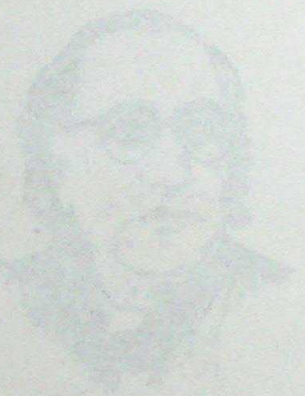

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भग्नाश

गुरुदत्त का एक कालजयी उपन्यास

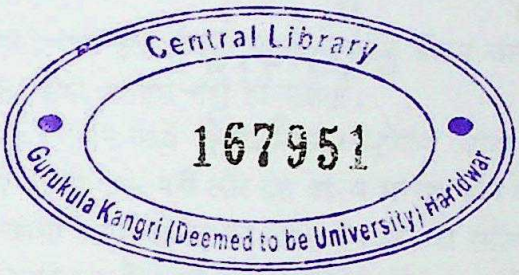

गुरुदत्त

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली-110005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

© ईशान दत्त

R
०२९.९१४३
GUR-B

पुस्तक मूल्य	350 रुपये
प्रकाशक	हिन्दी साहित्य सदन 2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देशबंधु गुप्ता रोड, करोल बाग (पुलिस स्टेशन के समीप) नई दिल्ली–110005
वैबसाईट	www.hindisahityasadan.com
ई–मेल	hindisahityasadan@gmail.com indiabooks@rediffmail.com
दूरभाष	23553624, 23551344, 09213527663
संस्करण	2015
पुस्तक	भग्नाश
लेखक	*गुरुदत्त*
मुद्रक	संस्कृती प्रेस, दिल्ली

BHAGNASH
By GURU DATT

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

भूमिका

आशा उनकी भग्न होती है जो आशा बनाकर जीवन चलाया करते हैं। आशाहीन व्यक्ति कभी भग्नाश नहीं हो सकता।

आशा होती है अपने कार्य का फल पाने की। जहां अपना कोई कार्य ही नहीं, वहां आशा का भी काम नहीं और इस कारण भग्नाश होने का भी अवसर नहीं। फल की आशा स्मरण-शक्ति का विषय है। जिसकी स्मरण-शक्ति अति हीन है और जो अपने एक दिन पूर्व किये प्रयास को भी स्मरण नहीं रख सकता, आशा जैसी मधुर वस्तु का स्वाद उसकी समझ में नहीं आ सकता। और फिर आशा टूटने का उसको दुःख भी नहीं होता।

परन्तु मानव ऐसा प्राणी नहीं है। उसके पास स्मरण-शक्ति के साथ-साथ विचार-शक्ति भी है। अपने प्रत्येक प्रयास पर वह मनन करता है और उसके फल की आशा करता है। इस आशा के बल पर ही वह कार्य की दुस्तरता को पार करता है और अनन्त कठिनाइयों को सहता हुआ भी अपने कर्तव्य में लीन रहता है।

परन्तु समाज का निर्माण हो जाने से मनुष्य के कुछ कर्तव्य उस तक ही सीमित न रहकर समाज के बन गये हैं। उनको करना, उनकी योजना बनाना और उनके फलाफल पर विचार करना समाज के कुछ विशिष्ट व्यक्तियों का काम रह जाता है। व्यक्ति उन विषयों पर विचार करने, उससे आशा करने और सफलता न मिलने पर भग्नाश होने के झमेले से मुक्त हो जाता है।

आरम्भ में तो समाज ने व्यक्ति के दो-तीन कार्य ही अपने हाथ में लिये थे। उदाहरण के रूप में अपराधी को दण्ड देकर समाज में सुव्यवस्था बनाये रखना, शत्रुओं से रक्षा करना और दैवी प्रकोपों के समय सार्वजनिक हितो की रक्षा करना।

समाज का कार्य-संचालन करनेवाले कुछ व्यक्ति विशेष ही होते हैं और उन पर ही कार्य का उत्तरदायित्व होता है। वे कार्य की योजना बनाते है। उस कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का संचालन करते हैं और फिर उसके फलाफल का निरीक्षण करते है। जन-साधारण न तो योजना बनानेवाले होते हैं और न ही उस योजना के संचालन-कर्त्ता। उनकी सफलता अथवा विफलता को देखने वाले तो और भी कम लोग होते हैं।

सामाजिक कार्यों के विषय में जन-साधारण प्रायः उदासीन रहते हैं। वे उन विषयों में जिनको समाज ने अपने हाथ में ले लिया होता है न तो कुछ जानते हैं और न ही जानने की उनकी कभी आवश्यकता पड़ती है। उनको वे करने भी नहीं पड़ते और फिर वे उन कार्यों के परिणामों में भी रुचि व्यक्त नहीं करते।

देश की सैनिक-शक्ति इसका स्पष्ट उदाहरण है। एक युग था जब सेना में प्रविष्ट होना और देश तथा जाति के लिए युद्ध करना कुछ एक जातियों का जन्मजात काम बन गया था। क्षत्रिय, राजपूत इत्यादि ही समाज के इस कार्य के उत्तरदायी बना दिये गये थे। परिणाम यह हुआ कि एक समय ऐसा आया जब देश की रक्षा और अपने धन-सम्पत्ति की रक्षा में भी जन-साधारण की रुचि नहीं रही। यदि सैनिक-वर्ग ने युद्ध करके देश की रक्षा कर दी तो हो गई, अन्यथा यदि प्रमादवश या अयोग्यता के कारण सैनिक-वर्ग देश की स्वतन्त्रता को स्थिर रखने में असफल रहा तो गूंगी अपाहिज प्रजा ने परिवर्तित परिस्थिति को स्वीकार कर लिया। राज्य बदले, राजा बदले। लूट-पाट हुई अथवा बलात्कार और अपहरण हुए और जनता पशुओं की भांति एक स्थान से दूसरे स्थान को हांकी जाती रही।

यह है समाज द्वारा किसी कार्य को अपने अधीन कर उसका जनसाधारण से सम्बन्ध-विच्छेद करने का परिणाम।

सुरक्षा, सुव्यवस्था और दैवी प्रकोपों से बचाने के उपायों, प्रयासों और उनकी सफलता अथवा असफलता से जन-साधारण को असम्बद्ध रखने का परिणाम है जन-साधारण को इन विषयों में, मनुष्य को गिराकर पशु की पदवी पर पहुंचा देना। यह मानवता का विरोधी कार्य है। राजा अथवा राज्य को इन कार्यों में पूर्ण जनता को उत्तरदायी बनाने के लिए उसको इन कामों में सहयोगी और सहचारी बनाना आवश्यक है। मानव में मनुष्यता स्थिर रखना कृत्रिम सुख-साधन से अधिक आवश्यक है।

सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी में यूरोप में भौतिकवाद का प्रभाव बढ़ा और मनुष्य केवल पंचभूतों का पुंजमात्र माना जाने लगा। मन और आत्मा के अस्तित्व से इन्कार होते ही सुख-साधनों का क्षेत्र बदला और शारीरिक सुखों की उपलब्धि के अर्थ मन और आत्मा का बलिदान होने लगा। इससे वर्तमान युग के समाजवाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का शिलान्यास हुआ। समाज किसी देश में व्यवस्था स्थापित करने, शत्रु से रक्षा करने तथा दैवी प्रकोप होने पर जन-साधारण की रक्षा करने के स्थान पर मनुष्य की प्रत्येक गतिविधि पर अपना नियन्त्रण रखनेवाला बन बैठा।

समाज का एक छोटा-सा वर्ग राजा, राष्ट्रपति अथवा फीताशाही कर्मचारी, व्यक्ति के पूर्ण कर्मों पर न केवल देख-रेख ही प्रत्यत उनकी योजना बनानेवाला, उनके संचालन करनेवाला और उनके फलाफल का देखनेवाला बन गया है। शेष जनता केवल भोक्ता रह गई है।

भोग-योनि मानव-योनि नहीं प्रत्युत पशु-योनि है। पशु के लिए पेटपूर्ति, कामतृप्ति और सोने के अतिरिक्त कुछ भी करणीय नहीं। समाजवादी समाज में यही जन-साधारण का कार्य रह जाता है। पशुओं की भांति, ऐसे समाज में व्यक्ति का अपने नेताओं के आदेश-पालन के अतिरिक्त अन्य कुछ करणीय नहीं रह जाता।

भारत में ऐसे समाज की स्थापना का आयोजन हो रहा है। समाजवादी समाज में स्वेच्छा से मिलकर कार्य करने की भावना (willing co-operative mentality) का अभाव हो जाता है और उसके स्थान पर बलपूर्वक अधीनता (forced submission) उत्पन्न हो जाती है। मनुष्य को पालतू पशु की भांति आचरण रखने पर विवश किया जाता है।

मनुष्य और पशु में अन्तर कृत्रिम नहीं होता। यह अन्तर जन्मजात है। सिखाने पर भी एक पशु मनुष्य की भांति स्वेच्छाचारी नहीं बन सकता। कुछ एक बातों में, वह भी कुछ पशुओं को, सिखा-सिखाकर मनुष्य की भांति काम करने पर लगाया जा सकता है। परन्तु यह सबके साथ और सब कामों में नहीं हो सकता।

इसी प्रकार मनुष्य को कुछ काल के लिए कुछ एक बातों में आदेश पर चलाया ज़ा सकता है, परन्तु सब मनुष्यों को सदा के लिए सब कामों में पशुवत् काम पर लगाया नहीं जा सकता। अतः मनुष्य इस ढांचे से बगावत करेगा। इस बगावत में कभी असफल होना भी हो सकता है।

इस असफलता की ही 'भग्नाश' एक कहानी है।

यदि मानव पशु नहीं, यदि मनुष्य-योनि, पशु-योनि अर्थात् भोग-योनि नहीं बल्कि कर्म-योनि भी है, तो यह विद्रोह तब तक जारी रहेगा जब तक मनुष्य को पशु बनाने की योजनाएं चलती रहेंगी। समय-समय पर मनुष्य विद्रोह करते रहेंगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और समाजवादी ढांचे को तोड़फोड़ बेकार करते रहेंगे।

दुर्भाग्य है कि मानव को पशु बनाने का प्रयास भारत जैसे ज्ञान-प्रधान देश में चल रहा है। इस मानवविहीन पशु निर्माण करने के कार्य को बहुत तेजी से किया जा रहा है। इस निर्माण-कार्य में लीन व्यक्तियों का यह मत है कि मनुष्य को इसके भयंकर परिणामों से अवगत हो इसके विरुद्ध खड़े होने से पूर्व ही यह ढांचा पूरा हो जाना चाहिए। परन्तु क्या यह सम्भव है? यह बात सन्देहात्मक है। मानव को कुछ काल के लिए मूर्ख बनाया जा सकता है, परन्तु सदा के लिए नहीं।

यह विषय है 'भग्नाश' उपन्यास का। यह उपन्यास होने से स्थान, व्यक्ति और घटनाओं में कल्पना का क्षेत्र है। यदि कुछ वास्तविक है, तो वह है उपन्यास की विचारधारा और भावना।

गुरुदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

: 1 :

"यह सब आपका ही दोष है। बच्चे पैदा किये और पैदा करके उनको नाली में फेंक दिया है। परिणामस्वरूप दुःख और कष्ट मुझको भोगना पड़ रहा है।"

"सब भगवान की लीला है। मैं कौन हूं भला इसमें श्रेय अथवा अश्रेय लेनेवाला? देखो श्रीमती जी! तुम्हारे माता-पिता ने तुम्हारा नाम निपुणा रखा और मैं तुमको विवाह कर घर लाया। मैंने समझा कि अपने माता-पिता की निपुणा मेरा भी कार्य निपुणता से सम्पन्न करेगी। जो कुछ तुमने किया, मैंने तो उस पर कभी असन्तोष व्यक्त नहीं किया। तुम नित्य मुझसे यह कहती रहती हो कि यह सब मेरा दोष है, भला बताओ तो क्या दोष है मेरा?"

"मेरे विवाह के समय तो आपने देख लिया था कि मैं निपुणा हूं अथवा नहीं, परन्तु लड़की के घरवालों का चयन भला क्या देखकर किया था?"

"यही तो कह रहा हूं कि मैं अपने कार्यों में कभी निपुण नहीं रहा। न ही निपुणता प्राप्त करने के लिए कभी यत्न किया है। मैं तो हरिपरायण रहनेवाला हरिशरणानन्द हूं। इसीलिए कहता हूं कि यह सब भगवान की लीला है।"

"बात टालने में तो आप बहुत ही चतुर हैं। हिन्दू और फिर ब्राह्मण के घर जन्म लेने से मैं भगवान का तिरस्कार तो नहीं कर सकती। वैसे आपके भगवान की लीला देखकर तो यह मन में आता है कि यदि वह निगोड़ा कहीं दिखाई दे तो उसके कान पकड़कर पूछूं कि यह लीला किसलिए कर रहा है?"

"तो अपनी निपुणता का प्रयोग उस पर भी करना चाहती हो? देखो रानी! एक बार यशोदा ने उस नटखट कृष्णगोपाल को कान से पकड़कर सीधा किया था, उसको बांधकर कैद कर दिया था। विवश बेचारे को कहना पड़ा, 'मैं नहीं माखन खायो। मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो।' सो यह परीक्षा तुम भी कर सकती हो। फल मिलेगा।"

"यही तो मुसीबत है! आपसे कोई घर की बात पूछती हूं तो लगते हैं कथा बांचने। देखिये, मैं सुचाला के घर से आ रही हूं, उसका घरवाला कल दो मास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद्र आया था और उसको मार-पीटकर उसकी चूड़ियां भी ले गया है।"

"क्यों ले गया है?"

"कहता है कि किसी के भुगतान करने के लिए रुपये ले जा रहा था कि मार्ग में किसी ने उसकी जेब कतर ली। रुपया देना आवश्यक था। इस कारण लड़की को मार-पीट चूड़ियां उतार कर बेचने के लिए ले गया है।"

"यही तो पूछ रहा हूं कि मार-पीटकर क्यों ले गया है? सुचाला ने देने से न की थी क्या?"

"तो क्या उतारकर दे देती? आज तक एक पैसा तो कमा कर दिया नहीं और जेब कतरी गई तो लेने के लिए आ गया है। वह क्यों और किसलिए देती?"

"अब पिटने के बाद तो दे दी हैं न? पहले ही दे देती तो क्या हर्ज था?"

"बस यही तो बात है। आपका हरेक बात का सोचने का ढंग ही उलटा है।"

"तो सीधा ढंग बताऊं? मानोगी?"

"हां, यदि वास्तव में वह सीधा हुआ तो!"

"अपने विचार से तो पहला ही सीधा था, परन्तु तुम कहती हो कि उलटा है तो अब उलटे से उलटा, अर्थात् तुम्हारे विचार से सीधा, मार्ग बता देता हूं।

"सुनो, सुचाला से कहो कि बच्चों को लेकर अपने घरवाले से पृथक् हो जावे। उसको लिखकर कह दे कि वह उसके घर में न आवे, आयेगा तो पुलिस के हवाले कर देगी। बताओ, कर सकोगी?

"देखो आजकल के पढ़े-लिखे लोग कहते हैं कि औरत को पति की अधीनता इस कारण स्वीकार करनी पड़ती है कि पति कमाकर लाता है और स्त्री आर्थिक दृष्टि से उस पर निर्भर रहती है। सुचाला की बात तो उससे भिन्न है। वह डेढ़ सौ रुपया मासिक कमाती है। यह उसके निर्वाह के लिए पर्याप्त है। उसे पति के अधीन रहने की आवश्यकता नहीं।

"जाओ, उससे कह दो कि अबके दाताराम घर पर आये तो वह दरवाजा न खोले। बलपूर्वक भीतर आना चाहे तो हल्ला कर दे। हमको बुला ले। मुहल्लेवालों को कहकर पुलिस में रिपोर्ट करा दे।"

निपुणा मुख देखती रह गई। वह जानती थी कि उनकी लड़की यह नहीं कर सकेगी। यदि करेगी भी तो जहां वह स्वयं बदनाम होगी वहां अपने माता-पिता के नाम पर भी कालिख पोतेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे चुप देख पण्डित हरिशरणानन्द ने कहा, "यदि झगड़ा बढ़ गया तो मैं सहायता कर दूंगा। यदि वह नवीन विवाह करना चाहती हो तो फिर...फिर... फिर...।"

"हां, तो फिर क्या?"

"फिर चूड़ियां नई बनवा दूंगा।"

"क्या मतलब?"

हरिशरणानन्द हंस पड़ा। बोला, "मतलब समझा दूंगा। अब जाओ, तुम्हें भगवान के कान मरोड़ने का ढंग बता दिया है।"

"यह नहीं हो सकेगा!"

"क्यों, इसमें क्या कठिनाई है?"

"कठिनाई यह है कि वह आपकी बेटी तो है, परन्तु जैसी बातें आप करते हैं वैसी वह नहीं करती।"

"तुमने तो यह नहीं बताया था। देखो निपुणा! तुमने कहा है कि दाताराम सुचाला को मार-पीटकर उसकी चूड़ियां उतारकर ले गया है। मैंने कहा था कि यदि वह स्वेच्छा से दे देती तो मार खाने से तो बच जाती। इस पर तुमने कहा है कि वह क्यों दे देती? अब तुम कह रही हो कि वह मेरी तरह की बातें नहीं कर सकती। तो फिर मुझसे पूछती ही क्यों हो?"

निपुणा निरुत्तर हो गई और वह उठकर दूसरे कमरे में चली गई। वह आज प्रातःकाल लड़की का सन्देश पाकर उसका समाचार जानने के लिए गई थी और यह चूड़ियों की बात, सुचाला के रोते हुए मुख से सुनकर आई थी। सुचाला के दो बच्चे थे। भाग्य के धनी दाताराम के घर एक लड़का और एक लड़की तो हो गई, किन्तु आय का प्रबन्ध नहीं हो पाया। विवाह के पूर्व वह जो काम करता था विवाहोपरान्त वह बिगड़ता गया। अवस्था यहां तक बिगड़ गई कि स्त्री के आभूषण बेचने की स्थिति आ गई। पुत्र, जो कन्या से दो वर्ष छोटा था, के उत्पन्न होने के बाद सुचाला को ट्रेनिंग की पढ़ाई कर, अध्यापिका का कार्य करना पड़ गया। अब उसे डेढ़ सौ रुपया मासिक वेतन मिलता था और इस प्रकार घर का कार्य चल रहा था। इस पर भी दाताराम अपनी आय का अभाव अपनी पत्नी की आय से पूर्ण करता रहता था। जब पत्नी किसी समय सहायता देने में असमर्थ हो अथवा इच्छुक न हो, तो वह बलपूर्वक प्राप्त करने का यत्न करता था। इसी प्रकार की घटना उस दिन हो गई थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पूर्ण परिस्थिति से निपुणा दुःखी थी। अपने पति के सुझाव से वह एक गम्भीर विचार में पड़ गई थी। पण्डित हरिशरणानन्द का सुझाव था कि उसको आभूषण देने में आपत्ति नहीं करनी चाहिए थी और यदि आपत्ति करनी ही है तो फिर लड़की को अपने पति से सम्बन्ध-विच्छेद कर लेना चाहिए। निपुणा इस सुझाव का अर्थ समझती थी। अर्थ यह था कि पति-पत्नी का सम्बन्ध पूर्णतया समता का होता है। दोनों सुख-दुःख के सहचर होते हैं। जिस दम्पती में यह सहचारिता की क्षमता नहीं उनका पति-पत्नी का सम्बन्ध न रहने के समान ही हो जाता है।

कठिनाई यह थी कि निपुणा अपनी लड़की को, पति के जीवित होते हुए, विधवा का-सा जीवन व्यतीत करने के लिए कह नहीं सकती थी। यदि यह सम्भव नहीं तो फिर धन-दौलत के लिए इस धर्म के मधुर सम्बन्ध को विषाक्त करने की क्या आवश्यकता है!

सुचाला के विषय में कोई मार्ग न पा सकने के कारण निपुणा खिन्न बैठी थी। चूल्हे में आग भी आज नहीं जली थी। हरिशरणानन्द यह देख रहा था। जब सूर्य सिर पर आ गया और उसने देखा कि अभी तक भी चूल्हे में आग नहीं जली तो वह अपने मन में एक निश्चय कर भीतर आया। निपुणा के समीप खड़ा हो उसने उसे पुकारा तो निपुणा ने प्रश्नभरी दृष्टि में मुख उठाया। हरिशरणानन्द ने कहा, "चलो, भोजन कर आवें।"

"कहां?"

"किसी होटल में।"

"तो भूख लगी है?"

"वह तो नित्य ही लगती है। ईश्वर की कृपा से अभी मैं उदर रोग से पीड़ित नहीं हुआ, जो भूख लगनी बन्द हो जाय।"

"तो जाइये, आप भोजन कर आइये। मेरा तो भोजन करने के लिए चित्त नहीं करता।"

"अपची के कारण चित नहीं करता अथवा दुःख के कारण?"

निपुणा इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकी। उसने कह दिया, "एक ही बात है। मैं दोनों में कोई अन्तर नहीं मानती।"

"अन्तर तो है। यदि अपचि है तो चूर्ण सेवन करने से ठीक हो जाएगी। और यदि दुःख हैं तो वह भोजन करने से कम हो जाएगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, मैं नहीं जाऊंगी, आप चले जाइए।"

"ठीक है।" इतना कह हरिशरणानन्द ने कपड़े पहने और भोजन के लिए होटल की ओर चल पड़ा।

अपने पति के इस व्यवहार से तो निपुणा का दुःख कुछ बढ़ा ही था। वह वहां से उठकर अपने पलंग पर सोने के लिए चली गई। इस समय उसके बड़े लड़के समर्थ की पत्नी सन्तोष आ गई।

घर का द्वार खुला था। बैठक में जहां उसका श्वसुर बैठ अपना स्वाध्याय और लेखन-कार्य किया करता था, कोई नहीं था। वह भीतर आई तो अपनी सास को रसोईघर में न देख उसे कुछ चिन्ता-सी होने लगी। उसने देखा कि भोजन का समय होने पर भी अभी तक चूल्हा ठण्डा पड़ा है। वह कमरे में गई तो पलंग पर किसी को सिर-मुख ढांपें पड़े देख बोली, "मांजी! मांजी!!"

निपुणा ने चादर उतारकर देखा कि पलंग के समीप सन्तोष खड़ी है, तो वह उठकर बैठ गई। बैठते हुए उसने कहा, "आओ, सन्तोष! आज इस समय किस प्रकार आई हो, कुशल तो है?"

"मैं और हम सब तो कुशलपूर्वक हैं। परन्तु यहां कुशल प्रतीत नहीं होता। पिताजी कहां हैं?"

"वे होटल में भोजन करने के लिए गये हैं।"

"क्यों, घर में भोजन नहीं बना क्या?"

"नहीं, आज मेरा चित्त न बनाने को करता था और न खाने को। किन्तु वे इतने कठोर हैं कि कचालू के पत्ते की भांति सुख-दुःख से अलिप्त रहते हैं। वे खाने के लिए चले गये हैं।"

"किन्तु हुआ क्या है?"

इस पर निपुणा ने उसको सुचाला की कथा सुना दी।

"मांजी! कितना मूल्य होगा उन चूड़ियों का?"

"छः चूड़ियां थीं, कम-से-कम सात सौ की तो होंगी ही।"

"और बहन अपने पति को यह सात सौ की वस्तु नहीं दे सकी?"

"तो तुम भी अपने श्वसुर की भांति यही उचित समझती हो कि बिना किसी प्रकार की आपत्ति किये उसे चुपचाप चूड़ियां दे देनी चाहिए थीं?"

"बहनजी के पास थीं जो। न होतीं तो बात दूसरी थी। मैं आपको एक बात सुनाती हूं। मेरा भाई सुदर्शन जुए में पांच सहस्त्र रुपये हार गया और उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रोनोट लिखकर दे आया। लेनदारों ने तंग किया तो वह मेरे पास आ पहुंचा। मैं आपके पुत्र से वह जुए में हारा रुपया चुकाने के लिए नहीं कह सकी। मैंने आंखें नीची किये हुए अपने भाई से कह दिया कि इस कार्य के लिए मेरे पास रुपया नहीं है।

"वह जानता था कि बैंक में मेरे व्यक्तिगत खाते में इससे कहीं अधिक रुपया जमा है। उसने मेरी पास-बुक भी देखी थी। इस कारण उसने उसका उल्लेख कर दिया। मैंने कहा, वह रुपया मेरा नहीं, उसके जीजाजी का है। वास्तव में मेरा सब-कुछ ही उनका है और उसके इस कार्य के लिए मैं उनसे रुपया मांग नहीं सकती।

"उसके जीजाजी सामने ही बैठे थे, वे मुझसे कहने लगे वह रुपया तो तुम्हारा अपना ही है। मैंने कह दिया कि पति-पत्नी के दो खाते अथवा आय के विभिन्न स्रोत होने पर भी उनका कुछ बंटा हुआ नहीं होता। इस पर वे मुझ पृथक में ले गये और पूछने लगे कि क्या मैं उसको रुपया देना चाहती हूं?'

"मैं नतसिर मौन खड़ी रही। वे वापस कमरे में चले गये और अपने खाते से पांच हजार का चैक काट सुदर्शन को देते हुए बोले, कि 'जब वह लौटाने का स्थिति में हो, अपनी बहन को दे जाए।"

किन्तु निपुणा इतनी स्पष्ट बात को भी समझ नहीं सकी। उसने कहा, "सन्तोष बेटी! परमात्मा ने तुम्हें दिया है और इतना कुछ देकर भी तुम निर्धन नहीं हुईं। परन्तु सुचाला की स्थिति तो वैसी नहीं है। उसमें तो पुनः अब चूड़ियां बनवाने की शक्ति नहीं है।"

"किन्तु चूड़ियां देने में तो कोई शक्ति की बात नहीं थी। दाताराम को चूड़ियां चाहिए थीं और सुचाला बहन के पास वे थीं ही। अतः उनको देनी चाहिए थीं।"

निपुणा निरुत्तर हो गई। इस पर भी इस कथन की सत्यता की वह स्वीकार नहीं कर पा रही थी। उसने बात बदलकर सन्तोष के पति के विषय में पूछते हुए कहा, "समर्थ कभी स्वयं मिलने के लिए नहीं आया?"

"वे आजकल एक कार्य में व्यस्त है। दिनभर काम करने पर थक जाते हैं। इस कारण मुझे उन्होंने आपका कुशल-क्षेम पूछने के लिए भेजा है।"

"तो उसको हमारी याद आती है?"

"आपको इसमें सन्देह नहीं करना चाहिए, माताजी!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बच्चे कैसे है?"

"सब ठीक हैं। मैं तो यह कहने के लिए आई थी कि आप कुछ दिन चलकर हमारे साथ रहें। आप और पिताजी आएंगे तो हम सुचाला बहन और देवर तथा देवरानी को भी वहीं बुला लेंगे। कुछ दिन आनन्द से बीत जाएंगे।"

"समर्थ के पिताजी आ जावें तो बात कर लेना।"

ये जब तक इधर-उधर की बातें करती रहीं तब तक हरिशरणानन्द भोजन करके वापस आ गये। सन्तोष ने उनके चरण-स्पर्श किये तो उन्होंने उसको आशीर्वाद दिया। फिर सन्तोष ने अपने प्रस्ताव की पुनरावृत्ति उनके सम्मुख कर दी।

पण्डित हरिशरणानन्द को अपनी पत्नी के मन की दुःखितावस्था का स्मरण हो आया। उन्होंने कहा, "क्यों निपुणा! तुम्हारा मनबहलाव हो जावेगा, ठीक है न? और फिर सुचाला वहां आयेगी तो उसको भी समझाने का अवसर मिल जायेगा।"

निपुणा मान गई और उसी दिन सन्तोष उनको अपनी मोटर में बिठाकर अपने घर ले गई। समर्थ की कोठी ओखला के निकट फ्रेंड्स कालोनी में थी। उसने बड़ी कोठी इसलिए बनवाई थी कि उसकी पत्नी परिवार के लोगों के साथ हिल-मिलकर रहने में सुख अनुभव करती थी। समर्थ ठेकेदारी करता था और सरकार की पंचवर्षीय योजना के चालू होते ही ठेकेदारों के घरों में सोना बरसने लगा था। जब रुपया एकत्रित होने लगा और ऐसा रुपया भी आने लगा जो बहीखाते में लिखा नहीं जाता था तो उस रुपये का उपयोग मकान बनवाने से अधिक अच्छा कोई दिखाई नहीं दिया। समर्थ ने कोठी बनवाने की योजना बना डाली। एक एकड़ भूमि में कोठी बनवाने का यत्न किया गया। भूमि पर अड़तालीस हजार रुपया व्यय किया गया, परन्तु लिखा-पढ़ी की गई चौबीस हजार की। कोठी बनवाने में व्यय हुआ अस्सी हजार और किताबों में लिखा गया तीस हजार रुपया! इसके अतिरिक्त कोठी को सुव्यवस्थित रखने के लिये दो हजार रूपया मासिक व्यय होता था, किन्तु किताबों में पाँच सौ रुपया लिखा जाता था। इस प्रकार पचहत्तर हजार की अनियमित आय को ठिकाने लगाने की व्यवस्था हो गई। और प्रतिमास इसी प्रकार डेढ़ हजार रुपया सुख-साधन में काम आने लगा। इस प्रकार इन्कम-टैक्स बचता रहा। कोठी के मूल्य पर टैक्स लगता था। वह भी कम लगान और प्रतिमास अनियमित आय को छिपाने का साधन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन गया।

सन्तोष इसमें सहायक सिद्ध हुई। बहीखाते में अंकित न होने वाली आय के सदुपयोग की विधि वह बताया करती थी। उनकी कोठी में कमरों के ग्यारह सैट थे। इस प्रकार ग्यारह परिवार यहां आकर सुविधापूर्वक रह सकते थे और सन्तोष अपने भाई-बन्धुओं और अपने पति के सम्बन्धियों को बुला-बुलाकर उनमें ठहराती रहती थी। इस योजना के अन्तर्गत पहले भी समर्थ के पिता का परिवार दूसरे-तीसरे मास यहां एकत्रित होता रहता था। इस बार तो परिवार के एकत्रित होने में एक विशेष प्रायोजन की सिद्धि भी थी। इस प्रायोजन-सिद्धि का सुझाव भी सन्तोष का ही था।

: 2 :

दाताराम कमीशन-एजेण्ट का कार्य करता था। कुछ संस्थानों के लिए वह आर्डर लाता था, माल वहां पहुंचाने पर जब उनका रुपया आता तो उसमें से उसको कमीशन मिल जाता था। द्वितीय यूरोप युद्ध से पूर्व काम बहुत अच्छा था। युद्ध-काल में महंगाई हो जाने के कारण और वस्तुओं की दुर्लभता की स्थिति में दाताराम का काम तो कम हो गया था, परन्तु आय बढ़ गई थी।

यह वह समय था जब हरिशरणानन्द ने सुचाला के लिए दाताराम का चयन किया था। उनका विवाह सन् 1942 में हुआ। इन्हीं दिनों सरकार ने आवश्यक वस्तुओं पर कण्ट्रोल और राशन लागू कर दिया। अब दाताराम की कठिनाई आरम्भ हो गई। भले लोगों के लिए मुसीबत आई और बेईमान लोगों की बन आई। दाताराम हृदय से भला आदमी था परन्तु बुद्धि से दुर्बल। उसने बुद्धि से अपना मार्ग बनाना चाहा, परन्तु संस्कारों ने साथ नहीं दिया।

युद्ध तो सन् 1945 में समाप्त हो गया, परन्तु राशनिंग और कण्ट्रोल समाप्त नहीं हुए। जब भी सरकार इस अस्थायी व्यवस्था को समाप्त करने के विषय में विचार करती कि सरकारी कर्मचारी इस प्रकार आंकड़े प्रस्तुत कर देते कि कण्ट्रोल उठाना और राशनिंग व्यवस्था को समाप्त करना असम्भव हो जाता। सन् 1946 तक ऐसी ही स्थिति रही। दाताराम तब तक खाली रहा। कभी किसी वस्तु का परमिट किसी दयावान सरकारी कर्मचारी से मिल जाता तो दाताराम दो-चार सौ रुपया पैदा कर लेता।

सन् 1947 में स्वराज्य मिला। गांधीजी ने कण्ट्रोल और राशनिंग बन्द करने के लिए सरकार को कह दिया। परीक्षण के रूप में चीनी से कण्ट्रोल उठा लिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया और सैकड़ों गरीब और थोड़ी पूंजीवालों को कारोबार मिल गया। साथ ही सरकारी क्षेत्रों में एक तीव्र संघर्ष चल पड़ा।

चीनी के कण्ट्रोल से वायसराय की एक्जीक्यूटिव कौंसिल से लेकर सप्लाई डिपार्टमेंट के चपरासियों तक के हाथ रंगे जा रहे थे। एकदम सबके मुख बन्द हो गये। जिनको शराब, कबाब और वेश्यागमन का अभ्यास हो गया था, वे हाथ-पर हाथ रखकर बैठ गये। वायसराय की कौंसिल टूटकर स्वराज्य-मन्त्रिमण्डल बन गया। मन्त्रियों के दो घड़े थे। एक रूस के समाजवादी समाज का स्वप्न देखने वाला और दूसरा गांधीवादी। समाजवादी समाज के स्वप्न लेनेवाले तो कण्ट्रोल को जारी रखने में समाज का कल्याण मानते थे और गांधीजी का देश की आर्थिक व्यवस्था में हस्तक्षेप, वे पसन्द नहीं करते थे। परन्तु देश पर व्याप्त गाधीजी के प्रभाव के सम्मुख वे विवश थे। जहां गांधीजी का कथन था कि व्यापार स्वतन्त्र कर दिया जाय और देश की पूर्ण आर्थिक व्यवस्था देश की देहाती जनता के कल्याण में लगा दी जाय, वहां समाजवादी ढांचे के लोग यह समझते थे कि सरकार का जब तक देश की समस्त भूमि और सामग्री पर अधिकार नहीं हो जाता, तब तक न तो देहातियों का कल्याण सम्भव है और न देश का ही।

समाजवादियों की सहायता में सरकारी कर्मचारियों का, विशेष रूप में उनका जो कण्ट्रोल-मशीनरी के अंग थे, हित था और ज्योंही उनको विदित हुआ कि कण्ट्रोल उठाया जा रहा है, वे इसका विरोध करने लगे। सरकारी कण्ट्रोल के दिनों में दिल्ली में चीनी एक रुपया सेर बिकती थी। ब्लैक मार्केट में सवा से डेढ़ रुपये सेर तक बिक जाती थी। सरकारी कर्मचारियों और चोरबाजारी करने वालों का हित इसमें होता था कि खुले बाजार में बिकने की अपेक्षा चोरबाजार में अधिक माल बिके। उनके शराब-कबाब के लिए यही धन का स्रोत था।

सरकारी कर्मचारियों को इस बात का पता लगते ही कि मन्त्रिमण्डल में दो वर्ग है और उसमें एक वर्ग कण्ट्रोल लगाये रखने के पक्ष में है तो वह इसका कारण ढूंढ़ने लगे। वाससराय की कौंसिल के सदस्य तो अपने स्वार्थ के लिए कण्ट्रोल लगाये रखना चाहते थे। इस कौंसिल में ऐसे भी सदस्य थे जो कौंसिल के सदस्य बनाये जाते समय सर्वथा निर्धन थे। उनका कोई बैंक बैलेंस नहीं था। युद्ध के दिनों में ही वे करोड़पति बन गये। यह सब भगवती राशनिंग और कण्ट्रोल देवता की कृपा का ही फल था। परन्तु स्वराज-मन्त्रिमण्डल में तो ऐसे अवसरवादियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को स्थान की आशा नहीं थी। इस पर कर्मचारी जांच करने लगे और इस जांच का परिणाम निकला।

लाला बरकतराम सप्लाई डिपार्टमेंट का असिस्टेंट सेक्रेटरी इस समस्या पर बहुत परेशान दिखाई देता था। वह चीनी के कण्ट्रोल पर नियुक्त था और युद्ध के दिन उसने सुख-चैन से निकाले थे। महात्माजी के दबाव के कारण चीनी पर से कण्ट्रोल उठा तो बरकतराम की आय का स्रोत बन्द हो गया। पन्द्रह दिन में ही वह परेशान दिखाई देने लगा।

इस परेशानी की अवस्था में 'मेडन' में जाकर शराब का पेग लेने की अपेक्षा वह 'क्वालिटी' में चाय पीने के लिए आने लगा। उसके सौभाग्य से उसका वहां एक खद्दरधारी नवयुवक से परिचय हुआ तो बातचीत होने लगी। पहले ही दिन लाला बरकतराम ने पूछा, "आप तो पढ़ने-लिखने वाले व्यक्ति प्रतीत होते हैं?"

बैरे को आर्डर दे दोनों चाय इत्यादि की प्रतीक्षा कर रहे थे। खद्दरधारी ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "यह अनुमान आपने किस प्रकार लगाया है?"

"तीन दिन से निरन्तर आपको इस समय यहां चाय पीने के लिए आते देख रहा हूं। आपकी बगल में सदा ही समाचारपत्रों का पुलन्दा होता है और आप थके-से दिखाई देते हैं। इससे मेरा अनुमान है कि या तो आप 'कांस्टीट्यूएंट असेम्बली' के सदस्य होंगे अथवा उस मशीनरी को चलाने वाले कोई नेता।"

"किन्तु मैं इन दोनों में से कोई भी नहीं हूं। मैं पत्रकार हूं। दक्षिण भारत के कुछ दैनिक और साप्ताहिक समाचारपत्रों का सम्वाददाता हूं। इसी नाते असेम्बली में जाता हूं। उसके बन्द होने पर तारघर में अपनी रिपोर्ट दे, थकावट दूर करने यहां आकर चाय पीता हूं।"

"तब तो मेरा अनुमान ठीक ही है। आप भारत सरकार की 'क्लोसल' (दीर्घकाय) मशीन चलाने वाले न सही पर उसमें तेल देने वाले तो अवश्य हैं। क्या मैं आपका नाम जान सकता हूं।"

"मुझे सानन्द मिश्र कहते है?"

बैरे के आने पर बरकतराम ने दोनों की चाय एक ही मेज पर लगाने के लिए कह दिया। विवश सानन्द मिश्र को बरकतराम के पास आकर बैठना पड़ गया। बरकतराम ने अपना परिचय देते हुए कहा,

"मैं सरकारी कार्यालय में डिप्टी सेक्रेटरी हूं, मेरा नाम बरकतराम माथुर है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह! सुना है।"

इससे तो बरकतराम को विस्मय हुआ और उसने पूछ लिया, "मेरे नाम को आपके कर्णगोचर होने का सौभाग्य किस प्रकार हुआ है?"

"आपने एक रिपोर्ट लिखी है। उस दिन खाद्यमन्त्री आपकी रिपोर्ट का उल्लेख कर रहे थे।"

इस समाचार से तो सतर्क होकर बरकतराम सानन्द का मुख देखने लगा। सानन्द ने आगे बताया, "आपने उस रिपोर्ट में लिखा था कि अभी कण्ट्रोल उठाने का समय नहीं आया। जब तक स्वराज्य-सरकार अपनी आर्थिक नीति के विषय में स्थिर-चित्त नहीं हो जाती तब तक कण्ट्रोल रहना ही चाहिए।"

"हां, याद आ गया है। गांधीजी कण्ट्रोल हटाने के विषय में, जो प्रेशर डाल रहे थे उसकी प्रतिक्रियास्वरूप मैंने वह नोट लिखा था।"

"और उसमें आपने लिखा था कि गांधीजी की आर्थिक नीति गलत है। उससे देश उन्नति नहीं कर सकता।"

"मेरा तो यही विश्वास है। परन्तु मिनिस्टर साहब क्या कहते हैं?"

"मिनिस्टर साहब इस विषय पर मुझसे बात कर रहे थे। माथुर साहब! क्षमा कीजिए, मैंने तो उस समय यही कहा था कि इस रिपोर्ट को लिखने वाला कोई मूर्ख और 'फीताशाही' का सदस्य है। इसको देश के बारे में उतना ही ज्ञान है जितना सरकारी फाइलों में लिखा हुआ मिलता है।"

इस मुंहफट व्यक्ति की, अपने विषय में इस प्रकार की सम्मति सुन बरकतराम का मुख विवर्ण हो गया। इस छोकरे ने उसके मिनिस्टिर के सम्मुख उसको मूर्ख कह दिया था। इस पर भी मंजे हुए 'ब्यूरोक्रेट' की भांति वह कहने लगा, "मैं समझता हूं कि आपने यह सम्मति मेरी योग्यता जाने बिना ही दे डाली है। मैंने इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से इकोनोमिक्स में एम. ए. किया है। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से डॉक्टरेट किया है और सरकारी नौकरी करते हुए भी दस वर्ष हो गए हैं। मेरे विभाग में सेक्रेटरी के रिटायर्ड होते ही मैं सेक्रेटरी बन जाऊंगा।"

"मालूम होता है कि आप रुष्ट हो गए हैं। मैं तो आपको यह बताना चाहता था कि मेरी उक्त प्रशंसा का परिणाम निकलने वाला है।"

बरकतराम के माथे पर कुछ पसीने की बूंदें दिखाई देने लगी थीं। सानन्द की दृष्टि इस ओर गई तो उसने कहा, "आपका तो दिल बैठ रहा प्रतीत होता है। आप मेरी सारी बात तो सुन लीजिए। मैं कह रहा हूं कि आपकी पदोन्नति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो आपके सेक्रेटरी के रिटायर होने से पूर्व ही होने वाली है। आपके सेक्रेटरी को कहीं विदेश में अम्बेसेडर बनाकर भेजा जा रहा है और आपको एक-दो सप्ताह में ही सेक्रेटरी पद पर नियुक्त करने का निर्णय हो चुका है।"

इस शुभ सम्वाद पर बरकतराम को विश्वास नहीं आया। इस पर भी दिल बैठना उसका बन्द हो गया। उसने चाय का प्याला, जो सानन्द ने बात करते-करते बना दिया था, उठाकर पीना आरम्भ किया।

बरकतराम को स्वस्थ होने में सहायता देने के लिए सानन्द ने कहा, "अब मैं इस नियुक्ति पर आपसे दावत लेने का अधिकारी हो गया हूं।"

डॉक्टर बरकतराम की जान-में-जान आई तो उसने पूछ लिया, "तो ऐसा प्रतीत होता है कि मिनिस्टर साहब को मेरे विषय में दी हुई आपकी सम्मति ठीक प्रतीत नहीं हुई?"

"जी नहीं। मेरी सम्मति से तो वे सोलहां आने सहमत थे। परन्तु बात तो वही है। आप जानते नहीं कि सरकारी फाइलों के बाहर दुनिया बहुत लम्बी-चौड़ी है।

"खाद्यमन्त्री महात्मा गांधी पर अगाध विश्वास रखते हैं, इस कारण वे आपको मूर्ख ही समझते हैं। परन्तु भारत सरकार के मन्त्रि- मण्डल में उन मन्त्री महोदय की कुछ चलती नहीं है।"

"तो किसकी चलती है?"

"पण्डित जवाहरलाल जी की।"

"तो क्या वे मुझे बुद्धिमान समझते हैं?"

"उनकी बात तो मैं नहीं बता सकता। मेरा विचार है कि गांधीजी की आर्थिक नीति के विषय में उनकी सम्मति भी वही है जो आपकी है, यद्यपि आप दोनों के उद्देश्य में भिन्नता है। परन्तु कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि आपकी सम्मति से उनकी नीति को समर्थन मिलता है। वे भी कण्ट्रोल चाहते हैं, जिसकी अपने नोट में आपने सिफारिश की है। वे भी गांधीजी की नीति को देश के लिए कल्याणकारी नहीं मानते, जैसे आपने अपने नोट में लिखा है।

"उनके कारण आपके कारणों से भिन्न हैं। परन्तु 'सर! इन युअर मिसफोर्च्युन यू हैव बिकम ए बैड फैलो ऑफ पण्डितजी।' (अपनी मुसीबत में आप पण्डितजी की नीति के समर्थक बन गए हैं।)

"यह सहवास विभिन्न कारणों से प्रतीत होता है। परन्तु अब हो गया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R089.9143
GUR-B
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
167951
Gurukul Kangri (Deemed to be University), Haridwar

और आपको इसका लाभ होगा।''

डॉक्टर बरकतराम निश्चिन्त हो अब पेस्ट्री खा रहा था और उसके स्वाद से जिह्वा चटकाने लगा था। जब सानन्द ने अपना प्याला खाली कर एक और बनाना चाहा तो बरकतराम ने पूछ लिया, ''कण्ट्रोल को बनाए रखने में मेरे उद्देश्यों और पण्डितजी के उद्देश्यों में आप समानता नहीं मानते क्या?''

''मैं ज्योतिषी नहीं हूं, जो आप दोनों के हृदय के भावों को जान सकूं। इस पर भी अपने मन की बात मैं बताता हूं। यदि गलत हो तो क्षमा कर दीजिएगा।

''मैं समझता हूं कि आप सरकारी अधिकारी होने से कण्ट्रोलों को रखकर लाखों कमाते रहे हैं। इसी कारण अब आप इसके उठाए जाने का विरोध कर रहे हैं। दूसरी और पण्डित जी 'सोशलिस्ट' हैं और सोशलिज्म का अर्थ है कि व्यक्ति की प्रत्येक गतिविधि पर सरकार का नियन्त्रण रहे। अपने सोशलिज्म को चलाने के लिए पण्डितजी को कंट्रोल प्रथम चरण प्रतीत हो रहा है। इस कारण आप पण्डितजी की अपने स्वार्थ हेतु सहायता कर रहे हैं और वे अपना सोशलिज्म चलाने के लिए आप-सदृश स्वार्थियों की आवश्यकता अनुभव कर रहे हैं।

''यही आपकी उन्नति का रहस्य है।''

डाक्टर बरकतराम गम्भीर हो गया और वह इस प्रकार के मुंहफट व्यक्ति से कुछ भी कहना नहीं चाहता था। उसको भय लग गया था कि यह उसके कथन का अपना अर्थ निकालकर मिनिस्टर को बता सकता है। इस कारण वह मौन हो गया। चाय समाप्त हुई। बरकतराम ने बिल चुका दिया। सानन्द ने धन्यवाद करते हुए पूछा, ''तो आपकी तरक्की की दावत पर निमन्त्रण की आशा करूं न?'

''मुझे मूर्ख कहने के पुरस्कार में?''

''इस सम्मति का पुरस्कार तो मैं आज की चाय में पा गया हूं। अब तो ज्योतिष लगाने के पुरस्कार की बात कर रहा हूं।''

दोनों इस समय रैस्टोरां के बाहर बरामदे में आ गए थे। डाक्टर ध्यान से इस पांच फुट आठ इंच ऊंचे युवक को निर्भीक और मुस्कराते हुए अपने सामने खड़ा देख विचार करने लगा। फिर अपनी जेब से एक छोटी-सी पाकेट-बुक निकालकर कहने लगा, ''आप कृपया अपना पता लिख दीजिए। यदि तरक्की हुई और यदि दावत दी, तो फिर आपको बुलाने का मजा रहेगा। मैं आपको अपने मित्रों के सम्मुख अपने को मूर्ख कहने वाला कहकर आपका उनसे परिचय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कराऊंगा।"

सानन्द हंस पड़ा। अपना पता बताते हुए उसने कहा, "लिखिए, सानन्द मिश्र, प्रेस कोरसपोंडेंट, 7-दरियागंज।"

"वहां तो मेरे एक परिचित कांट्रेक्टर मिस्टर समर्थ भी रहते हैं?"

"जी, वे मेरे बड़े भाई हैं।"

"तब तो मुझे बहुत ही प्रसन्नता होगी। आपका विवाह तो हो गया होगा?"

"जी, अभी नहीं।"

"क्यों?"

"पिताजी का कहना है कि अभी मेरे भाग्य में पत्नी-सुख लिखा हुआ नहीं है।"

डाक्टर माथुर विचार करने लगा और फिर बोला, "तो सिंगल कार्ड ही लिखना होगा?"

सानन्द इस पर हंस दिया।

डाक्टर बरकतराम माथुर तो सेक्रेटरी बन ही गया परन्तु इस भेंट का एक परिणाम यह हुआ कि सानन्द मिश्र डाक्टर माथुर का दामाद बन गया। सानन्द की मां को इस सम्बन्ध में आपत्ति थी, परन्तु पण्डित जी पौराणिक विद्वान होते हुए भी जात-पात से स्वयं को ऊपर मानते थे। और माथुर साहब की लड़की अनन्ता को देखकर उन्होंने सम्बन्ध स्वीकार कर लिया।

माथुर साहब ने कहा, "सानन्दजी! अपने सेक्रेटरी बन जाने की प्रसन्नता में दावत पर पर बुलाने की अपेक्षा मैंने आपको अपना दामाद बनाना उचित समझा है। अब आप अपने श्वसुर को मूर्ख नहीं कह सकेंगे।"

सानन्द ने हंसते हुए कहा, "मेरी सम्मति के लिए आपने अपने 'बेस्ट कम्प्लीमेंट्स' तो दे ही दिये हैं। इससे अपनी सूझ-बूझ पर मुझे गर्व होने लगा है।"

कण्ट्रोल उठानेवालों के दुर्भाग्य से गांधीजी की हत्या हो गई। इस समय तक सानन्द का विवाह हो चुका था। सानन्द अपने श्वसुर के घर गया हुआ था। एकाएक रेडियो पर घोषणा होने लगी, "हमें बहुत दुःख के साथ घोषित करना पड़ रहा है कि किसी हत्यारे की गोली से महात्मा गांधीजी की हत्या हो गई है।"

ये सब लोग उस समय चाय पी रहे थे। अनन्ता ने सुना तो वह भागी-भागी वहां आई जहां उसका पति उसके पिता के साथ बैठा चाय पी रहा था। उसने आते ही कहा, "गांधीजी की हत्या कर दी गई है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समाचार को सुनकर डाक्टर माथुर तो इस प्रकार उछला मानो उसको बिच्छू ने डंक मार दिया हो। उसके हाथ का प्याला छूट गया। सारी चाय तिपाई पर बिखर गई। बिना किसी प्रकार का विचार किये माथुर साहब ने उस कमरे में लगे हुए रेडियो को खोल दिया। सानन्द अपने स्थान पर बैठा चाय पीता रहा।

हत्या का समाचार रुक-रुककर रेडियो पर दोहराया जा रहा था। माथुर के ड्राइंग-रूम में दुःख का वातावरण छा गया। अपने पति को निश्चल रूप से चायपान करते देख अनन्ता को आश्चर्य हो रहा था। उसके समीप बैठकर वह कहने लगी, "एट लीस्ट फार दि सेक ऑफ ऐटिकेट, स्टॉप टेकिंग टी।"

"क्यों, बहुत दुःख हुआ है श्रीमतीजी को?"

"यह भी भला कोई पूछने की बात है?"

"तो तुम्हारे लिए छोड़ सकता हूं।" यह कहकर सानन्द ने प्याला रख दिया।

इस समय प्रधानमन्त्री रेडियो पर वक्तव्य देने लगे। डाक्टर माथुर का पूर्ण परिवार रेडियो के चारों ओर एकत्रित हो गया था। अनन्ता भी उन सबमें जा बैठी थी प्रधानमन्त्री के बाद गृह मंत्री ने अपना वक्तव्य दिया। फिर रेडियो पर रामधुन गाई जाने लगी।

सानन्द जब जाने के लिए तैयार हुआ तो माथुर साहब कहने लगे, "भोजन करके जाना।"

"आपके यहां भोजन बनेगा क्या?"

"क्यों नहीं बनेगा?"

"मैं तो समझ रहा था कि इस दुर्घटना पर आप सब लोग शोकग्रस्त हैं।"

"शोकग्रस्त तो हैं। परन्तु भोजन तो होगा ही। आप क्या समझते हैं कि यह मुसीबत की घड़ी नहीं है?"

"किसके लिए?" सानन्द ने प्रतिप्रश्न किया।

"पूर्ण देश के लिए। प्रधानमन्त्री ने क्या अपने वक्तव्य में ठीक नहीं कहा, 'दि लाइट हैज गॉन आउट'।"

"डाक्टर साहब। एक बात बताऊं? किन्तु किसी से कहियेगा नहीं।"

डाक्टर माथुर के परिवार के सभी व्यक्ति जानते थे कि सानन्द उल्टी खोपड़ी का व्यक्ति है। इस पर भी सबको उसकी बातों में आनन्द आता था। इस कारण सब दत्तचित्त होकर सुनने लगे। सानन्द ने अपने विचारों को सुव्यवस्थित कर और उनको प्रकट करने के लिए शब्दों का चयन कर कहा, "घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बुजुर्ग के मरने पर सबसे अधिक जोर-जोर से वह ढहाढ़ें मारता है जिसको उसकी मृत्यु से सर्वाधिक लाभ होने वाला होता है।"

"तो क्या प्रधानमन्त्रीजी को महात्माजी के मरने से सबसे अधिक लाभ होनेवाला है?"

"हां, और गृहमन्त्री बेचारे को भारी हानि होने वाली है। अतः उनके वक्तव्य में रोने की अपेक्षा भगवत-परायणता की बात अधिक थी।"

"सानन्द! तुम बहुत बड़े नास्तिक हो, जो इस मृत्यु के अवसर पर भी युक्ति का ताना-बाना बुन रहे हो।"

"आप-सदृश विद्वान व्यक्ति की सूझ-बूझ पर सन्देह तो किया ही नहीं जा सकता। इस कारण आपके शोक को मैं उतना ही जेनुएन मानता हूं, जितना कि प्रधान्मन्त्री महोदय के। क्योंकि इसमें दोनों को एक समान लाभ होनेवाला है।"

"क्या लाभ होनेवाला है?"

"कण्ट्रोल उठाने की नीति रद्द। चीनी पर पुनः कण्ट्रोल होगा। पूर्ण देशवासियों पर तथा उनकी गतिविधियों पर कण्ट्रोल होगा। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि पण्डितजी का सोशलिज्म अबाध गति से चलेगा।

"परमात्मा आपको तथा पण्डितजी को दीर्घायु करे! मार्ग का कांटा दूर हो गया है। आपकी उन्नति होगी और यहां नित नई कोठियां बनेंगी। और पण्डितजी गांधीजी की मृत्यु का शोक मनाते हुए उनके सब सिद्धान्तों की हत्या करेंगे।"

सानन्द के विवाहित जीवन के इन थोड़े-से दिनों में उसके सब वक्तव्यों में यह सबसे अधिक कठोर और निर्दयतापूर्ण कटाक्ष था।

माथुर का सारा परिवार चुपचाप पीत मुख उसकी और देख रहा था। अनन्ता तो अविरल आंसू बहा रही थी।

सानन्द ने भी यह अनुभव किया कि उसके कटाक्ष से सारे परिवार को ठेस पहुंची है। परन्तु उसकी मीमांसा के अनुसार इस बाहरी दुःख का उनकी अन्तरात्मा के दुःख अथवा क्लेश से कोई सम्बन्ध नहीं था। वह विचार करता था कि यह दिखावे का दुःख भोजन के साथ ही पेट में चला जावेगा। इससे वह हाथ जोड़ नमस्कार कर उनकी कोठी से निकल आया। नित्य की भांति आज माथुर साहब ने उसको छोड़ने के लिए अपनी मोटर भी नहीं निकाली। परिणामस्वरूप उसको पैदल ही अपने घर की यात्रा करनी पड़ी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सानन्द को अनुमान ठीक ही था। पण्डितजी को अपने भाषणों में कहने के लिए एक बात मिल गई। बापूजी की पुण्य स्मृति में बार-बार श्रद्धांजलि अर्पण करने का अवसर मिल गया। अपने विरोधियों को गाली देने का स्वर्ण अवसर प्राप्त हुआ और गांधीजी के प्रति प्रेमाश्रुओं की आड़ में वे विरोधियों के प्रति अपने क्रोध के निराकरण में संलग्न, पूर्ण जाति को सरकारी चरणों में बांधकर रखने की योजना बनाने लगे।

गृहमन्त्री और उनके अन्य संगी-साथी तो इस भय से कहीं उनको भी गांधीजी की हत्या में लिप्त न मान लिया जाय, मौन रहे और पण्डितजी तथा उनके समाजवादी संगी-साथी देश में गांधीवाद का उन्मूलन करने लग गये। पुनः कण्ट्रोल की नीति स्वीकार कर ली गई और एक दिन चीनी का भाव एक पैसे सेर बढ़ाने का बहाना बताकर पुनः कण्ट्रोल जारी हुआ और फिर योजनाबद्ध समाजवाद अर्थात् पूर्ण समाज के घटकों पर सरकार का कण्ट्रोल आरम्भ हो गया।

होता तो कदाचित तब भी यही जब गांधीजी जीवित रहते, परन्तु तब यह गांधीजी के नाम पर न होता और देश में दो धड़े बन जाते—गांधीवादी और समाजवादी। यह कहना कठिन है कि दोनों क्या करते। परन्तु पण्डितजी गांधीवादियों को उतना ही कोसते थे जितना हिन्दू-महासभा तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवकों को वे कोस रहे थे। तब गांधीजी की रामधुन पण्डित को उतनी ही अप्रिय लगती जितनी अब 'सुजलां सुफलां मलयज शीतलां' अप्रिय लगती थी।

हां, इसका परिणाम यह हुआ कि जहां समर्थ मिश्र की ठेकेदारी चमकने लगी वहां दाताराम का व्यापार मन्दा पड़ने लगा। समर्थ ने तो फ्रेंड्स कालोनी में एक लाख रुपये की लागत की कोठी बना ली और दाताराम की पत्नी सुचाला को स्कूल में अध्यापिका का कार्य करना पड़ा।

सानन्द का पथ तो तीन लोक से न्यारा ही था। उसको राजनीति में पाखण्ड-ही-पाखण्ड दिखाई देने लगा। वह जितना अधिक जनता को गांधीजी के लिए आंसू बहाते देखता था उतना ही अधिक जनता को गांधीजी के मूल सिद्धान्तों की अवहेलना करते पाता था।

दिल्ली में सिनेमा देखनेवालों की संख्या बढ़ने लगी। अंग्रेजी सूट पहनने वालों की संख्या इतनी बढ़ गई कि नई दिल्ली में दर्जी खद्दर के कपड़े सीने से इन्कार करने लगे। कपड़ेवालों की दुकानों पर सूट लेंग्थ में ही कपड़ा बिकता था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और दर्जी सूट ही सीना पसन्द करते थे। सानन्द को अपने लिए कुरता ओर पायजामा सीने के लिए दर्जी मिलना कठिन हो गया।

एक बार दिन भर की खोज के बाद पहाड़गंज की चांदीवाली गली के पिछवाड़े में एक दर्जी मिला जिसने खद्दर को छूने से न नहीं किया। किन्तु सिलाई उसने जैसी की, वह परमात्मा का नाम लेकर ही पहना जा सकता था।

गांधीजी के निधन के दिन से ही सानन्द की पत्नी उससे कुछ रुष्ट थी और पति के घर जाने को उसका मन नहीं करता था। इस बात को भी दो वर्ष बीत गये। इस अवधि में समर्थ फ्रेंड्स कालोनी वाली कोठी में चला गया था और सानन्द अपने माता-पिता के साथ दरियागंजवाले मकान में ही रह गया। यह उसके पिता का अपना मकान था।

इन दो वर्षों में सानन्द की मां उसको कई बार कह चुकी थी कि वह जाकर बहू को ले आवे। वैसे वह स्वयं तो कई बार उसको लेने के लिए गई थी, किन्तु अनन्ता कहा करती थी कि जिसके घर में उसको रहने के लिए जाना है वही यदि लेने के लिए न आए तो वह जाकर क्या करेगी।

इससे मां का कथन था कि सानन्द स्वयं जाकर उसको ले आए। किन्तु सानन्द यह कहकर टाल दिया करता था, "क्या जल्दी पड़ी है मां! जीवन बहुत लम्बा है, आ जाएगी!"

वह यह बात समझ रहा था कि केन्द्रीय सरकार का सचिव, जो फर्स्ट-क्लास सूट पहनता था, हडसन कार में सवारी करता था, अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त अन्य किसी भाषा में विचार व्यक्त नहीं कर सकता था और जो अंग्रेजी रहन-सहन तथा आचार-विचार के गुणानुवाद गाते थकता नहीं था; वह गांधीजी की हत्या पर इतना शोकग्रस्त हो कि लड़की को अपने उस पति के घर में भेजने से आनाकानी करे जिसे गांधीजी की हत्या पर न शोक हुआ था और न हर्ष ही, कोरी बनावट है।

गांधी जी की हत्या के बाद एक दिन वह अपनी पत्नी को लेने के लिए गया भी था। परन्तु अपनी ओर उसकी घृणा के भाव से निहारते देख वह बिना यह कहे कि वह उसको लेने के लिए आया था चला आया। इस प्रकार दो वर्ष व्यतीत हो गये।

मार्च मास का अन्त था और ग्रीष्म ऋतु के कपड़े बनवाने में यह दुर्घटना हो गयी थी कि छः कुरते, पायजामे और छः टोपियां बनवाकर लाया था और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब-के-सब खराब हो गये थे। कपड़ों को सामने रख वह देश की बिगड़ती दशा पर विचार करने लगा था।

अपने विचारों में लीन वह भविष्य के विषय में सोच रहा था कि बाहर से मां की आवाज सुन वह भौंचक्का हो उठा। मां कह रही थी, "सानन्द! देखो, बहू आई है।"

सानन्द उठा और घूमकर देखने लगा। अनन्ता फर्स्टक्लास रेशमी साड़ी और रूज और लिपस्टिक से सजी-सजाई कमरे के द्वार पर खड़ी थी। सानन्द ने मुस्कराकर हाथ जोड़ते हुए कहा, "ईश्वर को लाख-लाख धन्यवाद है कि आपको हमारी सुधि तो आई।"

सास के सम्मुख अनन्ता ने कुछ कहना उपयुक्त नहीं समझा। उसने हाथ जोड़े और आकर सानन्द के समीप खड़ी हो गई। निपुणा ने वहां से टल जाना ही उपयुक्त समझा। जब मां चली गई तो अनन्ता ने कहा, "बैठेंगे नहीं क्या?"

"यही तो मैं आपसे पूछनेवाला था। आपके आने से पूर्व तो मैं बैठा ही था।"

"मैं आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा कर रही थी।"

"मैं आज्ञा देनेवाला कौन होता हूं? इस समानता के युग में कौन किसको आज्ञा दे सकता है। हां, यह मानता हूं कि स्त्री-वर्ग ने दौड़ लगा कर पुरुष के समान अधिकार तो प्राप्त कर लिया है और अब उससे भी आगे बढ़ने का यत्न किया जा रहा है। जब बढ़ जाएंगी तो पुरुष अपनी पत्नियों से आज्ञा मांगा करेंगे।"

"अभी तो अन्तरिम काल चल रहा है। इस कारण सोच रहा था कि आज्ञा दूं अथवा मांगू?"

अनन्ता बैठ गई और अपने पति का विशेष वाक्चातुर्य का स्मरण कर हंसने लगी। फिर उसने पूछा, "यह क्या कर रहे थे? आप अभी तक खद्दर ही पहनते हैं?"

"क्यों?"

"अब इसका फैशन नहीं रहा। लोग गांधी टोपी पहननेवाले की ओर इस प्रकार देखने लगते है जैसे कोई चोर चला जा रहा है।"

"देखो श्रीमती जी! एक कहावत है, 'गिव द डाग ए बैड नेम एण्ड शूट इट।' यही तो किया जा रहा है। कुछ हिन्दू-संस्थाओं को गांधीजी के हत्यारे नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देकर उनको गोली मारी जा रही है।"

"पर मैं तो खद्दर पहननेवालों की बात कह रही हूं।"

"यह तो श्रीमती जैसी लिपस्टिक लगानेवालीं ही गांधी टोपीवालों को चोर कहकर टोपियां उतरवा रही हैं।"

"तो आपको मुझसे डर लगता है?"

"नहीं, मैं आज से खद्दर के कपड़े पहनने छोड़ रहा हूं। इस कारण मुझे भय नहीं कि अब कोई मुझे चोर कहने का साहस करें।"

"तब तो बहुत अच्छा करेंगे आप। इस अवस्था में तो हम एकमत हो ही जाएंगे।"

सानन्द ने बात बदलते हुए उससे पूछा "अब फिर लौट जाने की नीयत है क्या?"

"नीयत तो नहीं। हां, यदि आप निकाल देंगे तो फिर क्या करूंगी?"

"निकालने का तो न कभी विचार किया था और न है ही।"

"दो वर्ष तक अपने पिता के घर में रहने के उपरान्त अनन्ता अपने पति के घर आ गई। उसने भी विषयान्तर हो कहा, "पिताजी ने डिप्लोमैटिक एन्क्लेव में आधा एकड़ भूमि लेकर मेरे नाम पर कर दी है।"

"बधाई हो इसके लिए।"

"वे उस पर एक कोठी बनवानेवाले हैं। वह भी मेरे नाम कर देंगे।"

"यह तो और भी प्रसन्नता की बात है।"

"अनुमान है कि उस कोठी का किराया सात सौ रुपया प्रतिमास तक मिलेगा।"

"फिर तो हमारी बहन की भांति अनन्ता को नौकरी नहीं करनी पड़ेगी।"

"तो क्या दातारामजी की भांति आपका काम भी बिगड़ रहा है?"

"अभी तो नहीं। परन्तु कौन जाने किस समय क्या हो जाय? कहते हैं—

काल चक्र की गति है न्यारी,
कल के हंसते आज दुखारी।
काल चक्र की गति है न्यारी।"

"प्रतीत होता है आजकल आप बहुत निराशावादी हो गये हैं?"

"नहीं अनन्ता! निराशा जैसी सौगात तो मेरे भाग्य में ही नहीं है।"

"यह भी कोई सौगात है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां, तभी तो संसार-भर के कवि इस पर कविताएं लिखने पर लगे हुए हैं।

देखिए लिखा है—

एक बोसीदा हवेली यानि फर्सूदा समाज।
ले रही है नजअ के आलम में मुर्दों से खिराज।।

एक और साहब फरमाते हैं—

जब भी राहों में नजर आये हरीरी मलबूस।
सर्द आहों में तुझे याद किया है मैंने।।

और यह सुनिए—

ए गमे दिल क्या करूं, बहशते दिल क्या करूं,
जी में आता है कि अब अहदे वफा भी तोड़ दूं।
उनको पा सकता हूं मैं ये आसरा भी तोड़ दूं,
हां मुनासिब है ये जंजीरे हवा भी तोड़ दूं।।

"किस-किस की सुनाऊं, सब निराशा के मजे ले रहे प्रतीत होते हैं।"

"यह सब मेरी अनुपस्थिति में पढ़ते रहे हैं शायद?"

"नहीं श्रीमती जी! मुझे तो यह हवा छू भी नहीं गई। मैं कभी भी निराश नहीं हुआ। मुझे तो सदा यही विश्वास रहा है कि एक दिन आप आ जाएंगी। और—

रंगीन कर देंगी हमारी दुनिया को भी इस तरह।
जैसे अधरों को किया है लिपस्टिक के लेप से।"

अनन्ता हंस पड़ी और पूछने लगी, "कहां है आपकी दुनिया? लाइये इधर उसको भी लगा दूं लिपस्टिक।"

सवा साल और बीत गया और सानन्द एक पुत्र का पिता बन गया। इस समय भी वह सात नम्बर दरियागंज में ही रहता था। परन्तु उसके पिता पटेलनगर के एक मकान में जाकर रहने लग गये थे।

जब समर्थ की पत्नी सन्तोष अपनी सास और श्वसुर को अपने घर में ले आई तो एक दिन जाकर सुचाला को भी उसके दो बच्चों के साथ ले आई। फिर दूसरे दिन जाकर सानन्द और उसकी पत्नी को लेने जा पहुंचीं। सानन्द अपना चमड़े का थैला लिये पार्लियामेंट की ओर जाने के लिए तैयार खड़ा था। सन्तोष ने पूछा, "सानन्द, किधर जा रहे हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भाभी! अपनी आवारगर्दी पर। मेरा तात्पर्य है, 'न्यूज हंट' पर।"

"मैं तुम दोनों को अपने घर ले चलने के लिए आ गई हूं।"

"क्या है वहां?"

"माताजी, पिताजी, बहन सुचाला और उसके बच्चे आये हैं। कसर तुम दोनों की थी, सो वह लेने के लिए आ गई हूं।"

"और इसको नहीं ले जाओगी?" सानन्द ने खटोले में पड़े अपने छः मास के बच्चे की ओर संकेत करते हुए कहा।

"तो इसको कहां छोड़ जाओगे?"

"मैं क्या जानूं। आपने ही तो कहा था कि आपके घर के समारोह में दो की कसर है और यहां हैं ढाई।"

इस समय तक अनन्ता अपने पति के स्वभाव से परिचित हो गई थी। इससे वह हंसने लगी। सन्तोष को बच्चे को भूल जाने के कारण लज्जा लग रही थी। वह कुछ कहना चाहती थी, परन्तु तुरन्त उसकी समझ में नहीं आया कि इसकी क्या सफाई दे। बच्चे को खटोले पर से उठाती हुई बोली, "इसको तो मैं ऐसे ही उठा ले जाऊंगी।"

"तब तो ठीक है। अनन्ता को फैमिली प्लानिंग पर साहित्य पढ़ने की अभी आवश्यकता नहीं पड़ेगी।"

"क्यों अनन्ता? बस एक ही बच्चा होने पर ऊब गई हो?"

"उस दिन हमारी स्वास्थ्य-मन्त्रिणी इस विद्या की आवश्यकता पर बल दे रही थीं। कुछ 'रिदमिक ट्रीटमेंट' की बात कह रही थीं। मैंने इनसे पूछा तो ये पुस्तकालय से एक पुस्तक लाकर यहां रख गये हैं। कई दिन से उसे पढ़ रही हूं परन्तु इस 'रिदमिक ट्रीटमेंट के रिदम को समझ नहीं पाई। इनसे पूछा तो कहते हैं इन्होने डाक्टरी पढ़ी ही नहीं। और अब देखो स्वयं ही मेरी हंसी उड़ाने लगे हैं।"

"अच्छा सानन्द! अब चलो।" सन्तोष ने कहा।

"भाभी! अनन्ता और इसके कमल को ले जाओ। दो की कसर पूरी हो जायगी। और फिर भी कुछ कसर रही तो मैं रात के भोजन से पूर्व पहुंच जाऊंगा।"

"कैसे पहुंच जाओगे?"

"टेक्सी से।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, तुम यह बता दो कि किस समय और कहां पर तुम्हें काम से अवकाश मिलेगा, मैं तुम्हें लेने के लिए अपनी गाड़ी भेज दूंगी।"

सानन्द ने अपनी डायरी में देखकर बताया, "मैं सायंकाल साढ़े सात बजे कान्स्टीट्यूशन क्लब के बाहर खड़ा मिलूंगा।"

"ठीक है, ड्राइवर गाड़ी लेकर वहां पहुंच जाएगा।"

: 3 :

कान्टीट्यूशन क्लब में उस दिन 'अमेरिका में प्रजातन्त्र' पर वहां के प्रख्यात जर्निलिस्ट डाक्टर विलियम टावर का भाषण था। जर्निलिस्ट क्लब की दिल्ली की ओर से इस व्याख्यान का प्रबन्ध किया गया था। सभा की अध्यक्षता दिल्ली के प्रसिद्ध सम्पादक श्री खन्ना करने वाले थे। किन्तु वे ठीक समय पर आ नहीं सके इस कारण यह पद आज सानन्द मिश्र को सुशोभित करना पड़ा। यों तो वह आज बहुत-से प्रश्न पूछने के लिए तैयार होकर आया था, इस कारण जब उसका नाम अध्यक्ष-पद के लिए प्रस्तावित किया गया तो पहले तो वह विचलित-सा हुआ, किन्तु तुरन्त ही स्थिर होकर उसने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

सभा ठीक साढ़े पांच बजे आरम्भ हुई और सानन्द अपनी विशेषता से विवश अध्यक्षीय भाषण से ही सभा आरम्भ कर बैठा।

उसने कहा, "हम प्रजातन्त्र, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और देश में व्यवस्था, तीनों को भिन्न-भिन्न वस्तुएं मानते हैं। प्रजातन्त्र तो राज्य चलाने की एक विधि है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता मनुष्य की मांग है। और राज्य-व्यवस्था शासन की योग्यता का प्रतीक। प्रजातन्त्र के बिना भी व्यक्तिगत स्वतंत्रता, जैसे अनेको जंगली कुनुबों में प्राप्त है मिल सकती है। जैसे कि पंजाब में महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद व्यक्तिगत स्वतंत्रता व्यापक हो गयी थी इस पर भी वहां प्रजातंत्र नहीं था।"

"रूस में भी प्रजातंत्र है। परन्तु वहां व्यक्तिगत स्वतंत्रता नहीं है। ऐसी ही व्यवस्था तो भारत वर्ष में पांचवी ओर छठी शताब्दी में भी बहुत प्रबल थी। तब न तो वहां प्रजातंत्र ही था और न किसी प्रबल राजा का राज्य। इस कारण में विद्वान वक्ता से आशा करता हूं कि वे इन तीन प्रश्नों को पृथक् पृथक् कर इस समस्या पर प्रकाश डालें।

"हमारी धारणा है कि प्रजातन्त्र, जिसको पालियामेंट्री डेमोक्रेसी कहते हैं, समाज और देश को धीरे-धीरे कम्युनिज्म की ओर ले जाने वाली सिद्ध हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम्युनिज्म समाजवाद का उग्र रूप है।

"क्या यह सत्य नहीं कि पिछले युद्ध में अमेरिका इंगलैंड का विरोध कर रूस की सहायता करता रहा था ?

"क्या यह सत्य नहीं कि अमेरिका की इंगलैंड के प्रति घृणा ही रूस की बर्लिन पर विजय में सहायक हुई है ?

"क्या यह सत्य नहीं कि अमेरिका च्यांगकाई शेक सदृश डेमोक्रेसी का विरोधी बन चाउ-एन लाई और माओ-त्सेतुंग जैसे कम्युनिस्टों का हाथ मजबूत करता रहा था?

"क्या यह सत्य नहीं कि युद्ध में अमेरिका ने इंगलैंड को बलकाना में दूसरा फ्रंट खोलने से मना कर पूर्ण पूर्वी यूरोप को कम्युनिस्टो की दया पर छोड़ दिया गया था?

"क्या यह सत्य नहीं कि जिन चीनी कम्युनिस्टों को अमेरिका ने सहायता देकर च्यांगकाई शेख को चीन से भगाकर फार्मोसा में पनाह लेने के लिए विवश किया था उन्हीं की दया पर उत्तरी कोरिया को छोड़ दिया था?

"हमारी यह उत्कट इच्छा है कि विद्वान वक्ता इन घटनाओं के प्रकाश में अमेरिका की डेमोक्रेसी के विषय में विचार व्यक्त करें। हमारे मन मे यह संदेह हो रहा है कि पार्लियामेंट्री डेमोक्रेसी सदा कम्युनिस्टों के लिये 'ब्रीडिंग ग्राउण्ड' का काम करती रही है।"

वक्ता महोदय तो अपने निवास-स्थान से ही अपना व्याख्यान तैयार कर और उसको टाइप करवा कर लाया था। इस कारण वह अध्यक्ष के शिष्टाचार सूचक स्वागत के स्थान पर इस गोलाबारी से परेशानी अनुभव करने लगा। इस पर उसने यह कहकर कि अध्यक्ष महोदय के प्रश्नो का उसके व्याख्यान से कोई सीधा सम्बन्ध न होने पर भी, यदि उसे समय मिला तो अपने व्याख्यान के अन्त में वह इस विषय पर कुछ प्रकाश डालने का यत्न करेगा; उसने अपना व्याख्यान पढना आरम्भ कर दिया।

पौन घण्टे अपना व्याख्यान पढने के बाद वह बैठ गया। इस पर प्रश्नकर्ताओं ने अनेकानेक प्रश्नों की बौछार आरम्भ कर दी।

साढ़े सात बजे वक्ता ने अध्यक्ष महोदय से क्षमा मांगते हुए कहा, "मुझे खेद है कि मैं अध्यक्ष महोदय के प्रश्नो पर समयाभाव के कारण प्रकाश नहीं डाल सका। इस पर भी इतना कह देना चाहता हूं कि कम्युनिज्म इतनी भयानक वस्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है जितनी कि उपनिवेशवाद। इंग्लैंड इस महान पाप में लिप्त रहने के कारण सभ्य संसार की सहानुभूति का पात्र नहीं हो सकता।"

सानन्द के वक्ता का धन्यवाद कर अन्त में कह दिया, "हमारी यह हार्दिक कामना है कि रूमानियां, बैल्जियम और पोलैंड की भांति अमेरिका भी रूसी कम्युनिज्म के अधीन कुछ वर्ष तक रहकर उसकी कल्याणकारी तथा सुखद छाया का रसास्वादन करे।"

इस कटाक्ष के उपारान्त तालियों की गड़गडाहट में सभा विसर्जित हुई। सभा के निकलते समय सानन्द से हाथ मिलाते हुए मिस्टर टावर ने कहा, "आप अमेरिका से बहुत दुःखी प्रतीत होते हैं।"

"नहीं, मैं दुःखी तो नही हूं। हां वहां के विद्वानों की 'डैंस हैडेसनैस' को अनुभव करता हूं। भगवान ने इनको धन-सम्पत्ति तो दे रखी है परन्तु मोटी बुद्धि होने के कारण वे उस धन का प्रयोग दानवों की सहायता के लिए करने लगे हैं।"

"क्या आप अपने कथन को सिद्ध कर सकते हैं?"

"इसके लिए आप चेस्टर विलमौट की 'स्ट्रगल फार यूरोप' पढ़ लीजिए।"

"ओह यू मीन देट ईडियेट'?"

"जी बिलकुल!" फिर उसने उससे पूछा, "क्या मैं कल किसी समय आपके साथ चाय-पान का सौभाग्य प्राप्त कर सकता हूं?"

"कल तो मैं हवाई जहाज से कलकत्ता जा रहा हूं। वहीं से अमेरिका लौट जाऊंगा।"

"अच्छा। चीरियो।"

मिस्टर टावर के लिए अमेरिकन एम्बेसी की गाड़ी खड़ी थी। वह उसमे बैठा तो सानन्द अपने भाई की कार मैं बैठ उसके घर चला गया।

वहां सुचाला की समस्या पर विचार हो रहा था। सुचाला कह रही थी, "पिताजी! माधव के पिता अब घर नहीं आते। दो वर्ष से उन्होंने एक पैसा भी लाकर नहीं दिया। मैं उनसे कहती रहती हूं कि यदि उनका अपना काम नही चलता तो बड़े भापा के साथ काम करने लगें। उनको वेतन मिल जाया करेगा। परन्तु वे मानते नहीं हैं।

"उस दिन आये और अपनी कटी हुई जेब दिखाकर बोले कि साढ़े चार सौ रुपया एक दुकानदार को देना था वह चोरी हो गया है। मैं एक सप्ताह के लिए उन्हें यह रुपया दे दूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरे पास रुपया नहीं था। मैंने उन्हें बताया तो कहने लगे कि अपने हाथ की चूड़ियां दे दूं। मुझे इसमें किसी प्रकार की युक्ति नहीं दिखाई दी। अतः मैने इंकार कर दिया। उन्होने आग्रह किया। मुझे क्रोध आ गया और क्रोध में मैंने उनसे कुछ कह दिया। इस पर उन्होंने मुझे दो घूंसे लगाये और चूड़ियां उतारकर ले गये।"

सुचाला के वक्तव्य पर निपुणा ने पूछा, "सानन्द! हमारी संसद हिन्दु तलाक विधेयक कब तक पास करनेवाली है?"

"मां! वह तो बस करने ही वाली है। परन्तु सुचाला तलाक दे देगी?"

"क्यों, दें क्यो नहीं सकूंगी?"

"देख लो! बच्चो के होते हुए यह सम्भव है कि नहीं। फिर कानून बनते-बनते तो दो वर्ष लग ही जावेंगे। पहले तो तब तक के लिए विचार कर लो। तलाक की बात पर तो उस समय विचार कर लेंगे।"

इस पर सुचाला की माता ने कह दिया, "तो तुम ही बताओ न तब तक यह क्या करे?"

"पहले पिताजी बतायेंग। मैं सबसे छोटा हूं; मेरा हक तो सबसे अन्त में बताने का है।"

पण्डित हरिशरणानन्द ने कहा, "नहीं, आज बात तुमसे ही आरम्भ होगी।"

"पिताजी! मैं तो दो बातें सुचाला से पूछना चाहता हूं।"

"ठीक हैं , पूछ सकते हो।"

"सुचाला! यह बताओ कि दातारामजी तुमसे ही रुपया मांगने क्यों आये थे?"

"कहते थे कि उनकी जेब कट गयी हैं।"

"यह तो ठीक है। परन्तु कहां कटी थी उनकी जेब?"

"चांदनी चौक में बताते थे।"

"तो बहन! मैं यह पूछता हूं कि चांदनी चौक से चलकर वे पहाडगंज में पहुंचे। रास्ते में कितने ही लोग कितनी ही चूड़ी पहनी स्त्रियां दिखाई दी होंगी और वे उनमें से किसी से भी मांगे बिना अथवा किसी की भी चूड़ियां उतारे बिना सीधे तुम्हारे पास ही क्यों आये?"

सुचाला उसका उत्तर देना चाहती थी। वह अभी उसके शब्दों पर विचार ही कर रही थी कि हरिशरणानन्द हंस पड़ा। इससे तो निपुणा के माथे पर त्योरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चढ़ गई। उसने क्रोध मे भरकर कह दिया, "आपको तो हर बात में हंसी ही सूझती है। भला इसमें हंसी की क्या बात है?"

पिताजी की सहायता में सानन्द ने कहा, "मां! पिताजी इस कारण हंसे थे कि सुचाला यह कहने में लज्जा का अनुभव कर रही है कि दाताराम उनके पुत्र माधव के पिता हैं। वह अपने पुत्र की मां से सहायता की आशा में आये थे। क्यों सुचाला! यही बात है न?"

"परन्तु सानन्द!" निपुणा ने कहा, "क्या यह भी कोई कारण है कि वह उसकी चूड़ियां ले जाए?"

"कारण तो बहुत बड़ा है। पर मानने की बात है। क्यों अनन्ता?" उसने अपनी पत्नी की ओर देखकर पूछ लिया, "तुम ही बताओ। कहीं मेरा पर्स गुम हो जाय और मैंने मित्रों को दावत दी हो, मै अपने कमल की मां से एक सौ रुपया उधार लेने चला जाऊं तो तुम इसमें कोई कारण मानती अथवा नहीं?"

"तो तुम्हारा मतलब यह है," पिता ने कह दिया, "कि सुचाला को चुपचाप चूड़ियां उतारकर दे देनी चाहिए थी?"

"बिलकुल पिताजी!"

"मुझे आशा नहीं कि वे कभी भी चूड़ियां लाकर दे सकेंगे।" सुचाला ने अपना स्पष्टीकरण दे दिया।

"ठीक है। पर मैं पूछता हूं कि जब तुम पैदा हुई थीं, क्या ये चूड़ियां पहनकर ही पैदा हुई थीं।"

"ये चूड़ियां तो माताजी के विवाह के समय दी थीं।"

"तो तुम्हारे मन में यह बात क्यों नहीं आई कि तुम्हारे नंगे हाथ देखकर मां उनमें और चूड़ियां पहना देगी?"

"क्यों मां! क्या तुम मुझको चूड़ियां ले दोगी?"

"अब क्यों ले देगी। जब तुम अपने पति को नहीं दे सकी तो वह अपनी बेटी को ही कैसे दे देगी? बहन! यह संसार है। जो त्याग- तपस्या करते हैं, वे ही इसका फल पाते हैं।"

"अब क्या करूं?"

"मैं बताता हूं।" बड़े भाई समर्थ ने कहा।

सभी समर्थ की और देखने लगे। उसने कहा, "तुम स्कूल की नौकरी छोड़कर मेरी नौकरी कर लो। तुम्हें वहां ड़ेढ सौ रुपया मासिक मिलता है, मैं तुम्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन सौ रुपये दूंगा। इतने में तुम्हारे परिवार का पालन हो जायेगा।"

"मैं एक बार उनको आपके यहां काम करने के लिए कह चुकी हूं। उन्होने मेरी बात मानी नहीं। अतः इससे समस्या सुलझेगी नहीं।"

सानन्द बोला, "सुलझ तो सकती है। तुम्हारी आय तो बढ़ जायेगी। तुम खर्चा अधिक मत करना। डेढ़ सौ रुपया अपने पास सुरक्षित रखना। जब कभी भी उसकी जेब कतरी जाएगी और तुम से रुपया उधार लेने के लिए आएगा तो तुम उस सुरक्षित कोष से देने में समर्थ होगी।"

"पर मैं ही क्यों दूं? परिश्रम तो करूं मैं और वे योंही उड़ा लें।"

सानन्द इतने से निरुत्तर नहीं हुआ था। उसने कहा, "सुचाला बहन! पूछो न अपनी भाभी से। पिछले सप्ताह मेरे एक लेख का तीन सौ डालर पारिश्रमिक आया था। मैंने अपने मित्रों में इसका उल्लेख किया तो वे मुझसे दावत मांगने लगे। मैंने पचास रुपये से वैंजर में एक शानदार डिनर दे दिया। घर आया तो अनन्ता बोली कि क्या उसको कुछ नहीं मिलेगा? मैंने इसकी इच्छा जाननी चाही तो इसने कह दिया कि जो मैं दे दूं।

"अगले दिन मैं इसको दरीबा ले गया और वहां से सात सौ रुपये का इसको 'डायमण्ड नोज पिन' दिलवा दिया। मेरे मन में तो ये कभी विचार ही नहीं आया था कि कमाऊं मैं, ले जाय अनन्ता।"

बात समाप्त हो गई। हरिशरणानन्द उठ खड़ा हुआ। उसने कहा, "मैं समझता हूं कि एक दिन के लिए आज पर्याप्त चर्चा हो गई है। सुचाला को इतना पचा लेने दो। इस पर भी यदि कुछ समझने को रह जायेगा तो किसी अन्य दिन विचार कर लिया जायेगा।"

रात अपने कमरे में सोने से पूर्व अनन्ता ने अपने मन का संशय प्रकट करते हुए कहा, "आप तो सदा आदर्श की ही बात करते हैं। परन्तु संसार में तो कभी इसके दर्शन तक नहीं होते। सारा संसार स्वार्थ की धुरी पर घूमता दिखाई देता है। सुचाला की समस्या आपके आदर्शमय वार्त्तालाप से सुलझेगी नहीं।"

"अनन्ता! इसमें मैंने कोई कठिनाई की बात तो बताई ही नहीं। तुमको यह 'नोज पिन' दिलवाते समय मैंने क्या कोई त्याग की बात की थी?"

"मैं तो यही समझती थी।"

"यह तो तुम्हारी उदारता है, जो तुम ऐसा समझती हो। पर मैं सच कहता हूं कि इसमें मेरा निपट स्वार्थ छिपा हुआ है। मैं तुम्हारे मुख के सौन्दर्य की वृद्धि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर अपना मन प्रसन्न करना चाहता था। क्या यह कोई छोटा सा स्वार्थ है।"

अनन्ता को पति की आंखों में प्रेम की ज्योति प्रज्ज्वलित दिखाई दी तो वह सब समझ गई और उसके संशय का समाधान हो गया।

सानन्द ने पलंग पर लेटते हुए कहा, "स्त्री समानता चाहती है न? उसे समान कर्तव्य का भी पालन करना होगा। जिसके पास जो है वही तो दूसरे को दे सकता है।"

समर्थ के घर में परिवार के एकत्रित होने का यह फल हुआ कि समर्थ के दफ्तर में सुचाला हिसाब-किताब का कार्य करने लग गई। जब तक वह स्कूल की नौकरी करती रही सांयकाल चार घंटे ही वह कार्यालय को देती थी। बाद में उसने स्कूल की नौकरी छोड़ दी और पूरे समय कार्यालय में ही कार्य करने लगी। समर्थ का कार्यालय कोठी में ही था। उसने उसको तीन सौ रुपया मासिक वेतन देना आरम्भ कर दिया।

: 4 :

भारतवर्ष के वातावरण में यूरोपियन रहन-सहन की गंध समा रही थी। इस गंध का ही परिणाम था कि दाताराम और उसका भाई सीताराम एक साथ नहीं रह सकते थे। दाताराम के विवाह के पूर्व भी भाई-भाई में बनती नहीं थी। सीताराम आर्य समाज में रहने के बाद राजनीति क्षेत्र में आ धमका था। आर्य समाज ने एक बात की थी कि भारतीयों की पूर्ण मान्यताओं को और निष्ठाओं को युक्तिसागर में डुबो दिया था। भारतीय परम्पराओं और कथा-साहित्य को केवल मूर्खता और कल्पना-साहित्य स्वीकार कर उसके सार को भी त्याज्य मान लिया था। मन की इस अवस्था में राजनीतिक क्षेत्र में आया व्यक्ति लंगर टूटी नैया के सदृश मांझी के नियन्त्रण से बाहर हो गया इसी प्रकार सीताराम का जीवन बह निकला। सीताराम की पत्नी कीर्ति एक स्कूल-मास्टर की लड़की और बाल्यकाल से गांधीजी के असहयोग के आंदोलन में कार्य करने वाली स्वयं सेविका जब सीताराम के घर में आई तो अपने राजनीतिक क्षेत्र में प्रयोग होने वाली विद्रोह की प्रवृत्ति को फल-फूलने का क्षेत्र पा गई।

सीताराम चाहता था कि एक नास्तिक की लड़की को हवन-मन्त्र तथा संध्या के मन्त्र सिखाकर एक आर्य परिवार की संचालिका बना ले, परन्तु कीर्तिजी के मन में इन आडम्बर की बातों से आत्मा-परमात्मा, भाग्य और भावना पर आस्था तो दूर, प्रत्युत घृणा उत्पन्न हो गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह बात द्वितीय जर्मन युद्ध से बहुत पहले की थी। महात्माजी के असहयोग आन्दोलन के समय तो कीर्ति छः-सात वर्ष की कुमारी थी। उन दिनों उसको स्त्रियों से विदेशी कपड़े मांगकर उनकी होली करने में बहुत मजा आता था, परन्तु नमक सत्याग्रह में तो वह बिना लाइसेंस के नमक बनाने पर जेल-यात्रा कर आई। वहां वह प्रोढ़ावस्था की स्त्रियों के साथ रखी गई थी और जब दो मास की जेल-यात्रा कर घर आई तो कांग्रेस पर बैन लग चुका था और वह स्वयं सेवकों के साथ भूम्यान्तर्गत कार्य करने लग गई।

इन्हीं दिनों, जब पुलिस उसका पीछा कर रही थी । एक दिन उसको सीताराम के घर में भी छिपकर रहना पड़ा। इसके बाद ही कीर्तिदेवी का सीतारामजी से विवाह का प्रस्ताव हुआ और सगाई हो गई। यह तो घटना मात्र ही थी कि विवाह के एक दिन पूर्व सीताराम नमक-सत्याग्रह-आन्दोलन में पकड़ लिया गया और विवाह एक वर्ष के लिए स्थगित कर दिया गया।

विवाह के अगले दिन अपने आर्यसमाजी संस्कारो के कारण हवन-कुण्ड, घी ,समिधा इत्यादि एकत्रित कर पति-पत्नी हवन के लिए बैठ गये । सीतारामजी का भाई दाताराम भी नई भाभी के पास बैठा था।

कीर्ति तो दसवीं श्रेणी तक उर्दू पढ़ी हुई थी और सीताराम सातवीं श्रेणी तक उर्दू पढ़ा हुआ था। वह अपना कारोबार करता था। जब मन्त्रोच्चार के साथ आहुतियां पड़ने लगीं तो सीताराम के अशुद्ध मन्त्रोच्चारण पर कीर्तिदेवी को हंसी आ गई।

उस समय तो सीताराम चुप रहा। बाद में उसने अपनी पत्नी से हंसी का कारण पूछ लिया। कीर्तिदेवी ने बताया, "मन्त्रों के अशुद्ध उच्चारण के स्थान पर तो मन्त्रों का न बोलना ही ठीक रहेगा।"

"मन्त्रों में क्या रखा है।" सीताराम ने कह दिया, "वास्तविक बात तो भावना की होती है।"

"वह क्या होती है? बुद्धि से विचार की हुई बात ही सब कुछ है। भावना उनके अनुरूप ही होनी चाहिए।"

"देखिये, कीर्तिजी! परमात्मा के सम्पर्क में आत्मा को लाने के लिए कोई स्थान होना चाहिए। वेद-मन्त्र के उच्चारण में ऐसा होता है।"

"सब हवाई महल के समान निराधार है। न परमात्मा है न आत्मा। इससे दोनों का सम्पर्क मिथ्या है। अतः वेद-मन्त्रों का उच्चारण और वह भी अशुद्ध,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे कोई लाभ नहीं।"

आर्यसमाजी युक्ति विफल गई। सीताराम उत्तर नहीं दे सका। अतः हवन-संध्या का ढोंग समाप्त हुआ। यह वातावरण बना दाताराम के सज्ञान होने के दिनों में। वह कुछ हिन्दी उर्दू पढ़कर रुपया कमाने में लग गया। नास्तिक भाभी को देवर की मुफ्त रोटियां तोड़नी पसन्द नहीं आईं।

सीताराम के घर बच्चे होने लगे और सन् 1933 में आरम्भ कर सन् 1942 तक पांच बच्चे हो गये। दो लड़के और तीन लड़कियां। सबसे बड़ी लड़की थी माणिक्य और सबसे छोटा लड़का था कर्मवीर।

मन्दिर जाना और पूजा तथा कीर्तन आदि करना तो कीर्ति के आने से पूर्व ही इस घर में प्रचलित नहीं था। कीर्ति के आने के बाद हवन, संध्या, और कभी-कभी आर्यसमाज के अधिवेशन में जाना बन्द हो गया। इस पर भी सीताराम की कलाप्रिय आत्मा ने पुकार की और उसके बच्चे संगीत विद्यालय में संगीत सीखने लगे। इससे घर में सितार, तानपूरा, तबला खड़कने लगा और स....रे....ग....म....का स्वरालाप होने लगा।

कांग्रेस में पंडित जवाहरलाल का अधिक प्रभाव होने के कारण उनकी ऐतिहासिक मान्यताएं भी कांग्रसी परिवारों ने ग्रहण कर लीं। सम्राट अशोक, दीने इलाही का प्रवर्तक अकबर और इस्लाम का प्रबल समर्थक औरंगजेब देश के महापुरूष माने जाने लगे और महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, गुरुगोविन्दसिंह इत्यादी देशद्रोही और साम्प्रदायिक बन गये। मुहम्मद साहब संसार के महान सुधारक के रूप में प्रकट हुए माने जाने लगे और स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द इत्यादि मतान्ध पक्षपाती, रूढ़िवादी और प्रतिक्रियावादी कहे जाने लगे। इस विचारधारा में रंग चढ़ा मध्ययुगीन भक्ति और रीतिवाद की कविताओं का जो संगीत-विद्यालयों में संगीत के स्वरों में बांधकर विद्यार्थियों को सिखाये जाते थे।

चौदह वर्ष की कुमारी माणिक्य जब गाने लगी, 'मुख मोड़-मोड़ चली चपल नार।' तो युद्ध से बेकार हुए दाताराम जो अधिकांश समय घर में ही व्यतीत करता था, का मन चंचल होने लगा। लड़कियों का गीत सुन 'श्याम मुरारी, रंगभरी पिचकारी, रंग दीन साड़ी, तो बैठा ही रह जाता।

दाताराम की पत्नी अपने पति को अपने भाई की लड़कियों में अधिक रुचि लेते देख नाराज रहने लगी। वसन्तोत्सव पर सीताराम ने अपने घर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगीत-समारोह मनाया तो समारोह में मुख्य गायिका उनकी अपनी कन्या माणिक्य थी और उस संगीत में सबसे अधिक रूचि लेने वाले थे माणिक्य के चाचा दाताराम, तथा ईष्या से जलने वाली थी चाची सुचाला।

उसी रात दाताराम और उसकी पत्नी में प्रथम बार झगड़ा आरम्भ हुआ। झगड़े का निपटारा हुआ सीताराम के घर से पृथक मकान लेकर रहने में। युक्ति से यह बात दाताराम की समझ में आ गई थी कि वास्तव में माणिक्य का रूप-लावण्य, उसका मधुर स्वर और उसके राधा-कृष्ण की लीला के गीत, उसके मन को कलुषित करने वाले हैं और उसको इस घर से पृथक् जाकर रहना चाहिए। तदनुसार पृथक् मकान लिया गया, किन्तु खर्चा बढ़ गया और आय दिन-प्रतिदिन घटती गई।

सीताराम की पत्नी उससे रूष्ट हो गयी । पहले दाताराम घर के खर्च में अपने भाग के सौ रूपये तक दे देता था फिर लड़कियों को उनके बढ़िया गाने के उपलक्ष में भेंट-स्वरूप कुछ-न-कुछ लाकर वह देता रहता था। उसके पृथक मकान ले लेने से यह सब बन्द हो गया। कीर्तिदेवी का रोष सबसे अधिक सुचाला पर था। वह समझती थी वह उस औरत को विवाह कर उस घर में लाई और वही इस घर की एकता में बाधक बन बैठी है। सुचाला को दाताराम ने बताया कि भाभी उस पर रुष्ट है।

"क्यों मैंने क्या किया है उनका?"

"जो एक सौ रुपया मासिक उनको मुझसे मिलता था वह जो बन्द हो गया है।"

"परन्तु वह मैंने बन्द कराया है क्या?"

"तुम्हारे कहने पर मैंने पृथक् मकान लिया तो उसको खर्चा मिलना बन्द हो गया है।"

"यदि आपके पास है तो दे दीजिए। मैं आपको रोकती नहीं।"

"दो घरों का खर्चा मैं नहीं दे सकता।"

"तो इसमें मेरा क्या दोष है? मैंने जो कुछ किया है वह उनकी लड़कियों की रक्षा के लिए किया है। जब चौदह वर्ष की कुमारी कन्या आपके गले में बांह डालकर आपसे गाने का पुरस्कार मांगती थी तो मैं समझती थी कि वह गलत पथ पर चल रही है। उसको उस मार्ग से बचाने का ही तो यह प्रयास है।"

दाताराम के मन में चोर था। अतः वह इन्कार नहीं कर सकता था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाचा-भतीजी दोनों पतित हो सकते थे। फिर उनके घर में चर्चा भी होती रहती थी कि मुसलमानों में चाचा-भतीजी में विवाह वर्जित नहीं है। यह सब बातें स्मरण आने पर वह चुप हो जाता था।

जब दाताराम विवश हो गया और कमाई इतनी कम हो गई कि घर का खर्च चलना कठिन हो गया तो सुचाला ने ट्रेनिंग लेकर स्कूल में नौकरी कर ली। इस समय तक उसके भी दो बच्चे हो चुके थे। दूसरे बच्चे के जन्म के समय उसने अपने गर्भाशय का आपरेशन करवा लिया था।

स्वराज्य मिलने के बाद तो हालत बिगड़ती ही गई। महंगाई बढ़ने लगी। आय और व्यय साथ-साथ नहीं चल सके। दाताराम के परिवार का खर्चा बढ़ गया और पत्नी की आय पर भी घर का निर्वाह होने में कठिनाई होने लगी। परिणामस्वरूप पति-पत्नी में झगड़ा होने लगा। दाताराम ने अपना घर छोड़ दिया।

इन दिनों पंजाब से आये शरणार्थी झोंपड़ियां बनाकर बसने लगे। दाताराम भी स्वयं को शरणार्थी के रूप में मानकर उनकी ही भांती मेहनत करने लगा। प्रथम उसने सिगरेट बेचना आरम्भ किया और फिर धीरे-धीरे उसने कनाट प्लेस में एक स्टाल लगा लिया। इसके लिए उसको एक भागीदार भी मिल गया। उसका नाम मेलाराम था। दाताराम उसके झोपड़े में ही रहने लगा।

कुछ दिन तक यह चला। दोनों ने परिश्रम करके कुछ धन एकत्रित किया और रमेश नगर में एक सरकारी क्वार्टर चार हजार रुपये में ले लिया। क्वार्टर मेलाराम के नाम अलाट हुआ और वे दोनों उसमें रहने लगे। मेलाराम को विश्वास था कि दाताराम भी शरणार्थी है और उसके माता-पिता, भाई-बहन में से कोई नहीं है। वह विचार करने लगा कि उसके बहनोई के रूप में वह व्यक्ति अच्छा रहेगा। मेलाराम की बहन मलावी उस समय सोलह वर्ष की हो रही थी।

समय पर कनाट प्लेस की कॉर्नर शाप उठवा दी गई। तब दोनों ने मिलकर चांदनी चौक में पांच हजार पगड़ी देकर एक दुकान का हिस्सा ले लिया और कारोबार शुरू कर दिया।

इस समय दाताराम की जेब कटने की बात सामने आई और उसने अपनी पत्नी सुचाला को मार-पीटकर चूड़ियां ले और उनको बेचकर रुपया पूरा कर दिया।

उसके अगले दिन ही सुचाला की समस्या परिवार के सम्मुख आई तो पिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने सानन्द को अपने ही ढंग पर विचार करते देख उसे कहा, "अब सुचाला समर्थ के कार्यालय में काम करने लगी है, तुम उसके पति से उसकी सुलह करवा दो।"

"पिताजी! यह काम घर के पुरखों का है। मैं तो सभी से छोटा हूं। भला इस विषय में मैं क्या कर सकता हूं?"

"सानन्द! अकल बड़ी कि भैंस। देखो, उस दिन तुमने बातचीत में और सुचाला की समस्या को सुलझाने के लिए जो प्रयत्न किया है वह मैं अथवा तुम्हारा बड़ा भाई समर्थ भी नहीं कर सके थे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह कार्य भी तुम सफलतापूर्वक कर लोगे।"

सानन्द ने यत्न करने का वचन दिया और सुचाला से उसके घरवाले के मिलने का पता पूछने लगा। सुचाला ने कहा, "मैं तो जानती नहीं कि वे आजकल कहां रहते हैं। इस पर भी मेरा अनुमान है कि वे आजकल अपने बड़े भाई के पास उनकी कोठी 10 नम्बर ओरीजिनल रोड पर उनसे मिलने के लिए अवश्य जाते होंगे।"

"मैंने तो सुना था कि भाभी और देवर का आपस में झगड़ा हो गया है?"

"ठीक है, पर चाचा-भतीजियां तो नहीं झगड़े थे।"

"क्या मतलब?"

"भैया! तुम वहां जाओगे तो सब विदित हो जायेगा।"

इस सूचना ने तो सानन्द के मन में वास्तविकता जानने की उत्सुकता उत्पन्न कर दी। एक दिन वह समय निकाल अपने नित्य के समाचारों का 'डिस्पैच' तारघर से भेज, सीताराम के मकान पर जा पहुंचा।

मकान के नीचे खड़ा हो वह अभी यह जानने का यत्न ही कर रहा था कि वह उचित स्थान पर पहुंच गया है अथवा नहीं, उसी समय ऊपर की मंजिल से किसी मधुर स्वर में शुद्ध कल्याण के तानालाप के स्वर उसके कानों में पड़े।

गानेवाली कोई लड़की थी। गाना था—'पनियां भरन कैसे जाऊं, राह में खड़े गिरधारी।'

कितनी ही देर तक वह नीचे खड़ा सुनता रहा। गाना समाप्त हुआ तो 'वाह! वाह!' के शब्द उसके कानों में आये। इस समय सानन्द को अपने वहां आने का प्रयोजन स्मरण हो आया। मकान के नीचे उसी की भांति खड़े एक अन्य सज्जन से उसने पूछा, "यह किसका मकान है?"

उस व्यक्ति ने अनभिज्ञतासूचक संकेत कर दिया। इस समय एक अन्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्ति आ गया था और उसने सानन्द का प्रश्न सुन लिया था उसने देखा कि प्रश्नकर्ता को समाधानकारक उत्तर नहीं मिला है अतः उसने बताया, "यह लाला सीताराम का निवासस्थान है। वे ठेकेदारी करते हैं। इनकी छः लड़कियां हैं, सबकी सब बहुत अच्छा गाती हैं।"

सानन्द को सीढ़ियों के समीप बिजली की घंटी का बटन लगा दिखाई दिया। उसने आगे बढ़कर बटन दबाया। सूचना देनेवाला मुस्कराता हुआ अपनी राह चला गया।

घंटी की आवाज सुनकर किसी ने खिड़की में नीचे झांका। यह सीताराम स्वयं ही था। उसने आज कई वर्षों के बाद सानन्द को देखा था, इस पर भी पहचान कर उससे मिलने के लिए नीचे आ गया।

"आइए! आइए!! आज किस प्रकार रास्ता भूल पड़े आप?"

"आपसे कुछ आवश्यक कार्य था।"

"तो चलिये, ऊपर चलिये।"

"दातारामजी ऊपर हैं क्या?"

सीताराम गम्भीर हो गया। फिर कुछ विचार कर बोला, "आप ऊपर तो चलिये, आराम से बैठकर बातें करेंगे।"

"मैं देख रहा हूं कि ऊपर संगीत-गोष्ठी हो रही है। मेरे जाने से विघ्न न पड़ जाय।"

"जी नहीं, कोई विघ्न की बात नही है। आइये, अपका एक अन्य महापुरुष से परिचय करा दूंगा।"

सानन्द उसके पीछे-पीछे ऊपर चढ़ गया। उसने देखा कि बैठक में लगभग दस-बारह आदमी और छः-सात स्त्रियां बैठी थीं। सीताराम ने सानन्द को ले जाकर अपने पास बैठा लिया और एक प्रौढ़ावस्था के व्यक्ति की ओर संकेत कर बताया, "ये हैं विख्यात संगीतज्ञ श्री व्यासजी। आपने नाम तो सुना ही होगा।"

"जी हां। 'नीर भरन कैसे जाऊं, सखी री।' वही न?"

वह व्यक्ति हंसकर बोला, "हां! हां!! वही।"

इस पर सीताराम ने सानन्द का परिचय कराते हुए कहा, "ये हैं श्री सानन्द मिश्र, अनेकों समाचारपत्रों के प्रतिनिधि। हमारे सम्बन्धी भी हैं।"

"सानन्दजी! बहुत जल्दी न हो तो यहां ठहरिये। डे जी का संगीत होने वाला है। यह पहले सुदर्शन गा रही थी।" सीताराम ने अपनी दूसरी लड़की की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर संकेत कर बताया, "अब माणिक्य एक भैरवी गाकर सुनाने वाली है। फिर सुमन का नृत्य होगा, तदनन्तर श्री व्यासजी हमें कृतार्थ करेंगे।"

सानन्द इस निमन्त्रण को अस्वीकार नहीं कर सका। माणिक्य ने अपने तानपूरे से स्वरालाप आरम्भ किया। भैरवी का खयाल आरम्भ हुआ—सा...रे् स नि् ध् स। ध् नि् स रे—स रे् ग् रे् स—। इस प्रकार कुछ अलाप के बाद बोल होने लगे—

आज आये अलसाये नैन अटपट बोले बिगड़े बैन।
कहां बिताई सारी रैन देखत-देखत थके नैन।।

माणिक्य बहुत अच्छा गाती थी। सुर, ताल, लय का तो सानन्द को कुछ अधिक ज्ञान नहीं था। हां, स्वर की मिठास और पूर्ण संगीत का माधुर्य तो वह भी अनुभव करता था। केवल गाने के बोल का चयन उसे कुछ अच्छा प्रतीत नहीं हुआ। इस पर भी वह देख रहा था कि वातावरण सुखद और समाज सभ्य था।

माणिक्य का गाना समाप्त होने पर सुमन का नृत्य हुआ। उसमें सानन्द को कुछ अधिक उच्छृङ्खलता का आभास मिला। किन्तु नौ वर्ष की कुमारी के मन में भाव, नृत्य में प्रतिबिम्ब होना सम्भव नहीं, यह सोचकर सानन्द ने सन्तोष कर लिया। इसमें तो उसके शिक्षक की मनोवृत्ति का ही प्रदर्शन हुआ था।

अन्त में व्यास ने 'तू घूंघट के पट खोल। तोहे राम मिलेंगे।' यह गीत दरबारी कानड़ा में गाया।

समारोह सुन्दर रहा। फिर वहीं भोजन का आयोजन किया गया। इच्छा न होते हुए भी सीताराम के आग्रह पर और सुदर्शन सुमन के उसके दोनों ओर बैठकर हठ करने से उसको खाना पड़ गया।

रात के दस बजे सभा विसर्जित हुई। आगन्तुक-गण चले गये, तो सीताराम ने कहा, "हां, अब बताइये किस उपलक्ष्य में आज आपके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ है?"

"मैं दातारामजी की खोज में हूं। कई मास से वे घर पर नहीं जा रहे हैं। यों तो पहले भी वे प्रायः अनुपस्थित रहते थे, परन्तु अब तो उनका अता-पता ही नहीं मिलता। लगभग एक सप्ताह हुआ वे घर पर गये और बहन को मार-पीटकर उसके हाथ की चूड़ियां उतार लाये थे। मैं तब से ही उनकी खोज में था। मैं पूर्ण घटना का कारण जानना चाहता था जिससे कि वैमनस्य के कारण का ज्ञान कर उसे दूर किया जा सके।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीताराम विस्मय में सानन्द का मुख देखने लग गया। कीर्तिदेवी ने अपने पति को चुप देख कहा, "हमें तो आपकी बहन से गिला है। दोनों भाई इकट्ठे रहते थे। सुख-दुःख में एक-दूसरे के साथी थे। न जाने सुचाला के मन में क्या समाया कि अपने पति को लेकर वह पृथक् रहने लग गई।

"दाताराम के विषय में तो हम कुछ भी नहीं जानते।"

सीताराम ने कहा, "मुझे उससे इतनी अभद्रता की आशा नहीं थी। मैं कल उसका पता लगाने का यत्न करूंगा, और यदि मिल गया तो आपको सूचित कर दूंगा। आजकल उसका कमीशन का कार्य कुछ ढीला अवश्य था। जब से यह परमिट सिस्टम लागू हुआ है, गरीब और ईमानदार आदमी के लिए तो बड़ी कठिनाई आ उपस्थित हुई है। भगवान जाने, वह कहां होगा और किस प्रकार का जीवन व्यतीत कर रहा होगा।"

"अच्छा ऐसा करिये। यदि वे मिलें तो उनसे कहिये कि वे दरियागंज में मुझसे मिल लें। मैं और पिताजी उनकी गाड़ी को पुनः पटरी पर लाने का यत्न करना चाहते हैं।"

"मैं अवश्य कहूंगा।"

जाने से पूर्व सानन्द ने कहा, "मैंने सुन तो रखा था कि मणिक्य गाना सीखती है, किन्तु सुनने का सौभाग्य आज ही प्राप्त हुआ है। यह तो बहुत ही अच्छा गाती है।"

"सत्य कहते हैं?" माणिक्य ने पूछा।

"हां, उस दिन तालकटोरा क्लब में हीराबाई बरोडकर को भी सुना था। मैं समझता हूं कि यदि तुम निरन्तर अभ्यास करती रहीं तो निश्चित ही उससे अधिक सफल हो जाओगी।"

माणिक्य को इस बात ने आन्दोलित कर दिया। बड़ी प्रेममय मुस्कान से वह सानन्द को देख रही थी। सीताराम ने कहा, "इसकी मां तो इसके विवाह का प्रबन्ध कर रही है?"

"इससे क्या होता है? जो स्वाभाविक प्रवृत्तियां हैं, वे विवाह से रुक थोड़ी जाती है?"

: 6 :

दाताराम मिला नहीं। उसको ढूंढ़ निकालने का अन्य कोई साधन भी नहीं था। आजकल सानन्द अपने बड़े भाई के घर चला आया था। उसके माता-पिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी वहीं थे और सुचाला को तो स्थायी रूप से उसी कोठी में रहने के लिए स्थान मिल गया था, परन्तु सानन्द का काम-धन्धा ऐसा था कि उसको स्वयं भी और फिर उसके लिए उसके भैया-भाभी को भी विशेष कष्ट होता था। भैया की गाड़ी उसको कोठी में ले आने के लिए उसके पीछे-पीछे भागा करती थी और इससे वह स्वयं भी अपनी स्वतन्त्रता में बाधा अनुभव करता था।

उसका कार्य प्रातः नई दिल्ली और कभी-कभी दिल्ली से बाहर रहता था। पुरानी दिल्ली की ओर गये तो कई वर्ष हो चके थे। एक दिन वह दिन के समय अपने किसी मित्र को दिल्ली स्टेशन पर विदा करने के लिए गया तो मन में कुछ कंजूसी का विचार आया कि कम्पनी बाग में से होता हुआ चांदनी चौक से तांगा कर काजी हौज ओर फिर नई दिल्ली चार आने में पहुंच जाएगा। वैसे सीधे स्टेशन से जाने पर टैक्सी में ढाई रुपया और तांगे में सवा रुपया लगता था।

इस प्रकार वह घण्टाघर से पटरी पर चलता हुआ फतहपुरी की ओर जा रहा था कि उसकी दृष्टि दाताराम पर पड़ गई। वह एक दुकान पर बैठा ग्राहकों को सामान दिखा रहा था। सानन्द दुकान पर खड़ा हो गया। दाताराम ने देखा तो उसके हाथ की वस्तु गिर पड़ी, और वह अवाक् अपने साले की ओर देखता रह गया। उसको इस प्रकार चुप देख सानन्द ने कहा, "जीजाजी! नमस्ते।"

आखिर दाताराम के मुख से निकला, "आइये सानन्दजी!"

ग्राहकों के सम्मुख उसे लज्जित न करने के लिए सानन्द ने कहा, "एक पॉण्ड्स क्रीम की शीशी दे दीजिये।"

दाताराम की जान में जान आई। उसने कहा, "कैसी चाहिए?"

"पहले इनको दे दीजिए।"

दाताराम ग्राहकों को सामान दिखाने लगा। इस समय मेलाराम आ गया। सानन्द के विषय में वह कुछ नहीं जानता था, इस कारण उसे ग्राहक समझकर कहा, "कहिये बाबूजी! आपको क्या चीज चाहिए?"

"बताया है।" सानन्द ने समझा कि यह इस दुकान का मालिक होगा। मेलाराम ने दुकान पर बैठते हुए कहा, "इन बाबू साहब को दे दो।"

दाताराम ने अन्य ग्राहकों को मेलाराम की ओर कर दिया ओर क्रीम की चार-पांच छोटी-बड़ी शीशियां निकालकर उसने सानन्द को दिखा दीं। सानन्द ने कोल्ड-क्रीम की बड़ी शीशी उठाते हुए कहा, "क्या मूल्य है इसका?"

"एक रुपया बारह आना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सानन्द ने पांच रुपये का नोट देते हुए कह दिया, "दाताराम जी! मैं तो आप से कुछ बात करने के लिए आया था।"

दाताराम ने क्रीम का पॉट वापस लेते हुए कहा, "तो यह नहीं चाहिए न?"

सानन्द ने क्रीम लेते हुए कहा, "यह तो चाहिए ही, आपकी भी आवश्यकता है।"

दाताराम हंस पड़ा। उसने मेलाराम को पांच रुपये का नोट देते हुए कहा, "तीन रुपये चार आने इनको दे दीजिये। और मैं अभी कुछ देर में आता हूं।"

सानन्द को अवशिष्ट पैसे मिले तो दोनों दुकान से चल पड़े। चलते हुए दाताराम ने पूछा, "किधर चलें?"

"कितना समय है आपके पास?"

"क्यों, थाने चलना होगा क्या?"

"थाने? किसलिए?"

"आपकी बहन की चूड़िया ले आने के सम्बन्ध में।"

"दातारामजी! बहन आपको दे रखी है। साथ ही चूड़ियां भी। इसलिए इस विषय में तो आप जानिये और वे जानें। मैं तो एक अन्य विषय पर बात करने के लिए आया था।"

"कहाँ चलकर बात होगी?"

"अच्छा ठहरो।" सानन्द ने कहा और समीप खड़ी एक टैक्सी बुलाकर कहने लगा, "अभी आपको यहीं छोड़ दूंगा।"

टैक्सी में बैठे दोनों फ्रेंड्स कालोनी जा पहुंचे। सुचाला मोटर गाड़ी पर काम के निरीक्षण के लिए गई हुई थी। सानन्द ने टैक्सी को वहीं खड़ी रहने दिया। दाताराम को लेकर वह कोठी के ड्राइंग-रूम में चला गया। वहां पहुंच उसने घंटी बजाई। बैरा आया तो उसने कहा कि भाभी को जाकर बता दे कि हम चाय पीने के लिये आये हैं।

दाताराम सानन्द का मुख देख रहा था। उसकी उत्सुकता शान्त करने के लिए सानन्द ने बात आरम्भ की, "आप इस दुकान पर नौकरी करते हैं क्या?"

"नहीं, मैं पत्तीदार हूं।"

"और रहते कहां हैं?"

"रमेश नगर में एक मकान मोल ले लिया है।"

"कितने का?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पांच हजार रुपये का। वह भी साझे में ही है।"

"इसी व्यक्ति के साथ?"

"जी हां।"

"अच्छा इधर आइये।" सानन्द दाताराम को सुचाला के कमरे में ले गया। सुचाला की लड़की जो इस समय तीन वर्ष की हो गई थी, वहां पर बैठी खेल रही थी। अपने पिता को वहां आया देख वह विस्मय से उसका मुख देखने लगी।

दाताराम ने उसको देखा तो उसने पुकारा, "मोहिनी?"

लड़की "भापाजी! भापाजी!' कहती हुई उससे लिपट पड़ी।

सानन्द ने कहा, "देखिए, यह कमरा सोने के लिए है। साथ का यह कमरा सिटिंग-रूम है। इसके साथ ही शौच और स्नान के लिए सुविधा है। अब बताइए, यह कमरा उससे अच्छा है कि नहीं? मेरा अभिप्राय रमेश नगर वाले कमरे से है।"

"और देखिए, इधर आइये।" वह उसको कमरे के दूसरे द्वार से कोठी की लॉन में ले गया। फिर कहने लगा, "मैं समझता हूं कि ऐसी सुन्दर और कोमल घासवाला लॉन तो वहां होगा ही नहीं।

"यह तो ठीक है सानन्दजी! परन्तु यह पराई है और वह अपनी।"

"जीजाजी! दुनिया एक सराय है। कौन कितने दिन के लिए यहां आता है और फिर कब उसको यहां से चला जाना पड़ता है, कहा नहीं जा सकता। इन थोड़े-से दिनों के लिए भी अपने और पराये का विचार करना क्या उचित है?"

"फिर भी, वहां से कोई हमें निकाल तो नहीं सकता!"

"यहां से भी आपको कोई निकालेगा नहीं। आपको यह तो विदित ही होगा कि यह समर्थ भापा की कोठी है। आइए, चाय आ गई है।"

वह उसको पुनः ड्राइंग-रूम में ले गया। वहां सानन्द की मां और भाभी उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। निपुणा ने दाताराम की पीठ पर हाथ फेर प्यार देते हुए कहा, "सानन्द! कहां से पकड़ लाये हो इनको?"

"माताजी! मैंने कहा चलिये और ये आ गये हैं। इनको समझा रहा था कि इनके मकान से यह स्थान अच्छा है, ये यहां आकर रहने लगें। ये कहने लगे कि वह मकान इनका अपना है, वहां से कोई इनको निकाल नहीं सकता और मैं कह रहा था कि संसार रूपी सराय में अपना तो कुछ भी नहीं है और यहां से भी इनको कोई निकालेगा नहीं। क्यों भाभी! मैंने कुछ गलत तो नहीं कहा न?"

सारी बात न समझते हुए भी सन्तोष ने कह दिया, "जीजाजी! देखिए,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्नी और मकान कभी भी भाड़े के ठीक नहीं रहते। यह तो आपका अपना है, कहिए तो लिखकर दे दूं?"

दाताराम ने हंसते हुए कहा, "बहन जी! मैंने तो सानन्द को बताया है कि वह भी अपना है। कदाचित् इससे अधिक अपना है।"

सानन्द ने बताया, "भाभी! ये कहते हैं कि किसी की साझेदारी में इन्होंने रमेशनगर में एक मकान लिया है। चांदनी चौक में उसके साथ ही साझेदारी में दुकान भी करते हैं। मैं तो केवल यही बता रहा था कि वह मकान इससे छोटा और घटिया होगा।"

"और फिर यहां सुचाला भी तो रहती है।"

"यहां रहती है? क्यों?"

"उसने स्कूल की नौकरी छोड़ दी है। जब वह अपने भाई के कार्यालय में काम करती है। उसने वह पहाड़गंज वाला मकान भी छोड़ दिया है।"

"यह तो सब ठीक है। पर मैंने उसको छोड़ दिया है।"

"चूड़ियां उतार ले जाने के बाद?"

"नहीं, पहले ही। चूड़ियां तो जरूरत थी, इसलिए ले गया था।"

"चोरी हुए रुपयों को भरने के लिए ही जरूरत थी न?"

इस पर दाताराम हंस पड़ा। वह चाय पी रहा था। निपुणा और संतोष सानन्द को ही बात करने देना चाहते थे। उन्हें उसके बात करने का ढंग उचित प्रतीत हुआ था। दाताराम को हंसता देख इसका अभिप्राय समझने के लिए सानन्द ने कहा, "आपकी तो जेब कतरी गई थी न?"

"हां, हां। परन्तु जेब कतरनेवाली थी आपकी बहन सुचाला और उससे हुए घाटे की पूर्ति के लिए मैं उसकी चूड़ियां ले गया था।"

"हमें तो सुचाला ने एक दूसरी बात बताई थी!"

"तो जो उसने बताई होगी वह उसकी दृष्टि में ठीक होगी। परन्तु मैं आपको अपनी दृष्टि से बताता हूं। सुचाला ने मुझे भाई के घर से निकाला और मेरी मुसीबत आरम्भ हुई। उसने अध्यापिका का कार्य आरम्भ किया तो मेरा गृहस्थ-जीवन बरबाद हुआ। मैं घर आता तो झगड़ा हो जाता। इससे मैंने घर आना छोड़ दिया। इस कारण नई घर-गृहस्थी बनानी पड़ी। मुझे अपनी नई पत्नी के लिए आभूषणों की आवश्यकता थी इस कारण सुचाला की चूड़ियां लेकर उसके लिए कंठी बनवा दी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बात को सुनकर तो वे तीनों टुकुर-टुकुर दाताराम का मुख देखने लगे। सबसे प्रथम सानन्द ने अनुभव किया कि बात बिगड़ गई है। इस पर भी उसने साहस नहीं छोड़ा और बोला, "इसका अभिप्राय हुआ आपने हमारी एक और बहन बना दी है?"

"बहन! जी नहीं आपकी बहन की सौतन।"

"एक ही बात है। देखिए, जैसे मैंने सुचाला के मकान और रमेशनगर वाले मकान का अन्तर बताने का यत्न किया है इसी प्रकार एक पत्नी और दूसरी पत्नी में भी तुलना कर लीजिए।"

जैसे रमेशनगर वाले मकान का रुपया खर्च हो जाने पर दोनों मकान रखे जा सकते है, वैसे ही, यदि दूसरी पत्नी से विवाह हो चुका है तो दोनों रखी जा सकती हैं। क्यों, क्या विचार है?"

"मकान और पत्नी में अन्तर है। दो मकान रखने तो सम्भव हैं, न रखने हों तो एक भाड़े पर दिया जा सकता है अथवा बेचा जा सकता है। परन्तु पत्नी तो भाड़े पर नहीं दी जा सकती और दो रखने पर झगड़ा बढ़ जायेगा।"

"अच्छा देखिए जीजाजी! आप अपनी पत्नी को लेकर यहां आइये। हम आपको निमन्त्रण देते हैं। बोलो, कब ला रहे हैं?"

"दूसरा विवाह होने में अभी कुछ दिन हैं। उसके बाद ही आपके निमन्त्रण पर विचार किया जा सकता है।"

' विवाह यहां दिल्ली में ही हो रहा है क्या?"

"क्यों, क्या वहां भांजी मारने का विचार है?"

"वह क्या होती है?"

"जाकर यह कहना कि मेरी पहले भी एक पत्नी है।"

"तो यह आपने उनको बताया नहीं है?"

"उन्होंने पूछा नहीं मैंने बताना आवश्यक नहीं समझा।"

"यह तो ईमानदारी नहीं, दाताराम जी!"

"इसमें बेईमानी भी क्या है?"

"यही की जब लड़की वालों को आपके पूर्व विवाह और दो बच्चों के होने का समाचार मिलेगा तो वे बहुत नाराज भी हो सकते हैं। सुचाला अपने बच्चों के लिए गुजारा भी मांग सकती है।"

"बात यह है कि जैसे आप अब सुचाला की अवस्था जानते हुए भी मेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पत्नी को निमन्त्रण देने के लिए तैयार हो गए है, वे भी विवाहोपरान्त मेरी पहली पत्नी के विषय में सन्तोष कर लेंगे।''

''मेरी बात मानिये, अपने श्वसुर से बात कर लीजिए। उनको नाराज होना होगा तो पहले ही हो लेंगे। बाद की बात तो अति भयंकर भी हो सकती है। आप पर धोखादेई का अभियोग भी चलाया जा सकता है। हमारी ओर से तो आप दो नहीं पांच विवाह कर लीजिए। हम आपको जीजाजी मानते हैं तो आपकी पत्नियों को बहन ही कहेंगे।

''मैं आपसे मिलता रहूंगा और यदि इस नवीन विवाह में कुछ हमारी सहायता की आवश्यकता पड़े तो यथासम्भव हम कर देंगे।''

सानन्द उठ पड़ा। दोनों ड्राइंग-रूम से निकले तो सुचाला मोटर से उतरती दिखाई दी। वह स्वयं ही अपनी मोटर चला रही थी। उसने बरामदे में अपने पति और सानन्द को खड़ा देखा तो विस्मय में देखती रह गई।

दाताराम कह रहा था, ''चलिए, मेलारामजी को माल खरीदने के लिए बाजार जाना है। वे मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे।''

''सुचाला से भेंट भी नहीं करेंगे क्या?''

''भेंट कर लेते हैं, शेष समाचार आप ही उसको वे दीजियेगा।''

दोनों बरामदे से नीचे उतर आये। सुचाला भी सचेत हो गई थी। वह सामने आई और नमस्कार कर खड़ी हो गई। दाताराम ने औपचारिक रूप में पूछ लिया, ''माधव कहां है?''

''स्कूल गया है।''

''अच्छा, इस समय तो मैं जल्दी में हूं, फिर कभी समय मिलने पर आऊंगा।''

दोनों टैक्सी में बैठ चांदनी चौक आ गये। जब दाताराम दुकान पर चढ़ने लगा तो सानन्द ने हाथ जोड़ते हुए कहा, ''अच्छा जीजाजी, नमस्कार! इस समय मैं चलता हूं। एक-दो दिन में फिर मिलूंगा।''

दाताराम ने उत्तर में केवल हाथ जोड़ दिये। सानन्द उसी टैक्सी में सवार हो अपने घर चला गया।

: 6 :

मेलाराम ने सानन्द को नमस्ते करते समय दाताराम को 'जीजाजी' कहते सुन लिया था। इससे उसके कान खड़े हो गये थे। जब सानन्द चला गया तो उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाताराम से पूछा, "यह कौन था?"

"मेरा मित्र है।"

"यह तो तुमको जीजाजी कह रहा था।"

"मजाक कर रहा था।"

"मजाक?" मेलाराम ने प्रश्न-भरी दृष्टि से दाताराम की ओर देखते हुए कहा।

दाताराम ने कह दिया, "भापा! बाजार जा रहे हो क्या?"

"हां, दो-ढाई घन्टे लग जावेंगे।" यह कहकर मेलाराम दुकान से नीचे उतर आया। किन्तु सानन्द से 'जीजाजी नमस्ते!' वाला वाक्य उसके मस्तिष्क में चक्कर काट रहा था।

मेलाराम को दुकान का माल खरीदने के लिए सदर बाजार जाना था। इस कारण वह खारी बावली से होता हुआ कुतुब रोड पुल की ओर जा रहा था। एकाएक उसे लगा कि जीजा होने का मजाक तभी हो सकता है जब दाताराम की कोई पत्नी हो। विवाहित हो अथवा अविवाहित। इसमें कुछ अन्तर नहीं पड़ता। देखने की बात तो यह है कि दाताराम का उस औरत के प्रति कितना लगाव है।

अब तक तो मेलाराम दाताराम को अविवाहित ही मानता था और इसी कारण उसने अपनी बहन मलावी का विवाह उसके साथ करने का विचार कर रखा था। इस नई बात से मस्तिष्क में मलावी के विवाह का प्रश्न उपस्थित हो गया। वह जानता था कि दाताराम परिश्रमी और समझदार युवक है। इस पर भी अभी तक दोनों में मकान और दुकान में भागीदार होने की कोई लिखत-पढ़त नहीं हुई थी। दुकान का किरायेदार वह स्वयं था और पुनर्वास मन्त्रालय ने रमेशनगर वाला मकान भी उसके नाम पर ही दिया था। इससे वह विचार कर रहा था कि दाताराम को तो वह मक्खन में से बाल की भांति निकाल सकता है। इस पर भी यदि बहन से उसका विवाह करना है तो उसको धोखा देने की आवश्यकता नहीं थी। उसकी अपनी सन्तान न होने के कारण अपने बहनोई को ही अपना उत्तराधिकारी मानने में भी उसको कोई आपत्ति नहीं थी।

दाताराम ने ही विवाह की बात आरम्भ की थी। सबसे पहल मलावी से बात हुई। उसने मलावी से कहा कि वह उसे भाई साहब न कहा करे। क्योंकि वह उससे विवाह करना चाहता है। मलावी ने कहा, "तो भैया से कहो न!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कह दूंगा। परन्तु तुम सावधान रहो।"

इसके बाद मेलाराम की पत्नी कृपालकौर से बात हुई। दाताराम ने एक दिन अवसर पाकर कह दिया, "भाभी! मलावी का विवाह कर दो न?"

भाभी का उत्तर था—"अभी तक तो इसके हाथ पीले करने के लिए साधन ही नहीं थे। अब तुम लोग कुछ कमाने लगे हो तो इस विषय में विचार करना पड़ेगा। लड़का मिलते ही बताऊंगी।"

"लड़का तो है, यदि तुम मान जाओ तो।"

"कौन है?"

"मैं मलावी से विवाह करना चाहता हूं।"

एक क्षण तक तो कृपालकौर विचार करती रही; फिर बोली, "इसके भाई से बात कर लो। मुझे तो कोई आपत्ति नहीं है।"

मेलाराम से भी बात हुई। कृपालकौर ने स्वयं की और दाताराम के काम में पत्तीदार होने के कारण यह सम्बन्ध सुविधाजनक प्रतीत हुआ। मेलाराम ने दाताराम से बात कर विवाह की तैयारी आरम्भ कर दी। दाताराम के मन में आया कि अपनी पत्नी सुचाला से अपना अन्तिम अधिकार प्राप्त कर लेना चाहिए। अतः वह उसके हाथ से सोने की चूड़ियां उतारकर ले आया। उनको तुड़वाकर उसने सोने की कण्ठी बनवा दी। कुछ रुपए दुकान से लेकर अपने और मलावी के कपड़े बनवा लिये। ज्योतिषी से मुहूर्त निकलवा लिया गया। अभी विवाह करने के लिए एक सप्ताह का समय रहता था कि मेलाराम के कानों में सानन्द के शब्द पड़ गए। मेलाराम कुतुब रोड के पुल पर खड़ा होकर विचार करने लगा। उसने सोचा कि कोई बात करने से पूर्व अपनी पत्नी से विचार-विनिमय कर लेना चाहिए। अतः सदर बाजार की ओर जाने की अपेक्षा वह रमेशनगर जा पहुंचा।

मलावी सिर धोकर मकान के सेहन में बैठी बाल सुखा रही थी और कृपालकौर चौका-बासन कर रही थी। अपने पति को इस समय धर पर आया देख वह चिन्ता अनुभव करने लगी। उसने पूछा, "इस समय कैसे आ गये? तबीयत तो ठीक है?"

"हां, ठीक हूं। तुमसे एक बात करनी ज़रूरी थी, इसलिए चला आया हूं।"

"यह बात रात को नहीं हो सकती थी क्या?"

"नहीं, वह अभी करनी आवश्यक थी।" इस पर उसने सानन्द के आने,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाताराम को साथ ले जाने तथा एक घन्टे के बाद लौटा लाने ओर फिर जाते समय जीजाजी कहकर दाताराम को सम्बोधित करने की बात बता दी।

"तो आपका विचार है कि उसका विवाह पहले ही हो चुका है?"

"हां।"

"परन्तु सम्भव है पत्नी का देहान्त हो चुका हो?"

"मेरे मन में यह बात आई थी। इसी विचार से मैंने जब उससे पूछा तो उसने बताया कि वह युवक उसके साथ मजाक कर रहा था। इसलिए मैं समझता हूं कि यदि उसकी पत्नी का देहान्त हो चुका होता, तो उसे स्वीकार करने में कोई हानि नहीं थी। मुझे तो अब इस सम्बंध में कुछ संदेह होने लग गया है।"

"यदि आप ऐसा समझते हैं तो यह विवाह नहीं होना चाहिए। मैं आपको एक लड़का और बता सक्ती हूं।"

"कौन है वह?"

"यही रमेश नगर में रहता है, सरकारी दफ्तर में नौकर है और एम. ए. तक पढ़ा हुआ है।"

"मैं आज रात उससे पूछ लेता हूं।"

"परन्तु वह झूठ बोल सकता है। मैं समझती हूं कि आप उस युवक का पता करिए जो उससे मिलने के लिए आया था। ठीक-ठीक बात उससे ही मालूम हो सकेगी।"

"वह तो कह गया है कि वह दो दिन बाद पुनः उससे मिलने के लिए आयेगा, परन्तु यदि विवाह तक न आया तो?"

"दो दिन में पता करना चाहिए और इस पर भी यदि वह युवक न मिले तो विवाह स्थगित कर देना चाहिए।"

मेलाराम दुकान के काम से लौट गया। कृपालकौर चिन्तामग्न हो गई। मलावी को अपने भाई का मध्याह्न के समय आना और शीघ्र ही लौट जाना विचित्र प्रतीत हुआ। साथ ही वह जब अपनी भाभी के पास आई तो उसे चिन्तित देख पूछने लगी, "भाभी! भैया क्यों आये थे?"

"ऐसे ही।"

"और तुम्हारा मुख क्यों उतर गया है?"

"नहीं तो।"

"कुछ पीला-पीला मालूम होने लगा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तुम्हारा भ्रम है। जाओ! कोई बात नहीं है। अपना काम करो।"

मलावी को इससे सन्तोष नहीं हुआ। उसके मन में चोर था। वह दाताराम से पत्नी का सम्बन्ध बना चुकी थी और वह डर रही थी कि इस रहस्य का ज्ञान उसके भाई-भाभी को हो गया है। वह चली तो गई और दाताराम के कमरे की सफाई करने लगी। वह अभी से यह समझ रही थी कि जो काम अब वह केवल औपचारिकता के नाते कर रही है एक सप्ताह बाद उसे ही वह मालिक के रूप में करना होगा। वह दाताराम के कमरे को अपना कमरा मानकर उसकी सफाई और सजावट में संलग्न रहती थी। उस कमरे में जाकर वह चुपचाप उसके पलंग पर लेट विचार करने लगी कि भैया ने यदि उसके इस कार्य को करने पर डांटा तो वह क्या करेगी। इन्हीं विचारों में वह लेटी तो उसको नींद आ गई।

दो दिन हुए कृपालकौर के पास पड़ोस के सरदार दिलीपसिंह की पत्नी अपने लड़के नरेन्द्रसिंह से मलावी के विवाह की बात करने आई थी। उस दिन तो उसने टाल-मटोल किया था परन्तु आज एकाएक उसको समझ आया कि दाताराम का विवाह हो चुका है और उसकी पत्नी जीवित है। इस बात की सत्यता का एक प्रमाण यह भी था कि वह कभी-कभी दो-दो, तीन-तीन दिन रात को उनके घर सोने के लिए नहीं आता था। यह ठीक है कि पिछले ढाई-तीन मास से वह निरन्तर यहीं रहा था। परन्तु आज एक युवक का वहां आकर उसको साथ ले जाना और उसको उसका जीजाजी सम्बोधित करना तो उसके सन्देह की पुष्टि ही करने वाला सिद्ध हुआ। उसके अपनी पत्नी के पास न जाने के कारण ही ऐसा हुआ होगा। ऐसा विचारकर वह उठी और सरदार दिलीपसिंह की पत्नी से मिलने के लिए चल पड़ी।

वहां पहुंच उसने लड़के और उसके मां-बाप के विषय में पूर्ण परिचय प्राप्त किया। इससे दिलीपसिंह की पत्नी के मन में आशा बंध गई कि उसके लड़के की सगाई हो जाएगी। सुवर्णकौर ने बढ़ा-चढ़ाकर अपनी, अपने पति तथा लड़के की प्रशंसा की। यह सुनकर कृपालकौर को दाताराम के साथ सम्बन्ध स्थापित होने का खेद होने लगा। मलावी अभी भी दाताराम के कमरे में सो रही थी। उसे इस प्रकार निश्चिन्त भाव से सोई देख वह चिन्ता करने लगी।

सांयकाल चाय के समय उसने अपनी ननद को कह ही दिया, "मलावी! विवाह से पूर्व उसके कमरे में इस प्रकार तुम्हारा लेटना अच्छा नहीं लगता।"

"इसमें क्या अन्तर पड़ता है भाभी जी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुछ तो लज्जा करो मलावी! कोई देख लेगा तो क्या कहेगा?"

"क्या कहेगा?"

"यही कि विवाह से पहले ही तुम दोनों का परस्पर सम्बन्ध है।"

"तो फिर क्या होगा?"

"यह तो निन्दा की बात मानी जाती है।"

"पर भाभी! विवाह तो होने वाला ही है। इसलिए आज जो निन्दा की बात मानी जाती है कल वही प्रशंसा की हो जाएगी।"

"क्या जाने यह सम्बन्ध न बन सके।"

"क्यों?"

"कोई इससे अच्छा लड़का भी तो मिल सकता है।"

मलावी इससे स्तब्ध रह गई। अपने मन की बात वह बता नहीं सकी। इस विषय में कुछ बताने से पूर्व वह दाताराम से बात करना चाहती थी। परन्तु दो दिन तक उसको दाताराम से एकान्त में मिलने का अवसर ही नहीं मिला।

इसी बीच एक और घटना घटी। दिलीपसिंह की पत्नी मेलाराम और उसकी पत्नी का विचार जानने के लिए उसके घर आई। कृपालकौर ने कह दिया, "हम इस विषय पर विचार कर रहे हैं। एक दो दिन में आपको बता देंगे।

मलावी इन दोनों की बातें सुन रही थी। उसकी समझ में आ गई थी कि उसकी सगाई कहीं अन्यत्र करने का विचार किया जा रहा है। इससे उसने अपने मन में निश्चय कर लिया कि उस रात वह दाताराम से बात कर अनिश्चित स्थिति को निश्चित करने के लिए कहेगी।

अगले ही दिन दुकान पर भी एक अन्य घटना घटी। सानन्द दाताराम से मिलने के लिए आया तो वह दुकान पर नहीं था। मेलाराम बैठा था। सानन्द ने उसे नमस्कार कर पूछा, "दाताराम जी कहां है?"

"बाजार गया है। कहिये, क्या काम है?"

"उनसे ही काम था।"

"उनसे आपका क्या सम्बन्ध है?"

"वे मेरे बहनोई हैं।"

"सगी बहन है आपकी?"

"जी।"

"तो क्या दोनों में परस्पर कुछ अनबन है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां, कुछ भ्रम हो गया है। मैं यत्न कर रहा हूं कि दोनों में सुलह हो जाय।"

"बहुत नालायक है दाताराम। मैं उसको समझाऊंगा। कोई बाल-बच्चा है क्या?"

"दो बच्चे हैं?"

"आप कहां रहते हैं?"

"मैं तो सात नम्बर दरियागंज में रहता हूं। मेरा नाम सानन्द है।"

"बैठिये, वह एक घंटे तक लौट आवेगा।"

"अभी तो मैं चलता हूं। उनको कहिये कि वे आज रात मुझसे मिल लें। मैं सात से नौ बजे तक घर पर ही रहूंगा।"

"कह दूंगा।"

सानन्द के जाने के कुछ क्षणों के बाद दाताराम लौट आया। उसके बैठने से पूर्व ही मेलाराम कहने लगा, "वही तुम्हारा साला आया था। वह कह गया है कि शाम को सात बजे तुम उसके घर दरियागंज में जरूर पहुंच जाना। तुम्हारी पत्नी वहां तुमसे बात करने के लिए बैठी है।"

दाताराम परेशानी में मुख देखता रह गया। फिर कुछ निश्चिन्त सा हो कहने लगा, "देखो भापा! न तो मेरी कोई पत्नी है और न कोई साला ही।"

"दाताराम! या तो तुम झूठ बोल रहे हो या वह झूठ बोल रहा है। उचित तो यही है कि अभी जाओ और उन चलते-फिरते बहनोई बनानेवाले को यहां ले आओ। अन्यथा मलावी की सगाई तो टूटेगी ही, तुम्हारा दुकान और मकान से सम्बन्ध भी टूटेगा।"

"पर क्या तुमने उस अपरिचित व्यक्ति का विश्वास कर लिया है?"

"नहीं जी, विश्वास नहीं किया। इस पर भी सन्देह तो किया ही है। उस सन्देह का निवारण तुम ही कर सकते हो। उसके लिए मैं तुमको चौबीस घण्टे का समय देता हूं। तब तक तुम न तो दुकान पर बैठ सकोगे और न ही घर में घुस सकोगे।"

दाताराम दुकान से उतर पटरी पर खड़ा हो विचार करने लगा। उसे यही समझ आया कि सानन्द ने निश्चित ही जान-बूझकर यह रहस्य खोला है। उसको ढूंढ़ना चाहिए और फिर उसे दुकान पर लाकर मेलाराम को सन्तोष कराना चाहिए।

यह विचार कर वह दरियागंज की ओर चल पड़ा, किन्तु उसका मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीतर-ही भीतर बैठा जा रहा था। वह मन में विचार करने लगा कि सानन्द भला यह क्यों कहने के लिए आयेगा कि उसने पहले झूठ बोला था। अपना वहां जाना व्यर्थ ही समझ वह अटक गया। परन्तु इसके अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग न देख वह पुनः चल पड़ा। उसने अपनी घड़ी में देखा कि सात बजनेवाले है। इससे उसे सन्तोष हुआ। वह सानन्द के घर जा पहुंचा। अनन्ता अपने बच्चे को गोद में लिए बैठक में बैठी उससे बातें करने का यत्न कर रही थी। दाताराम ने बाहर से आवाज दी, "सानन्दजी!"

अनन्ता उठकर बाहर आ गई। उसने पहचाना तो बोली, "ओह! जीजाजी! आइये। वे अभी आये नहीं। अभी आने ही वाले होंगे।"

"सुचाला यहां आई हुई है क्या?"

"नहीं।"

"सानन्द भैया दुकान पर गये थे और वे कहकर आये है कि वह यहां मेरी प्रतीक्षा कर रही है।"

"बात...ठीक है। प्रतीक्षा तो वह आपकी करती हैं, यहां न सही अपने मकान में सही।"

"परन्तु, वह तो अब अपने भैया के मकान में रहती है।"

"हां, इस पर भी उसको रहने के लिए वहां पृथक् कमरों का सैट मिला हुआ है। वह मकान उसके वेतन में ही समझना चाहिए।"

दाताराम अपनी इस नवीन परिस्थिति पर विचार कर रहा था। वह विचार करता था कि यदि मेलाराम ने मलावी का विवाह कही अन्यत्र कर दिया और उसको दूकान तथा मकान से बाहर कर दिया तो इस स्थिति में सुचाला से सुलह कर लेनी उपयुक्त नहीं होगी क्या? इस विषय पर वह गम्भीरता से विचार करने लगा था। इसी बीच, अनन्ता ने पूछा, "आप चाय पीयेंगे अथवा भोजन करेंगे। कमल के पिता जी भोजन करेंगे और भोजन तैयार है।"

"उनको आने दीजिए, फिर विचार कर लूंगा।"

सवा सात बजे के लगभग सुचाला और सानन्द वहां आ पहुंचे। सानन्द ने दाताराम को बैठे देख कह दिया, "ओह जीजाजी! आ गये आप? बहुत अच्छा किया।"

"सानन्द! तुमने सब गड़बड़ घुटाला कर दिया। तुमने मेलाराम से कह दिया कि मेरी पत्नी यहां प्रतीक्षा कर रही है, बस मुझे नोटिस मिल गया है। अब मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साबित करना है कि मेरी कोई पत्नी नहीं है। नहीं तो मेरा होने वाला विवाह रद्द हो जायेगा।''

''तो क्या उसी की लड़की से विवाह होने वाला था?''

''उसकी लड़की नहीं, बहन से।''

''मुझे यह विदित नहीं था। आप यदि पहले बता देते तो मैं सावधान रहता। इस पर भी मैंने यह नहीं कहा था कि सुचाला यहां आपकी प्रतीक्षा कर रही है। मैंने आपके विषय में जब उसने पूछा तो उन्होंने बताया कि एक घण्टे तक आने की आशा है। इस पर फिर उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं आपका क्या लगता हूं, मैंने परस्पर का सम्बन्ध बताया तो फिर उसने मेरा पता पूछ लिया। मैंने आपके लिए संदेश छोड़ा था कि आप मुझसे घर पर मिल लें। किन्तु मुझे तो आशा नहीं थी कि आप मिलने आयेंगे भी।''

''परन्तु सुचाला को तो आप मिलाने के लिए ले आये हैं?''

''यह तो आज रात हम लोगों का सिनेमा देखने के लिए जाने का कार्यक्रम है। अनन्ता को गिला है कि पिछले तीन मास से मैंने इसको कोई भी पिक्चर नहीं दिखाई। तब विचार आया कि ननद भाभी दोनों को ले जाऊं। इसलिए सुचाला को लेने के लिए जा पहुंचा। सुचाला से भेंट तो यह संयोगवश ही हुई है।''

''तो मैं चलता हूं। आपके कार्यक्रम में बाधक नहीं बनना चाहता।''

''आपसे जो बात करनी है वह तो भोजन करते हुए भी हो जायेगी। आप आराम से बैठिये, पिक्चर तो रात के साढ़े नौ बजे आरम्भ होती है। और हां, यदि आप भी पिक्चर देखने चलें तो बहुत ही अच्छा हो।''

''परन्तु उतनी रात गये मैं रमेशनगर पहुंच कैसे सकूंगा?''

''तो रात यहीं रह जाइये।''

दाताराम को भी मेलाराम के नोटिस का स्मरण हो आया। इससे यह विचार करने लगा। फिर उसने कहा, ''रात को रह तो सकता हूं। परन्तु यह सुचाला को जो आप यहां ले आये हैं।''

''यह तो घटनावश है। यह मान गई कि आप दूसरा विवाह कर लें।''

''परन्तु तुम जो मेरी भांजी मारकर आये हो। वह तो तभी ठीक हो सकता है कि जब तुम मेलाराम के पास चलकर यह बता दो कि मेरा इससे पूर्व कोई विवाह नहीं हुआ है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अर्थात् सुचाला से आपके सम्बन्ध को अस्वीकार कर दूं? फिर इसके बच्चों को कहां से बताऊं?"

"नहीं दातारामजी! यह बात तो कठिन है। हां, एक बात कर सकता हूं कि मैं वहां पर सुचाला का आपसे सम्बन्ध-विच्छेद का आश्वासन दे दूंगा।"

दाताराम अनिश्चित मन बैठा रहा। इस पर सानन्द ने कह दिया,

"सफर में रात की सोचो दिन में,
बाद रात दिन किसने देखा है!"

"देखिये, जीजाजी! अब भोजन करेंगे। फिर पिक्चर देखेंगे। वहां से लौटकर सो जायेंगे। कल का कार्यक्रम प्रातः उठकर बनायेंगे। रात की सोची बात कभी ठीक नही होती।"

"परन्तु आप तो मुझसे बात करने के लिए रात को ही यहां बुलाकर लाये हैं न?"

"हां, उस समय करने वाली बात का विचार तो दिन में ही कर लिया था।"

"क्या विचार किया था?"

"आइये, खाना खाते-खाते बात करते रहेंगे।"

अनन्ता सबको साथ वाले कमरे में ले गई। उसने एक नौकरानी रखी हुई थी जो बच्चे को खिलाती थी और इनको खाना भी खिलाती थी।

खाना खाते हुए सानन्द ने कहा, "मैं दो दिन के विचारोपरान्त इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि अपनी एक और बहन बनाने में हमको कोई आपत्ति नहीं करनी चाहिए। इस कारण मैं आपसे यह कहने के लिए गया था कि आपको सुचाला से अपना सम्बन्ध चोरी नहीं रखना चाहिए। कही ऐसा न हो कि आप धोखाधड़ी में फंस जावें। यह तो विवाह करने से भी अधिक हानिकारक सिद्ध होगा।"

"परन्तु सानन्द भैया! अब तो परिस्थिति बदल गई है। अब तो आपको चलकर यह कहना होगा कि आप जो मेरे साले बने हैं, यह हंसी-हंसी में था, तभी मेरा विवाह हो सकता है।"

"अर्थात् इस छलना में मैं भी आपका साथी बनूं। किसी फ्राड में एक से दो व्यक्ति सम्मिलित हो जाने से उसके दण्ड में किसी प्रकार की कमी नहीं होती। ऐसा हो जाता तो तब भी मैं यह करने के लिए उद्यत नहीं हो सकता था।"

"तब तो काम नहीं बनेगा"

"यहां न सही। कहीं अन्यत्र यत्न कर लीजियेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"किन्तु मैं तो मेलाराम की बहन मलावी को वचन दे चुका हूं।"

"परन्तु यह वचन की बात तो आप सुचाला से भी कर चुके हैं। एक के साथ वचन-भंग अथवा दो के साथ वचन-भंग किया, इसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता।"

मेलाराम ने अभी यह नहीं बताया था कि उसको दुकान और मकान से भी जवाब मिल गया है। वह चुप हो गया।

: 7 :

मेलाराम का विचार था कि दाताराम उसके और उसकी बहन के साथ धोखेबाजी कर रहा है। अतः धोखेबाज के साथ धोखेबाजी करना ही वह उपयुक्त समझता था। रात को जब वह दुकान से घर पहुंचा तो कृपालकौर ने दिलीपसिंह की पत्नी स्वर्णकौर के आने की बात बता दी। साथ ही उसने बताया कि मलावी दाताराम से अपने विवाह की बात मन में पक्की कर चुकी है।

अब मेलाराम ने दुकान की बात बता दी। उसने यह भी बता दिया कि उसने उसको चौबीस घंटे का नोटिस दे दिया है। वह उसी साले को लाये और मुझे विश्वास दिलाये कि दाताराम की कोई पत्नी नहीं है। नहीं तो घर से, दुकान से और विवाह से छुट्टी।

किवाड़ के पीछे खड़ी मलावी अपने भैया और भाभी के मध्य हुए वार्तालाप को सुन रही थी। जब उसने सुना कि दाताराम को जवाब मिल गया है तो वह किवाड़ के पीछे से निकलकर सामने आ गई और कहने लगी, "भैया! उनसे ही विवाह करूंगी।"

"क्यों?"

"मुझे वे अच्छे लगते है।"

"तुम अच्छे-बुरे के विषय में क्या जानती हो?"

"लेकिन भापा! वह नरेन्द्र सिंह सिक्ख है।"

"तो फिर क्या हुआ! वह एम. ए. तक पढ़ा हुआ है, ढाई सौ रुपया तनख्वाह मिलती है। उसका विवाह तो कहीं भी हो सकता है। चिन्ता तो तुम्हारे विवाह की है।"

"मेरी क्या चिन्ता है?"

"तुम आठवीं कक्षा तक ही पढ़ी हो।"

"तो वह एम. ए. पास मुझसे विवाह क्यों करना चाहता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कदाचित् तुम्हारी गोरी चमड़ी के कारण ही यह प्रस्ताव है।"

"यह चमड़ी एक दिन में ही तो गोरी नहीं हो गई?"

"यह तो मैं नहीं कह सकता कि उसने पहले प्रस्ताव क्यों नहीं किया। किन्तु अब इस प्रस्ताव की विद्यमानता में और दातराम द्वारा की गई बेईमानी के कारण तुम्हारा विवाह अब नरेन्द्रसिंह से होगा।"

"मेरा जी नहीं करता।"

"करने लगेगा।"

"पर उनका क्या बनेगा?"

"उसका वही बनेगा जो ऐसे बेईमानों का बना करता है।"

"लेकिन भापा! यदि हमने उन्हें मकान और दुकान से निकाल दिया तो हम भी तो बेईमान बन जायेंगे?"

"देखो मलावी! इस कलियुग में बेईमानी पाप नहीं है। यह आज के युग का धर्म है। हम लाहौर में अच्छे खाते-पीते और मजे में थे। ये कांग्रेस वाले मसलमानों से मिल गये और हम हिन्दुओं को वहां से निकलना पड़ा। कांग्रेस और मुसलमानों ने बेईमानी की, घर में बैठकर फैसला कर लिया। एक हिन्दुस्तान का मालिक बन गया और दूसरा पाकिस्तान का। हम से, जो रहनेवाले हैं, कुछ नहीं पूछा गया।

"उसके बाद तो बेईमानी की हद हो गई। हम जब वहां से भागकर यहां आये तो हमें मेरठ में ही उतार दिया गया और जंगल में, जहां कोई बाजार तो क्या मकान भी नहीं थे, रहने के लिए कहा गया। वहां दो दिन रहकर तुम दोनों को साथ लेकर मैं पैदल ही चल पड़ा। इस प्रकार पैंतालीस मील की यात्रा कर दिल्ली आ पहुंचा। तब तक मैं समझ गया था कि ईमानदारी से कुछ नहीं बनेगा। तब मैंने बेईमानी पर कमर कस ली। पहाड़गंज में एक मुसलमान के मकान पर कब्जा कर लिया। इस पर महात्मा गांधी का आदेश आ गया कि सब मुसलमानों के मकान खाली कर दो। सरकार ने हुक्म दे दिया। मैंने समझा कि सरकार का यह हुक्म ईमानदारी का है। इस कारण मैंने उस मकान को एक सिक्ख को पांच सौ रुपया पगड़ी लेकर दे दिया। किन्तु मैंने देखा कि सरकार का यह हुक्म भी ईमानदारी का नहीं था। क्योंकि जिस सिक्ख को मैंने पगड़ी पर मकान दिया था वह निकाला नहीं गया। अब उसने उस स्थान पर आलीशान मकान बना लिया है। अब वह तीन सौ रुपया किराया वसूल कर रहा है। परन्तु मेरी बेईमानी भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फल लाई। मैंने उन पांच सौ रुपयों में से एक सौ रुपया खर्च कर नई दिल्ली की श्मशान भूमि के पीछे पहाड़ी पर एक झुग्गी बना ली। शेष चार सौ रुपयों की कनाट प्लेस में एक बरामदे में अलमारी बनवा ली।

"इस समय तक मुझको दाताराम मिल गया था। उसने ही मुझको मकान पगड़ी पर दे देने की राय दी थी। ग्राहक भी वही लाया था। पचास रुपया मुझे उसका कमीशन देना पड़ा था। उससे भी मैंने चार सौ बीसी खेली। मैंने उससे कहा कि वह कमीशन लेकर क्या करेगा वह मेरा पत्तीदार बन जाय और मेरी दुकान पर ही काम करे। मुझे ईमानदार समझ वह मेरी दुकान पर काम करने लग गया। आलमारी से हमने चांदनी चौक वाली दुकान ले ली और पहाड़ी वाले खोखे के बदले यह मकान ले लिया। दोनों मेरे नाम पर हैं। दुकानदारों के साथ बहीखाते पर मेरा नाम चलता है। इससे दाताराम के साथ भी मैंने बेईमानी की।

"परन्तु मलावी! वह कौन-सा-ईमानदार है। वह भी तो एक सुन्दर गोरी कुमारी युवती को देखकर अपने दो बच्चों की मां को छोड़कर हमारे घर में ही रहने लग गया। मेरे मन में तो आरम्भ से ही यह बात थी कि यदि वह शरीफ बनकर रहेगा तो मैं उसको अपना बहनोई और उसके बच्चों को अपना उत्तराधिकारी बना लूंगा अगर जमाने के दस्तूर के मुताबिक उसने भी किसी प्रकार की बेईमानी की तो उसको धक्के दे-देकर निकाल दूंगा।

"वह बेईमान निकला है। इस कारण अब मैं भी उसके साथ ईमानदार बनकर रहने में कोई लाभ नहीं समझता।"

मलावी समझ गई कि उसको भी सरल-चित्त होने में लाभ नहीं। अपने दाताराम से सम्बन्ध को छिपाकर रखने में ही वह लाभ समझने लगी। उसने दाताराम को अपने अमिट प्रेम का वचन दिया था किन्तु अब उस वचन को निभाने में किसी प्रकार का सार न देख, वह चुप हो गई।

उसी रात कृपालकौर अपने पति के साथ स्वर्णकौर से मिलने के लिए गई। पिता और पुत्र भी उस समय घर पर ही थे। बातचीत हुई और मेलाराम ने कहा, "लड़की देखनी हो तो देख लीजिए।"

नरेन्द्रसिंह ने कहा, "देखी हुई है। उसको देखने के बाद ही मैंने पसन्द किया था।"

"आपने हमारी आर्थिक स्थिति की भी जांच की है?"

"हां, और मैंने नरेन्द्र को बता दिया है कि कुछ मिलनेवाला नहीं है। यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान गया है। विवाह गुरुद्वारे में होगा और सारा खर्चा वही करेगा। आपको एक पैसा भी व्यय करना नहीं पड़ेगा। अगले रविवार के दिन प्रातः छः बजे विवाह होगा।"

मलावी को जब यह निश्चय बताया गया तो वह मन-ही-मन कह उठी, 'या बेईमानी तेरा ही आसरा।' इस पर भी ऊपर से उसने प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा, "अब उनको यहां मत आने दीजिये।"

"दाताराम को न?"

"हां, मुझे उनके सम्मुख लज्जा लगेगी।"

"वह अब नही आयेगा।"

अगले दिन सानन्द मेलाराम से मिलने के लिये गया। उसने कहा, "मुझे यह जानकर बहुत दुःख हुआ कि आप अपनी बहन का विवाह दाताराम से करनेवाले थे। उसने आपको बताया ही नहीं था कि उसकी पहले भी एक पत्नी और उससे दो बच्चे हैं।"

मेलाराम को क्रोध आ रहा था। उसने वैसे ही कहा, "बहुत बेईमान निकला वह। यदि उसे हवालात न जाना हो तो उससे कहिये कि अब वह अपना मुख मुझे न दिखाये।"

"वह शरमिन्दा है, इसीलिए यहां नहीं आ पाया। कहता था कि आपकी बहन के सौन्दर्य पर मुग्ध हो जाने के कारण वह असल बात प्रकट नहीं कर सका; साथ ही वह यह भी कहता था कि आपने भी कभी पूछा नहीं।"

"मैं तो आपसे एक बात करने के लिए आया हूं। यदि आप रुष्ट न हों तो कहूं?"

मेलाराम का विचार था कि वह मकान और दुकान की साझेदारी के विषय में कुछ कहना चाहता है। इस विषय में वह सब कुछ सोच-विचार कर चुका था। इसलिए निश्चित हो उसने कहा, "हां कहिये, क्या कहना चाहते हैं आप?"

"मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या अब भी आप दाताराम से अपनी बहन का विवाह करने के लिए उद्यत हैं?

मेलाराम इसका अभिप्राय समझने के लिए सानन्द का मुख देखने लगा। अपना अभिप्राय समझाते हुए सानन्द ने कहा, "मेरे प्रश्न का उत्तर आप अपनी बहन से पूछकर दें तो उत्तम होगा। कल तक आप अपना निर्णय बता दें। कहें तो मैं यहां आ जाऊ अथवा आप मेरे मकान पर आ जाइये। दातारामजी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार है कि जो कुछ बातचीत उन दोनों के मध्य हुई है उसके आधार पर वह उनसे ही विवाह करने का हठ कर सकती है।

"इस स्थिति में उन्होंने हमारी बहन और हमसे दूसरे विवाह की स्वीकृति ले ली है।"

क्रोध से आरक्त-मुख मेलाराम ने कहा, "वह महामूर्ख है जो ऐसा समझता है। आप उससे कह दीजिए कि हमने मलावी का विवाह किसी अन्य स्थान पर निश्चित कर लिया है और यह मलावी की रुचि के अनुसार ही हुआ है।"

"तब तो ठीक है। दूसरी बात इस दुकान और मकान के विषय में है; वह स्वयं को इसमें आधे का भागीदार बताता है।"

"उसके पास इस बात का प्रमाण क्या है?"

"यह तो उसने बताया नहीं। इस पर भी उसका कथन है कि आप ईमानदार व्यक्ति हैं। आपके वचनों का वह लिखित से अधिक विश्वास करता है।"

"तो आप उसे बता दीजिए कि मैं ईमानदार नहीं हूं। मैं बेईमानों का भी बाप हूं। आज इस देश में ईमानदारों के लिए कोई स्थान नहीं रह गया है।

"देखिए, सारा समाज ही बेईमान लोगों से भरा हुआ है। यदि बेईमानी वर्जित होती तो फिर यह विदेश से मंगवाने वाली वस्तुओं पर परमिट-सिस्टम चालू न किया जाता। मैं बताता हूं कल मुझे दस हजार का लाइसेंस मिला है। मुझे पांच सौ रुपया उस पर खर्च करना पड़ा है। यह पांच सौ सरकार को नहीं, सप्लाई-विभाग के कर्मचारियों को दिया गया है। मैं कल लाइसेंस लाया था और आज चार हजार के मुनाफे पर मैंने वह बेच दिया है।

"है न बेईमानी का बोलबाला! चार हजार मैं लगातार चार मास तक दुकान पर बैठने से भी नहीं कमा सकता था और इस प्रकार एक दिन में ही यह कमा लिया है।"

"इस कारण तो सरकार कहती है कि सब काम सरकार को स्वयं करना चाहिये। वह आप सबकी दुकानें बन्द कर अपनी दुकानें खोलना चाहती है।"

"सत्य?" मेलाराम ने मुस्कराते हुए कहा, "तो क्या दुकानों की जगह पर वह माल बेचने के लिए मशीनें लगा देगी?"

"ऐसा तो नहीं, हां अपने नौकर बैठा देगी।"

"वे नौकर स्वर्ग से उतरकर आवेंगे क्या? यदि तो वे हमारी ही भांति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाड़-चाम के होंगे तो वह भी वही कुछ करेंगे जो हम करते हैं।"

सानन्द ने बात समाप्त करते हुए कहा, "तो आप दाताराम का हिसाब-किताब कर दीजिये और बताइये कि वह आपसे मिलने के लिए कब आवें?"

"उसको आने की आवश्यकता नहीं। उसने तीन वर्ष दुकान पर कार्य किया है; जितना इस अवधि में उसका वेतन बनता था उससे अधिक पा चुका है। मैं उससे वह अब मांगना नहीं चाहता। हां यदि वह कहीं न्यायालय में चला गया तो उसको लेने के स्थान पर देने पड़ जाएंगे।"

सानन्द ने कुछ और अधिक बात करनी उचित नहीं समझी। वह लौट गया। पिछली रात दाताराम और उसमें कुछ बात नहीं हो पाई थी। उसने कह दिया था कि रात की सोची हुई बात सफल नहीं होती। वे चारों सिनेमा देखने के लिए चले गये थे और रात को आकर सो गये।

प्रातःकाल दाताराम ने सानन्द से कहा "भैया! मलावी बहुत ही सुन्दर लड़की है, मैं उसके सम्मोहन में फंस गया हूं इस कारण मैं उसको अपनी विवाहितावस्था के विषय में बता नहीं सका। साथ ही उन्होंने मुझसे कभी कुछ पूछा भी नहीं।

"वास्तविक बात तो यह है कि उसका मेरे साथ सम्बन्ध बन चुका है। इससे कदाचित् वह मुझसे ही विवाह करना चाहे तो उस स्थिति में उसे मेरी वास्तविक अवस्था विदित हो जानी चाहिए। यदि वह तब भी मुझसे विवाह करना चाहे तो मैं समझता हूं कि मुझे कर लेना चाहिए।

"साथ ही मैं यह जानना चाहता हूं कि मेरी उस दुकान और मकान में क्या स्थिति है? मेरा विचार है कि तुम जाकर इस विषय में पता करो; उसके बाद ही मैं अपने भावी जीवन के विषय में निश्चय कर पाऊंगा।"

प्रातः का अल्पहार कर सुचाला तो अपने कार्य पर चली गई और सानन्द मेलाराम की दुकान पर जा पहुंचा। वहां से वह ईमानदारी और बेईमानी की मीमांसा सुन आया। दाताराम उसके घर बैठा उसके लौटने की प्रतीक्षा कर रहा था। सानन्द आया और उसने मेलाराम के साथ उसका जो वार्त्तालाप हुआ था उसका विवरण बता दिया।

दाताराम ने दीर्घ निःश्वास लिया और बोला, "भैया, मेलाराम ने ठीक ही कहा है। मेरी भी पिछले ग्यारह वर्ष का यही अनुभव है कि आज हिन्दुस्तान में ईमानदार के लिए कोई स्थान नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह नहीं दाताराम जी! अभी ईमानदार के लिए संसार में बहुत स्थान और अवसर हैं। कठिनाई अवश्य हो गई है परन्तु धर्म का स्रोत अभी बन्द नहीं हुआ।"

"लगता है कि धर्म तो अब केवल पुस्तकों में ही लिखा रह गया है।"

"जीजाजी! धैर्य से ढूंढ़ेंगे तो धर्म दिखाई दे जायेगा। और फिर यदि उस पर आचरण करोगे तो फल भी अवश्य ही मिलेगा। कर्म को ध्येय और जीवन सरल बनाओगे तो निर्वाह भी हो जायेगा।"

इस प्रकार के उपदेश दाताराम बहुत सुन चुका था। वह टुकर-टुकर सानन्द का मुख देखने लगा। सानन्द बोला, "आप कुछ दिन यहां अथवा बड़े भाई साहब के पास रहिये तो मार्ग मिलने लगेगा।"

"सुचाला मुझे वहां आने के लिए कह गई है। मैं वहां चला तो जाऊंगा। परन्तु क्या वहां ईमानदारी का राज्य है?"

सानन्द ने कुछ विचार कर कहा, "जहां तक भापा समर्थ का काम है वह तो प्रायः वैसा ही है जैसा ठेकेदारों का हुआ करता है। परन्तु मैं तो सुचाला की बात बताऊंगा। उसके काम में आपको किसी प्रकार का हेर-फेर नहीं मिलेगा। वहां जो कुछ होता है उसका उत्तरदायित्व मालिक का है, उसका नहीं। जो काम उसको सौंपा जाता है उसे वह ईमानदारी से करती है। इस कारण उसके साथ रहकर कोई यह नहीं कह सकता कि वह बेईमानी से पैदा किया हुआ अन्न खा रहा है।"

"इस पर भी मेरी तो यह योजना है कि आप भी कोई इसी प्रकार का कार्य कर लें तो उत्तम होगा।"

"अर्थात् मैं नौकरी कर अपने मालिक के लिए बेईमानी करूं?"

"हां, आप ईमानदारी अथवा बेईमानी अपने लिए न करें। न ही अपनी इच्छा से करें। उसका पुण्य अथवा पाप आप पर नहीं होगा। आपको तो आपके कार्य का वेतन मिलेगा।"

"तो क्या सरकारी कर्मचारी जो पाप-पुण्य करते हैं उसका फल उनको नहीं मिलता?"

"सरकारी कर्मचारी जब तो अपनी आय बढ़ाने के लिए हेराफेरी करते हैं तब वे पाप के भागी होते हैं, परन्तु जब कोई सरकारी कर्मचारी अपने मालिक के हुक्म पर कुछ करेगा तो उसका श्रेय अथवा दुश्श्रेय उस पर नहीं होता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"शास्त्र में यह लिखा है–

यतो हि सर्व वर्णानां यज्ञस्तस्यैव भारत।
अग्ने सर्वेषु यज्ञेषु श्रद्धायज्ञो विधीयते।।
ऋग्यजुः सामवित् पूज्यो।
नित्यं स्याद् देववद् द्विजः।।
अनृग्यजरसामा च प्राजापत्य उपद्रवः।
यज्ञोमनीषया तात सर्व वर्णेषु भारत।।

"इसका अर्थ यह है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य द्वारा जो भी यज्ञ अर्थात कल्याणमय कार्य किया जाता है, शूद्र उनका आज्ञाकारी सेवक होने से केवल पुण्य का भागी होगा, पाप का नहीं। वह भी यदि उसमें सेवक की श्रद्धा होगी तब ही, क्योंकि सेवक को मालिक के काम में फल श्रद्धा से ही मिलता है।

ततः सर्वेषु वर्णेषु श्रद्धायज्ञौ विधीयते।

"सब वर्णों के यज्ञों में श्रद्धा ही विधान है। श्रद्धा अपने लाभ के लिए माननी चाहिए।"

"तो भैया! तुम मुझको सेवक अर्थात् शूद्र बनने के लिए कह रहे हो?"

"शूद्र बनना कोई बुरा काम नहीं। मैं तो सरकार के उच्च-से-उच्च सचिव को भी शूद्र ही मानता हूं। देखिए, यदि आपमें योग्यता और आपके पास साधन हैं कि ईमानदारी से स्वतन्त्र कार्य कर सकें तो ठीक है। परन्तु यदि आप ऐसा नहीं कर सकते तो शूद्र बन, मालिक के कामों को श्रद्धासहित करने से आप निर्लेप रहकर पापमय सरोवर में कमल बन रह सकेंगे।"

: 8 :

सन् 1952 के निर्वाचन हुए एक वर्ष हो चुका था और भारतवर्ष की प्रथम पंचवर्षीय योजना आरम्भ हो चुकी थी। मन्त्रिमण्डल में समाजवादियों का प्राबल्य हो गया था। गांधीवादी कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल और सरकार के नीति निर्धारकों से बाहर किये जा रहे थे। आचार्य कृपलानी गये, बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन गये, सरदार पटेल का देहावसान हो गया। अब रह गये थे जो जवाहरलाल नेहरू के संकेतो पर चलनेवाले थे और देश की गाड़ी को समाजवाद के मार्ग पर ढकेलने वाले थे।

समाजवाद के साथ हिन्दू विचारधारा का जन्म-जन्मान्तर का विद्वेष है। अतः समाजवाद को चालना देने के लिए हिन्दू विचारधारा की जड़ो में तेल देने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की आवश्यकता अनुभव हुई। इसका प्रबल प्रबन्ध करने के लिए हिन्दू कोड बिल संसद में उपस्थित किया गया। इसके अन्दर तीन मुख्य बातें करने का आयोजन था। एक था तलाक की हिन्दुओं में स्वीकृति, दूसरी थी लड़की का भी लड़के के समान पिता की सम्पत्ति में उत्तराधिकार और तीसरी बात थी एक पत्नी के रहते हुए दूसरा विवाह न कर सकना।

इन परिवर्तनों द्वारा हिन्दू समाज को जर्जर करने का प्रयोजन था। इसी कारण हिन्दुओं को इनके स्वागत के लिए तैयार किया जा रहा था। मरीना और मेडन होटल में शराब के साथ टोस्ट लेनेवाली स्त्रीसुधारकों की एक सेना इस कार्य में जुट गई।

सानन्द घर पहुंचा तो अपनी पत्नी को ढाई सौ की रेशमी साड़ी और दो सौ रुपये वाले सैंडिल धारण किये, एड़ी से चोटी तक सजधज कर तैयार खड़े देख वह चकित रह गया इस प्रकार पत्नी को बनीठनी देख उसने पूछा, "अनन्ता! किधर?"

"विमैंज कान्फ्रेंस में।"

"ओह! मैंने तो समझा कि विवाह-वेदी पर बैठने के लिए जा रही हो।"

"उस पर बैठे तो पांच वर्ष से भी अधिक हो गये हैं।"

"तुम्हारी यह कॉफ्रेंस ऐसे अवसरों को जीवन में बार-बार लाने के लिए ही तो प्रयत्नशील है न?"

"आप क्या इसे बुरी बात समझते हैं?"

"सोलह आने बुरा तो नहीं। कुछ अच्छा और कुछ बुरा। इसमें अच्छाई तो यह है कि यदि कभी मैं इस कानून की लपेट में आ गया तो तुम्हें भी जीवन में पुनः विवाह-वेदी पर बैठने का सौभाग्य मिल सकता है। और बुरी बात यह है कि जवाली ढल जाने पर कहीं श्रीमतीजी के सिर पर घर छोड़ने का विचार सवार हो गया तो फिर भगवान ही मालिक है।"

"आप प्रत्येक बात को अपने पर लागू करके देखने की आदत बना बैठे हैं। भला आप-जैसे भले पति को कौन मूर्ख औरत तलाक देने के विषय में सोच सकती है?"

"अच्छा, तनिक देखना! इस कान्फ्रेंस में कोई ऐसी मूर्ख औरत है कि नहीं।"

"तो मैं जा रही हूं। जानकी कमल का ध्यान रखेगी और आपको भोजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी करा देगी।"

"कहा हो रही है यह कान्फ्रेंस?"

"इम्पीरियल होटल के कमेटी हाल में।"

"अच्छी बात है।"

: 9 :

अनन्ता गई तो सानन्द हंसने लगा। वह भी उसी कान्फ्रेंस में संवाददाता के रूप में जाने वाला था। उसने भोजन किया और कपड़े बदल कैमरा और राइटिंग पैड लेकर चल पड़ा।

प्लैनरी सैशन से पहले कार्यकारिणी की बैठक थी। केवल ग्यारह महिलायें उसमें भाग ले रही थी। प्लैनरी सैशन में प्रस्तुत किये जानेवाले प्रस्तावों का प्रारूप इसमें तैयार किया जा रहा था। जब सानन्द होटल में पहुंचा तो कार्यकारिणी की बैठक समाप्त होकर खुले अधकिवेशन की तैयारी हो रही थी। उसने देखा कि उसकी पत्नी अनन्ता अधिकवेशन की अध्यक्षा मिसेज मोदी के साथ-साथ है।

सानन्द को प्रेस-गैलरी में बैठा दिया गया। जब सब महिलायें आ गई तो सानन्द ने एक दृष्टि में उनकी गणना कर डाली। सब मिलाकर इकत्तीस महिलायें थीं और सभी सज-धजकर आई थीं। लिपस्टिक और रूज तथा पाउडर की भरमार दिखाई दे रही थी। कुछ महिलाओं ने तो अपनी भवों को भी स्याही से रंजित कर रखा था।

मंच पर केन्दीय सरकार की मन्त्रिगण भी बैठी थी। वृद्धावस्था में उसने नव-वधु का-सा शृंगार किया हुआ था। पूर्ण दृश्य रंग-बिरंगा और अति लुभायमान था। होटल के इस कमेटी-रूम में पचपन व्यक्तियों के बैठने के लिए स्थान था जिसमें से बीस के लगभग कुर्सियां अभी खाली थी।

इस गिनी-चुनी उपस्थिति में बहुत लम्बी और मानव-प्रकृति और मानव-अधिकारों पर वक्तृतायें हुईं। हिन्दू समाज के रूढ़िवादी चलन को कोसा गया और भारत के स्त्री-समाज की दलित एवं दयनीय अवस्था पर आंसू बहाये गये। अधिकांश के भाषण अंग्रेजी में ही हुए।

इस प्रकार सर्वसम्मति के सभी प्रस्ताव पारित हो गये। अन्त में केन्द्रीय सरकार की मन्त्रिणी के आशीर्वाद के साथ सभा विसर्जित की गई।

सानन्द ने अपने कुछ साथियों को सम्मति दी कि यदि अध्यक्ष महोदय स्वीकार करें तो एक प्रेस-कान्फ्रेंस कर ली जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या होगा इससे?" एक साथी ने पूछा।

"चाय पीने को मिलेगी।"

"ऊंह। इस होटल में आकर भी चाय ही पी तो फिर क्या किया।"

सब हंसने लगे। सानन्द ने कहा, "तो तनिक साहस पकड़ो, सॉफ्ट ड्रिंक के लिए तो कहा ही जा सकता है।"

यह कार्यभार सानन्द पर ही छोड़ा गया। मिसेज मोदी मन्त्रिणी जी से बातें कर रही थीं कि सानन्द वहां जा पहुंचा। मिसेज मोदी ने उसको आया देख उसकी ओर प्रश्न-भरी दृष्टि की। सानन्द बोला, "एक्सक्यूज मी। मैं प्रेस रिपोर्टर एस. मिश्रा हूं। प्रेस की इच्छा है कि एक प्रेस कान्फ्रेंस बुला ली जाय तो उपयुक्त होगा।"

"इसके लिए क्या करना होगा?" मिसेज मोदी ने फड़कते हुए पूछा।

"आपको एवं आपकी कुछ प्रमुख सदस्याओं को कुछ समय देना होगा और वार्त्तालाप को 'स्पर्ट' देने के लिए कुछ पीने का प्रबन्ध करना होगा।"

इस प्रकार प्रेस-कान्फ्रेंस की व्यवस्था हो गई। होटल वालों को ड्रिंक सर्व करने के लिए कह दिया गया। अध्यक्ष के अतिरिक्त जो दो अन्य महिलायें इस कान्फ्रेंस में विद्यमान थी उनमें एक अनन्ता भी थी।

अनन्ता ने अपने पति को वहां देखा तो वह मुस्करा दी। विशेष रूप से जब मिसेज मोदी ने उसका परिचय उपस्थित पत्रकारों से कराया। पत्रकारों में कुछ लोग मिसेज सानन्द को जानते थे। परिचय के समय वे भी मुस्कराते रहे।

"मिसेज मोदी ने कान्फ्रेंस आरम्भ करते हुए कहा, "मेरा अध्यक्षीय भाषण तो आप लोगों को मिल गया है। वह आपने सुन भी लिया है। इस कारण मेरे लिए तो इस कान्फ्रेंस में कुछ कहने के अवशिष्ट नहीं रहा। हां, इस विषय में आपके प्रश्नों का उत्तर देने के लिए मैं प्रस्तुत हूं।"

इस पर प्रश्न किये जाने लगे। अन्य पत्रकार तो सुरापान में संलग्न थे। सानन्द इसका स्पर्श तक नहीं करता था इसलिए उसने ही प्रश्न- पर-प्रश्न पूछने आरम्भ किये—

"उपस्थित महिलाओं में दिल्ली की कितनी हैं?

"क्या किसी को देहात का भी अनुभव है?

"मध्यवर्गीय परिवारों की कितनी सदस्यायें यहां विद्यमान थीं?

"आपके प्रस्तावों में ऐसी कौन-सी विशेष बात है जिसमें सरकार को अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिल में किसी प्रकार का संशोधन करना पड़े?

"आप दहेज लेने का तो विरोध करती हैं किन्तु पिता की सम्पत्ति में अधिकार चाहती हैं। यह क्या परस्पर विरोधी बातें नहीं हैं?

"क्या दहेज लेने-देने के समय परस्पर झगड़ा हो जाना सम्भव नहीं? पिता के मरने पर भाइयों से झगड़ा करना तो पिता के शव को नोंचने के समान नहीं होगा क्या?

"आप पति या श्वसुर की सम्पत्ति में ही किसी औरत का अधिकार क्यों नहीं स्वीकार करतीं?

"क्या किसी लड़की ने कभी भी अपने माता-पिता के परिवार की आर्थिक उन्नति करने में सहायता दी है?

"क्या अब भाई अपनी बहन की तथा बहनोई की कमाई में से भी उसी भांति सहायता ले पाएंगे जैसे भाई-भाई से ले लेता है?

"वर्तनान युग की तनाव की स्थिति में स्त्री-पुरुष में कभी-कभी अनबन होनी स्वाभाविक नहीं क्या? क्या इस तलाक की स्वीकृति से कई अस्थायी झगड़े स्थायी नहीं बन जायेंगे?

"आपकी कान्फ्रेंस में कुछ ईसाई और मुस्लिम महिलायें भी थीं किन्तु आपने अपनी मांगे केवल हिन्दू स्त्रियों तक ही सीमित क्यों की हैं?

"क्या मुसलमान औरतों के प्रति आपकी कान्फ्रेंस की सहानुभूति नहीं है?

"इस्लामी तलाक की प्रथा में मुसलमान औरतों को वे अधिकार प्राप्त नहीं जो कि मुसलमान पुरुषों को हैं। इस विषय में आप लोगों ने कोई प्रस्ताव क्यों नही किया?"

इस प्रकार एक घंटे तक प्रश्न और प्रति-प्रश्न होते रहे। एक-दो के अतिरिक्त अधिकांश प्रश्नों का उत्तर अनन्ता ही दे रही थी। उसके प्रभावहीन उत्तर से सभा में हंसी के फब्बारे छूट रहे थे। सानन्द ने अन्तिम प्रश्न किया, "मुझे विश्वास है कि सम्मेलन में उपस्थित कोई भी महिला ऐसी नहीं होगी जो अपने पति के व्यवहार से खिन्न हो। इस पर भी आप लोगों की वक्तृताओं में पतियों पर रोष प्रकट किया गया। क्यों?"

इस पर तो मद्यपान करने वाले संवाददाताओं ने तालियां पीटीं। इस अप्रत्याशित उल्लास पर मिसेज मोदी को भी विस्मय हुआ। उसने अपने समीप बैठी दूसरी सदस्या से इसका कारण पूछना चाहा तो उसने बताया कि प्रश्नकर्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर देने वाली का पति है। मिसेज मोदी को कुछ क्रोध आ गया। वह उठकर कहने लगी, "मैं अपने घरेलू विषयों पर यहां प्रश्नोत्तर की स्वीकृति नहीं दे सकती। मैं यह सभा विसर्जित करती हूं।"

इस पर तो और भी तालियां बजीं। अनन्ता उत्तर देती-देती थक गई। वह बैठकर सामने रखी फलों के रस में मिली मद्य को 'सिप' करने लगी।

सभा विसर्जित हुई तो सानन्द ने आगे बढ़कर मिसेज मोदी से कहा, "आपने इस आकस्मिक रीति से यह सभा बन्द कर दी है कि हम लोग आपकी इस खातिरदारी के लिए धन्यवाद भी नहीं कर सके।"

"परन्तु आपने तो एक घूंट भी नहीं पी?"

"मैं पीता ही नहीं। धन्यवाद!"

"कितने निर्दयी हैं आप! वह देखिए, क्या दशा कर दी है आपने अपनी पत्नी की।"

"स्त्री-जाति के उद्धार के लिए वह अपना बलिदान कर रही है।"

अनन्ता का कुशल-समाचार पूछने के लिए कई परिचित संवाददाता उसको घेरकर खड़े हो गये। मिसेज मोदी को छोड़ने के लिए सानन्द उसके साथ-साथ चल दिया।

घर लौटने पर अपने पति के प्रति गिला प्रकट करते हुए अनन्ता बोली, "आपने मुझे पहले क्यों नही बताया कि आप भी कान्फ्रेंस में जा रहे हैं?"

"मैं समझा नहीं था कि इसी 'ड्रेस शो' को मेरी पत्नी कान्फ्रेंस कह रही है। मैं तो समझता था कि वह किसी वास्तविक कान्फ्रेंस में जा रही होगी जिसमें दस-बीस हजार महिलायें भाग लेने वाली होंगी।"

"तो आप यह ड्रेस शो देखने के लिए गये थे?"

"और उसमें तितलियों को फड़फड़ाते हुए देखने के लिए भी।"

"क्या मतलब?"

"मतलब यह कि आपका व्याख्यान सुनने के लिए भी।"

"तो आपको विदित था कि मैं वहीं जा रही हूं?"

"वह तो मुझे तब विदित हुआ कि जब मैंने आपकी कान्फ्रेंस का स्थान पूछा था और आपने बताया था कि इम्पीरियल होटल में। मैं अपने विषय में बताना चाहता था कि आप तो चल ही दीं और मैं हंसने के अतिरिक्त कुछ नहीं कर सका।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपने अपनी पत्नी को पब्लिक में ही बहुत शरमिन्दा किया है।"

"क्या शरमिन्दा किया है मैंने?"

"आपने कुछ ऐसे प्रश्न किये थे जो बिलकुल असंगत थे?"

"उदाहरण के रूप में?"

"वह मुसलमान औरतों के अधिकारों के विषय में ही ले लीजिए।"

"उसमें क्या असंगतता थी?"

"वह दूसरी औरत मुसलमान थी और उसकी अपने पति से बनती नहीं।"

"वह तो सकलतबाला थी न?"

"यह उसका मायके में नाम है। उसका पति खोजा है। वह अपने बाप के घर रहती है इस कारण नाम भी उनके घर का ही चलता है।"

"तब तो बेचारी सहानुभूति की पात्र है। वह तलाक क्यों नहीं दे देती?"

"इसलिए कि मुसलमानों में कोई औरत तलाक नहीं दे सकती। और पति उसको तंग करने के लिए तलाक नहीं देता।"

"मुझे यह विदित नहीं था। अन्यथा मैं उससे सहानुभूति प्रकट करता। परन्तु यह तो और भी प्रबल कारण था कि आप मुसलमान औरतों के विषय में भी एक प्रस्ताव पास करतीं?"

"हमें यह निर्देश दिया गया था कि हमें हिन्दू कोड बिल के सम्बन्ध में ही प्रस्ताव पास करने चाहिएं। सरकार भी मुसलमानों को अपने विरुद्ध नहीं करना चाहती।"

"तो आप सरकार के आदेश पर यह कान्फ्रेंस कर रही थीं?"

"हां, सरकार के एक फंड में से हमको इसके लिए दस हजार रुपया सहायतार्थ मिला है।"

"सत्य! तो हिन्दू समाज के विरुद्ध सरकारी षड्यन्त्र का यह एक अंग था।

"इसे षड्यन्त्र तो नहीं कहा जा सकता। हां, पिछड़े हुए हिन्दू समाज को उभारने के लिए यह सहायता दी गई थी।"

"परन्तु अनन्ता? तुम एकाएक नेता कैसे बन गई?"

"कल इस सभा के लिए निमन्त्रण-पत्र के साथ पिताजी का एक पत्र आया था। उन्होंने लिखा था कि इसमें उपस्थित होकर मुझे आगे बढ़कर भाग लेना चाहिए। इस पर भी यदि मुझे विदित होता कि आप वहां पर जा रहे हैं तो मैं कदापि वहां न जाती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों?"

"इसलिए कि मैं आपके विचारों को जानती हूं और जिस मुसीबत में आपने वहां पर मुझे डाल दिया था, मैं उससे बच जाती।"

"परन्तु मैं तो वहां एक संवाददाता के नाते ही गया था और तुमसे जो कुछ पूछा था वह उस सभा की नेत्री होने के नाते ही पूछा था।"

"वह तो ठीक है परन्तु आपके अन्य साथी तो जानते थे कि आपसे मेरा क्या सम्बन्ध है। और आपके प्रत्येक कटाक्ष पर वे मेरी खिल्ली उड़ाते थे।"

"मैं तो समझ रहा था कि वे मेरी हंसी उड़ा रहे हैं।"

"आज तो आपसे बात करने को जी नही चाहता।"

"सत्य?"

"आपने 'टेस्ट' बिगाड़ दिया है।"

"तो फिर कुछ दिनों के लिए पिता के घर चली जाओ।"

"क्यों?"

"जैसे महात्मा गांधी की हत्या के विषय पर मेरे विचार जानकर किया था।"

"इतनी पुरानी बात आप भूले नहीं?"

"तब भी आपका टेस्ट ही बिगड़ा था।"

"तो आप चलकर छोड़ जाइये।"

"क्यों, मेरा टेस्ट तो बिगड़ा नहीं। मुझको तो अनन्ता पत्नी से अनन्ता नेत्री अधिक सुन्दर और आकर्षक लग रही है।"

"तभी प्रश्न करते समय दया नहीं आई?"

"श्रीमती जी! दया तो अंगहीन, लूले-लंगड़ों पर आया करती है। सुन्दर, स्वस्थ और सबल पत्नियों को देखकर प्रेम उमड़ता है। इससे पत्नियों को घर से निकाला नहीं जाता परन्तु...।"

"बस रहने दीजिये। मुझे आज कुछ नहीं भा रहा।"

: 10 :

सानन्द का भेजा हुआ समाचार कई पत्रों में छप गया। उसमें लिखा था—"भारत सरकार द्वारा प्रोत्साहित और सब्सिडाइज्ड बोगस संस्था अखिल भारतीय महिला सम्मेलन का अधिवेशन दिल्ली के बहुत महंगे होटल में शराब के प्यालों के कलरव में सम्पन्न हुआ। सरकार की ओर से प्राप्त दस हजार रुपया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होटल की शराब में उड़ गया।

"ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार को अपने हिन्दू समाज सम्बन्धी कानूनों के समर्थन के लिए कोई संस्था नहीं मिल रही और जनता को भ्रम में डालने के लिए भारत की कुछ-एक महिलाओं को पकड़कर और भारत सरकार के मन्त्रालय के अधिकारियों की पत्नियों और बेटियों को आदेश देकर यह संस्था खड़ी कर दी गई।"

इस प्रकार अति स्पष्ट और नग्न चित्र इस कान्फ्रेंस का प्रकाशित हो गया।

यह सब आयोजन किया गया था डाक्टर बरकतराम माथुर की सहायता से। और जब समाचारपत्रों में उक्त समाचार प्रकाशित हुआ तो इस विषय में लोक-सभा में प्रश्न पूछे गये। इस पर बरकतराम से पूछताछ आरम्भ हो गई।

डाक्टर माथुर को सन्देश मिला कि शाम की चाय, साहब के बंगले पर है। माथुर का विचार था कि कान्फ्रेंस की सफलता पर उसको कोई पुरस्कार मिलनेवाला है। दिल्ली के सभी समाचारपत्रों में इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की गई थी। मिसेज मोदी और मिसेज अनन्ता मिश्र के चित्र भी प्रकाशित हुए थे। इस प्रकार प्रसन्नचित्त वह साहब के बंगले पर जा पहुंचा।

एक घण्टे बाद डाक्टर माथुर मन्त्री की कोठी से निकला तो उसका मुख विवर्ण था और माथे पर पसीने की बूंदें झलकती दिखाई दी। जब माथुर अपनी कार में चढ़ने लगा तो ड्राइवर ने देखा कि साहब के हाथ कांप रहे हैं और पैर लड़खड़ा रहे हैं।

कार में बैठकर माथुर ने ड्राइवर को अनन्ता के घर ले चलने के लिए कहा। डाक्टर साहब सानन्द से मिलना चाहते थे परन्तु वह घर पर नहीं था। उसने अपनी लड़की से कह दिया कि बहुत आवश्यक कार्य है। अतः आते ही उसको उसके पास भेज दे।

"क्यों, क्या बात है पिताजी?"

"तुम भी उसके साथ आ जाना।"

"आखिर हुआ क्या है?"

"मैंने अपना हित विचारकर एक योग्य संवाददाता को अपना दामाद बनाया था। परन्तु वह तो आस्तीन का सांप सिद्ध हो रहा है।"

अनन्ता कुछ न समझती हुई अपने पिता का मुख देखती रही। बरकतराम ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया और अपनी मोटर में बैठ चला गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सायं सात बजे सानन्द आया तो अनन्ता ने अपने पिता का संदेश दे दिया। सानन्द ने मुस्कराते हुए पूछा, "बहुत घबराये हुए थे क्या वे?"

"हां, नर्वस हो रहे थे।"

"कुछ कहते भी थे?"

"कहते थे कि आपको दामाद इसलिए बनाया था कि आप उनके कार्य में सहायक सिद्ध होंगे, परन्तु आप निकल रहे हैं आस्तीन के सांप।"

सानन्द हंस पड़ा। उसने कहा, "यह अन्तर है एक स्वतन्त्र कार्य करनेवाले में और किसी की नौकरी करने वाले में। अच्छा चलो चलें। उन्हें सान्तवना देने की आवश्यकता है।"

अनन्ता कपड़े बदलने लगी। सानन्द तो अभी बैठा भी नहीं था। वह वैसे ही चलने के लिए तैयार हो गया। उन्होंने टैक्सी की और तुगलक रोड की ओर चल पड़े।

मार्ग में सानन्द ने बताया, "गत शनिवार को जो महिला सम्मेलन आप लोगों ने किया था उसकी वास्तविक रिपोर्ट मैंने अपने पत्रों को भेज दी थी। साप्ताहिक पत्रों को तो और भी व्याख्या के साथ लिख कर भेजी है। वह शनिवार तक प्रकाशित होगी। परन्तु दैनिक पत्रों की साधारण-सी रिपोर्ट पर ही संसद में किसी हिन्दू सभाइट ने प्रश्न पूछ लिया है।

"दिल्ली के समाचारपत्रों में तो सम्मेलन की बहुत ही रंगीन रिपोर्ट छपी थी। किन्तु दक्षिण और कुछ कलकत्ता के पत्रों में मेरी भेजी हुई रिपोर्ट छपी है। सरकार ने तार देकर उन समाचारपत्रों से पूछा कि आपका संवाददाता कौन है? मेरे विषय में जांच की गई तो विदित हुआ कि मैं डाक्टर माथुर का दामाद हूं। अब सरकारी भेद की बात कि सरकार ने यह जाली कान्फ्रेंस जनता को धोखा देने के लिये बुलाई थी और इस पर सब रुपया सरकार का खर्च हुआ है को प्रकट करनेवाले डाक्टर साहब माने गये।

"मुझे तो सब समाचारपत्रों के संवाददाता के कार्य से मुक्त कर दिया गया है; कदाचित् डाक्टर साहब को भी डिसमिस करने की धमकी दी गई हो।"

"यह तो बहुत बुरा हुआ। आपको जो बात मैंने पति समझकर बताई थी वह रहस्य की बात आपने समाचारपत्रों में क्यों छपवा दी?"

"तुमने मुझको क्या बताया था और कब बताया था?"

"कान्फ्रेंस के दिन सायंकाल आपको मैंने बताया था कि सरकार ने इसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए दस हजार रुपया दिया है।"

"परन्तु मैंने अपना समाचार तो उससे बहुत पहले ही भेज दिया था। उसमें मैंने वही कुछ और उतना ही लिखा था जितना कि मिसेज मोदी ने मुझे बताया था। इसमें रुपयों की संख्या का उल्लेख नही है। उसमें तुम्हारे पिता का तुम्हें निमंत्रण-विषयक भी कोई बात नहीं है। हां, इतना लिखा है कि इकतीस औरतों में से केवल तीन दिल्ली की थीं। मैंने यह भी मिसेज मोदी के कहने पर लिखा है कि सरकारी रुपये से खूब जी भरकर मद्यपान किया गया है।"

यह सुन कि उसके पिता को डिसमिस का आर्डर हो गया है अथवा होनेवाला है, अनन्ता तो भौंचक्की हो मुख देखती रह गई। सानन्द चुपचाप बैठा मन में विचार कर रहा था कि माथुर साहब के घर में शोर मच रहा होगा।

माथुर साहब बहुत बेचैनी से अपने दामाद की प्रतीक्षा कर रहे थे। सानन्द ने हाथ जोड़कर नमस्कार किया तो उसको कोई उत्तर नहीं मिला। सानन्द कुर्सी पर बैठता हुआ पूछने लगा, "कहिए! आपने किस कारण याद किया है?"

"महिला सम्मेलन का जो समाचार तुमने समाचारपत्रों में छपवाया है, उसका प्रतिवाद करते हुए उन्हीं पत्रों में प्रकाशित करवा दो।"

"यह तो अब नहीं हो सकता।"

"क्यों?"

"एक तो मैं उन सब समाचारपत्रों के संवाददाता-पद से हटा दिया गया हूं। दूसरे झूठी बात लिखने की मुझे आदत नहीं है।"

"जानते हो, मुझे डिसमिस करने की धमकी दी गई है?"

"क्यों, इसमें आपका क्या दोष है?"

"इस सम्मेलन का कार्यभार मुझ पर था।"

"परन्तु आपका तो महकमा ही सप्लाई का है। यह तो सांस्कृतिक और शिक्षा मन्त्रालय का कार्य था।"

"जो हो, परन्तु यह मिला मुझे था। क्यों, यह मैं नहीं जानता। मुझे कहा गया है कि इसका संशोधन करवाऊं, वही मैं तुमसे कह रहा हूं।"

"परन्तु पिताजी! वह तो मैं अब कर नहीं सकता। आपने यह क्यों नही कह दिया कि समाचार आपके द्वारा बाहर नहीं निकला?"

"मैंने कहा है परन्तु कौन मानता है इसको? अनन्ता के चित्र समाचारपत्रों में प्रकाशित हुए हैं। यह बात विदित हो गई है कि अनन्ता मेरी लड़की है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम उसके पति हो।"

"आइ एम वैरी सॉरी सर! परन्तु आप तो व्यर्थ में ही फंस गये हैं। वास्तव में जो कुछ मैंने लिखा है वह मिसेज मोदी से विदित हुआ था।"

"तो अब क्या होगा?"

"होगा यह कि मेरा काम ठप्प हो गया है। और आपको डिसमिस किया नहीं जा सकेगा। हां, कहीं बदलकर दूर रेगिस्तान में फेंक दिया जावेगा।"

"तुम मिनिस्टर...से मिलकर अपनी सफाई क्यों नहीं दे देते?"

"वह तो मैं पहले ही विचार कर रहा हूं। परन्तु उसका कुछ लाभ नहीं रहेगा। बात यह है कि वह एक अहिन्दू है और एक ऐसे काम में हस्तक्षेप कर रहा है जिसका कि वह अधिकारी नहीं। इससे मैं उसको यही कहने जा रहा हूं। इससे वह मुझको प्रिवेण्टिव डिटेन्शन एक्ट में बन्द कर देंगे; और तो कुछ हो नहीं सकता।"

"तुम्हें इस बात से कोई भय नहीं प्रतीत होता?"

"इसमें भय की तो कोई बात है ही नहीं।"

"मान लो एक वर्ष के लिए तुमको जेल में बन्द कर दिया जाय तो पत्नी और बच्चे की परवरिश किस प्रकार होगी?"

"यह तो आपकी सूझ-बूझ से होती रहेगी। अनन्ता की अपने मकान से इतनी आय है कि वह मुझसे स्वतन्त्र रहकर निर्वाह कर सकती है।"

"तो ठीक है, सुन रही हो अनन्ता?"

"जी, ये सरकार से स्वतन्त्र हैं और मुझसे भी स्वतन्त्र हैं।"

"मैंने तुमसे सम्बन्ध स्थापित कर बहुत भारी भूल की है।"

"यह तो आप एक बार पहले भी कह चुके हैं। तब आपने भूल सुधारने का प्रयत्न किया भी था, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि अनन्ता ने उस सुधार में आपको सहयोग नहीं दिया अब आप पुनः यत्न कर सकते हैं।"

"मैंने तो जब आपको इस सम्मानित स्थान पर आसीन करने का निश्चय किया था तब इन सम्भावनाओं पर विचार कर लिया था। मैंने जो कुछ किया था वह ठीक समझकर ही किया था और अब भी मैं उसे ठीक ही समझता हूं।

"यह तुम पहले ही विचार कर चुके थे कि तुम्हारे कारण मुझे अपमानित होना पड़ेगा?"

"मैं इसे अपमानित होना नहीं समझता। मैं तो यह समझता हूं कि मेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगति के कारण आप दासता से मुक्त हो रहे हैं। शूद्र वर्ण से आप किसी उच्च वर्ण की ओर जा रहे हैं।"

"तो मैं शूद्र हूं?"

"देखिये, आप यह सब अपने अफसर अथवा किसी मन्त्री के आदेश पर कर रहे थे। हिन्दू रस्मो-रिवाज को बदलने के लिए षड्यन्त्र किया गया था और आप नौकर होने के कारण उसमें सहयोग देने लगे थे। यही तो शूद्र का काम है।

'महाभारत में लिखा है—

'प्रजापतिर्हि वर्णानां दासं शूद्रमकल्पयत।
तस्माच्छूद्रस्य वर्णानां परिचर्या विधीयते।।'

अर्थात् प्रजापति मेरा अभिप्राय है परमात्मा ने तीनों वर्णों की सेवा के लिए शूद्र की सृष्टि की है। शूद्र के लिए उनकी सेवा करना ही धर्म है।"

"आप सरकार की सेवा में संलग्न थे। यदि आप वहां से निकाल दिये गये तो निस्सन्देह आप कोई स्वतन्त्र कार्य करेंगे और शूद्र के पद से उन्नति कर वैश्य और कदाचित् ब्राह्मण-पद प्राप्त कर लें।"

"तुम अपने को किस वर्ण का मानते हो?"

"मैं तो ब्राह्मण का कार्य कर रहा हूं और छोडूंगा भी नहीं।"

"तो तुमने शुद्र कन्या से विवाह किया है?"

"जी हां। किन्तु शास्त्र ब्राह्मण को इसकी स्वीकृति देता है। मनु महाराज ने अपने धर्मशास्त्र में लिखा है—

'स्त्रीष्वनन्तरजातासु द्विजैरुत्पादितान्सुतान्।
सदृशानेव तानाहुमातृदोषविगर्हितान्।।'

"क्रम से अपने से हीन वर्ण की कन्या से उत्पन्न सन्तान पिता के वर्ण की होती है। माता के वर्ण की नहीं।"

"अतः अनन्ता की सन्तान ब्राह्मण होगी। ब्राह्मण की माता होने से वह भी स्वयमेव ब्राह्मणी हो गई है।"

"सानन्द! तुम तो बहुत ही पापी हो, जो स्वयं को ब्राह्मण और अपने श्वसुर को शूद्र मानते हो। तुम्हें बहुत अभिमान हो गया है। मैं तुम्हारा अभिमान चूर-चूर कर दूंगा। निकल जाओ मेरे घर से बाहर; अब यहां कभी मत आना। मैं तुम्हारा मुख भी नहीं देखना चाहता।"

माथुर क्रोध से थर-थर कांप रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सानन्द की हंसी निकल गई। वह उठ खड़ा हुआ और अनन्ता से बोला, "क्यों, चलोगी मेरे साथ?"

"नहीं, जब तक आप पिताजी से क्षमा नहीं मांग लेते, मैं आपके साथ नहीं जाऊंगी।"

"मैंने कुछ अपराध तो किया नहीं। इस पर भी तुम कहती हो तो मैं क्षमा मांग लेता हूं। देखिये, पिताजी! मैंने आपके प्रति कोई अनादर सूचक शब्द नहीं कहे। हमारे शास्त्र में वर्ण-विभाग से ऊंच-नीच का आशय नहीं है। भगवान कृष्ण ने गीता में लिखा है—

'स्वे-स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः।'

"अपने-अपने वर्ण के कर्म में लगा हुआ मनुष्य सिद्धि अर्थात् सुख, स्वर्ग तथा मोक्ष प्राप्त करता है।

"इस कारण कोई किसी प्रकार की अनादर की बात नहीं कर रहा था। परन्तु यदि आपको इस सत्य भाषण से दुःख हुआ है तो मैं अपने कहे पर खेद प्रकट करता हूं। मेरा यह आशय कदापि नहीं था जो कि आपने समझा है।"

परन्तु इससे माथुर साहब को सांत्वना नहीं मिली। उन्होंने कहा, "मैं तो तुम्हें तभी क्षमा कर सकता हूं जब तुम अपने समाचारपत्रों में छपे समाचार का प्रतिवाद प्रकाशित करवा लोगे।"

"यह तो अब असम्भव हो गया है।"

"तो चले जाओ यहां से। अनन्ता तुम्हारे साथ नहीं जा रही हैं।"

सानन्द न एक बार पुनः अनन्ता की ओर देखा। वह सिर नीचा किये आंसू बहा रही थी। सानन्द ने वहां से टल जाने में ही अपना कल्याण समझा। वह बाहर निकल गया और पांच वर्ष पूर्व की भांति आज भी पैदल ही कनाट प्लेस की ओर चल पड़ा।

जब वह निकल गया तो माथुर ने अनन्ता से कहा, "मैं चाहता हूं कि तुम अपने इस उजड्ड गंवार पति को सीधा कर दो। इसके लिए तुम अभी यहीं रहो।"

"पर पिताजी, कमल और फिर एक नये आनेवाले प्राणी का भी तो प्रश्न है?"

डाक्टर विस्मय में मुख देखता रह गया। फिर कुछ विचारकर बोला, "खैर, अभी तो रहो, एक-दो दिन में विचार कर लिया जायेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनन्ता की मां पर्दे के पीछे खड़ी श्वसुर-दामाद का झगड़ा सुन रही थी। अब वह बाहर आकर कहने लगी, "यह आपने क्या कर दिया है?"

"सब ठीक हो जायेगा। तुम लड़की को भीतर ले जाओ।"

सुधा जानती थी कि पिछली बार तो बिना कहा-सुनी के ही अनन्ता को दो वर्ष तक उनके घर पर रहकर प्रतीक्षा करनी पड़ी थी और फिर अन्त में स्वयमेव बिना बुलाये ही उसको अपने पति के पास जाना पड़ा था। इससे उसका और उसके माता-पिता का बहुत अपमान हुआ था। और अब क्या होगा? यह वह समझ नही सकी।

: 11 :

पैदल चलते हुए विचार करना अधिक सुगम रहता है। सानन्द तुगलक रोड से कनाट प्लेस तक पहुचंता हुआ अपने भविष्य के विषय में निर्णय कर चुका था। जहां तक निर्वाह का प्रश्न था, उसे कभी चिन्ता नहीं हुई थी। अपने संस्कारों के अधीन वह यह जानता था कि यदि भाग्य में कुछ कष्ट लिखा है तो वह टल नहीं सकता। उस कष्ट को सहन करने के लिए मन को दृढ़ करना चाहिए और सानन्द अपने मन को इसके लिए तैयार पाता था। जहां तक शरीर का सम्बन्ध ा है, उसको भी सर्वथा स्वस्थ और कष्ट भोगने में समर्थ पाता था।

बात थी कमल और अनन्ता के गर्भस्थ शिशु की। इस विषय मे भी उसने अपना व्यवहार निश्चित कर लिया था। कनाट प्लेस से उसने टैक्सी पकड़ी और वह घर जा पहुंचा। वहां जानकी, जो बच्चे की देखभाल के लिए रखी हुई थी, अपने घर जाने के लिए उत्सुक बैठी थी। कमल भी अब दो वर्ष का हो चुका था। अपनी मां के बिना वह उदास हो जाया करता था। सानन्द ने जानकी को छुट्टी दी और कमल को लेकर अपने भाई के घर जा पहुंचा। वहां उसने भोजन किया और भाभी सन्तोष को कह दिया, "अनन्ता मुझसे लड़कर अपने पिता के घर रह गई है ओर कमल को छोड़ गई है।"

"बहुत मूर्ख है।"

"मैं चाहता हूं कि-कि इसे आप अपने पास रखिये। कल मैं उससे पूछकर बताऊंगा कि इसको कहां रहना होगा।"

"ठीक है। कहो तो मैं जाकर पता कर दूं?"

"नहीं भाभी! पति-पत्नी की बातें स्वयं उन्हें ही निश्चित करनी चाहिए। तुम स्वयं को उसमें लिप्त न करो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सानन्द अपने घर जाने लगा तो सुचाला आ गई। वह तो पक्के रूप में भाई की कोठी में रहने ही लगी थी, साथ ही दाताराम भी समर्थ के काम में नौकर हो गया था और वह भी अब वहीं रह रहा था। उसे आया देख सानन्द ने पूछा, "सुनाओ सुचाला! घर-गृहस्थी कैसी चल रही है?"

"ठीक है भैया, क्या घर जा रहे हो?"

"हां, बाहर टैक्सी खड़ी है।"

"मोहिनी के पिता आपसे मिलना चाहते थे।"

"यहां अथवा अपने कमरे में?"

"अपने कमरे में।"

"तो चलो।"

सुचाला सानन्द को अपने फ्लैट में ले गई। कमल अपनी ताई के पास ही रह गया। वहां पहुंचने पर दाताराम ने कहा, "भैया! तुम्हें एक पत्र दिखाना है।"

"किसका है?"

"मलावी का।"

"वह कौन है?

"जिसके पास मैं पहले रहता था, उसकी बहन।"

"क्या लिखती है?"

"वह मेरे पास आकर रहना चाहती है।"

"वह कहती है कि उसका बच्चा मुझसे है, इस कारण उसके पति ने उसको घर से निकाल दिया है। वह बहुत दुःखी है?"

"और आप क्या चाहते हैं?"

"मैं सुचाला के व्यवहार से सन्तुष्ट हूं?"

"तो फिर उस पत्र को जलाकर भस्म कर दीजिये।"

"उसकी भाभी उसको अपने घर में घुसने नहीं देती। उसका पति उसको बदनाम कर रहा है। यदि मैं उसे अपने पास नहीं बुलाता तो उसको कुतुब की लाट से कूदकर मरने के अतिरिक्त अन्य कोई चारा ही नहीं रहेगा। कल तक उसको उत्तर मिल जाना चाहिए, यह भी उसने लिखा है।"

"कहां है वह!"

दाताराम ने सानन्द को पत्र देते हुए कहा, "इसमें सब लिखा हुआ है।"

"यह पत्र कब और कैसे आया है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आज प्रातःकाल मैं काम पर जा रहा था कि एक लड़के ने हाथ खड़ा कर मेरा तांगा रुकवाया और यह पत्र मेरे हाथ में देकर चला गया। कल तक वह उत्तर चाहती है। काम से लौटते हुए मैं आपके घर गया था। वहां जानकी से विदित हुआ कि आप अपने श्वसुर के पास गये हुए हैं। मैं कल प्रातःकाल फिर आपके घर पर आनेवाला था।"

"क्यों सुचाला! क्या चाहती हो?" सानन्द ने पूछा।

"उसका जीवन तो बचाना ही चाहिए। यदि कुछ आर्थिक कष्ट हो तो प्रबन्ध हो सकता है। मैं चाहती हूं कि आप इसमें मध्यस्थता करें।"

"अच्छी बात है। पत्र मैं ले जाता हूं, कुछ यत्न करूंगा।"

घर पहुंचकर सानन्द ने अनन्ता को पत्र लिखते हुए पूछा कि कमल के विषय में उसका क्या विचार है। वह उसे अपने पास रखना चाहती है अथवा नहीं। यदि रखना चाहती है तो वह स्वयं कमल को ले जावेगी या उसके पास पहुंचा दिया जाय। इस विषय में वह कब तक निर्णय करेगी क्योंकि जानकी को व्यर्थ में नौकरी पर रखना उचित नहीं। यदि एक-दो दिन में ही वह वापस आनेवाली हो तो जानकी को निकालने का प्रश्न नहीं उठता, अन्यथा उसको उचित वेतन और पुरस्कार देकर कार्यमुक्त कर देना होगा।

उसने वह भी सूचित कर दिया कि अभी कमल अपनी ताई के पास है। इस प्रकार पत्र लिख लिफाफे के अन्दर रख लिफाफा बन्द कर उसमें पता लिख उसे मेज पर रख दिया और फिर वह दाताराम का दिया हुआ पत्र पढ़ने लगा। उसमें लिखा था—

श्रीमान् जी!

'मैं नहीं जानती कि आपको क्या कहकर सम्बोधित करूं। आप भाई नहीं और पति भी नहीं है। भाई बनना आपने स्वीकार नहीं किया, पति बनाना मैंने स्वीकार नहीं किया। मैं सत्य कहती हूं कि विवाह करने के लिए मैं स्वेच्छा से तैयार हुई थी। परन्तु जिनसे विवाह किया और जिनके प्रति निष्ठा से रहने का मन में संकल्प किया, उनको मुझे पत्नी बनाना स्वीकार नहीं। विवाह से पूर्व मेरे रजस्वला होने का समय निकल चुका था। पन्द्रह दिन अधिक हो गये थे। इससे मेरे पति महोदय को सन्देह हुआ और उनके सन्देह की पुष्टि हुई उस बालक को देखकर जिसको मैंने जन्म दिया। आठवें मास में उत्पन्न होने वाला बालक जीवित नहीं रहता। कहते हैं मां भी नहीं बच पाती। किन्तु हम दोनों हृष्ट-पुष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और स्वस्थ हैं। इस कारण सन्देह की पुष्टि हो गई।

"मेरे पति ने इसका रहस्य पूछा तो मैंने सब सत्य-सत्य बता दिया। इससे उन्होंने मुझे घर से निकाल दिया। मैं अपने भाई के घर गई तो भाभी ने भी मुझे घर में घुसने नहीं दिया।

"एक दिन भाई के घर के द्वार के बाहर पड़ी रही। फिर भूख से व्याकुल होने पर और बच्चे का ख्याल कर अपनी एक विधवा पड़ोसिन के घर में रहने के लिए चली गई। मेरे पति के घरवालों ने मुझे बदनाम करना आरम्भ कर दिया है। मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि क्या करूं। बहुत कठिनाई से दस महीने निकाले हैं। वह विधवा मुझसे कहती रहती है कि मैं युवा हूं, सुन्दर हूं, मुझे विवाह कर लेना चाहिए।

"मुझे अब इस प्रकार जीवित रहने का कोई सार दिखाई नहीं देता। अतः आपको पत्र लिख रही हूं। मैं आपको नित्य तांगे में इधर आते-जाते देखती हूं, इस कारण अवसर जानकर उस विधवा के पुत्र द्वारा यह पत्र भेज रही हूं।

"आप अपने लड़के को ले जायें, जिससे मैं शान्त-चित्त से कुतुब की लाट से कूदकर इस जीवन का अन्त कर दूं। मैं कल सायंकाल तक आपके उत्तर की प्रतीक्षा करूंगी। आपके उत्तर न आने पर लड़का भी मेरे साथ ही जायेगा।"

—मलावी।

पत्र पढ़ते हुए सानन्द के रोयें खड़े हो गये। इस पर भी वह वास्तविक बात जाने बिना कुछ करना नहीं चाहता था। इस विषय में उसने एक योजना बनाई।

प्रातः उठकर स्नानादि से निवृत हो सानन्द घर के बाहर जाने ही वाला था कि जानकी आ गई। सानन्द ने उसे दो दिन की छुट्टी दे दी। उसने उसको बताया कि अनन्ता पिता के घर पर है, बच्चा भी उसके पास ही जानेवाला है। उसके दो-तीन दिन तक आने की आशा है, तब तक उसको छुट्टी है। यह सुनकर जानकी बोली, "बाबूजी!" अगर कहें तो घर में झाड दे दूं?"

"दो दिन बाद एक साथ ही झाड़ू-फूंक लेना, क्योंकि मेरा भी पता नहीं कि मैं घर आऊं या नहीं।"

जानकी गई तो सानन्द भी घर से निकल और ताला लगाकर बाजार में चला गया। अनन्ता का पत्र डाक में डाल वह मेलाराम की दुकान पर पहुंच गया। दुकान पर ग्राहक होने के कारण उसको दस मिनट तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। अवसर मिलने पर सानन्द ने पूछा, "कहिये कैसे हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेलाराम ने उसे दुकान का ग्राहक समझा था। उसके इस प्रकार प्रश्न करने पर उसने ध्यानपूर्वक देखा। पहचानने पर बोला, "ओह, आप दाताराम के साले हैं?"

"जी! मैं आपको अपनी एक बात स्मरण कराने के लिए आया हूं। अन्तिम बार मैं आपको तब मिला था जब आपने दाताराम जी को दुकान और घर से निकाल दिया था। मैंने आपको बताया था कि दाताराम का ख्याल है कि आपकी बहन उससे ही विवाह करने का हठ करेगी और वह तथा उसकी पत्नी उस विवाह को स्वीकार कर लेंगे। आपने कहा था कि मलावी स्वेच्छा से विवाह के लिए तैयार हुई है। अब ऐसा प्रतीत होता है कि उस विवाह को अस्वीकार कर मलावी ने भूल की थी। आप दाताराम जी का संकेत समझ नहीं सके थे। अब लड़की न तो आपके घर में रहती है न अपने पति के घर में। मैं चाहता हूं कि उसको बिगड़ने से बचाने के लिए कोई उपाय करना चाहिए। उत्तम यही होगा कि उसका कहीं विवाह कर दिया जाय।"

"तो क्या आप उसके साथ विवाह करेंगे?"

"जी नहीं। मेरा तो विवाह हो चुका हैं साथ ही मेरी पत्नी सुन्दर होने के साथ-साथ तेज भी है। परन्तु यदि आप उसको अपने घर में रखें और उसे भले घर की लड़की कहलाने का अवसर दें तो मैं उसके लिए कोई लड़का ढूंढ़ने में सहायता कर सकता हूं।"

"परन्तु आप उसमें रुचि क्यों लेने लगे हैं?"

"उसने कल दाताराम जी को एक पत्र भेजा है। इस विषय में वह उनकी सहायता चाहती है। दाताराम जी सहायता तो करना चाहते है परन्तु वे प्रकट होना नहीं चाहते।"

"देखिये, इस बदमाश लड़की के विषय में मैं भी बीच में पड़ना नहीं चाहता। दाताराम बहुत बड़ा बदमाश सिद्ध हुआ है। यह लड़की भी वैसी ही है। मैं व्यर्थ में बीच में क्यों पड़ूं?"

इस अन्तिम वाक्य से मेलाराम की मानसिक अवस्था की वास्तविकता विदित हो गई। इससे सानन्द ने विचारकर कहा, "व्यर्थ में नहीं, कुछ आपके लाभ की बात भी हो सकती है।"

"क्या?"

"जो मलावी से विवाह करना चाहेगा उससे वह विवाह का खर्चा दिलवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया जायेगा जो आप उस पर करेंगे।"

"खर्चा नहीं। कोई एक निश्चित धनराशि का निर्णय कर दो।

"यह तो आपकी बहन की सूरत-शकल देखकर कोई देनेवाला निश्चय कर पायेगा। किन्तु इतना मैं गारंटी के साथ कह सकता हूं। कि कुछ-न-कुछ तो अवश्य मिलेगा।"

"इसके लिए मुझे अपनी पत्नी से राय लेनी पड़ेगी।"

"यह निश्चय आज ही और अभी करना होगा। कुछ विलम्ब हो जाने से बात बनेगी नहीं।"

"अब कैसे हो सकता है।

"अभी मेरे साथ चलिये। अपनी पत्नी से पूछकर बहन को अपने घर ले आइये। तदनन्तर एक-दो दिन में विवाह का प्रबन्ध कर दिया जायेगा।"

मेलाराम गम्भीर हो विचार करने लगा। फिर बोला, "मैं दुकान बन्द करके ही जा सकता हूं। यदि पांच सौ रुपये की रकम कम-से-कम वसूल होने वाली हो तो मैं दुकान बन्द कर चल सकता हूं।"

मेलाराम के मन की इतनी हीनावस्था का आभास पाकर सानन्द अन्दर-ही-अन्दर कांप उठा। वह विचार करता था कि इन पापियों के घर में ले जाकर क्या उस लड़की को रखना ठीक रहेगा? सानन्द ने कहा, "एक बात करिये। यदि आपकी बहन विवाह के लिए तैयार हो गई तो पांच सौ रूपये का प्रबन्ध कर दूंगा। अभी तो उससे भी पूछना होगा। साथ ही उसके विवाहित पति से लिखाना भी होगा कि उसने उसका परित्याग कर दिया है। इस सब कार्य में दो-चार दिन तो लग ही जायेंगे।"

"तो पहले इन सब बातों का प्रबन्ध कर लो फिर मेरे पास आना। तब मैं उसे अपने घर ले चलूंगा।"

"मैं इस प्रबन्ध के दिनों में ही तो अपने घर रखने की आपसे बात कर रहा हूं। यदि यह प्रबन्ध ऐसे ही करना है तो फिर अपको पांच सौ रुपया दिलाने की क्या आवश्यकता है?"

पुनः पांच सौ की बात सुन मेलाराम से मुख के लार टपक पड़ी। वह बोला, "तुम भले आदमी प्रतीत होते हो इससे तुम पर विश्वास कर ही मैं चलता हूं, वरना आज किसी पर विश्वास करने का जमाना नहीं रहा।"

"आप ठीक कहते हैं, परन्तु पांचों अंगुलियां बराबर नहीं होती। कुछ लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छे भी हो सकते हैं।"

मेलाराम दुकान बन्द कर सानन्द के साथ चल पड़ा। दोनों टैक्सी से रमेशनगर में, एक बहुत ही गन्दी और टूटी-फूटी लकड़ी की झोपड़ी के सामने जा खड़े हुए।

मेलाराम ने अपनी बहन को आवाज दी। एक वृद्धा और एक सुन्दर युवती गोद में नौ-दस मास के बच्चे को लिए बाहर आ गई। भाई के साथ एक सफेदपोश युवक को खड़ा देख लड़की के माथे पर त्योरी चढ़ गई। बोली, "तो अब किसी और को ले आये हैं?"

"मलावी! पहले इस आदमी की बात सुन लो, फिर जितना गुस्सा करना हो कर लेना।"

"मैंने सब की सुन रखी है। मेरी आंखों से दूर हो जाओ। बहन की दलाली करते शरम नहीं आती आपको?"

लड़की की बात सुन सानन्द को विदित हुआ कि मेलाराम इससे पूर्व भी बहन को बेचने का यत्न करता रहा है। इस कारण सानन्द ने मेलाराम को बीच में से पृथक् करने के लिए कह दिया, "देखो बहन मलावी! मैं तुम्हारे साथ विवाह करने के लिए नहीं आया हूं। मेलाराम को तो मैं तुम्हारा पता जानने के लिए अपने साथ लाया था। तुमने कल दाताराम को पत्र लिखा था, मैं उसके विषय में ही बात करने के लिए आया हूं।"

मलावी विस्मय से मुख देखती रह गई। सानन्द बोला, "दाताराम मेरे बहनोई हैं। मैं अपनी बहन के कहने पर ही तुमसे मिलने के लिए आया हूं। यह तुमसे मिलना चाहती है।"

मलावी ने अपने समीप खड़ी स्त्री की ओर संकेत करते हुए कहा, "यह विधवा ब्राह्मणी है। इनका पोता आज भी मेरे पत्र के उत्तर के लिए सड़क पर खड़ा प्रतीक्षा कर रहा है।"

"मैं वही उत्तर देने के लिए आया हूं। तुम मेरे साथ मेरी बहन से मिलने के लिए चल सको तो तुम्हारी समस्या का कुछ-न-कुछ समाधान तो निकल ही आयेगा।

मलावी इस प्रस्ताव पर टुकुर-टुकुर देखती रही। जब कुछ क्षण तक वह कुछ नहीं बोली तो वृद्धा ने पूछा, "कहां चलना होगा?"

"बहन के घर पर ओखला में। हम इस टैक्सी में जायेंगे और फिर इसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में वापस भी आ जायेंगे।''

वृद्धा ने लड़की की ओर देखते हुए कहा, ''चलो बेटा! यह बात दूसरी है।''

वृद्धा ने अपने खोखे के द्वार बन्द कर उस पर ताला लगाया और टैक्सी में बैठते हुए कहा कि विनोद को भी लेते चलो। वह सड़क पर तांगे की प्रतीक्षा में खड़ा होगा।

जब दोनों महिलायें टैक्सी में बैठ गईं तो सानन्द ने मेलाराम से कहा, ''आप भी बैठ जाइये। आपको दुकान पर छोड़ दूंगा।''

''तो मेरी शर्त का क्या हुआ?''

''उसके लिए इस लड़की के पति के पास जाना होगा।''

''तो चलो, वह अभी घर पर ही होगा।''

टैक्सी नरेन्द्र सिंह के घर की ओर चली तो मलावी ने पूछा, ''उनसे क्या काम है?''

''मैं उसको यह बताने जा रहा हूं कि मैं उसकी पत्नी को बहन के घर ले जा रहा हूं। उसको इसमें कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।''

''वे तो मुझसे अपना सम्बन्ध तोड़ चुके हैं।''

''उनसे यह लिखाना पड़ेगा।''

''किसलिए?''

''इसलिए कि उनको किसी प्रकार का गिला न रहे।''

मलावी इस बात को समझ नहीं सकी। वह अभी विचार कर रही थी कि वे लोग सरदार दिलीपसिंह के मकान पर जा पहुंचे। टैक्सी का शब्द सुनकर स्वर्णकौर बाहर निकल आई। उसे देख मेलाराम ने कहा, ''बहनजी! जरा नरेन्द्रसिंह को भेजना, ये उनसे मिलने के लिए आये हैं।''

''क्या कहना चाहते हैं?''

सानन्द ने मेलाराम के कन्धे पर हाथ रख स्वयं बात करते हुए कहा, ''माताजी! नरेन्द्रजी से काम है, उन्हें बुला दीजिये।''

स्वर्णकौर ने नरेन्द्र को आवाज दी तो वह बाहर आ गया। सानन्द उसको लेकर कुछ दूर चला गया। वहां ले जाकर बोला, ''मुझे कल इस लड़की का एक पत्र मिला है। मैं यह जानना चाहता हूं कि इस पत्र में जो लिखा है वह वास्तविक है अथवा झूठ।''

''परन्तु आप हैं कौन?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं गवर्नमेंट आफ इंडिया के 'सीक्रेट इंटैलीजैंस' डिपार्टमेंट का एक अधिकारी हूं।"

यह सुन नरेन्द्र सानन्द को सिर से पांव तक देखता रहा। उसे चिन्ता लगने लगी। घबराहट में ही उसने पूछा, "क्या लिखा है इसने?"

"देखिये, "मैं भी आपकी भांति ही एक वेतनभोगी क्लर्क हूं। इससे आपके साथ मेरी सहानुभूति होनी स्वाभाविक है। इसलिए यदि पूर्ण स्थिति पर आप अपना पक्ष बता दें तो बात यही समाप्त हो सकती है।

"इसने लिखा है कि इसके भाई ने आपसे इसका विवाह किया था। क्या यह ठीक है?"

"हां, यह ठीक है।"

"इसका बच्चा पैदा हुआ तो आपको सन्देह हो गया कि बच्चा आपका नही है।"

"हां, यह भी ठीक है।"

"फिर इसने आपके समक्ष स्वीकार किया कि वह बच्चा इसके भाई के पत्तीदार दाताराम का है?"

"हां, यह बात इसने स्वीकार की थी।"

"इसने अपने पत्र में भी यह माना है। तब आपने इसको अपने घर से निकाल दिया था?"

"जी!"

"इसके भाई ने भी इसको घर पर नहीं रखा?"

"आपको तो मालूम ही है।"

"इस कारण यह लड़की खुदकशी करना चाहती है। इसने पुलिस में रिपोर्ट की और पुलिस ने आपके अफसरों को लिखा और वहां से यह मामला हमारे विभाग के पास आ गया है।"

"तो फिर?"

"आपका व्यवहार बिलकुल युक्तियुक्त है। आपके लिए दो मार्ग है। एक तो यह कि इस लड़की को आप क्षमा कर दें और अपने घर पर रख लें। यदि आप इस बच्चे की परवरिश करना नहीं चाहते तो इसको 'फौंडलिग्ज' में भेज दिया जायेगा।"

"एक दूसरा मार्ग भी है। वह यह कि इसे सर्वथा छोड़ने की बात लिख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीजिये। मैं इसे अपने विभाग के अधिकारियों के पास ले जा रहा हूं। इसका कहना है कि या तो इसको आप अपनी पत्नी मान अपने पास रखें। अन्यथा इसको दुराचारिणी मान छोड़ दें। बात बीच में नहीं रह सकती। इससे तो यह माना जायेगा कि आप इसको आत्म हत्या करने पर मजबूर कर रहे हैं। यह जुर्म है।"

नरेन्द्रसिंह समझ गया कि पत्नी को खाली घर निकाल देने से ही काम नहीं चल सकता। परन्तु लिखकर देने की बात से वह घबराता था। इस कारण समय प्राप्त करने के लिए उसने कहा, "मुझे अपने वकील से पूछ लेने दो। मैं लिखकर दे दूंगा।"

"मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं। इस पर भी एक बात कहे देता हूं कि बात एक बार दफ्तर में चली गई तो 'कम्प्लीकेशंज' पैदा हो सकती हैं। मैं भी तो वकील हूं। मैं जो कहता हूं, वह सुन लीजिये; फिर जो मन में आये करें।"

"आप इस लड़की को एक पत्र लिखकर दे दो। उसमें यह लिखें कि इसने स्वयं स्वीकार किया है कि इसका सम्बन्ध विवाह से पूर्व ही दाताराम से रह चुका था। इसकी जो सन्तान है वह भी दाताराम से ही है। साथ ही यह भी लिख दें कि यह आपके सम्मुख स्वीकार कर चुकी है कि इसको विवाह से पूर्व विदित था कि यह गर्भवती है। इस कारण इस धोखे से किये गए विवाह को आप विवाह नहीं मानते और आप इसको अपनी पत्नी नहीं मानते। इसकी जहां इच्छा हो, जा सकती है।"

"ऐसी चिट्ठी लिखकर देने से आप दोषमुक्त हो जायेंगे। इस कारण आत्महत्या करने का दोष भी इस पर ही रह जायेगा।"

कुछ विचार करने के उपरान्त नरेन्द्रसिंह बोला, "आप भीतर आ जाइये। तनिक पिताजी से राय ले लूं।"

"चलिये।"

"दोनों भीतर गये और दिलीपसिंह को पूर्ण बात बता दी। इस पर दिलीपसिंह ने पूछा, "यह लिखकर दे देने के बाद क्या नरेन्द्रसिंह दूसरा विवाह कर सकेगा?"

"हां, मैं यत्न करूंगा कि यह लड़की इस पत्र का उत्तर नरेन्द्रसिंह को दे दे कि वह इनके त्याग को स्वीकार करती है और अपना तथा अपने बच्चे का इन पर किसी प्रकार का अधिकार नहीं समझती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप अभी लिख देंगे?"

"यत्न करूंगा। अन्यथा यह पत्र दफ्तर में प्रस्तुत कर वहां से निर्णय कर दूंगा कि यह औरत चरित्रहीन है और यदि यह आत्महत्या करती है तो इसके लिए वह स्वयं उत्तरदायी है।"

दिलीपसिंह को भी समझ में बात आ गई और उसके कहने पर उसके लड़के ने मलावी के नाम एक पत्र लिख दिया। इस पर सानन्द मलावी को पृथक् में ले गया और उसको समझाया कि वह भी एक पत्र लिख दे तो वह उसके रहने का प्रबन्ध अपनी बहन के पास कर देगा। अन्यथा यह सिक्ख उसकी बहन को तंग करेगा। मलावी मान गई और उसने भी लिखकर दे दिया। दोनों पत्रों और विनोद को ले टैक्सी में सवार हो वे चांदनी चौक की ओर चल पड़े, तो मेलाराम ने पूछा, "नरेन्द्रसिंह से लिखा-पढ़ी हो गई है?"

"हां, हो गई है। इन दोनों ने अपने विवाह से मुक्ति का पत्र लिख दिया है।"

"तो अब मेरी बात होनी चाहिए।"

"आपकी बात तो कोतवाली में चलकर होगी।"

"क्या मतलब?"

"आपको बरदाफरोशी के जुर्म में पकड़वाने की सोच रहा हूं।"

"बहुत बेईमान हो तुम?"

"यह तो न्यायालय ही निर्णय करेगा कि कौन बेईमान है।"

मेलाराम ने गुस्से में ड्राईवर से कहा, "ठहरो, गाड़ी रोको।"

सानन्द ने कहा, "रोकने की जरूरत नहीं है, सीधे चांदनी चौक कोतवाली की तरफ चलते चलो।"

"भाई रोको, नहीं तो टक्कर लगवा दूंगा।" मेलाराम ने स्टीयरिंग को पकड़ते हुए कहा।

ड्राइवर ने गाड़ी रोक दी तो सानन्द ने हंसते हुए कहा, "इसको उतार दो।"

मेलाराम आगे की सीट पर बैठा था। गाड़ी रुकने पर उसने स्वयं ही तुरन्त द्वार खोला और बाहर निकल सानन्द को गालियां देने लगा। उसके उतर जाने पर सानन्द ने ड्राइवर से आगे चलने के लिए कह दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

: 1 :

सानन्द का संसद की प्रेस-गैलरी में जाने का कार्ड रद्द हो गया। इस सम्बन्ध में वह लोक-सभा के स्पीकर से मिला। स्पीकर ने उसको अपने सामने बैठाते हुए कहा, "तो आप हैं मिस्टर एस. मिश्रा।"

"जी नहीं, मैं सानन्द मिश्र हूं। मैंने आपको कष्ट इसलिए दिया है कि मैं अपना प्रेस-गैलरी कार्ड वापस चाहता हूं।"

"मेरे पास रिपोर्ट आई है कि तुम संसद की गलत रिपोर्टिंग करते हो।"

"यह आपको किसी ने गलत सूचना दी है। आपको इसके लिए प्रमाण मांगना चाहिए।"

"मैं किसी मन्त्री से प्रमाण नहीं मांग सकता।"

"कोई वैधानिक आपत्ति है क्या?"

"बात यह है कि मिनिस्टर अपनी राय के मालिक हैं और मैं उनकी राय पर सन्देह नहीं कर सकता।"

"मेरी तुच्छ सम्मति में पार्लियामेंटरी प्रोसीजर में ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है। हां, वह प्रमाण जो आपको दिखाये जायें उनको पब्लिक में प्रकट नहीं कर सकते, परन्तु आप अपना सन्तोष तो कर सकते हैं।"

"मैं मजबूर हूं भाई।"

"तब तो मुझे कुछ कहना नहीं है। मैं अब जाना चाहता हूं।"

"तुम मिनिस्टर...से मिलकर क्षमा क्यों नहीं मांग लेते?"

"किस अपराध के लिए?"

"यह जो दक्षिण के कुछ समाचारपत्रों में महिला-सम्मेलन का वृत्तान्त प्रकाशित हुआ है, वह भ्रामक तो है ही।"

"घटनाओं में तो कोई असत्यता नहीं है। मेरे उन घटनाओं के अर्थ लगाने में भूल हो सकती है। परन्तु वे महानुभाव मुझको समझा सकते थे कि मेरा अनुमान किस प्रकार गलत है।"

"तो क्या मैं तुम दोनों में भेंट का प्रबन्ध कर दूं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसके लिए मैं आपका बहुत अभारी रहूंगा।"

"ठीक है, आज साढ़े पांच बजे मेरे घर पर चाय पीने के लिए आ जाना।"

"मैं हाजिर हो जाऊंगा।"

सानन्द इस नई परिस्थिति के उत्पन्न होने पर बहुत प्रसन्न था। वह समझ रहा था कि दाल में कहीं कुछ काला है। इस विषय में जानकारी प्राप्त करने के लोभ में वह साढ़े पांच बजे की प्रतीक्षा करने लगा। ठीक साढ़े पांच बजे वह स्पीकर के बंगले में पहुंचा तो चपरासी ने आगे बढ़कर उससे पूछा कि क्या वही सानन्द मिश्र है? उसके हां कहने पर वह उसको अन्दर ले गया।

सानन्द ने अन्दर प्रविष्ट होते हुए कहा, "क्षमा कीजिये, मैं एक मिनट पूर्व ही भीतर प्रविष्ट हो रहा हूं।"

स्पीकर ने सामने टंगे क्लाक की ओर देखा। वास्तव में साढ़े पांच बजने में अभी एक मिनट शेष था। इसलिए उसने कहा, "ठीक है, आप पहले आ गये यह अच्छा ही हुआ। मैं मिनिस्टर महोदय के आने से पूर्व ही आपको एक बात बताना चाहता था। मिनिस्टर महोदय आपको अपने कार्यालय में एक अच्छे उच्च पद पर नियुक्त करना चाहते हैं। आप मान जाइये। इन पत्रों के प्रतिनिधित्व में क्या रखा है। आप जैसी योग्यता के युवकों को तो महत्वाकांक्षी होना चाहिए।"

"सो तो मैं हूं ही।"

"इसी कारण मैं भी कह रहा हूं कि उनका प्रस्ताव आप स्वीकार कर लीजियेगा। इससे देश को यह लाभ होगा कि आप अपनी योजनाएं चला सकेंगे। मैंने सुना है कि आप प्राचीन पद्धति के प्रशंसक हैं।"

सानन्द अंभी इस विषय पर विचार ही कर रहा था कि मन्त्री महोदय आ गये। दोनों ने उठकर उनका स्वागत किया। जब वे बैठ गये तो बैरा चाय ले आया। वह चाय लगाने लगा तो स्पीकर और मन्त्री परस्पर मौसम वगैरह के विषय में बात करते रहे। जब वह चाय लगाकर चला गया तो स्पीकर ने कहा, "ये हैं मिस्टर मिश्र। इन्हीं के विषय में आज बातचीत हो रही थी।"

सानन्द ने हाथ जोड़ नमस्कार किया। वे कहने लगे, "आपके श्वसुर मिस्टर माथुर ने आपकी और आपके परिवार की बहुत प्रशंसा की है। मुझे बहुत कठिनाई हो रही है कि हमारे विभिन्न दूतावासों में 'कल्चरल अटैची' के काम के लिए अच्छे परिवारों के योग्य युवक नहीं मिल रहे। आपकी योग्यता जानकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने अनुभव किया कि आप अपना जीवन इस प्रकार थर्ड क्लास के काम में बरबाद कर रहे हैं।"

अपने विषय में आपकी यह सम्मति सुनकर मुझे स्वयं पर गर्व हो रहा है। परन्तु मैं निवेदन करना चाहता हूं कि कौन-सा काम थर्ड क्लास है और कौन-सा फर्स्ट क्लास, इसका निर्णय अपने विषय में तो मुझे ही करना चाहिए। मैं ब्राह्मण का लड़का होकर ब्राह्मण के अनुरूप ही कार्य कर सकता हूं।"

"तो क्या आप किसी शिवालय में बैठकर शिव-स्तोत्र पढ़ना चाहते हैं?"

"यह कार्य ब्राह्मण का नहीं है।"

"तो क्या यह किसी भंगी-चमार का है?"

"नहीं, यह तो किसी मूर्ख गंवार का है। ब्राह्मण का कार्य तो चारों वर्णों के लोगों को धर्म का मार्ग बताना है। प्रश्न तो यह है कि 'कल्चरल अटैची' के कार्य का निर्णय कौन करेगा?"

"यह हमारी पार्लियामेंट करती है। पार्लियामेंट का विश्वास होता है मन्त्रिमण्डल पर और उसके कार्य पर और सब विषयों में मन्त्रिमंडल का निर्णय ही मान्य होता है।"

"जी, इतनी विधान की बात तो मैं भी जानता हूं। परन्तु मैं तो यह विचार कर रहा था कि पार्लियामेंट संस्कृति के विषय में कुछ मत देने की अधिकारिणी है अथवा नहीं?"

"क्यों, अधिकारिणी क्यों नहीं है?"

"इसलिए कि यह ब्राह्मणों का समाज नहीं है। ब्राह्मण वह होता है जो–

अक्रोधः सत्यवचनं संविभागः क्षमा तथा,
प्रजनः स्वेषु दारेषु शौचमद्रोह एव च।

"और फिर यह भी लिखता है–

ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा,
नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्ति न हापयेत्।।
न लोकवृतं वर्तेर्त वृत्तिहेतोः कथञ्चन।
अजिह्मामशठां शुद्धां जीवेद्ब्राह्मण जीविकाम्।।
सन्तोषं परमास्थाय सुखार्थी संयतो भवेत्।
सन्तोषमूलं हि सुखं दुःखमूलेविपर्ययः।।"

मन्त्री महोदय हंसने लगे और बोले, "भाई! तुमने तो कथा बांचनी आरम्भ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दी। अपनी भाषा में बात करो तो कुछ समझ भी आये।"

"मैं यह कह रहा हूं कि संसद और मन्त्रिमण्डल राष्ट्र के विषय में मत देने के अधिकारी नहीं हैं। इसके लिए तो ब्राह्मण ही उचित अधिकारी है। और ब्राह्मण उसे कहते हैं–

"जो क्रोध न करता हो, झूठ न बोलता हो, धन बांटकर खाता हो, जिसमें क्षमा-भाव हो। अपनी पत्नी से ही सन्तान पैदा करे, बाहर तथा भीतर से शुद्ध रहे और किसी से द्वेष न करे।

"जो ऋषियज्ञ अर्थात् सत्य ज्ञान के जानने वालों की पूजा करे, देवयज्ञ अर्थात् दिव्य भौतिक शक्तियों का ज्ञानी हो, भूतयज्ञ अर्थात् इतिहास का ज्ञाता और सदा नृयज्ञ अर्थात् लोक-कल्याण करनेवाला हो, पितृयज्ञ अर्थात् पूर्वजों के आभार को जाननेवाला और यथाशक्ति संयम से रहनेवाला हो।

"जो जनसाधारण को प्रसन्न करना मात्र अपना काम नहीं समझे; झूठ और दम्भ से रहित पवित्र कार्य द्वारा अपनी आजीविका का उपार्जन करे।

"जो सन्तोषी हो, सबके सुख तथा कल्याण की इच्छा करने वाला हो। क्योंकि सन्तोष सुख का मूल है और तृष्णा दुःख का।

"इस आधार पर कहता हूं कि क्या इन लक्षणों से युक्त कोई व्यक्ति आपकी संसद अथवा मन्त्रिमण्डल में है? मैं समझता हूं कि ऐसा कोई नहीं है। इसलिए मेरा कथन है कि सांस्कृतिक विषयों पर ये क्या सही अभिमत प्रकट कर सकेंगे? और फिर कौन ऐसा बुद्धिमान व्यक्ति होगा जो इन अयोग्य व्यक्तियों की आज्ञाओं का पालन करेगा?"

"क्षमा कीजिये। आप मन्त्रिमण्डल में सांस्कृतिक विषयों के मन्त्री हैं। इस कसौटी पर यदि आपको कसा जाय तो क्या आप ब्राह्मण पदवी के चरण भी छूने लायक हैं?"

मंत्री महोदय का मुख क्रोध से लाल हो गया। जो प्रधान मंत्री सदृश व्यक्ति को डांटने की क्षमता रखता हो उसको एक अपरिचित युवक अयोग्य मान संस्कृति के विषय में व्याख्यान सुनाने लगा था।

मंत्री महोदय ने कह दिया, "मेरी समझ में आपकी बातें नहीं आ रही हैं। आपको यह समझ लेना चाहिए कि ब्राह्मणी जमाना नहीं है। आज प्रजातन्त्र का युग है। इसमें जनता की चलती है और जनता का प्रतिनिध्य करती है संसद और मन्त्रिमण्डल। इस कारण ये जो कहें वही सत्य है, वही धर्म है, और वही तहजीब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। यदि तुम्हें इनके निर्णय को मान्यता देनी है तो बारह सौ रूपया मासिक वेतन और पत्नी सहित विदेश में रहने की व्यवस्था और सुविधा की नौकरी मिल सकती है।''

मंत्री महोदय का क्रोध शान्त नहीं हुआ था। सानन्द मुस्करा रहा था। उन्होंने चाय का प्याला उठाया और एक चुस्की ली। इससे वह स्वस्थ हो गया और उसे अपनी भाषा को संयत करने का अवसर मिल गया। उसने कहा, ''इस लुभायमान प्रस्ताव के लिए मैं आपका आभारी हूं। इस पर भी मेरी धारणा तो यही है कि मैं जनसाधारण को विद्वानों का अफसर बनने के योग्य नहीं समझता। इससे मैं तो ऐसे विधान को जिसमें जनता को अधिपति और विद्वानों को उनका दास समझा जाय, गलत मानता हूं।''

''तो आपको प्रेस-गैलरी का पास नहीं मिल सकता।''

''मैं आपका इसके लिए धन्यवाद करता हूं।''

''धन्यवाद? यह कहां का शिष्टाचार है?''

''भारतवर्ष का। जो कोई बड़ा आदमी किसी छोटे पर कृपा करे तो उसका धन्यवाद करना ही चाहिए।''

''मगर क्या आप इसे मेहरबानी समझते हैं?''

''जी, हमारे यहां तो कहावत है न, बुजुर्ग यदि गाली भी दे तो उसे उनका आशीर्वाद ही समझना चाहिए।''

''अब आप जा सकते हैं।''

सानन्द ने हाथ का प्याला मेज पर रख दिया और हाथ जोड़ मुस्कराता हुआ खड़ा हो गया। संसद का अध्यक्ष भौंचक्का हो मुख देखता रह गया। सानन्द ने दोनों को नमस्कार किया और ड्राइंग-रूम से बाहर निकल आया।

घर पहुंच कपड़े बदल वह आराम से पलंग पर लेट गया। लेटे-लेटे वह उस दिन की पूर्ण घटना पर विचार करने लगा। वह विचार कर रहा था कि इसमें डाक्टर माथुर और उसकी अपनी पत्नी अनन्ता का कितना-कितना हाथ हो सकता है।

लगभग एक घण्टे आराम कर वह उठा और कपड़े पहन फ्रैंड्स कालोनी में जा पहुंचा। उस दिन मध्याह्न के समय वह मलावी को सुचाला के कमरे में बैठा आया था। अपनी भाभी को बता आया था कि यह सुचाला से मिलने के लिए आई है। विधवा और उसका पुत्र विनोद भी वहीं उनके साथ ही थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह रात के आठ बजे वहां पहुंचा तो दाताराम चिन्तित-भाव में बरामदे में एक कुर्सी पर बैठा उस दिन का समाचारपत्र पढ़ रहा था। सानन्द के पहुंचने पर वह उठकर उससे बात करने के लिए लॉन में आ गया। उसने कहा, "मैं तो मलावी को अपनी पत्नी बनाकर रखने के लिए तैयार हूं, सुचाला भी इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं कर रही है। परन्तु मलावी इस रूप में यहां रहने के लिए तैयार नहीं है। उसकी उत्कट इच्छा है कि यदि उसके बच्चे को हम अपने पास रख लें तो वह अपना जीवन समाप्त कर दे। सुचाला और सन्तोष भाभी उसको समझा रही हैं कि वह उनके यहां काम करे तो उसका निर्वाह सुविधापूर्वक हो सकता है। इससे उसका जीवन सुख और शान्ति से व्यतीत हो जायेगा। वे लोग इस समय भी बातचीत कर रहे हैं।"

"आपकी प्रबल इच्छा है उसके साथ विवाह करने की?"

"नहीं, अब नहीं। सुचाला की उदारता देख कर मेरी सब स्वार्थ एवं वासनामय भावनायें विलुप्त हो गई हैं। सुचाला से मैंने मलावी से अपने सम्बन्ध का वर्णन तो इस कोठी में आने पर ही कर दिया था और वह सदा इस विषय में मुझको उलाहने ही दिया करती थी। परन्तु जब उसकी चिट्टी पढ़ी तो मलावी को यहां लाने के विषय में सम्मति देने में उसको एक क्षण भी नहीं लगा। मैंने उसको बताया भी था कि वह बहुत सुन्दर है। सम्भव है मैं स्वयं को नियन्त्रित न कर सकूं। इस पर उसने मुझसे कहा कि मैं, यदि चाहूं तो, उससे विवाह कर सकता हूं। किन्तु बलपूर्वक अथवा अनियमित रीति से नहीं, प्रत्युत विधिवत् विवाह होना चाहिए।

"मैं जब सायंकाल आया तो मलावी और सुचाला परस्पर बातें कर रहीं थीं। मुझे सुचाला ने ही बताया कि मलावी अब इस पतित जीवन से मुक्ति चाहती है। वह अब किसी से विवाह करना नहीं चाहती। उसे पुरुषों से घृणा होने लगी है।

"मैंने भी उससे बात की। उसने कहा कि वह तो इस विषय में कुछ जानती भी नहीं थी। मैंने ही दो बच्चों के पिता होने पर उसको पथभ्रष्ट किया है। फिर जिससे उसका विवाह हुआ, उससे प्रेम प्रकट करता हुआ भी वह उसकी इस अनजाने में हुई भूल को क्षमा नहीं कर सका। इस कारण अब तो वह समस्त पुरुष-समाज को श्राप देती हुई कुतुब की लाट पर से कूदकर मरना चाहती है।

"मैंने उससे क्षमा मांगी और सुचाला से विनती की कि वह उसे अपने पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रख ले। मैंने उसको यह भी वचन दिया कि अब मैं किसी प्रकार की कुदृष्टि उस पर नहीं रखूंगा। इस पर भी वह हठ कर रही है। सन्तोष भाभी उसको मनाने का यत्न कर रही हैं। तुम भी इस विषय में कुछ यत्न कर उसका किसी-न-किसी प्रकार उद्धार करो।"

सानन्द उस कमरे में जा पहुंचा जहां सन्तोष मलावी से बात कर रही थी। उसने पहुंचते ही कहा, "मलावी बहन! सब ठीक हो गया है न?"

उत्तर सुचाला ने दिया, "भाभी ने इसको मना लिया है कि यह माता-पिता की पुत्री बनकर उनके घर में रहेगी। उनकी सेवा-टहल कर दिया करेगी। अब माताजी को मनाने की बात है।"

"उनको तो मैं यों मना लूंगा।" चुटकी बजाते हुए सानन्द ने कहा।

"कैसे मना लोगे?"

"जब इतना कुछ हो गया है तो क्या यह नहीं हो सकता? अच्छा भाभी! मुझे बहुत भूख लगी है, कुछ खाने-पीने को भी मिलेगा कि नहीं?"

"क्यों, क्या कहीं कोई मजदूरी का काम करके आये हो?"

"हां, एक मिनस्टर को कुश्ती में पटकी देकर आ रहा हूं।"

"और उस कुश्ती जीतने का पुरस्कार क्या पाया है?"

"पार्लियामेंट की प्रेस-गैलरी का कार्ड रद्द। समाचारपत्रों के संवाददाता का काम समाप्त और अब एक 'फ्रीलांसर।"

सन्तोष विस्मय में मुख देखती रह गई। उसने पूछा, "तो अब क्या करोगे?"

"पत्नी अपने पिता के घर चली गई। बच्चे को भाभी ने मुतबन्ना बना लिया है और अपने राम अब भगवा वस्त्र धारण कर हरिद्वार का टिकट कटवाने की सोच रहे हैं।"

"कहो तो तुम्हारे भैया से बात करूं? आजकल उनकी मिनिस्ट्री ऑफ फॉरेन अफेयर्स में बहुत ले-दे हो रही है।"

"भाभी! यही अस्वीकार करने में तो कुश्ती हुई है।" फिर उसने स्पीकर की कोठी में घटित घटना का विवरण सुना दिया।

"सानन्द! यह बचपना तुम कब छोड़ोगे? घर आती लक्ष्मी का तिरस्कार करना महापाप माना गया है। अब तो तुम बच्चों के पिता हो, कुछ ख्याल है?"

"भाभी! ब्राह्मण का पुत्र हूं। पिताजी ने शास्त्रों का अध्ययन करा दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इससे घर में एक-दो दिन से अधिक दिन के लिए संचय करना पाप समझता हूं। लक्ष्मी तो वैश्यों का भण्डार भरने के लिए है। ब्राह्मण सरस्वती की उपासना करता है, लक्ष्मी की नहीं।"

"भगवान ने भूल से तुमको कलियुग में उत्पन्न कर दिया है। तुमको तो आज से सहस्रों वर्ष पूर्व पैदा होना चाहिए था। इस प्रजातन्त्र के युग में तुम उस युग की बातें करते हो जब सब मनुष्य धर्म द्वारा पालित और पोषित होते थे। प्रजा धर्म द्वारा एक-दूसरे की रक्षा करती थी।"

वास्तव में भोजन का समय नहीं हुआ था और सन्तोष भाभी इस प्रकार अपने भूख से व्याकुल देवर का चित्त बहला रही थी। जब समर्थ आया तो सब भोजन करने के कमरे में चले गये। सन्तोष ने अपने पति को बताया, "सानन्द आज एक मिनिस्टर से लड़कर आया है।"

"सत्य? क्या कहा है तुमने उसको?"

"यही कि वह किसी सच्चे ब्राह्मण के जूते उठाने लायक भी नहीं है। यह प्रजातन्त्र का दोष है कि उस सदृश व्यक्ति सांस्कृतिक विभाग का सर्वेसर्वा बना बैठा है।"

"परन्तु सानन्द! तुम शास्त्र की एक बात भूल जाते हो। देखो, महाभारत में युधिष्ठर को राजधर्म का उपदेश देते हुए भीष्म ने कहा था—

'यस्तस्य पुरुषः पापं मनसाप्यनुचिन्तयेत्
असंशयमिहक्लिष्टः प्रेत्यापि नरकं व्रजेत।"

"अर्थात् जो मन से भी राजा के अनिष्ट का चिन्तन करता है वह निश्चय ही इस लोक में कष्ट भोगता है और मरने के बाद भी नरक में जाता है।"

सानन्द हंस पड़ा। वह जानता था कि उसका भाई न तो संस्कृत जानता है और न ही उसे शास्त्रों का ज्ञान है किन्तु आज उसे महाभारत का उदाहरण देते सुन वह विस्मय करने लगा। उसने पूछा, "भापा? आज यह कहां से सीख आये हो?"

"क्यों, कुछ अशुद्ध पाठ हो गया है क्या?"

"नहीं, मैं शुद्धाशुद्ध की बात नहीं कर रहा। मैं तो आपको शास्त्र का प्रमाण देते विस्मय कर रहा था। आपको यह अनहोनी बात किसने सिखा दी है?"

"इस पर तो समर्थ भी हंस पड़ा। उसने कहा, "मैं आज विदेश मन्त्रालय में गया था। वहां एक ज्योतिषी बैठा यह श्लोक सुना रहा था। मैंने उसे तुरन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखा और फिर कंठस्थ कर लिया अपने वर्तमान व्यवहार में मुझे यह प्रमाण युक्तियुक्त सिद्ध करता है।''

परन्तु भैया! यह तो वैसे ही है जैसे एक नीच, पतित, असत्यवादी तथा क्रोधी ब्राह्मण की पूजा की जाय। ये लोग राजा बनने के योग्य नहीं है। न ही ये राजा के कर्तव्य का पालन कर रहे हैं। इस कारण इनका पूजन मुझे किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं।''

: 2 :

सानन्द उस रात वहीं रहा। अगले दिन यह निश्चय हुआ कि सानन्द अपने माता-पिता के पास मलावी को भेज दे। वृद्ध ब्राह्मणी को दान-दक्षिणा दे सन्तोष ने अपनी मोटर द्वारा उसको उसके झोंपड़े में भेज दिया।

सानन्द दूसरी मोटर लेकर मलावी के साथ पटेल नगर अपने पिता की कोठी में चला गया। वहां जाकर उसने अपनी मां को मलावी की पूर्ण कथा बताई तो वह मान गई। उसने कहा, ''यह यदि भले घर की लड़की बनकर रहना चाहती है तो रह सकती है।''

मलावी का लड़का भी उसके साथ ही था। सानन्द जब जाने लगा तो पिता ने कहा, ''सानन्द! कभी बहू को भी इधर ले आया करो।''

''पिताजी! आजकल वह रूठकर अपने पिता के घर में रह रही है।''

सानन्द ने उसके रूठने की कहानी बताई तो उसके पिता ने कहा, ''यह विवाह समर्थ का निश्चय किया हुआ है। मैं तो उस समय भी कहता था कि किसी ब्राह्मण कन्या से विवाह होना चाहिए।''

''पर पिताजी! इस कलियुग के ब्राह्मण भी तो कम नहीं हैं। क्या ब्राह्मण के घर जन्म लेने मात्र से कोई ब्राह्मण हो जाता है? इस युग में तो सभी वर्ण एकमय हो रहे हैं। अब तो वर्तमान शिक्षा की दूसरी एवं तीसरी पीढ़ी चल रही है। अतः सबके संस्कार जन्म से ही, वर्णसंकर हो रहे हैं। यह शिक्षा उस वर्णसंकर समाज को और अधिक रंगती चली जा रही है।''

''खैर, पत्नी तो मिल जायेगी, परन्तु तुम बेकार जो हो गये हो। पत्नी के पालन के लिए साधन भी तो चाहिए?''

''मैं तो यह जानता हूं कि परमात्मा को इस विषय में चिन्ता हो रही होगी। मैं अपना कर्तव्य-पालन कर रहा हूं और सबका पालनकर्ता मेरी आजीविका का प्रबन्ध कर रहा होगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो अब कुछ दिन यहीं रह जाओ।"

"अभी तो मैंने अनन्ता को पत्र लिखा हुआ है और उसके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा हूं। साथ ही आज से मैं अपना नया जीवन-कार्य आरम्भ करनेवाला हूं।"

"क्या करने वाले हो?"

"मैं इतिहास और कानून का ज्ञाता हूं अतः इन दोनों विषयों पर कुछ लिखना चाहता हूं।"

"लिखने में तो कुछ हानि नहीं। परन्तु तुम्हारे-जैसे विचारों वाले व्यक्ति द्वारा लिखी बात को प्रकाशित कौन करेगा? जो मन्त्री को कहता है कि वह ब्राह्मणों के जूते उठाने योग्य नहीं है, वह भला किसको क्या लिख दे।"

"पिताजी! बात तो घूम-घुमाकर वहीं आ गई है कि—

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

"इसलिए फल तो ईश्वर के हाथ में है।"

पण्डित हरिशरणानन्द को अपने बच्चों की शिक्षा-दीक्षा पर संदेह होने लगा था। समर्थ ठेकेदारी में घुसा तो पापमय जीवन आरम्भ कर दिया। सानन्द धर्म-कर्म की बात करने लगा तो दुनियादारी ही छोड़ने की ठान रहा है। सुचाला का व्यवहार भी उन्हें पसन्द नहीं आया। दाताराम के व्यवहार में वे सुचाला की भूल को मुख्य मानते थे। मलावी के जीवन की बरबादी भी तो सुचाला की भूल के कारण ही थी।

विपरीत इसके हरिशरणानन्द को निपुणा समझाती थी कि बच्चों में उच्छृखंलता आने के कारण है उसके पति का साधु स्वभाव। वह समर्थ के व्यवहार से प्रसन्न थी और उसे अपना ही मानस पुत्र मानती थी। सुचाला और सानन्द को पूर्णतया अपने पति के विचारों की ही उपज मानती थी।

पति-पत्नी में इसी विषय पर मतभेद रहता था। बच्चों की विलक्षणता में हरिशरणानन्द निपुणा को दोषी नहीं ठहराता था। विपरीत इसके निपुणा जहां समर्थ की सफलता का श्रेय स्वयं लेती थी वहां सुचाला और सानन्द के दर-दर भटकने का दुश्श्रेय अपने पति को देती थी। वह कहा करती थी कि ये दोनों व्यवहार में चतुर इस कारण नहीं हैं क्योंकि इनको आरम्भ से ही शास्त्र की शिक्षा दी गई है। इस कारण दोनों ही अपने जीवन में असफल रहे हैं।

अपनी पत्नी के इस आरोप को सुनकर हरिशरणानन्द मुस्करा दिया करता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। आज तो वह स्वयं भी परेशानी अनुभव करने लगा था। उसने सानन्द के यह कहने पर कि वह कर्म करेगा उसका फल परमात्मा देगा, माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा, "परमात्मा ने तो फल दिया था। अनन्ता-जैसी सुन्दर पढ़ी-लिखी पत्नी दी थी, परन्तु तुमने परमात्मा के प्रसाद को ग्रहण करने के लिए अंजलि ऐसी बनाई कि बीच में छिद्र रह जाने के कारण प्रसाद नीचे बिखरने लग गया है।"

"पिताजी! मैंने उस छिद्र को बन्द करने का यत्न किया था, परन्तु वह इतनी क्षीण थी कि अंजलि से बाहर निकल ही गई।

"अब मैं पुनः उस सूक्ष्म छिद्र को भी बन्द करने का यत्न कर रहा हूं। जिससे वह हवा बनकर भी न निकल सके।"

उसके वाक्चातुर्य पर तो हरिशरणानन्द मुग्ध हो गया किन्तु इस पर भी वह उसकी योजना सुनना चाहता था। उसने पूछा, "यही तो मैं सुनना चाहता हूं कि उस हवा-सदृश सुन्दरी को समेटने के लिए तुम क्या करना चाहते हो?"

"अपने आंचल को बड़ा बनाकर। मैं पहले तो यह जानने का यत्न कर रहा हूं कि मेरे विदेश भेजे जाने की योजना में उसका कितना हाथ है। यदि उसका तनिक भी हाथ हुआ तो फिर उसको विदेश ले जाने का यत्न करूंगा।"

"कैसे करोगे यह यत्न?"

"मैं अपने लिए वर्ल्ड दूर पर जाने के लिए पासपोर्ट बनवा रहा हूं। उसमें उसका भी नाम लिखवा दूंगा।"

"तुम्हारा बैंक-बैलेंस कितना है?"

"यही कोई सात-आठ सौ रुपया होगा। साथ ही मैं यह जानता हूं कि भारतवर्ष में बैंक-बैलेंस से तो कोई भी विदेश-यात्रा नहीं कर सकता। अतः उसके लिए किसी विदेशी बैंक में रुपया जमा करवाने के लिए प्रबन्ध कर रहा हूं।"

"कैसे करोगे यह सब?"

"बात तो बहुत सरल है, परन्तु पहले कर लूं फिर आपको बताऊंगा।"

पिता से बात कर सानन्द अपने घर लौट आया। नीचे लैटरबक्स में से डाक निकाल ऊपर चढ़ गया।

बैठक में बैठ वह डाक देखने लगा। सबसे पहले चिट्ठियां पढ़ने लगा। एक चिट्ठी लोक-सभा के स्पीकर महोदय की भी थी। उसने यह समझा कि पिछले दिन के वार्त्तालाप के लिए डांट-फटकार हो सकती है। परन्तु पत्र में संसद की प्रेस-गैलरी का कार्ड था। कार्ड को देखकर वह चकित रह गया। उसने उस कार्ड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को जारी करने की तिथि देखी तो वह पिछले दिन की ही थी उत्सुकतावश उसने कार्ड के साथ आये पत्र को पढ़ा। उसमें लिखा था—

"मिस्टर मिश्र!

मैं कल के वार्त्तालाप से बहुत प्रसन्न हूं। मुझे यह तो विदित नहीं है कि संवाददाता के कार्य से आपको कितनी आय है। परन्तु आपके द्वारा एक उच्च पद को इस कारण स्वीकार न करने पर कि आप नालायकों का आदेश पालन करने के अभयस्त नहीं हैं, यह जानकर मेरा चित्त गद्‌गद हो गया।

मेरा हृदय यह जानकर कि भारत-भूमि पर से अभी ब्राह्मणों का बीज नाश नहीं हुआ, आनन्द-विभोर हो उठा है। भगवान आपका भला करे।..."

पत्र को पढ़कर सानन्द का हृदय भाव-विभोर हो गया। उसके मन में विचार आया कि उस संसद-रूपी कीचड़ में कम-से-कम एक तो कमल खिल ही रहा है।

प्रेस-गैलरी का कार्ड उसने जेब में रखा और फिर अन्य डाक देखने लगा। उसमें एक पत्र अनन्ता का भी था। उसने लिखा था—

"आपका हृदय-शून्य पत्र मिला। मैं अपने लड़के के साथ रहना चाहती हूं। यदि आपके मकान में मां और पुत्र दोनों के लिए स्थान नहीं है तो जानकी के साथ उसको यहां भेज दीजिये। अन्यथा अपने पुत्र की मां को यहां से आकर ले जाइये।

"मैं आशा कर रही हूं। आपको सरकारी काम मिलनेवाला है, आप उसे अस्वीकार न करियेगा।"

शेष तो किसी लेख के पारिश्रमिक का चैक था। वस्त्र पहन चैक जेब में रख सानन्द मकान को ताला लगा बाजार गया। ग्यारह बजने वाले थे और उस दिन संसद में जाना वह आवश्यक समझता था। अपने साथियों में अपनी प्रतिष्ठा स्थायी रखनी आवश्यक थी। यह तभी सम्भव हो सकता था कि यदि वह संसद में उसी दिन उपस्थित हो सके।

उसने स्कूटर पकड़ा और संसद-भवन में जा पहुंचा। कार्ड दिखाकर वह प्रेस-गैलरी में जा बैठा। उसे प्रधानमन्त्री के व्यक्तव्य का नोट लेते देख सब विस्मय कर रहे थे। संवाददाताओं में यह बात फैल गई थी कि महिला-सम्मेलन की वास्तविक रिपोर्टिंग करने के कारण उसका कार्ड रद्द किया जा चुका है।

सदा की भांति संवाददाता आते और जाते रहे। जो भी नया परिचित आता वह उसको वहां बैठे काम करते देख विस्मय करता था। लंच के समय वह रैस्टोरां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में गया तो सभी संवाददाता जो उस समय वहां पर विद्यमान थे, उसको घेरकर बैठ गये। एक ने पूछ लिया, "तो क्या वह समाचार गलत था?"

"कौन-सा समाचार?"

"यही कि आपका प्रैस-गैलरी का कार्ड छिन गया था।"

"छिन गया और फिर नया मिल भी गया है।" सानन्द ने जेब से कार्ड निकालकर दिखाते हुए कहा।

"तो आपने सिद्ध कर दिया कि आपके समाचार में असत्यता नहीं थी।"

"अरे भाई लाल बुझक्कड़! यह कार्ड केवल संसद का कार्य देखने के लिए है, सारी दुनिया घूमने के लिए परमिट नहीं है। महिला-सम्मेलन का संसद के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है।"

"परन्तु यह बात तो कार्ड रद्द करते समय विचारणीय थी।"

"हां, पर एक 'बीस्ट आफ बर्डन' नाम का जानवर है, जिसको डंडे लगने पर ही मार्ग दिखाई देता है।"

इस पर सब हंसने लगे। इस पर सानन्द ने कहा, "एक दुधारु गाय थी। उसका संयोग एक गधे से बन गया। एक राह चलते व्यक्ति ने यह अत्याचार देखा तो उसने गधे को दो लात लगाईं। गधा भाग गया तो गाय की समझ में आया कि वह कितनी मूर्ख बन रही थी। लज्जित हो वह अपने बछड़े को दूध देने के लिए चल पड़ी।"

सानन्द को इस प्रकार की किंवदन्तियां सुनाने का अभ्यास था। सुननेवाले भी उसके इन कथानकों का रसास्वादन किया करते थे।

सानन्द ने आज भोजन किया और पुस्तकालय में बैठ अपनी नित्य की रिर्पाट तैयार करनी आरम्भ कर दी।

लगभग तीन बजे वह अपना डिस्पैज तैयार कर डाकखाने में जा पहुंचा। वहां से वह तुगलक रोड अपने श्वसुर की कोठी पर चला गया। भीतर जाकर अनन्ता से मिलकर बोला, "मैं अपने कमल की मां को लेने के लिए आया हूं।"

"चाय नहीं लेंगे क्या?"

"हां, यदि मिल जाय तो।"

अनन्ता ने बैरे को चाय बनाने के लिए कह दिया। फिर सानन्द से पूछने लगी, "कमल कहां है?"

"भाभी के पास।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जानकी को छुट्टी दे दी है क्या?"

"अभी तो केवल दो दिन की ही दी है। कल वह पुनः काम पर आ जायेगी। मैं उसके मन पर यह बात नहीं बैठने देना चाहता था कि हम परस्पर लड़ा भी करते हैं। इस कारण उसको यही बताया है कि मुन्ना तुम्हारे पास है।"

"अच्छा, यह बताइये कि आपको कहीं नौकरी के लिए प्रस्ताव मिला है।"

"मिला था, परन्तु मैंने स्वीकार नहीं किया।"

"क्यों?"

"क्योंकि वह मेरे लिए शोभाजनक नहीं था।"

"मैंने तो सुना था कि किसी विदेश में बारह सौ रुपया मासिक और अन्य सुविधाओं से युक्त नौकरी थी वह?"

"हां, थी तो ऐसी ही। परन्तु मैं अपना मूल्य इससे कहीं अधिक समझता हूं।"

"ओह, मुझे ज्ञात नहीं था। इससे अधिक क्या कहूं, मुझे तो इतना भी कभी आते दिखाई नहीं दिया।"

"देखने-देखने में अन्तर है न। तुम बताओ क्या चाहती हो, मेरी उन्नति अथवा अवनति?"

"उन्नति।"

"तो वह हो गई है।"

बैरा चाय ले आया। उसके जाने पर सानन्द ने बताया, "मैं अमेरिका और यूरोप के कुछ देशों में भ्रमण के लिए जाने का विचार कर रहा हूं।"

"सत्य? किसी विदेशी दूतावास से सांठ-गांठ लगाई है क्या?"

"विदेशी दूतावास से नहीं बल्कि अपनी होम गवर्नमेंट के एक विभाग से।"

"किस विभाग से?"

"यह रहस्य है। कुछ दिन ठहरो, फिर तुम्हें बता दूंगा। अभी तो आज चलकर पासपोर्ट के लिए अपनी और तुम्हारी तस्वीरें बनवानी हैं।"

"तो क्या मैं भी आपके साथ जा रही हूं?"

"देखो इस सप्ताह पासपोर्ट के लिए आवेदन-पत्र चला जायेगा। पासपोर्ट मिलने में तीन मास लग सकते हैं। तब तक तो तुम जाने की स्थिति में रहोगी नहीं। तब मुझे आगामी बच्चे के दर्शन करने तक यह कार्यक्रम स्थगित करना होगा। उसका प्रबन्ध कर हम चल देंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं जीवनभर आपकी कृतज्ञ रहूंगी।"

"इतनी ही बात के लिए? मैं तो इससे कहीं बड़ी योजना बना रहा था।"

इससे अनन्ता समझी कि उसकी हंसी उड़ाई जा रही है। उसको क्रोध-सा आ गया। उसने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा, "आपको सदा हंसी ही सूझती है?"

"केवल अपनी पत्नी के साथ। इस पर भी मैं शपथ लेकर यह कह सकता हूं कि तुम मेरे साथ विदेश जानेवाली हो। मैंने इसका प्रबन्ध आज से ही करना आरम्भ कर दिया है।"

शपथ की बात सुन अनन्ता चुप रही। उसको और भी अधिक विश्वास हुआ जब वे लौटते-लौटते एक फोटोग्राफर की दुकान पर जाकर पासपोर्ट साइज के छः-छः चित्र बनवाने का आदेश दे आये।

रात को अनन्ता ने कहा, "मुझे यह जानकर बहुत निराशा हुई थी कि आपने इतनी बढ़िया नौकरी को अस्वीकार कर दिया। इसके लिए मैंने, मिसेज मोदी ने और पिताजी ने भारी यत्न किया था। परन्तु अब तो ऐसा प्रतीत हो रहा है कि आपने कोई उससे भी अच्छा कार्य ढूंढ लिया है।"

"तो क्या तुम मुझे निखट्टू समझती थी?"

"निखट्टू शब्द आपके लिए उचित नहीं है। मैं तो आपको बुद्धू समझने लगी थी।"

सानन्द हंस पड़ा और बोला, "आखिर बुद्धू घर को लौट आये हैं न?"

इस पर फिर अनन्ता के कान खड़े हो गये और पूछने लगी, "पर घर को तो मैं लौट आई हूं न?"

"तुम क्या कहीं घर से बाहर गई थीं?"

"तो आपको विदित नहीं? दो रात यहां कौन रहा है?"

"वह इस अलमारी में रखी है।" उसने किताबों की अलमारी की ओर संकेत कर कहा।

अगले दिन अनन्ता उठी तो सानन्द उससे पूर्व जाग गया था। अपने टाइपराइटर पर बैठा वह कुछ टाइप कर रहा था।

"किस समय जागे थे आप?"

"प्रातः साढ़े तीन बजे। चार बजे से काम कर रहा हूं। एक घण्टा और काम करूंगा। फिर कमल को लेने चलेंगे और जानकी के आने से पूर्व लौट आयेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह किस समय आनेवाली है?"

"नौ बजे।"

"आज आपका क्या कार्यक्रम है?"

"पासपोर्ट के लिए फार्म लेने के लिए जाऊंगा। फार्म भर कर किसी वकील को दिखा तथा मजिस्ट्रेट से प्रमाणित कराना है। इसमें एक सप्ताह लग जायेगा।"

"संसद में नहीं जायेंगे आज?"

"समय मिला तो जाऊंगा, अन्यथा उस कार्य में अब मेरी कोई विशेष रुचि नहीं रही है।"

"आपको प्रेस-गैलरी का कार्ड अभी नहीं मिला।"

"मिल गया है कल उस नये कार्ड पर ही गया था।"

अनन्ता विस्मय में मुख देखती रह गई।

: 3 :

प्रथम पंचवर्षीय योजना चल रही थी। इस योजना का मुख्य लक्ष्य था देश की खाद्य-समस्या को सुलझाना। भाखड़ा डैम तो योजना से पूर्व ही चालू हो चुका था, इसके अतिरिक्त भी अनेकों डैम बनवाने का विचार किया गया और इसके लिए योजनाएं बनने लगीं।

विशेषज्ञों ने यह भविष्यवाणी कर दी कि जब तक जनसंख्या को सीमित करने का यत्न न किया जाय ये योजनाएं सफल नहीं हो सकतीं। यह नित्य दिन-दूनी रात-चौगुनी गति से प्रगति कर रही है। बड़े-बड़े नगरों में प्रत्येक एक सौ मृत्युओं के अनुपात में ढ़ाई-तीन सौ का जन्म हो रहा है। इस कारण विशेषज्ञों का कहना था कि आगामी जन-गणना के समय भारत की जनसंख्या में चार-पांच करोड़ की वृद्धि होगी अतः जितनी अन्नादि की उपज में वृद्धि होगी इससे कहीं अधिक खानेवाले उत्पन्न हो जायेंगे।

इस निरन्तर वृद्धिगत जनसंख्या को रोकने का उपाय भी यही विशेषज्ञ बताते थे। इसके लिए सन्तति-निरोध के कृत्रिम उपायों को ठीक समझा गया। अनन्ता के लिए यह विषय अति रुचिकर था। पहले भी वह इस विषय में यत्र-तत्र समाचार और साहित्य पढ़ती रहती थी। अब तो सरकार की ओर से इस दिशा में हो रहे यत्नों में उसका सहयोग चलने लगा था। स्वास्थ्य-मन्त्रिणी से अनन्ता का परिचय हो गया। स्त्री-सुधार में मन्त्रिणी बहुत रुचि लेती थी और इस प्रकार सम्मेलनों में अनन्ता भी अग्रणी रहने लगी थी। अतः दोनों में प्रथम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिचय तदन्तर घनिष्ठता होने में विलम्ब नहीं हुआ।

जब सरकार की ओर से सन्तति-निरोध के लिए बल मिलने लगा तो अनन्ता इसमें सहायक हो गई। उसके प्रयत्नों से दिल्ली का प्रथम परिवार-नियोजन-केन्द्र दरियागंज में खोला गया और वह उसकी अवैतनिक प्रबन्धकर्ती नियुक्त हो गई। इस केन्द्र में अनन्ता नित्य दो घण्टे का समय देने लगी।

एक दिन सानन्द कुछ समय से पूर्व ही घर आया तो उसने देखा कि मोहल्ले कि स्त्रियों की एक सभा उसे घर पर हो रही है। लगभग पच्चीस-तीस महिलायें उपस्थित थीं और नियोजन-केन्द्र की प्रमुख डाक्टर नायर व्याख्यान दे रही थी। वह नियोजन के हानि-लाभ पर प्रकाश डाल रही थी। साथ ही चलचित्र की सहायता से सन्तति-निरोध के उपायों की व्याख्या कर रही थी।

सानन्द इस जमघट को देखकर चुपचाप अपने कमरे में जाकर बैठ गया। सभा विसर्जित होने पर अनन्ता जब अपने पति के पास आई तो सानन्द को जोर की हंसी आ गई। विस्मित-सी अनन्ता ने पूछा, "क्यों हंस रहे हैं?"

"अपनी गर्भवती पत्नी के अन्य स्त्रियों को गर्भ धारणा न करने की प्रेरणा देने पर। मैंने श्रीमतीजी का पूर्ण व्याख्यान सुन लिया था।"

"उसमें कुछ गलती थी क्या?"

"व्याख्यान तो सुन्दर था किन्तु व्याख्यान के प्रयोजन की सिद्धि में मुझे सन्देह है।"

"किस प्रयोजन की सिद्धि में आपका सन्देह है?"

"यह योजना सरकार की ओर से है। बच्चे अधिक पैदा होते देख सरकार को यह भ्रम हो गया कि कहीं उनकी पंचवर्षीय योजनाएं इससे असफल न हो जाये। इससे अन्नादि की कमी तो देश में बनी ही रहेगी। और जो सब्ज बाग सरकार ने जनता को दिखाये थे उनके पूर्ण न हो सकने के कारण का भी सरकार वर्णन करने लगी है। अतः न तो योजना सफल होगी और न ही उसके असफल होने का यह कारण जो सरकार बता रही है, सन्तोष दिला सकेगा।"

मुझको तो इस योजना की सफलता अथवा असफलता में रुचि नहीं। मैं तो स्त्री-जाति को बच्चे पैदा करने के कष्ट से मुक्ति दिलवाने के लक्ष्य से इस आयोजन में सहयोग दे रही हूं।"

"परन्तु इस कष्ट से निवृत्ति मिल जायेगी क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जो इस पर आचरण करेगी उनको तो मिलेगी ही।"

"परन्तु इस अस्वाभाविक विधि के स्थान पर यदि एक स्वाभाविक बात की जाय तो कष्ट न्यूनातिन्यून तो हो सकता है।"

"क्या?"

"जो उपाय तुमने कमल के समय प्रयोग किया था। मैंने तुमको एक व्यायाम बताया था। वह तुम करती रही थीं और मुझको स्मरण है कि पन्द्रह-बीस मिनट से अधिक कष्ट नहीं हुआ था।"

"यह तो ठीक है। परन्तु दूसरी औरतें प्रतिदिन दस-बीस मिनट तक छः-सात मास के लिए इस व्यायाम करने की अपेक्षा इन प्रोफिलैक्टिक्स का प्रयोग करना सुगम समझतीं हैं।"

"देखो रानी! पहले स्वयं करके देखो और फिर दोनों में कौन-सा सुगम उपाय है, इसका निर्णय कर लेना। जहां तक कष्ट-निवारण का प्रश्न है वहां तक तो वह उपाय सरल और सुगम है और यह उपाय प्रत्येक अवसर पर करना न तो सम्भव है और न ही सुगम। इसके अतिरिक्त मन में इन उपायों में असफल हो जाने का भय मन को सदा विषाक्त करता रहता है।"

अब हंसने की बारी अनन्ता की थी। उसने हंसते हुए कहा, "ऐसा प्रतीत होता है कि आप इन दोनों उपायों का प्रयोग कर चुके हैं।"

सानन्द को भी हंसी आ गई, उसने कहा, "दुर्भाग्य से जनस्वातन्त्रय के इस नवीन युग में मैं स्त्री-योनि में उत्पन्न नहीं हुआ, अन्यथा तुम्हारे इस मिथ्या प्रचार का मैं अधिक प्रभावशाली ढंग से विरोध कर सकता।"

"खैर! छोड़ो इस बात को। यह प्रसव के कष्ट की बात तुम्हारे मस्तिष्क में ही तो है। इस डाक्टर के मन में तो वही भय समाया हुआ है जो सरकार के मन में है। पहले एक परिवार अपने बच्चों के पालन-पोषण की स्वयं चिंता करता था, कुछ सफल होते थे कुछ असफल। अब देश की सरकार ने सब परिवारों की चिन्तायें अपने पर ले ली हैं। इस कारण परिवारों का उत्तरदायित्व आरम्भ हो गया है। और सरकार के अन्य सब कार्यों की भांति यह भी केवल इन लेक्चरों से सम्पन्न नहीं हो पायेगा।"

"तो कैसे सम्पन्न होगा?"

"देखों, मैं एक उदाहरण देकर समझाता हूं। वेश्यागमन का विरोध परिवार के स्तर पर होता था। यदि किसी परिवार का कोई युवक इस बुरे व्यसन में फंस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता था तो परिवार के लोग उसको समझाने का यत्न करते थे। कभी सफल होते थे कभी असफल। इस पर भी सफलता ही अधिक मिलती थी।

"अब वेश्यावृत्ति रोकने का उत्तरदायित्व सरकार ने अपने पर ले लिया है। इसके लिए सरकार ने कानून बना दिया है। उस कानून को लागू करने के लिए पुलिस को विशेषाधिकार दिये गए हैं। इस पर भी क्या वेश्यावृत्ति रुक जायेगी? सब बुद्धिमान लोग अपने अनुभव से कहते है कि यह कुप्रथा बन्द नहीं हो सकेगी। विपरीत इसके अन्य अनेकों दोष उत्पन्न हो जायेंगे।

"इसी प्रकार सन्तति-निरोध का उत्तरदायित्व सरकार अपने ऊपर लेकर इस विषय में कानून बनाने के लिए विवश हो जायेगी। कानून यह बनेगा जिस दम्पती के तीन से अधिक सन्तान होंगी वह दण्ड का भागी होगा। यह दण्ड किस रूप में होगा कहना कठिन है। कुछ ऐसा होगा कि उस दम्पती को जिसके तीन से अधिक बच्चे होंगे, अधिक टेक्स देना पड़ेगा अथवा उनको अपना बच्चा सरकार के हवाले करना होगा और सरकार उसको ऐसी अवस्था में रखेगी कि प्रायः एक वर्ष की अवधि के भीतर ही ये बच्चे समाप्त हो जायेंगे।

"जो दम्पती प्रोफिलैटिक्स का प्रयोग नहीं करेंगे उनको दण्ड मिलेगा। इस बात के निरीक्षण के लिए लेडी-डाक्टरों की नियुक्ति की जायेगी और वे स्त्रियों के गुह्य अंगों का निरीक्षण किया करेंगी।

"इस प्रकार का एक परीक्षण एक समय एक सेना में किया गया था। विगत विश्व-युद्ध के समय अमेरिकन सैनिकों के मनोरंजन के लिए औरतों की एक सेना भी भारत में आई थी। वे औरतें सैनिक कार्यालयों में कार्य करती थीं और इस सम्भावना को रोकने के लिए कि युद्धकाल में उनके गर्भ न ठहर जाये उनको आज्ञा थी कि वे सदा 'चैक पैस्सरी' लगाये रहें। इसके लिए लेडी-डाक्टारों की नियुक्ति की गई थी जो इस बात की समय-समय पर देखभाल किया करती थीं।

"यही परीक्षण देशभर के पूर्ण युवक-वर्ग पर प्रयोग में लाया जायेगा। और इस प्रकार बच्चों की उत्पत्ति कम करने के लिए सरकार अपना उत्तरदायित्व निभायेगी। प्रश्न वही है जो वेश्यवृति के सम्बन्ध में है। क्या इससे जनसंख्या कम हो जायेगी?"

"मेरा तो यह निश्चित मत है कि इससे जनसंख्या कम नहीं होगी। ये उपाय सफल नहीं होंगे। वास्तव में सरकार के वे सब कार्य जो सरकार मनुष्य-स्वभाव के विपरीत कानून से करना चाहती है असफल होंगे। सरकार पुलिस और सेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारा अपनी आज्ञाओं का पालन कराने का यत्न करेगी और तब विद्रोह उत्पन्न होगा।"

"आप तो सब बातों से एक निराशाजनक चित्र खींच देते हैं।"

"सब बातों में नहीं। सदा भी नहीं। हां सरकार से उन कार्यों के विषय में जो मनुष्य-स्वभाव के विरुद्ध हैं, मेरा सदैव यही मत रहता है। ऐसे कामों में मनुष्यों को प्रेरणात्मक कार्य करना चाहिए। नैतिक स्तर पर किसी कार्य को करने के लिए उसका उत्तरदायित्व भी व्यक्ति पर डालना होगा। समाज उसका उत्तरदायित्व नहीं ले सकता।"

"सरकार ने इस विषय में क्या उत्तरदायित्व लिया है?"

"देश की पूर्ण जनता को खिलाने का उत्तरदायित्व सरकार ने लिया है। यह गलत है, सरकार का दायित्व यह होना चाहिए कि प्रत्येक कार्य करने वाले को उचित मजदूरी मिले, कार्य ढूंढ़ना व्यक्ति का अपना काम है।

"इस प्रकार दायित्व के बंट जाने से प्रत्येक व्यक्ति नये-नये काम ढूंढ़ेगा। अपनी सेवा से वह अधिक-से-अधिक जनता को सन्तुष्ट करेगा। अतः अधिक जनसंख्या का भय सरकार के मन से उतरकर माता-पिता और परिवार के दायित्व पर हो जायेगा।

"परन्तु कठिनाई तो यह है कि एक भूत सवार है। वह यह कि सरकार समाजवादी होनी चाहिए। अर्थात् सरकार को जनता के प्रत्येक कार्य और आवश्यकता का भार सिर पर लेना चाहिए। तब व्यक्ति अपने कार्यों के भार से स्वयं को मुक्त मान प्रत्येक प्रकार की उच्छृङ्खलता करने लगेगा और समाज व्यक्ति को नियन्त्रण में रखने के लिए अधिक कठोर कानून बनायेगा।

"परिणामस्वरूप व्यक्ति दास बन जायेगा और सरकार सबकी अधिपति। यह होगा समाजवाद। यह एक नवीन प्रकार की दासता होगी और इसका श्रीगणेश हो गया है।"

"तो फिर लोग इसको पसन्द क्यों करते है?"

"क्योंकि झूठ बोलकर उनको 'युटोपिया' अर्थात् भूतल पर स्वर्ग का विश्वास दिलाया जा रहा है।"

"यदि झूठ है तो यह असफल भी होगा। तो फिर चिन्ता की क्या आवश्यकता है?"

"चिन्ता इसके सफल तथा असफल होने की नहीं है। चिन्ता तो है जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनसाधारण को इस झूठ की पोल का ज्ञान हो जायेगा और तब वह दुःखों से पीड़ित अपनी विचार-शक्ति खोकर दोषी और निर्दोषी दोनों पर से अपना बदला निकालने का यत्न करेंगे। उस समय जो व्यापक क्लेश और हत्याएं तथा बलात्कार होंगे, उनसे जनता और जनता के जनार्दन नेताओं को बचाने के लिए चेतावनी दे रहा हूं।"

"छोड़िये इस बात को आप सदा वर्तमान युग की प्रत्येक बात का ऐसा भयंकर परिणाम चित्रित करते हैं कि दिल धक्-धक् करने लगता है।"

"तो कल्पना मत करो। परन्तु अनन्ता! जब युक्ति से तुमको यही परिणाम घटित होते सम्भव प्रतीत होते हैं तभी तुम डरने लगती हो।"

"यह समाजवादी सरकार भय-त्रस्त कबूतर की भांति जनसाधरण को आंखें मूंदकर बैठे रहने के लिए कहती है। और जब हम-जैसे लोग जनता को आंखें खोलकर देखने के लिए कहते है तो जनता भयभीत हो उठती है। सरकार उनको सान्त्वना देने के लिए हमको गालियां देने लगती है।

"एक और उदाहरण सुन लो—रूस में सन् 1919 में समाजवादी सरकार स्थापित की गई। यह सरकार अस्वाभाविक थी। नेतागण जानते थे कि यदि जनता को विचार करने का अवसर दिया गया तो देश-भर में विद्रोह हो जायेगा। अतः जनता की आंखों पर पट्टी बांधने का प्रयास किया गया। उस देश के चारों ओर पूर्ण रूप में लोह आवरण लगा दिया गया। देश के सब समाचार-पत्रों, बस पुस्तकों, समस्त शिक्षा और रेडियो पर सरकार ने अपना अधिकार कर लिया। न तो बाहर के किसी व्यक्ति को देश की अवस्था जानने दी गई न ही देशवासियों को बाहर वालों की बात सुनने तथा देखने का अवसर दिया गया। उन्हें ऐसा करते हुए पैंतीस वर्ष हो चुके हैं और लोग सरकार को ही ठीक मानने लगे हैं, उन विद्रोहों में लाखों की हत्या कर उनको शान्त किया गया है और इस दमन-चक्र को भी देश के बाहर और भीतर विदित नहीं होने दिया गया।

"यह है समाजवाद को सफल बनाने का उपाय। इसके बिना यह कहीं भी सफल नहीं हो सकता।

"कभी कोल्हू चलाने वाले बैल को देखा है? उसकी आंखों पर पट्टी बांध दी जाती है। जानती हो क्यों? इसलिए कि जब बैल को पता चल जाता है कि वह एक ही कीले के चारों और चल रहा है तो वह चलना बन्द कर देता है। उसे मन में यह भ्रम उत्पन्न करने के लिए कि वह किसी लम्बी यात्रा पर चल रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है उसकी आंखों पर पट्टी बांध दी जाती है।

इसी प्रकार इस देश में सोशलिज्म को चलाना है। यह कोल्हू के चक्करों की भांति, अपने स्वामी के कार्य को सम्पन्न करने के लिए एक ही कील के चारों ओर चक्कर काटने की बात है। जनता को यह जानने से रोकने के लिए मिथ्या प्रचार कर उनकी आंखों पर पट्टी बांधी जा रही है।"

"परन्तु वास्तविक बात तो यह है कि जनसंख्या बढ़ रही है। एक दम्पती के जब दो से अधिक सन्तान होती है तो देश पर बोझ बढ़ता है। देश तो एक सीमित स्थान है। न तो किसी निश्चित सीमा से अधिक यहां खाद्य-सामग्री उपजाई जा सकती है और न ही उनके रहने के लिए स्थान की व्यवस्था की जा सकती है। तो फिर कुछ तो उपाय करना ही होगा। अन्यथा कुछ ही वर्षों में या तो हम दूसरे देशों से युद्ध करेंगे या वन्य पशुओं की भांति एक-दूसरे को मार-काटकर खाने लग जायेंगे।"

"इस गणना से तो इन्कार नहीं किया जा सकता अनन्ता! परन्तु इस कठिनाई का पार पाने का जो उपाय प्रयोग में लाया जा रहा है मैं उसे गलत बता रहा हूं। वह गलती व्यक्ति की सब उच्छृङ्खलताओं को सरकार द्वारा अपने ऊपर ले लेना। देखो, चोरी करना पाप है। किसी दूसरे का धन नहीं लेना चाहिए। ऐसी प्रेरणा तो सरकारी कानून का विचार छोड़कर धर्मानुयायी देते हैं। उस प्रेरणा के वशीभूत अधिकांश लोग चोरी नहीं करते। बिरले करते हैं और उनमे से कुछ पकड़े जाते हैं और दण्ड के भागी होते हैं। दण्ड-विधान एक अपवाद के रूप में है, परन्तु शान्ति और धर्म तो प्रेरणा से ही रह सकता है।

"इसी प्रकार सन्तान कम हो यह व्यक्तिगत जिम्मेदारी हो। यह तब हो सकेगा जब पैदा होनेवाले बच्चों का पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा व्यक्तिगत उत्तरदायित्व पर हो। इस उत्तरदायित्व के व्यक्तिगत होने से वे देखेंगे कि कितनी सन्तान का पालन-पोषण वे कर सकते हैं। यह व्यक्ति का काम है कि वह देखे कि परिवार-नियोजन के स्वाभाविक उपाय संयम इत्यादि ठीक हैं अथवा कृत्रिम उपाय, चैक पैस्सरी इत्यादि ठीक हैं। जिसको जो रुचे वह उसका प्रयोग करे।"

: 4 :

सानन्द ने अब सम्वाददाता का काम छोड़कर लेख अथवा पुस्तक लिखने का कार्य आरम्भ कर दिया था। यह उसके जन्मजात संस्कारों का प्रभाव था कि वह स्वेच्छा से, स्वतन्त्र रहकर कार्य कर सकता था। संवाददाता के कार्य में भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसको कटु अनुभव हो गया था कि सम्पादक की रुचि के अनुसार ही समाचारों का यचन होना चाहिए। सम्पादक कुछ तो अपने विचारों के अनुसार और कुछ मालिकों के हिताहितों के विचार से पत्र नीति निर्धारित करता है। संवाददाता को तो घूम-घूमकर उस नीति के पोषक समाचार ढूंढ़ने पड़ते हैं अथवा निर्माण करने पड़ते हैं।

सानन्द इस विवशता से भी ऊब गया था। अतः उसको लेख लिखने में अधिक स्वतन्त्रता का सांस मिलता प्रतीत हुआ।

इसमें भी एक बात थी कि उसके सब लेख, सब पत्र-पत्रिकाएं स्वीकार नहीं करते थे। इस कारण वह अनेकों विषयों पर लिखता था और जो उसके लेख कहीं भी स्वीकार नहीं होते थे उनको, उसका विचार, पुस्तकाकार में प्रकाशित करने का था।

धीरे-धीरे उसकी समझ में यह आ गया कि देश में अथवा देश के किसी प्रान्त-विशेष में किस प्रकार के विचारों को पसन्द किया जाता है। उदाहरण के रूप में शारीरिक सौन्दर्य और सुख-सुविधाओं के विषय में लेख अधिक पारिश्रमिक दिलाते थे। इंगलैण्ड में सिद्धान्तों को कार्य में लानेवाले उपायों में अधिक रुचि ली जाती थी। फ्रांस में वासनाओं को उत्तेजना देनेवाली बातों को अधिक पसन्द किया जाता था। जर्मनी में जातीय अभियान की धुरी पर लिखी बात अधिक पढ़ी जाती थी। इसी प्रकार इस रहस्य को जानकर वह भिन्न-भिन्न देशों और देश के भिन्न-भिन्न प्रान्तों में विभिन्न विषयों पर लेख लिखने लगा। इस पर भी प्रत्येक लेख में उसका अपना दृष्टिकोण, अपना ढंग और अपनी लिखने की शैली होती थी।

उसने कोणार्क और खुजराहो पर लेख लिखकर अमेरिका में भेजा तो मन्दिरों की बनावट और संक्षिप्त-सा इतिहास भी चित्रों के साथ भेज दिया। लेख प्रकाशित हो गया। उसका पारिश्रमिक उसको पांच सौ डालर मिला। इसी विषय पर उसने इंगलैड में लेख भेजा तो मन्दिरों के इतिहास के साथ भारत में सांस्कृतिक उथल-पुथल का इतिहास भी लिख दिया। वह लेख भी प्रकाशित हो गया और उसका उसको एक सौ पौंड पारिश्रमिक मिल गया। इसी विषय पर जो लेख उसने फ्रांस भेजा उसमें चित्रों के साथ सैक्स फिलॉसॉफी का मन की एकाग्रता के साथ सम्बन्ध पर विवेचना लिख दी।

इस प्रकार एक वर्ष में लगभग पचास लेख लिखकर उसने इनका पारिश्रमिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हीं स्थानों पर एकत्रित होने दिया। जब साठ हजार रुपये के लगभग एकत्रित हो गया तो उसने विदेश-भ्रमण पर जाने का निश्चय कर लिया।

इस समय अनन्ता के गर्भ से एक कन्या का जन्म हो चुका था। अब उसके दो बच्चे थे। कमल और कुमुद। जब लड़की तीन मास की हुई तो सानन्द ने कहा, "अब तैयार हो जाओ।"

"कैसे तैयार हो जाऊं?"

"कुमुद को जानकी के पास रखकर अपने से पृथक् रखने का अभ्यास करो। मेरा विचार है कि दोनों बच्चों को भाभी के पास छोड़ जायेंगे और जानकी को उनकी देखभाल के लिए नियुक्त कर जायेंगे।"

"तो बच्चों को साथ नहीं ले जायेंगे आप?"

"नहीं"

"क्यों?"

"मैं जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जा रहा हूं इनके साथ रहने पर उसमें बाधा उत्पन्न हो जायेगी।"

"और मेरा जाना?"

"वह सहायक होगा।"

"परन्तु मैं तो बिना उनको साथ लिये नहीं जा सकती।"

"क्यों?"

"मुझे भय है कि जानकी उनकी देखभाल भली प्रकार नहीं कर सकेगी। और यदि कुछ हो गया तो जीवन-भर पश्चाताप की अग्नि में जलती रहूंगी।"

"तो इन बच्चों की भलाई अब तुम्हें अपने सैर-सपाटे से अधिक रुचिकर प्रतीत होने लगी है?"

"यह तो सदा से ही है। बच्चों के पेट में आते ही खान-पान, रहन-सहन में सावधानी बरतती रही हूं। यह सब इनकी भलाई के विचार से तो है। कमल के समय तो एक वर्ष तक खटाई-मिर्च आदि का परहेज रखा था। आपकी संगति से बचकर रही थी। यह सब तपस्या इनकी भलाई के लिए तो थी।"

"अनन्ता, तुम तो बिलकुल धर्मशास्त्र को माननेवाली बन गई हो। मैं तो तुम्हारे विषय में ऐसा नहीं समझता था।"

"तो आप क्या समझते थे?"

"तुम एक मॉडर्न कायस्थ परिवार की शिष्ट लड़की हो। सरकार की भक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और यूरोपियन सभ्यता की प्यारी तथा अपने सुख पर सब कुछ बलिदान करनेवाली हो। तुमने तो कमाल कर दिया। यूरोप और अमेरिका की शानदार सैर को इस डेढ़ फुट के मांस के लोथड़े कुमुद पर निछावर कर रही हो।"

"आप क्या समझते हैं, मुझे क्या करना चाहिए?"

"मैं तुम्हारी भावनाओं का आदर करूंगा। हां, यदि मैं तुम्हारे स्थान पर होता तो यही करता जो तुम करने के लिए कह रही हो।"

अपने ही मन के भावों का विश्लेषण सुन और उनके लिए अपने त्याग की सीमा का ज्ञान प्राप्त कर वह पति का मुख देखती रह गई। फिर विचारकर बोली, "अच्छा, मुझे विचार करने के लिए कुछ समय दीजिये। विदेश-भ्रमण का भारी प्रलोभन है। इधर यह जिसको आप मांस का लोथड़ा कहते हैं, मेरे अन्तस्तल पर छा-सी रही प्रतीत होती है। मैं दो परस्पर विपरीत दिशाओं में खिंची-सी अनुभव करती हूं मैं कुछ दिन मैं बताऊंगी।"

"देखो अनन्ता! आज सोमवार है। अगले सोमवार तक मैं हवाई जहाज की सीट बुक कराना चाहता हूं। उससे पूर्व मुझे सूचित कर देना।"

सानन्द दिन में छः घंटे पढ़ता था और तीन घंटे लिखता था। इस प्रकार कार्य करते हुए उसको सवा वर्ष से अधिक हो गया था।

शनिवार का दिन था, सानन्द अपना प्रातः का कार्य पूर्ण कर टाइपराइटर बन्द करने लगा था कि अनन्ता उसके समीप कुर्सी पर आ बैठी। कुमुद उसकी गोद में थी। सानन्द ने टाइपराइटर बन्द किया तो अनन्ता बोली, "देखिये यह क्या कहती है?"

"क्यों, क्या कहती है?"

लड़की सानन्द की ओर देख रही थी। अनन्ता मुस्करा रही थी। सानन्द बोला, "यह तो मेरे कान खींचने की सोच रही है। मानो मैंने कोई अपराध कर दिया हो।"

"हां, यह कह रही है कि मेरी मां को मुझसे दूर मत ले जाइये।"

सानन्द कागज समेटता-समेटता रुक गया। वह अनन्ता के मुख पर देखने लगा। अनन्ता भी मुस्कराती हुई अपने पति की ओर देख रही थी। सानन्द ने समझते हुए कहा, "तो तुम्हारा कहने का अभिप्राय यह है कि तुमने भ्रमण के लिए न जाने का ही निर्णय कर लिया है।"

"हां।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भली प्रकार सोच-विचार लिया है?"

"हां। मैं अब अधिक बच्चे पैदा नहीं करूंगी और जब ये इस योग्य हो जायेंगे कि अपनी देखभाल स्वयं कर सकें और मेरी सहायता की इनको आवश्यकता न रहे तो उस समय सामर्थ्य हुआ तो फिर घूम-घामकर सारी दुनिया देखने का यत्न करूंगी।"

"जैसा तुम्हें उचित प्रतीत हो वैसा कर सकती हो।"

मैंने तो यही निर्णय किया है। अब आप बताइये कि आप कब जा रहे हैं?"

"मैं...मैं विचार करके ही बता सकता हूं।"

"कर लीजिये। आपकी अनुपस्थिति में पिताजी के घर पर ही रहूंगी।"

"भैया और भाभी के पास नहीं?"

"उनसे मिलती रहूंगी और कभी-कभी आपके माता-पिताजी के पास भी जाया करूंगी। इस पर भी अधिकतर रहूंगी पिताजी के घर पर ही।"

"अच्छी बात है। मैं अब इस परिस्थिति पर विचार करूंगा।"

सानन्द ने विचार किया और उसका परिणाम यही निकला कि वह अब विदेश जाने की आवश्यकता अनुभव नहीं करता। उक्त वार्त्तालाप के कुछ दिन बाद उसने अनन्ता को बताया, "मैंने भी अब विदेश जाने का विचार छोड़ दिया है।"

"क्यों?"

"विदेश जाने का विचार तो मेरे मन में उस समय उत्पन्न हुआ था जब सरकार के सांस्कृतिक विषयों के मन्त्री ने किसी दूतावास में कल्चरल अटैची के रूप में भेजने का प्रस्ताव किया था और मेरी समझ में यह आया था कि इस प्रस्ताव का स्रोत तुम्हारे पिताजी हैं।"

"मैं यह समझता हूं कि जब किसी का श्वसुर अपने दामाद को कोई विशेष सुविधा देता है तो उसका वास्तविक कारण अपनी लड़की को लाभ पहुंचाना होता है। यह स्वाभाविक भी है। सीधे रूप में अथवा घूम-घूमाकर लाभ लड़की को ही होता है।

"इससे मैंने यह अनुमान लगाया था कि तुम्हारे पिता तुमको विदेश-भ्रमण के लिए भेजना चाहते हैं। मैं तो केवल साधन बन रहा हूं। अतः उस प्रस्ताव को जब मैंने अस्वीकार किया तो मैंने यह अपना कर्तव्य समझा कि तुम्हें विदेश-भ्रमण के लिए ले जाऊं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह विचार और भी परिपक्व हो गया, जब मुझे पता चला कि मेरे विदेश जाने की नौकरी प्राप्त होने की आशा में तुमने मेरे साथ जाना स्वीकार कर लिया है।

"मैंने साधन जुटाये और बाहर जाने का कार्यक्रम बना लिया। परन्तु तुम अपने बच्चों के लिए विदेश जाना रोक बैठी तो मैंने भी विचार किया कि मेरे विदेश जाने का उद्देश्य ही जब नहीं रहा तो फिर मैं जाकर क्या करूंगा।

"यह ठीक है कि जब जाने का विचार पक्का हो गया तो अपने भी कोई उद्देश्य और प्रलोभन जाग पड़े। परन्तु मुख्य उद्देश्य विलुप्त होने पर वे भी गौण हो गये हैं। वे सुगमता से स्थगित होने लगे। अब तुम्हारे न जाने के निश्चय पर मैं अपने जीवन के मूल्यवान तीन-चार मास व्यर्थ ही व्यतीत करने और साथ ही चालीस-पचास हजार रुपया भी व्यय करने में कोई लाभ नहीं समझता।

"सबसे बड़ी बात यह है कि मेरा विदेश-भ्रमण करने का उद्देश्य तो सहज पूर्ण होता जा रहा है।"

"आप युक्ति तो खूब करते हैं। इस पर भी मैं समझती हूं कि युक्ति में सदा एक दोष यह रहता है कि आपकी युक्ति आधाररहित रहती है। देखिये, मैं तो पूर्ण दुनिया में भ्रमण स्वतः एक उद्देश्य समझती हूं। मैं सत्य कहती हूं कि यदि मुझे सुविधा प्राप्त हो तो मैं तो चन्द्र और मंगल ग्रहों तक भी जाने के लिए इच्छुक हूं। मैं समझती हूं यह ज्ञान वृद्धि के लिए आवश्यक है। यदि मैं नही जा रही तो इस कारण कि इन बच्चों की शिक्षा-दीक्षा को मैं जानकी और आपकी भाभी के अधीन करना नहीं चाहती।"

"तो किनके अधीन करना चाहती हो?"

"किसी के भी नहीं। अपने ही अधीन रखना चाहती हूं।"

"तो तुम स्वयं को संसार में सबसे योग्य शिक्षिका समझती हो।"

"हां, अपने बच्चों के लिए मैं उनकी मां हूं।"

"ओह! 'मातृदेवो भव'। तुमने तो इस वेद-वाक्य का समर्थन कर दिया है।"

अनन्ता मुख देखती रह गई। फिर कुछ विचारकर पूछने लगी, "क्या लिखा है वेद में?"

"यही कि प्रत्येक शिशु के लिए पहले मां परमात्मा का रूप होती है। उस अवस्था में मां के द्वारा ही परमात्मा बच्चे के पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रबन्ध करता है। अनपढ़-से अनपढ़ मां भी स्वाभाविक रूप में वही कुछ करती हैं जो बच्चे के हित में होता है।"

"विचित्र बात है! मैं ठीक ऐसा ही अनुभव करती हूं।"

"मैं तो यही कहूंगा कि तुम स्वाभाविक रूपेण मां हो। कम-से-कम इस विषय में तो तुमको आधुनिक जीवन-मीमांसा छू तक नहीं गई।"

"यह क्या है?"

"इस युग की मीमांसा यह है कि 'एवरी वन फॉर हिमसैल्फ' अर्थात् प्रत्येक अपने हित के लिए। इस कारण समाज की कल्पना अति कठोर हो गई है। माताएं पैदा होते ही बच्चे को कृत्रिम दूध पर डाल देती हैं। जिससे कि उनका स्वयं का स्वास्थ्य न बिगड़े। माताएं प्रोफिलैक्टिक्स इस कारण प्रयोग करती हैं जिससे उनके भोग-विलास में बाधा और छुट्टी के दिन न आ सकें। माताएं बच्चों के पालन-पोषण के स्थान पर स्वयं नौकरी करती हैं, जिससे वे अपने शृङ्गार और भोग-विलास के लिए साधन और अवसर अधिक पा सकें।

"आज प्रत्येक कार्य की धुरी है सुख-साधन। तुम विमेन्ज कांफ्रेन्स की सदस्या होती हुई भी बच्चे को अपनी छाती से दूध पिलाना चाहती हो। सत्य यह मेरे लिए एक आनन्दोत्पादक अचम्भा है।"

अनन्ता ने कहा, "यह आपको किसने कहा है कि मैं कुमुद को अपना दूध पिलाती ही जाऊंगी। मैंने तो अभी यह बहुत कम कर दिया है।"

"मेरा विदेश-भ्रमण की तैयारी का अर्थ यह था कि तुम कुमुद को बाजारी दूध पर डाल दो।

"मेरे बच्चे की देखभाल स्वयं करने का अभिप्राय यह था कि जानकी का चरित्र कुछ शिथिल है इस कारण उसकी देख-रेख में अपना बच्चा नहीं रखना चाहती। आपकी भाभीजी को मैं इस योग्य नहीं मानती।"

"तो तुमने भाभी में भी दोष ढूंढ़ निकाला है।"

"दोष न भी कहूं तो भी कुछ अभाव तो कह ही सकती हूं। कमल अब तीन वर्ष से कुछ ऊपर हो गया है और अभी से वह चोर, भीरु और कटुभाषी हो गया है। आप उसे भी भाभी के घर पर ही भेज देते हैं।"

"तो क्या यह वह भाभी के घर पर सीखा है?"

"कुछ ऐसा ही प्रतीत होता है। आपका भतीजा योगेश्वर भी चोर है और साथ ही उसमें कुछ अन्य दोष भी हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह नौकरों की लड़कियों में घुस-घुसकर बैठा रहता है।"

"तब तो तुम्हारा निर्णय ठीक है। परन्तु तुमने यह जानकी की विचित्र बात बताई है।"

"जी हां। मैं उसको बहका चुकी हूं। वह हमारे पड़ोसी के नौकर के साथ सिनेमा देखने जाने लगी है।"

"ओह, तब तो उसकी छुट्टी कर देनी चाहिए।"

"विचार तो मैं भी यही कर रही हूं। परन्तु रखूं किसको? आखिर घर की सफाई, चौका-बासन और कपड़े धोने के लिए भी कोई चाहिए न?"

"ठीक है। जब तक कोई नहीं मिलता, तब तक तो विदेश जाना स्थागित ही हो गया।"

"मैं तो समझती हूं कि जब तक कुमुद कालेज में भरती नहीं हो जाती तब तक मेरे लिए तो घर छोड़कर जाना सम्भव नहीं है। इसमें एक शर्त यह भी है कि आप और बच्चे पैदा न करें।"

सानन्द हंस पड़ा और बोला, "जन्म-मरण तो परमात्मा के अधीन है, रानी!"

: 5 :

समर्थ मिश्र ने अपनी ठेकेदारी युद्ध के दिनों में शुरू की थी। उस काल में इमारतों और सड़को का निर्माण-कार्य अति वेग से चल रहा था और खर्च के विषय में संकोच नहीं होता था। मुख्य बात यह होती थी कि कौन कितनी जल्दी काम समाप्त करता है। जो सबसे कम समय में काम समाप्त करने का आश्वासन देता था, उसी का टेंडर स्वीकार कर लिया जाता था।

समर्थ मिश्र ने कुछ सैनिक बैरेक्स समय से पूर्व बनाकर दी थीं, इस कारण उसे प्रथम श्रेणी का ठेकेदार मान लिया गया था। उन दिनों उसके पास धड़ाधड़ धन आ रहा था और वह सब बैंक में जमा हो रहा था।

स्वराज्य-प्राप्ति के समय समर्थ ने अपना हिसाब-किताब देखा तो उस समय दस लाख नकद जमा हो गया था। समर्थ की धारणा थी कि स्वराज्य-प्राप्ति के बाद युद्ध-काल जैसी धांधली नहीं चलेगी। न तो प्रत्येक टेंडर स्वीकार ही हो जायेगा ओर न किसी प्रकार की हेरा-फेरी होगी। इसलिए वह विचार करने लगा कि इस एकत्रित धन से कोई कारखाना खोल ले।

परन्तु उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब अप्रैल 1948 में ही अनेकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योजनाएं बनने लगीं और भिन्न-भिन्न कामों के लिए टेंडर मांगे जाने लगे। कहीं ट्यूबवैल लगने लगे, कहीं सड़कें बनने लगीं और प्रत्येक जिला में अन्न-भण्डार खड़े किये जाने लगे।

समर्थ टेंडर भरने गया तो उसको यह देखकर अचम्भा हुआ कि वही ऐक्जीक्यूटिव इंजीनियर, वही चीफ इंजीनियर, वही खजांची और वही क्लर्क केन्द्रीय निर्माण-विभाग में हैं, जो युद्ध-काल में लाखों कमाते रहे हैं।

जब समर्थ ने टेंडर भरने के लिए फार्म मांगा तो फार्म देते हुए क्लर्क ने कहा, "ऐक्जीक्यूटिव इंजीनियर साहब से मिल लीजियेगा।"

"कौन हैं वे?"

"वही श्री सी. वी. गव।"

"अच्छा।"

समर्थ ने कमरे में झांककर पूछा, "क्या मैं अन्दर आ सकता हूं।"

"हां-हां आइये मिश्राजी! टेंडर भर रहे हैं?"

"जी, विचार तो है।"

"तो दे दीजिये। साथ ही यह ख्याल रखिये कि हमारा दस्तूर चलेगा। समझ गये न आप।"

"जी हां, यह विचारकर ही टेंडर भरूंगा।"

इसका अभिप्राय यह था कि लेन-देन की व्यवस्था पूर्ववत् चलेगी। इस पर भी समर्थ ने मुकाबले के भावों पर टेंडर भरा। उसका अनुमान था कि युद्ध-काल न होने से आपत्तियां उठाई जायेंगी और उसको उसके स्पष्टीकरण के लिए तैयार रहना चाहिए।

परिणाम यह हुआ कि टेंडर स्वीकार हुआ और अधिकारी-वर्ग को स्वीकार करने में किसी प्रकार की रियायत भी नहीं करनी पड़ी। इस पर ऐक्जीक्यूटिव इंजीनियर को यह चिन्ता लग गई कि कहीं उनके भाग में कमी न हो जाय। परन्तु उसकी चिन्ता का निराकरण हो गया।

जब टेंडर स्वीकार होने की सूचना मिलने पर समर्थ मिश्र इंजीनियर साहब के घर पर पहुंचा और उसने फलों की डाली के साथ दस हरे रंग के नोट मिसेज राव को दिये तो इंजीनियर साहब के चित को शान्ति मिली।

डाली भीतर पहुंची और बैठक में समाचार आ गया कि सब ठीक है। इस पर मिस्टर राव ने समर्थ से पूछा, मिस्टर समर्थ! तुम्हारा टेंडर सबसे नीचे के भाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का था। मैं यही विस्मय कर रहा हूं कि तुम इतने सस्ते भाव पर काम कर किस प्रकार अपनी सब जिम्मेदारियां निभा पाओगे।"

"राव साहब! आपकी कृपादृष्टि रहनी चाहिए। सब ठीक होता जायेगा। मेरा सदा यह नियम रहा है कि कभी उच्चाधिकारी नाराज भी हो जायें तो उनको किसी प्रकार की भी आपत्ति करने का अवसर न रहे। आप सदा उनकी आपत्ति का उत्तर दे सकें।"

"हां, यह तो होना ही चाहिए। पार्लियामेंट में हमको प्रत्येक बात का उत्तर देने के लिए तैयार रहना चाहिए।"

इस प्रकार समर्थ का कार्य चलते हुए सन् पचास आ गया। इस समय अनियमित आय बढ़ने लगी। अभी सीमेंट-लोहा तो नियंत्रित पदार्थ थे। इनकी प्राप्ति सरकार के अधिकारियों से परमिट प्राप्त करने पर हुआ करती थी। इनको सरकारी कार्यों के लिए प्राप्त करने के लिए केन्द्रीय निर्माण-विभाग की ओर से परमिट जारी होते थे। यदि किसी कार्य पर सीमेंट के दस हजार बोरे आवश्यक होते तो पन्द्रह हजार का परमिट बनवा लिया जाता। काम तो दस हजार की अपेक्षा सात-आठ हजार में ही हो जाता था। शेष सात-आठ हजार चोर बाजार में बिकता था। सरकारी भाव पांच रुपया प्रति बोरा होता था तो बाजार में वह सुगमता से सात रुपया प्रति बोरा होता। इस प्रकार यह रुपया किताबों में लिखे बिना प्राप्त हो जाता। ऐसा रुपया बिना हिसाब-किताब के संदूकचियों में एकत्रित होने लगा। इस धन को छिपाने के लिए इमारतें बनानी एक उपाय ढूंढ़ लिया गया। एक इमारत पर एक लाख खर्च कर किताबों में पचास हजार दिखाया जाता था।

अतः सन् 1954 तक समर्थ मिश्र लगभग एक करोड़ रुपये की सम्पत्ति का स्वामी बन गया और वह इस स्वराज्य-काल में अपनी आय और सम्पत्ति को इमारतों के अतिरिक्त किसी अन्य काम में लगाने का उपाय करने लगा।

घर-भर में यह विख्यात था कि सानन्द को प्रत्येक विषय में ज्ञान है। अतः सानन्द के ज्ञान का लाभ उठाने के विषय में समर्थ विचार करने लगा।

सानन्द ने जब अपना विदेश-भ्रमण का कार्यक्रम रद्द किया तो इससे समर्थ को विस्मय हुआ। उसने अपनी पत्नी को इस विषय में जानने के लिए सानन्द की पत्नी के पास भेजा। उसको यह भी कहा कि वह कुछ दिन उनको अपने घर में रहने का निमन्त्रण भी दे आये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्तोष सानन्द के घर गई और उसको सानन्द के वहां न होने के चिन्ह दिखाई दिये तो उसने अनन्ता से पूछा, "सानन्द कहां है?"

"वे कुछ दिन के लिए बम्बई गये हुए हैं। वहां अंग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक हक्सले आये हुए हैं। वे उनसे मिलने के लिए गये हैं।"

"हमने तो सुना था कि तुम दोनों दुनिया की सैर के लिए जा रहे हो। कब तक जाने का विचार है?"

"अभी निकट भविष्य में जाने का तो कोई विचार नहीं है। मैं कमल और कुमुद को साथ ले जाना चाहती थी। वे इस पक्ष में नहीं थे। बच्चों के बिना जाने में मैंने असमर्थता व्यक्त की तो उन्होंने भी अपना जाना स्थगित कर दिया।"

"बच्चों को तो तुम मेरे पास छोड़ सकती हो?"

"नहीं बहन जी! ये अब इतने शरारती होते जा रहे हैं कि आपको बहुत तंग करेंगे।"

"इसके लिए तुम जानकी को वहां छोड़ देतीं?"

"जानकी को तो मैं निकालने की सोच रही हूं।"

"क्यों?"

"उसके पर निकल आये। हमारे पड़ोसी के नौकर के साथ वह सिनेमा जाया करती है। उससे खूब मेल-मिलाप है उसका। उससे कहा कि वह उसके साथ शादी कर ले तो इसके लिए वह तैयार नहीं होती। और न ही वह उससे मेल-मिलाप बन्द करती है।"

"परन्तु तुम्हें इससे क्या? तुम्हारे काम में किसी प्रकार विघ्न नहीं पड़ना चाहिए।"

"अभी तो नहीं पड़ता, इस पर भी उसका चित्त अब उड़ा-उड़ा रहता है। वह रात होने की प्रतीक्षा में रहती है। यहां से साढ़े आठ बजे छुट्टी होती है तो वह मंगतू के साथ घूमने चली जाती है। उसकी मां आई थी ओर बताती थी कि रात को ग्यारह बजे से पहले घर नहीं पहुंचती।"

"मैंने उससे पूछा तो वह बक गई। मैंने उससे जब कहा कि इस प्रकार बच्चा भी हो सकता है तो उसने बताया कि वह उन सब साधनों का प्रयोग करती है जिनका कि परिवार-नियोजन के लिए प्रचार किया जा रहा है। इस लिए मेरा तो अब यही निश्चय हो रहा है कि उसे नौकरी से पृथक् कर दूं।"

"ठीक है, वह पसन्द नहीं तो किसी अन्य नौकरानी का प्रबन्ध कर लो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ढूंढ़ तो रही हूं। जानकी में एक गुण तो है कि वह काम में समझदार और चतुर है। बच्चों को अच्छी तरह खिलाती है। इसी तरह की कोई मिल जाय तो छुट्टी दे दूं।"

"इसके लिए तुम मलावी को यहां बुला सकती हो।"

"उसको तो मैं घर में नौकरानी के रूप में नहीं रख सकती। वह आयेगी तो मालकिन बनकर रहेगी। वह मुझसे कहीं अधिक सुन्दर है?"

"तो तुमको सानन्द पर भी विश्वास नहीं?"

इस प्रश्न से अनन्ता गम्भीर हो गई। वह विचार करने लगी। उसने कहा, "आज भारतवर्ष का और विशेषकर दिल्ली का वातावरण ऐसा हो गया कि किसी भी पुरुष अथवा स्त्री पर विश्वास नहीं किया जा सकता।"

"तो फिर कैसे काम चलेगा? बिना नौकर के तो निभ नहीं सकता।"

"कम-से-कम एक बात तो मैं कर रही हूं। मैं अपने बच्चों को नौकरों के हाथ में छोड़ना नहीं चाहती। इसलिए बच्चों को यहां छोड़कर जा भी नहीं रही। और कमल के पिताजी मेरे बिना जाना नहीं चाहते।"

सन्तोष को इन युक्तियों से समाधान नहीं हुआ। वह लौटी तो उसके विस्मय में वृद्धि ही हुई थी। उसकी अनन्ता के बारे में यह धारणा थी कि वह आधुनिक युग की उन्नत महिलाओं में से है। परन्तु आज तो वह उसको बिलकुल रूढ़ीवादी प्रतीत हुई थी। उसने यह बात अपने पति को बताई तो उसने कह दिया कि सानन्द ने उसको भी धर्म-कर्म का इंजेक्शन दे दिया प्रतीत होता है।

"परन्तु आप इसे अच्छी बात समझते हैं क्या?"

"अच्छी-बुरी तो सापेक्षिक बातें हैं। असल बात यह है कि सानन्द काल की गति के साथ-साथ पग रखकर नहीं चल रहा है। इसी कारण दोनों जमाने से पिछड़ते जाते प्रतीत होते हैं।"

"परन्तु आप मुझे तो जमाने के साथ चलने की स्वीकृति नहीं देते। आप मुझे अपने मायके भी अकेली जाने की स्वीकृति नहीं देते। मुझे तो इलाहाबाद भी जाना हो तो नौकरानी साथ भेजी जाती है।"

'ओहो, यह इस कारण नहीं कि मैं तुमको अकेले यात्रा करने योग्य नहीं समझता। अपितु इस कारण कि इतने धनी की पत्नी होकर तुम अकेली घूमती शोभा नहीं पातीं।"

सन्तोष नौकर को साथ-साथ लेकर घूमने का अर्थ नहीं समझी। इस पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी अपने पति की बात को गलत कहने का उसे अभ्यास नहीं था। उसे इस बात में निरुतर कर समर्थ ने पूछा, "सानन्द को यहां बुलाने का क्या हुआ?"

"वह बम्बई से लौटकर आयेगा तो फिर जाऊंगी। अनन्ता का कहना है कि वे आयेंगे तब ही बतायेंगे कि वे अपने भाई साहब का निमन्त्रण स्वीकार करते हैं अथवा नहीं?"

"ऐसा प्रतीत होता है कि अनन्ता अब पालतू गाय की भांति सुशील हो गई है। पहली बार वह सानन्द से लड़ी थी तो दो वर्ष तक मां के घर पर रहना पड़ा था। दूसरी बार लड़ी तो दो दिन से अधिक नहीं रह सकी और अब तो वह गले में बंधे रस्सेवाली गाय की भांति हो गई है।"

"इस पर भी वह नाराज प्रतीत नहीं होती।"

"देखती जाओ, अब मैं उससे मिलने के लिए जाऊंगा।"

सन्तोष लखनऊ के एक ब्राह्मण परिवार की लड़की थी और उसकी बहन का विवाह इलाहाबाद में हुआ था। विवाह के समय तो वह एक ठेठ हिन्दू आचार-विचारवाली लड़की थी और समर्थ था दिल्ली का पढ़ा-लिखा लड़का। वह ऐसी संगत में पड़ गया था कि पढ़ाई में अधिक रुचि नहीं ले सका। इसी कारण वह इण्टर की परीक्षा में फेल हुआ तो उसने आगे पढ़ाई ही छोड़ दी।

हरिशरणानन्द अपनी पैतृक सम्पत्ति पर और दिल्ली के कुछ शिष्ट परिवारों की पुरोहिताई पर निर्वाह करता था। उसका अधिकांश समय शास्त्राध्ययन में व्यतीत होता था। ज्योतिष में उसकी पर्याप्त रुचि थी। इस कारण वह समर्थ के अनुत्तीर्ण होने पर उसकी जन्म कुण्डली देख विचार करने लगा कि उस-जैसे पढ़े-लिखे के घर में यह गंवार कहां से पैदा हो गया। उसके ज्योतिष के ज्ञान ने बताया कि समर्थ पिछले जन्म का वैश्य है। तब के वैश्य-सम्प्रदाय के संस्कार उसके ब्राह्मण बनने में बाधक हो रहे हैं। यह जानकर पण्डितजी ने उसको सम्मत्ति दे दी कि वह कोई कारोबार कर ले।

समर्थ ने भी व्यापार में लग जाना ठीक समझा। व्यापार में उसको वह सफलता नहीं मिली जो ठेकेदारी में मिली। सन्तोष से विवाह तो ठेकेदार बनने से पूर्व ही हो गया था। उस समय सन्तोष लज्जाशील और स्त्री-जाति की कही जाने वाली हीन भावना से युक्त थी। विवाह के कुछ ही दिनों बाद समर्थ ने ठेकेदारी आरम्भ कर दी और फिर अपने कारोबार में सन्तोष को बड़े अफसरों से मेल-मुलाकात करने के लिए प्रयुक्त किया। धीरे-धीरे सन्तोष की झिझक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छूटने लगी। वह निःशंक हो अपने पति के साथ सभा-समाजों ओर दावतों पर जाने लगी। इस पर भी दो बातों में समर्थ ने सन्तोष को दिल्ली की शिष्ट परिवारों की नारियों को भांति स्वतन्त्रता नहीं दी। एक तो वह उसको लेकर कभी क्लब में नहीं गया। और दूसरे उसको अपने माता-पिता तथा उस ओर के सम्बन्धियों के घर जाने के समय अकेले नहीं जाने देता था। वह अपने श्वसुरालवालों में अपनी रईसी की धाक बांधे रखना चाहता था।

परन्तु रुपये के आने पर सन्तोष के मस्तिष्क का विकास उसी दिशा में होने लगा जिसमें प्रायः धनी लोगों का होता है। वह हिन्दू- धर्म को रूढ़िवाद मानने लगी। यौन विषय में भी उसके विचार वैसे दृढ़ नहीं रहे थे, जैसे मां के घर में थे। यद्यपि वह स्वयं तो निष्ठावान ही थी, परन्तु दूसरों में इस दिशा में ढीलापन वह क्षम्य मानती थी। यही कारण था कि जानकी का अपने पड़ोसी के नौकर से सम्बन्ध उसे बुरा प्रतीत नहीं हुआ था। न ही उसको सानन्द के मलावी से किसी प्रकार के सम्बन्ध बन जाने में कोई आपत्तिजनक बात प्रतीत हुई। उसके कान में कभी-कभी समर्थ के विषय में यह पड़ता रहता था कि उसने दिल्ली में कहीं कोई रखेल रखी हुई है। परन्तु इस विषय में उसने न तो कभी अपने पति से पूछा और न ही अपने मन में इस विषय में किसी प्रकार की चिन्ता अनुभव की। उसका अपना जीवन सरलता से चलता था।

उसके घर में चार बच्चे थे। सबसे बड़े लड़के का नाम था योगेश्वर। योगेश्वर इस समय चौदह वर्ष का था और दसवीं श्रेणी में पड़ता था। इसी के विषय में उस दिन अनन्ता ने सानन्द को बताया था कि वह नौकरों की लड़कियों में बैठा रहता है। उससे छोटी लड़की भामिनी थी। वह ग्यारह वर्ष की आयु की थी और मां से भी अधिक सज-धजकर रहा करती थी। दिन में चार बार तो वह बाल ही संवारती थी। तीन बार कपड़े बदलती थी। अभी से पाउडर और नेलपेंट लगाने लगी थी। पिछले वर्ष वह सातवी श्रेणी में अनुत्तीर्ण हो गई थी। अब उसको पढ़ाने के लिए एक अध्यापिका नियुक्त की गई थी। इससे छोटे दो और लड़के थे, सिद्धेश्वर और भुवनेश्वर। इनकी आयु क्रमशः सात और पांच वर्ष की थी। सिद्धेश्वर को हाकी का शौक था; वह बहुत चपल था। किन्तु भुवनेश्वर इस आयु में ही धनि बाप का बेटा होने की गन्ध मन में लेकर बड़ा हो रहा था।

इस सबकी ओर सन्तोष का कोई ध्यान नहीं था। वह तो अपने पति के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर को टिपटॉप रखने और घर पर आकर ठहरनेवाले अतिथियों के आतिथ्य में ही व्यस्त रहती थी।

घर का सुचारू प्रबन्ध रखने से वह स्वयं को मिलनसार और योग्य ग्रहिणी मानने लगी थी। इसी कारण वह जमाने के साथ-साथ अपने विचारों के विकास में भी प्रत्यनशील रहती थी।

जब कभी भी पण्डित हरिशरणानन्द और निपुणा अपने लड़के समर्थ के घर रहने के लिए आते तो मलावी भी उनके साथ आया करती थी। इससे मलावी के विषय में सन्तोष के मन में प्रायः सहानुभूति उमड़ आया करती थी। इसी प्रकार एक दिन उससे पूछ लिया, "मलावी! जब दाताराम तुमसे पुनः विवाह करने के लिए तैयार हो गया था तो तुमने अस्वीकार क्यों कर दिया?"

"ऐसे ही।"

"दुनिया में कभी कोई बात ऐसे भी होती है? बिना कारण के तो कुछ नहीं होता।"

मलावी तो पहले ही जानती थी उसके व्यवहार में प्रबल कारण है। वह तो किसी कारणवश ही यह बताना नहीं चाहती थी। अब जब सन्तोष ने आग्रह किया तो उसने कहा, "यदि आप नाराज न हों तो बता सकती हूं कि मेरे मन में क्या बात है।"

"नाराज होने का कारण है क्या?"

"हो भी सकता है।"

"मैं मूर्ख नहीं हूं। तुम क्यों दाताराम के साथ रहकर अपना स्वाभाविक जीवन व्यतीत नहीं करतीं?"

"बात यह है कि उनको हमारे घर में रहते हुए दो वर्ष हो गये थे। इस पर भी मेरे मन में उनके लिए कभी भी पति की भावना नहीं बनी थी। एक दिन वे कहने लगे कि वे मुझसे विवाह करना चाहते हैं। मैंने कह दिया वे भैया से बात कर लें। मेरा विचार था कि भैया स्वीकार नहीं करेंगे। परन्तु वे मान गये। इससे मैंने समझा कि भैया को वे ही योग्य वर प्रतीत हुए होंगे। इसी प्रकार एक दिन वे बोले कि विवाह तो होनेवाला ही है। इसलिए हमें मिलने में हानि नहीं है। मैं मान गई और फिर कई बार ऐसा हुआ।

"जब हमारे विवाह की तिथि निश्चत हुई तो उस तिथि के कुछ दिन पूर्व ही भैया को विदित हुआ कि वे विवाहित हैं और उनके बच्चे भी हैं। इससे भैया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनसे नाराज हो गये। मैं तो इस पर भी इनसे विवाह करने के लिये तैयार थी। मुझे विदित हो गया था कि मेरे दिन चढ़ गये हैं और इसका भेद खुल जाने से बदनामी होगी। मैंने भैया से कहा परन्तु वे माने नहीं। विवाह के बाद मुझे विदित हुआ कि मकान और दुकान में इनका भाग था और भाग को हजम करने के लिये ही भैया ने इनसे मेरा विवाह स्वीकार नहीं किया।

"मेरे विवाहित पति पढ़े-लिखे तो थे परन्तु मद्य का सेवन करते थे और मुझको बहुत तंग करते थे। विशेष रूप में गर्भवती होने के कारण जब मैं उनकी इच्छा की पूर्ति नही कर सकती थी।

"बच्चा समय से पूर्व हो गया। इस पर मां और बेटे ने मुझे पीट-पीटकर पूछना चाहा। मैंने स्वीकार किया तो मुझे धक्के देकर घर से निकाल दिया। मैं भाई के घर गई तो भाभी ने मुझको घुसने नहीं दिया। रात-भर मैं उनके मकान के बाहर पड़ी रही। इस पर कौशल्या ने मेरी रक्षा की और मुझे अपने खोखे में रख लिया। मैं छः मास वहीं रही। एक तो वह विधवा मेरा खर्चा नहीं दे सकती थी, दूसरे मेरा भाई मेरे ग्राहक ले-लेकर आता और कहता था कि मैं उनसे विवाह कर लूं। मैं अपने भाई और अन्य पुरुषों से घृणा करने लगी थी।

"इस समय मुझे अपना जीवन अन्त कर देना ही ठीक प्रतीत हुआ। मैं अपने बच्चे को दाताराम जी को दे देना चाहती थी। ब्राह्मणी के खोखे में बैठे सड़क दिखाई देती थी। एक दिन मैंने दाताराम जी को तांगे में बैठे वहां से जाते देखा। उस दिन के बाद मैं नित्य ही उनको उधर से जाते देखती रही। एक दिन मेरे मन में बहुत आत्मग्लानि उभर आई और इनको वह पत्र लिखकर ब्राह्मणी के लड़के के हाथ सड़क पर भिजवा दिया।

"उस पत्र के उत्तर में सानन्द जी आ गये। तब तक मेरा मन इस बात पर दृढ़ था कि मैं आत्महत्या करूंगी। परन्तु सानन्दजी के प्रयत्नों को देख मैं इन पर मुग्ध हो गई। कदाचित् सानन्द जी की ओर मेरा आकर्षण न होता तो मैं दाताराम से भी शादी कर लेती। परन्तु उनको देख लेने के बाद तो दाताराम के प्रति मेरे मन में उग्र घृणा हो गई। जब आपने माताजी के पास रहने का प्रस्ताव किया तो मैं इस आशा में कि अपनी प्रिय वस्तु को देखने का अवसर तो मिला करेगा, मैंने स्वीकार कर लिया। अब मैं बहुत प्रसन्न हूं और संसार के किसी पुरुष से विवाह करने की इच्छा नहीं है।

"सप्ताह में दो-तीन बार सानन्दजी माताजी से मिलने के लिए आया करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। और मैं मन्त्रमुग्ध की भांति उनकी ओर निहारा करती हूं।"

"तो तुम सानन्दजी को क्यों नहीं कहती कि वे तुम्हें अपने घर ले जायें?"

"इसमें भी कारण है। मुख्य कारण अनन्ताजी तो हैं ही।"

सन्तोष मौन हो गई।

सन्तोष के आधुनिक युगीन मस्तिष्क में मलावी और सानन्द की परिस्थिति सर्वथा अस्वाभाविक प्रतीत हुई। उसकी इच्छा हुई कि इस विषय में सानन्द से बात की जाय।

: 6 :

सानन्द जिस वायुयान से बम्बई गया, उसी वायुयान से भारत के शिक्षा-मन्त्री भी जा रहे थे। सानन्द उनके साथ की सीट पर बैठा तो मन्त्री महोदय ने सहसा कहा, "ओह! मिस्टर मिश्रा! किधर जा रहे हैं?"

"सर एल्डाक्स हक्सले से मिलने के लिए बम्बई जा रहा हूं।"

"ओह! तो आप भी इस उल्टी खोपड़ी के प्रशंसकों में से हैं?"

"उसका अनन्य भक्त तो नहीं हूं, हां, उसके विचारों का मनन किया है।"

"आप क्या समझते हैं कि हिन्दुस्तानी तहजीब के मुताल्लिक वह कुछ ज्यादा जानता है?"

"हमसे तो कुछ ज्यादा समझता ही है।"

"कम-से-कम मैं इस्लाम के मुताल्लिक उससे ज्यादा जानता हूं।"

"इस्लाम मजहब के मुताल्लिक आपका इल्म ज्यादा हो सकता है, मगर इस्लामी तहजीब के मुताल्लिक तो आपका इल्म भी वैसा ही अधूरा हो सकता है जैसा हक्सले का।"

"तो क्या आप तहजीब और मजहब में फरक समझते हैं?"

"हां, किन्तु आप क्या समझते हैं?"

"मैं समझता हूं कि एक लिविंग रिलीजन और उसकी जिन्दा तहजीब में कोई फरक नहीं होता।"

"तो क्या आप यह समझते हैं सन् 1947 में मुसलमानों ने जो हिन्दुओं का कत्लेआम किया था वह मुसलमानी मजहब के मुताबिक हुआ था?"

"उन दिनो कोई कत्लेआम हुआ भी था क्या? मैं समझता हूं यह तो सब हिन्दुओं के दिमाग की इख्तराह है। कहावत है न, कुत्ते को पागल कह दो और फिर उसे मार डालो। यह तो मुतास्सिब हिन्दुओं ने मुसलमानों को खत्म करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए उनको बदनाम किया था। जहां-जहां मुसलमानों ने कुछ ज्यादती की भी है, वह सब अपनी जान और माल की हिफाजत के लिए ही की थी।"

"किन्तु मुझे इसके विरुद्ध विदित है। मैंने सुना है कि सरकार ने उन दिनों के वाकयात मालूम करने के लिए जस्टिस खोसला साहब की अध्यक्षता में एक कमेटी नियुक्त की थी। उसकी रिपोर्ट छाप क्यों नही दी जाती?"

"सरकार ने उसे जारी करना पब्लिक इन्टरैस्ट में ठीक नहीं समझा।"

"मगर क्या आपके ये ख्यालात उस रिपोर्ट को पढ़ने पर बने हैं?"

"नहीं, उस रिपोर्ट के मुताल्लिक तो मैं कुछ भी नहीं कहना चाहता। यह बात तो मेरी अपनी तहकीकात का नतीजा है।"

"इस पर भी जनाब! मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि दुनियाभर के मुसलमानों का व्यवहार गैर-मुसलमानों के साथ बहुत बुरा रहा है। यह उस तहजीब का नमूना है जो मुसलमानों ने अपने बुजुर्ग अरब के कबीलों से सीखी है। मैं समझता हूं कि इस्लामी मजहब उस तहजीब से मुख्तलिफ है। इस पर भी अगर आप कहते हैं कि इस्लामी मजहब भी वही कुछ बताता है तो मेरे लिए यह एक नवीन समाचार है। मैं हर तहजीब और उससे सम्बन्ध रखनेवाली तहजीब में फर्क होना मुमकिन मानता हूं। हिन्दुओं में भी ऐसा रहा है और अब भी ऐसा है। हिन्दू मत तो वेद और उपनिषदों में लिखा मिलता है, मगर आजकल के हिन्दुओं का रहन-सहन वेदमत से बहुत भिन्न हो गया है।

"मजहब एक आदर्श है और तहजीब उस आदर्श से सदा बहुत नीचे दर्जे पर रही है।"

"तो कभी भी मजहब और उसके 'पैराओं' (माननेवालों) में यकसूही नहीं?"

"रहती है। कभी तो मतानुयायियों में बहुसंख्यक लोग अपने मत पर दृढ़तापूर्वक आरूढ़ दिखाई देते हैं और कभी अल्पसंख्यक में। इस पर भी सदा कुछ-न-कुछ धर्म पर आरूढ़ रहे हैं और कुछ ऐसे भी हैं जो मत से पतित रहे हों। जब लोग किसी मत पर बहुसंख्या में आरूढ़ नहीं रहते तब हम मतानुयायियों की तहजीब में और मत के सिद्धान्तों में अन्तर देखते है।

"मसलन हिन्दुओं में कुछ मूर्ख ब्राह्मणों ने यह रिवाज बना दिया है कि शूद्र के कान में वेद-मन्त्र सुनाई नहीं पड़ना चाहिए। यह उस कांल के हिन्दुओं की तहज़ीब थी, परन्तु वेद में ऐसा नहीं लिखा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसमें तो लिखा है–

यथेमांवाचं कल्याणीं मावदानी जनेभ्यः।
ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।।

"इसका अर्थ यह है कि वेद की कल्याणमयी वाणी पूर्ण मानव समाज, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, अन्त्यज और चाण्डालों के लिए भी है।"

"यह आप कहां से ले आये हैं, मैंने तो पहले कभी ऐसा नहीं सुना?"

"तो अब सुन लीजिए और समझ लीजिये। हिन्दू मत तो हिन्दुओं की मौजूदा तहजीब से मुख्तलिफ और बहुत बढ़िया है। आज अक्सर हिन्दू लोग बहुत ही गिरावट की हालत में हैं, मगर हमेशा ऐसा नहीं रहा। कभी बहुत बड़ी तादाद में लोग हिन्दू मजहब के असूलों पर चलते थे और तब हिन्दू कौम बहुत उन्नत थी।"

"तो अब फिर मजहब के जोर पर हिन्दू लोग उसे उरूज पर क्यों नहीं ले जाते?"

"इसलिए कि हमारी तालीम कुछ नालायक ओहदेदारों के हाथ में चली गई है। यही कारण है कि स्वराज्य मिलने पर भी अभी तक हमने कोई प्रगति नहीं की।"

"यह आप मेरे मुताल्लिक कह रहे हैं क्या?"

"आपको तो मैं ऐसा नहीं कह सकता। आप तो अपने ख्याल से तालीम को सीधे रास्ते पर ही ले जा रहे है और इस चतुराई से कि यूनिवर्सिटियों के प्रोफेसर और शिक्षा-विभाग के अधिकारी समझ नहीं रहे कि आप उनको बेवकूफ बना रहे हैं।

"ऐसा सुना था कि आपसे तालीम का काम लेकर किसी हिन्दू के हाथ में देने का विचार किया जा रहा था। मगर आपने इस काम पर रहने का इसरार किया और राजनीति के प्रकाश से चकाचौंध लोग आपके हाथ में वह महकमा रहने देना मान गये हैं।"

"बड़े शरारती हो मिश्र साहब! भला मेरा इसमें क्या मकसद हो सकता है, जिसको तुम मेरी चतुराई समझते हो?"

"आप मुसलमान हैं और उस पर भी दीनदार मुसलमान। इससे इस्लाम की तबलीग आपकी जिन्दगी का मकसद है। आप इसको पूरा करने में लगे हैं। आप हिन्दू नौजवानों को लामजहब बनानेवाली तालीम को चलाने की कोशिश कर रहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। मूर्ख तो मैंने उन हिन्दू अधिकारियों को कहा है जो आपके तथा जवाहरलालजी के चकमें में आकर शिक्षा को भी सैक्युलर बनाने चल पड़े हैं।"

"हमारी स्टेट सैक्युलर है और उस स्टेट के लिए मुलाजिम और शहरी पैदा करने के लिए शिक्षा दी जा रही है। जो इस तालीम को ठीक नहीं समझते वे अपने बच्चों को स्कूलों में न भेजें।"

"परन्तु यह इस सोशलिस्ट सरकार के होते कैसे सम्भव है! सरकार आये-दिन नये-नये कल-कारखाने लगा रही है और व्यापार भी अपने हाथ में लेती जाती है। इससे कौम के नौजवानों को अपने मातहत करती जाती है। दूसरे नौकरी पाने के लिए सरकारी यूनिवर्सिटियों के सर्टिफिकेट और डिग्रियों को ही मान्तयता देती है। इस सबकी जरूरत नहीं है। शिक्षा को स्वतन्त्र करने के लिए यह नहीं होना चाहिए।"

"क्या दिमाग है आपका! मैं तो समझता था कि आप एम. ए. तक पढ़े हैं। लेकिन आपके इन खयालात को सुनकर तो मुझे आपके पढ़े-लिखे होने पर भी शक होने लग गया है। भला यूनिवर्सिटी के डिग्रीयाफ्ता नौजवानों को नौकरियां न दी जायेंगी तो क्या काशी की पाठशालाओं में पढ़े हुओं को सेक्रेटेरियेट में रखा जायेगा? वहां हमें वेदमन्त्रों का पाठ तो नहीं करना है?"

"जनाब! इस तरह नहीं। आप यह बताइये कि यदि कोई आपके दफ्तर का काम करता हुआ वेद-मन्त्र का पाठ करने की भी काबलियत रखे तो आपको दुःख क्यों होगा?

"मेरा कहना यह है कि आपको दफ्तर में जिन-जिन बातों में काबलियत की ज़रूरत है उन बातों का इम्तिहान आप दफ्तर में ले लिया करे और नौजवानों को वेद या कुरान पढ़ने का मौका अपने-अपने तालीमी इदारों में तालीम लेकर, हासिल करने दीजिये।"

"इससे तो सब गरीब अनपढ़ रह जायेंगे?"

"क्यों?"

"प्राइवेट तालीमी दरसगाहें चलेंगी कैसे?"

"लोग दान-दक्षिणा से इन दरसगाहों को चलायेंगे। सरकार भी फी तालिबेइल्म कुछ ग्रांट दे सकती है।"

"तो क्या सरकारी रुपया वेद और कुरान पढ़ने के लिए दिया जायेगा?"

"क्या हरज है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इससे तो हिन्दू-मुसलमान आपस में लड़ मरेंगे?"

"क्यों, क्या कुरान की तालीम में कुछ लड़नेवाली बातें है? हमारे शास्त्रों में तो 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' और 'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत' स्थान-स्थान पर लिखा मिलता है। इसका मतलब है कि सबमें अपने समान रूह अर्थात् आत्मा मानो और जो बात तुमको अपने लिए पसन्द नहीं वह दूसरों के लिए भी बुरा मानो।"

शिक्षा-मन्त्री मुख देखता रह गया। युक्ति से तो वह परास्त हो चुका था, इस पर भी मन के संस्कारों से वह बात को अभी समझ नहीं पाया था। इससे उसने बात बदलकर पूछा, "तुम्हारी अपने श्वसुर साहब से आजकल कैसी पट रही है?"

"बहुत मजे में चलती है। वे दक्षिण की ओर देखते है तो मैं उत्तर की ओर देखता हूं। इस पर भी वे मेरे श्वसुर है और मै उनका दामाद।"

"सुना था कि उनकी लड़की आपसे नाराज रहती है?"

"जी हां, कभी-कभी हमारा मतभेद हो जाता है तो वह बेचारी सहन नहीं कर सकती और नाराज हो जाती है। इस पर भी वह मुझ को दो सन्तान दे चुकी है। साथ-साथ अब उनका पालन-पोषण भी मेरे सिद्धान्तानुसार ही कर रही है।"

"मतलब यह कि आप उससे खुश हैं।"

"जी, बिलकुल। हम दोनों इंसान हैं। दोनों की बुद्धि सीमित है। इससे मतभेद हो जाना तो स्वाभाविक है और मैं तो उसको अपने विचारानुसार व्यवहार रखने की छूट दिये हुए हूं। इससे यदि कभी झगड़ा होता भी है तो शीघ्र ही निपट जाता है।"

"माथुर साहब की लड़की है खूबसूरत।"

"यों तो जो औरत बच्चों की मां बन जाती है उसमें अलौकिक सौन्दर्य आ जाता है। इसके अतिरिक्त भी अनन्ता मुझे बेहद पसन्द है।"

"क्या नाम बताया है आपने?"

"अनन्ता।"

"क्या मतलब है इसका?"

"जिसका कभी अन्त ही न हो।"

"यह भी खूब नाम है!"

"जी, बहुत मजेदार है। इसका क्रेडिट डाक्टर साहब को मिलना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा-मन्त्री हंस पड़ा और पूछने लगा, "आपके नाम का क्या मतलब होता है?"

"मेरा नाम है 'सानन्द'। अर्थात् खुश रहनेवाला।"

"आप खुश रहते हैं या नहीं, यह तो आप ही जानिये। मैं इतना कह सकता हूं कि आप दुनियां से मुख्तलिफ़ हैं।"

"जी, आप ठीक समझते हैं। दुनिया दुःख से भरी हुई है और मैं हमेशा खुश रहता हूं। इसलिए मैं सानन्द हूं। मैं दुनिया से न्यारा भी हूं। मुझको दुःख कभी छू भी नहीं गया।"

इसके बाद शिक्षा-मंत्री ने सानन्द के साथ सरकार और शिक्षा के विषय पर बात नहीं की। शेष यात्रा में इधर-उधर की बातें ही होती रहीं। सानन्द ने भी उस विषय को पुनः नहीं छेड़ा।

दोनों हवाई जहाज से उतरे और हाथ मिला विदा होने लगे तो शिक्षा-मंत्री ने पूछा, "कहां ठहरने वाले हैं?"

"यत्न करूंगा कि अपोलो होटल में स्थान मिल जाय।"

"आप मेरे साथ आ सकते है। मैं गवर्नमेंट लॉज में जा रहा हूं।"

"यह तो आपका अधिकार है। परन्तु मैं तो वहां रहने और वहां की सामग्री ग्रहण करने का अधिकारी नहीं हूं।"

"क्यों? आप इस मुल्क के शहरी नहीं हैं क्या?"

"शहरी होने से ही मेरा यह अधिकार नहीं हो जाता कि मैं सरकारी व्यय पर एक ग्रास भी ग्रहण करूं।"

"अच्छी बात है। उस ईडियेट से मिलने के बाद मुझसे मिलियेगा। मैं आपकी उससे मुलाकात का हवाला सुनने की ख्वाहिश कर रहा हूं।"

"कब तक बम्बई में ठहरने का विचार है आपका?"

"दो दिन रहकर परसों के हवाई जहाज से दिल्ली लौट जाऊंगा।"

"आपके जाने से पूर्व यदि मेरी हक्सले साहब से भेंट समाप्त हो गई तो मैं आपको यहां मिल लूंगा अन्यथा दिल्ली में आपके बंगले पर उपस्थित हो जाऊंगा।"

: 7 :

सानन्द को बम्बई में कई दिन लग गये। मिस्टर हक्सले भी उसको कुछ विशेष प्रतिभा का व्यक्ति प्रतीत हुआ। अनेकों यूरोपियनों से तो उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानकारी अधिक थी। वह उपनिषद् पढ़ा था और उनको ही हिन्दू-फिलॉसॉफी का स्रोत माने हुआ था। उपनिषद् पढ़ने पर वह यही समझा कि हिन्दू जीवन-मीमांसा वैराग्य की ओर ले जानेवाली है। अतः जब सानन्द ने बताया कि उपनिषद् हिन्दू जीवन का सत्य चित्र प्रकट नहीं करते तो वह मुख देखता रह गया। सानन्द ने जब बताया कि हिन्दुओं के सब अवतार लड़ाई करने में सिद्धहस्त और दुष्ट-दमन को अपना कर्तव्य मानते थे, तो वह परेशानी में अपना सिर खुजाने लगा। सानन्द का कहना था कि हमारे यहां सांसारिक ऐश्वर्य भोगनेवाले को अनार्य नहीं माना गया। अनार्य तो अधर्माचरण करनेवाले को कहते हैं।

पहले दिन की उक्त चर्चा के पश्चात् तो फिर कई बार परस्पर भेंट हुई और अनेकों विषयों पर चर्चा हुई। पांच दिन के पश्चात् सानन्द हवाई जहाज में ही दिल्ली पहुंचा। घर पहुंचने पर सबसे पहले वह अपने माता-पिता से मिलने के लिए गया। सदा की भांति उसकी वहां मलावी से भेंट हुई। सानन्द बीस रुपया मासिक कौशल्या को तब से ही दे रहा था, जब से मालवी उसको छोड़कर निपुणा के पास रहने लगी थी। मलावी सानन्द की इस सहायता पर विस्मय करती थी। कौशल्या सदैव संक्रान्ति के दिन मलावी से मिलने के लिए आया करती थी और प्रायः उस दिन सानन्द भी अपने माता पिता को मासिक सहायता देने आ जाया करता था। ऐसे अवसरों पर कौशल्या को भी बीस रुपए मिल जाया करते थे। विनोद अब स्कूल में पढ़ने लगा था और कभी वह मां के साथ आता तो सानन्द उससे उसकी आवश्यकता के विषय में भी पूछ लेता।

आज संक्रांति थी। हवाई जहाज से घर पहुंच उसने स्नान किया और अनन्ता तथा बच्चों को साथ लेकर अपने पिता के घर जा पहुंचा। सानन्द ने अपने माता-पिता के चरण स्पर्श किये तो अनन्ता को भी विवश करने पड़े। हरिशरणानन्द ने हंसते हुए कहा, "चिरंजीव रहो बेटी!"

सानन्द ने पूछा, "पिताजी! आप हंसे क्यों हैं?"

"दो दिन हुए समर्थ आया था और कहता था कि अनन्ता तो पालतू पशु की भांति हो गई है। इस समय इसको तुम्हारा अनुकरण करते देख समर्थ की बात का प्रमाण पा हंस पड़ा था।"

"तो क्या यह कोई बुरी बात कर रही थी?"

"नहीं, मेरा अभिप्राय यह नहीं। इस पर भी यह स्वेच्छा अथवा अन्तः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेरणा से ऐसा करती प्रतीत नहीं हुई।"

"पिताजी! यह अभी नवीन शिक्षितमात्र है। इस कारण भूल जाती है। बुद्धि से तो यह समझ गई है कि चरण स्पर्श करने से आपका चित्त प्रसन्न होता है परन्तु इसके लिए यह पद्धति नवीन होने के कारण अभी संस्कारों की पदवी तक नहीं पहुंच पाई है। यह भी हो जायेगा। तब यह संस्कारों से मनुष्य का-सा व्यवहार करने लग जायेगी।"

"इसी कारण अनायास ही मेरे मुख से आशीर्वाद निकल गया है।"

सानन्द ने एक सौ रुपया जेब से निकालकर मां को दे दिया। फिर कौशल्या के लिए उसने बीस रूपये मलावी को दिये। कौशल्या आज अभी तक नहीं आई थी।

औपचारिक वार्त्तालाप के बाद हरिशरणानन्द ने बताया, "सन्तोष हमको अपने यहां आने का निमन्त्रण दे गई है और समर्थ का कहना था कि तुमको भी वहां चलना चाहिए।"

"हां, मेरी अनुपस्थिति में आकर भाभी अनन्ता को निमन्त्रण दे गई है।"

"बहुत अच्छी बात है। वह कह रही थी कि उसको अकेले में रहना अच्छा नहीं लगता। इस कारण कुछ लोगों को घर में मेहमान बना उनकी सेवा-सुश्रूषा में रहना चाहती है।"

निपुणा बोली, "वह हमको सदा के लिए वहीं रह जाने के लिए कहती थी।"

इस पर हरिशरणानन्द ने कहा, "हमारी बात तो गौण है। मुख्य बात अनन्ता और सानन्द की है। ये वहां रहना चाहेंगे तभी तो सब इकट्ठे रह सकेंगे।"

"मुझे इसमें कोई तत्व दिखाई नहीं देता।"

"तत्वहीन बातें जब उत्कट इच्छा से की जायें तो वे भावना के कारण होने वाली कहीं जायेंगी। भावना भी मनुष्य-जीवन का एक अंग है। हमें इसका आदर करना चाहिए।"

"हां, पिताजी! मैं सन्तोष भाभी का अनादर नहीं करूंगा। उसका और उसकी भावना के लिए कृतज्ञ रहूंगा। इस पर भी मैं यह मानता हूं कि भावना भी अकारण नहीं होती। इसका कारण जान कर ही इसे स्वीकार किया जा सकता हैं।"

"यदि सन्तोष भाभी की भावना कोई कारण न हो तो फिर वह भावना मात्र रह जायेगी। और यदि कोई कारण मिला तो कारण कार्य सम्बन्ध की बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन जायेगी। तब इन दोनों के ज्ञान के पश्चात् ही निर्णय किया जा सकेगा।

"पिताजी! मेरा तो मन कहता है कि कारण जानकर कार्य करना सदा हितकर होता है।"

"तुम सदा बाल की खाल निकालने में लीन रहते हो।"

"पिताजी! इसमें भी आनन्द आता है।"

इस पर निपुणा ने कह दिया, "तो मजा लेते रहो। मैं तो यह कहूंगी कि किसी दूसरे के उद्देश्यों में अकारण संदेह करना तो अपने को पतित करना है।"

"मांजी! सन्देह अकारण नहीं। भैया समर्थ का काम ऐसा है कि उनके अन्न को खानेवाले का भी काम केवल आत्मतुष्टि के हेतु होगा, विश्वास नहीं आता। सदा किसी प्रकार से उनकी जीवन-गाड़ी अटकती है तो वे भाग-दौड़ आरम्भ कर देते हैं। मुझको तो भाभी का निमन्त्रण कभी भी निरुद्देश्य प्रतीत नहीं हुआ"

"तो तुमको अपने भैया का उद्देश्य सिद्ध करने में संकोच होता है?"

"नहीं मां! परन्तु वह उद्देश्य धर्मयुक्त होना चाहिए। एक बार जब उन्होंने मुझको वहां बुलाया था तो उसका कारण था दातारामजी की समस्या को सुलझाना। वह मैंने सुलझा दी। फिर एक बार समस्या आई कि इनके कारोबार में कोई घर का सहायक हो, वे मुझे उस काम में सम्मिलित करना चाहते थे। मैंने अस्वीकार कर दिया। एकाएक उस समय दाताराम मिल गये और वे अब उस काम में भली-भांति समा गये हैं। इस प्रकार अनेकों बार मैंने उनकी आज्ञा मानी है और कई बार नहीं भी मानी।"

"तो वहां चलने में तो कोई हानि नहीं है न? जब वे किसी कार्य के बारे में तुमसे कहेंगे तब धर्म-अधर्म के बारे में विचार कर लेना।"

"मां! मैं चलूंगा तो। इस पर भी स्थायी रूप में उनके घर पर रहने में कोई तत्व नहीं।"

"सानन्द! मुझे तो यह महान् तत्व की बात प्रतीत हो रही है। तुम दोनों मेरी सन्तान हो। तुम दोनों इकट्ठे रहो तो मुझे इससे प्रसन्नता होगी।"

"मेरा वहां चलकर रहना आपको प्रसन्नता देगा, यह कारण अधिक प्रबल प्रतीत हुआ है। मैं चलकर रहूंगा। जब तक आप वहां से चले जाने के लिए नहीं कहेंगे मैं जाऊंगा नहीं।"

अनन्ता को यह भला प्रतीत नहीं हो रहा था। मन में वह मलावी के साथ अधिक सम्पर्क बन जाने से प्रसन्न नहीं थी। इसमें उसे कल्याण नहीं दिखाई दे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा था। उसने मलावी को स्त्री-जाति की अन्तदृष्टि से अपने पति की ओर मुग्ध भाव में निहारते अनेकों बार देखा था। यद्यपि अपने मन के संशय को वह किसी के सम्मुख प्रकट नही कर सकती थी, इस पर भी वह कोई ऐसी परिस्थिति उत्पन्न होने नहीं देना चाहती थी। जिसके परिणामों पर बाद में पछताना पड़ जाय।

इस कारण घर जाते हुए उसने सानन्द से पूछा, "तो क्या, सत्य ही आप अपने भैया के घर जाकर रहेंगे?"

"जब तक पिताजी को विश्वास नहीं हो जाता कि वह पाप का घड़ा है तब तक मुझे वहां जाकर रहना ही होगा। अपने लिए यद्यपि नहीं किन्तु पिताजी को सचेत और सतर्क करने के लिए।"

"मुझे भय लगता है कि उस पापमय वातावरण में हमारा क्या बनेगा। देखिये, जब से आपने मुझे समझा दिया है कि पिताजी का व्यवहार धर्मानुकूल नहीं है तब से मैंने उनके घर पर रहना छोड़ दिया है। जब से आपने मुझे महिला-सम्मेलन में नितान्त स्वार्थपरता का दिग्ददर्शन कराया है तो मैंने वहां जाने का नाम तक नहीं लिया।"

"मैं तो जानता हूं कि वहां सब अधर्म की कमाई है। परन्तु जैसे तुमको समझाने के लिए तुम्हारे पिता के घर में और महिला-सम्मेलन की पूर्ण बात बताने के लिए वहां जाना पड़ता था इसी प्रकार पिताजी को इससे निर्लेप करने के लिए भैया के घर पर चलना ही पड़ेगा।"

"परन्तु इससे अपने हाथ भी तो गन्दे हो सकते है?"

"मैं यत्न करूंगा कि उनको निरन्तर साफ करता रहूं।"

सानन्द के लौट आने का समाचार मिलते ही सन्तोष आई और उनको अपने घर पर चलकर रहने का निमन्त्रण दे गई। उसी सांयकाल अपने एक सप्ताह तक के कपड़े लेकर सानन्द सपरिवार फ्रैंड्स कालोनी में जा पहुंचा। इस बार अनन्ता जानकी को अपने साथ नहीं ले गई। जानकी स्वयं भी जाने को तैयार नहीं थी। उसकी इच्छा को अनन्ता ने सुलभ कर दिया। उसने जाने से पूर्व उससे कहा, "जानकी! मैं दस-बीस दिन के लिए अपनी जेठानी के घर जा रही हूं।"

"वहां क्या है बहनजी!"

"कुछ विशेष बात नहीं। मेरी सास चाहती है कि वे कुछ दिन अपने पूर्ण परिवार के साथ रहें। इस कारण उनके साथ रहने के लिए जा रहे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे भी आपके साथ चलना होगा?"

"मैं कुछ आवश्यकता नहीं समझती। हम तुमको नौकरी से नहीं निकाल रहे। इस पर भी यहां तो कुछ काम होगा नहीं। आज दस तारीख है। तुम अगले मास की पहली तारीख को मिलना, उस दिन तुम्हें इस मास का वेतन दे दूंगी और आगे कब काम पर आना होगा इस विषय में भी बता दूंगी।"

जानकी ने सुख का सांस लिया। एक बात का उसे भी विश्वास था कि सानन्द बाबू अपने भाई के घर में सुख अनुभव नहीं कर सकते।

रात के आठ बजे वे समर्थ के घर जा पहुंचे। पण्डित हरिशरणानन्द वहां पहले ही पहुंचे हुए थे। सुचाला और दाताराम तो उस घर का ही एक अंग बन गये थे।

: 8 :

जब भी इनका परिवार एकत्रित होता था, रात के भोजनोपरान्त सभी ड्राइंग-रूम में एकत्रित होकर बातचीत किया करते थे। पहले दिन ही समर्थ ने सानन्द की आर्थिक स्थिति का ज्ञान प्राप्त करने के लिए बात आरम्भ कर दी। उसने पूछा, "सानन्द! अब तो तुम किसी समाचारपत्र के संवाददाता नहीं रहे। किस प्रकार निर्वाह चल रहा है?"

भैया! निर्वाह के लिए तो चालीस-पचास रुपये से अधिक आवश्यक नही. होते। दाल-रोटी में कितना व्यय हो सकता है? मेरा खयाल है अनन्ता ने तो किसी अभाव कि शिकायत नहीं की होगी।

"मैं अनन्ता की बात नहीं कर रहा। मैं शिक्षा-मन्त्री की बात कर रहा हूं। वे कल मिले थे और कह रहे थे कि तुम उनसे मिले हो और उनसे तुमने निपट पागलों की-सी बातें की हैं।

"मैंने उनसे कहा कि मूर्खता अथवा पागलपन हमारे परिवार के रक्त में नहीं है। इस पर वे बहुत ही अनर्गल बातें बताने लगे जो तुम उनके साथ करते रहे हो। इसीसे मुझे तुम्हारे विषय में चिन्ता लगने लगी है।"

"भैया! क्या मन्त्री महोदय ने यह नहीं बताया कि मेरी उनसे भेंट कहां और किस स्थान पर हुई थी? हम यहां से, बम्बई जानेवाले हवाई जहाज में मिले थे। इससे उनको और आपको इतना तो समझ जाना चाहिए था कि मैं बेकार नहीं हूं। न ही भूखा मर रहा हूं।"

"यह तो तुम्हारा और बच्चों का मुख देखकर पता चल गया है। परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्त्रीजी कह रहे थे कि तुमने कपड़े तो चपरासियों जैसे पहन रखे थे परन्तु यात्रा हवाई जहाज में कर रहे थे।"

सानन्द हंस पड़ा। उसने कहा, "भैया! मैं यही कपड़े पहने हुए था और उस दिन तो कपड़े पहनकर सीधा 'एयरोड्रोम' पर गया था और आज तो ये प्रातःकाल के पहने हुए हैं। इससे वे कपड़े तो निस्सन्देह साफ और सुधरे थे। क्या आप भी इनको चपरासियों की ही पोशाक समझते हैं?"

"चपरासियों की तो नहीं। इस पर भी हवाई जहाज में यात्रा करनेवाले के लिए तो इससे अच्छे कपड़े ही होने चाहिएं।"

"भैया! अच्छे से आपका क्या अभिप्राय है?"

"यह चप्पल तो ठीक नहीं। फिर कुरते पर कोट नहीं तो कम-से-कम जवाहर जाकेट तो होनी ही चाहिए। पायजामा खुला और लखनवी ढंग का होना चाहिए था। साथ ही धन-सम्पदा के स्वामी होने के लक्षणस्वरूप एक हीरक जड़ित छाप हाथ में भी होनी चाहिए।"

"भैया! तुम फैशन की बात नही जानते। इसी से ऐसा समझते हो। लेखक को तो स्वभाव से ही अकिंचन होना चाहिए। मैं लेखक के रूप में ही बम्बई गया था। यदि सज-धजकर जाता तो छलना बन गया होता।"

"हां, कभी कमल की श्वसुराल जाना होगा तो भैया! भाभी से कुछ आभूषण अलंकार के निमित्त मांगकर ले जाऊंगा।"

सब हंसने लगे। सानन्द ने कहना जारी रखा, "यदि अब छाप इत्यादि पहनकर जाता तो पूरा बहुरूपिया बन गया होता।"

"इसीसे तो कहता हूं कि लेखक का काम निर्धनों का है। एक निर्धन को व्यर्थ में हवाई जहाज में रुपया गंवाना ही तो हमारे शिक्षा-मन्त्री महोदय की समझ में नहीं आया था। इससे वे कह रहे थे कि या तो, मुझे तुम्हें किसी कारोबार में लगाकर मालाभाल कर देना चाहिए, अन्यथा तुम्हें हवाई जहाज की सवारी छोड़ देनी चाहिए।"

सानन्द ने हंसते हुए कहा, "यह तो उसने बहुत ही समझ की बात कही है। मैं तो उसे इतना बुद्धिमान नहीं समझता था।"

"परन्तु तुमने उसे चतुर तो कहा ही था?"

"लगता है उसने सब कुछ ही आपको बता दिया है?"

"हां, तो तुम बताओ कि अपनी आर्थिक अवस्था सुधारना चाहते हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा नहीं?"

"पहले यह जानना आवश्यक है कि मेरी आर्थिक अवस्था क्या है। सुधार तो वर्तमान अवस्था पर ही होगा न? द्वितीय बात यह जाननी चाहिए कि मेरी योग्यता क्या है? इससे यह पता चलेगा कि मेरी योग्यतावाले की अवस्था और सुधर भी सकेगी अथवा नहीं। एक तीसरी बात भी जान लेनी चाहिए कि वर्तमान अवस्था में उन्नति अथवा अवनति करनी ठीक भी है अथवा नहीं।"

सानन्द की इस प्रकार की बातों को ही तो समर्थ मस्तिष्क की विकृति मानता था। अर्थ-संचय में किसी प्रकार की सीमा निर्धारण करना वह अन्यायुक्त मानता था। हां, योग्यता की बात अवश्य थी। सानन्द की अयोग्यता की पूर्ति ही तो हो वह अपनी योग्यता से करना चाहता था। सबसे उलटी बात तो उसको उन्नति करने की आवश्यकता में सन्देह करना, प्रतीत हुई थी।

इस पर भी समर्थ ने सानन्द की सबसे प्रथम आपत्ति के विषय में ही बात करनी चाही। उसने पूछ लिया, "हां तो बताओ, तुम्हारी आर्थिक स्थिति क्या है? तुम्हारा बैंक बैलेंस कितना है?"

"भैया! इतना है कि आज तक आपसे कुछ मांगने की आवश्यकता नहीं पड़ी। मेरे भी मित्र हैं और उनकी आवभगत मैं सामर्थ्यानुसार करता ही हूं। मैं शिक्षा-मंत्री अथवा किसी अन्य मंत्री की झूठी खुशामद किये बिना हवाई जहाज में यात्रा कर सकता हूं। अभी कुछ ही दिन पूर्व संसार का हवाई जहाज से भ्रमण का कार्यक्रम था और उसके लिए धन भी था। वह धन अभी भी जमा है।"

"तो घूमने गये क्यों नहीं?"

"अनन्ता बच्चों को छोड़कर जाना नहीं चाहती थी। मैं अनन्ता के बिना जाना नहीं चाहता।"

"अर्थात बूढ़े होने से पूर्व अब तुम विदेश-भ्रमण के लिए जा नहीं सकोगे?"

"हां, इस समय मेरी आयु सत्ताईस वर्ष की है। यदि परमात्मा ने अन्य बच्चों के पालन का भार न दिया और यदि कोई अन्य विघ्न-बाधा उपस्थित न हुई तो पैंतालीस वर्ष की आयु तक तो मैं भ्रमण के लिए जा सकूंगा। तब तक कुमुद का विवाह हो जायेगा और कमल शिक्षा समाप्त कर चुका होगा।"

"अर्थात् कुमुद का विवाह तुम सत्रह वर्ष की आयु में कर दोगे?"

"हां, यदि योग्य वर मिल गया तो। विवाह के लिए यह आयु ठीक ही रहती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और अधिक बच्चे न होने के लिए अनन्ता का आपरेशन करा दिया है?"

"नहीं, न तो इस काम के लिए मेरी सम्मति है और न ही अनन्ता तैयार हुई है।"

"तो फिर साठ वर्ष की आयु तक तुम्हारे पांव में बेड़ियां तो रहेंगी ही, और उस अवस्था में भ्रमण करने की सामर्थ्य और मजा रह जायेगा क्या?"

"हां भैया! इसी को तो मैं मानव-जीवन का बंधन मानता हूं। यह पार्थिव शरीर और इसके उत्तरदायित्व सब कर्म-बन्धन हैं। बिना इनका भोग किये इनसे मुक्ति नहीं मिल सकती।"

बातें करते-करते दस बजे तो हरिशरणानन्द उठ खड़ा हुआ। उसने कह दिया, "अब सोने का समय हो गया है।"

"विवश समर्थ को अपनी जिरह बन्द करनी पड़ी। सब अपने कमरे में चले गए। मलावी और उसके बच्चे के लिए एक पृथक् कमरा मिला हुआ था। अपने नित्य के स्वभावानुसार गोष्ठी में बैठने से पूर्व वह अपने पुत्र सोमनाथ को सुलाकर आई थी। गोष्ठी पूर्ण होने पर वह निपुणा के कमरे में गई और पूछने लगी, "मांजी! पांव दबाऊं?"

"आज बहुत देर हो गई है। अब जाकर सो जाओ। देखो, अनन्ता अपनी नौकरानी को लेकर नहीं आई है। कमल और कुमुद का ख्याल रखते हुए तनिक उसकी भी सहायता कर देना।"

नौकर पण्डितजी और उनकी पत्नी के लिए दूध ले आया। मलावी कमरे से निकल अपने कमरे को जा रही थी कि अनन्ता गोदी में कुमुद को लिये हुए अपने कमरे को जाती मिली। उसने पूछा, "तो यह अभी तक सोई नहीं?"

"इसके सोने का अभी समय नहीं हुआ। आज तीसरे पहर सो चुकी है, इसलिए अब बारह बजे तक सोयेगी।"

"लाइये मुझे दे दीजिये, मैं इससे बातें करूंगी।"

"तुम सोओगी नहीं?"

"आपको कुछ सुख तो मिलेगा। बहनजी! मेरे सोने का समय नहीं हुआ। लाइए, दूध तो अभी नहीं पियेगी?"

"रहने दो मलावी! अपना बोझा स्वयं ही ढोना ठीक रहता है।"

"बहनजी! संसार परस्पर सहायता से ही चलता है। लाइये, अभी कुमुद के पिता आयेंगे तो आपको उनकी भी कुछ सेवा करने का अवसर मिलना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनन्ता ने विस्मय के साथ मलावी की ओर देखा। वह मुस्कराती हुई कुमुद का ध्यान अपनी और आकर्षित करने का यत्न कर रही थी। कुमुद को गोद में लेते हुए मलावी ने अर्थपूर्ण दृष्टि से अनन्ता की ओर देखा और हंसती हुई उसको लेकर अपने कमरे में चली गई

अनन्ता मलावी की बात का अभिप्राय समझ गई थी। इससे वह उसके प्रति कृतज्ञता अनुभव कर रही थी। सोने के पूर्व एक-आध घंटा स्त्री को पति की संगत के लिए मिलता है और यदि उसमें भी कोई बच्चा जागता हो तो वह उस काल की मधुरता को बांट लेता है।

अपने विचारों में लीन वह यह कहना भी भूल गई कि कुमुद सो जाय तो वह उसको देने के लिए आ जाये। जब तक वह मलावी के कथन का पूर्ण अभिप्राय समझ पाई तब तक वह अपने कमरे के समीप पहुंच गई थी। उसके पीछे-पीछे जाकर अनन्ता कुछ कहना चाहती थी परन्तु इसी समय सन्तोष और सानन्द बातें करते हुए आ पहुंचे। देवर भाभी के वार्तालाप का विषय जानने के लिए उत्सुक अनन्ता कुमुद की बात ही भूल गई।

तीनों कमरे में गए तो सन्तोष ने अपना कथन जारी रखते हुए कहा "सानन्द भैया! हमारा काम द्रुतगति से बढ़ रहा है। इस समय तीन स्थान पर नगर में ठेकेदारी का कार्य चल रहा है। दो कार्य तो पार्लियामेंट स्ट्रीट में ही हैं और एक सफदरजंग रोड पर। तुम्हारे भैया अकेले इस काम को संभाल नहीं पा रहे। दातारामजी बहुत ही सहायक सिद्ध हो रहे हैं। परन्तु यह सारा उनके भी वश का नहीं है।"

"इसके अतिरिक्त हमारे पास रुपया जमा हो रहा है और हमारा विचार है कि देश के उद्योगीकरण में हम भी अपना सहयोग दें। इससे एक करोड़ रुपये की पूंजी से हम एक कम्पनी चालू करना चाहते हैं और वह चाहते है कि आप इस कम्पनी के मैनेजिंग डायरेक्टर बनना स्वीकार कर लें तो आगे पग बढ़ाया जाय।"

"इसका अभिप्राय तो यह हुआ कि मैं बिना-मुल्क का बादशाह बन जाऊं?"

"बिना मुल्क के कैसे?"

"कहने का अभिप्राय यह है, भाभी! कि कम्पनी में हिस्से खरीदने का सामर्थ्य मुझमें नहीं है और मैं मैनेजिंग डायरेक्टर बनने की इच्छा करने लग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाऊं।"

"वही सामर्थ्य तो तुम्हारे भैया तुममें उत्पन्न करना चाहते है। यह कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड होगी। इसमें आठ भागीदार होंगे। एक आपके भैया, एक मै, एक आप, चौथी आपकी पत्नी, पांचवे पिताजी, छठी माताजी, सातवीं सुचाला और आठवें होंगे डाक्टर माथुर। रुपया सब आपके भाई साहब लगायेंगे। आप सब लोग प्रोनोट लिख देना। आपको सर्वसम्मति से मैंनेजिंग डायरेक्टर बनाया जायेगा।

"उनका विचार है कि पांच वर्ष में आप अपने-अपने भाग के अधिपति बन जायेंगे ओर फिर नये कारखाने खोलने की सामर्थ्य भी आ जायेगी।"

सानन्द सुनता रहा। जब सन्तोष अपनी योजना बता चुकी तो सानन्द ने कह दिया, "बे-मुल्क के बादशाह से मेरा अभिप्राय यही था। रुपया किसी का, योजना किसी अन्य की और मैंनेजिंग डायरेक्टर मैं।"

सानन्द को हंसी आ गई। उसने पुनः कहा, "और यह मुल्क भी किस छल-कपट से हस्तगत हुआ है, यह भगवान ही जाने। ऐसे मुल्क का राजा बनाना कुछ भला नहीं प्रतीत होता। इस पर भी इतनी बड़ी योजना के विषय में तो बहुत विचार और अन्य अनेकों से परामर्श की आवश्यकता होगी। 'पोस्ट पिरेडियल टाक्स' से इस प्रकार की योजनाएं निर्माण नहीं हो सकती।"

"यह तो हम भी जानते हैं। यह अभी एक विचार मात्र है। इसको कार्य रूप में लाने के लिए समय लगेगा। तुम विचार करो। मैं इस समय अब चलती हूं।"

अब सन्तोष जे अनन्ता से पूछ लिया, "कुमुद कहां है?"

"उसको मलावी ले गई है। वह जाग रही थी और मलावी कहने लगी कि वह उससे बातें करेगी।"

"चलो छुट्टी हुई। दूध पियो और सो जाओ।"

जब सन्तोष चली गई तो सानन्द ने अनन्ता से पूछा, "क्यों अनन्ता! मैंने कहा नहीं था कि इस निमंत्रण का कोई प्रयोजन अवश्य है?"

"इस पर भी योजना सुन्दर है।"

"हां, यदि रुपया अपना हो और वह ईमानदारी से कमाया हुआ हो।"

"तो क्या आपका विचार है कि आपके भैया की कमाई ईमानदारी की नहीं है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भैया ही क्या, किसी भी व्यक्ति के काम में ईमानदारी रहनी कठिन हो गई है। जहां-जहां भी सरकार के नियन्त्रण का हाथ पहुंचेगा, वहां-वहां ईमानदारी से कुछ बन नहीं सकता। निर्वाह होना भी कठिन है।"

"यह क्यों?"

"सरकारी नियन्त्रण से कारोबार की प्रत्येक गतिविधि में सरकारी कर्मचारियों का हस्तक्षेप हो जाता है। उन कर्मचारियों की रुचि केवल अपने वेतन में ही होती है। कारोबार में उनकी रुचि नहीं होती और न ही कारोबार के विषय में उनको कोई विशेष ज्ञान होता है।

"यदि यह मान भी लिया जाय कि सरकारी कर्मचारी ईमानदार होंगे, और वे उस काम में जिसमें उनका अपना हानि-लाभ का कोई सम्बन्ध नहीं है, किसी प्रकार की अनुचित लाभ उठाने का यत्न नहीं करेंगे, तब भी उनके केवल शुष्क नियमों के अधीन हस्तक्षेप से काम में भला होने के स्थान पर बुराई ही उत्पन्न होगी। उस बुराई से बचने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि कारोबार का मालिक भी बेईमानी करे।

"मैं भैया को इतना बुरा नहीं मानता था परन्तु दस-पन्द्रह वर्ष में इस प्रकार करोड़ों रुपया एकत्रित हो जाना तो मन में संशय ही उत्पन्न करनेवाला है। लोग तो उनके विषय में बहुत कुछ कहते हैं और यह धन-संग्रह उसका प्रमाण है।"

"इससे तो यह सिद्ध हुआ कि ईमानदार व्यक्ति के लिए इस संसार में कोई स्थान नहीं है?"

"एक स्थान मैंने अपना बनाया है। उसमें किसी प्रकार की बेईमानी, चाटुकारिता अथवा अनृतभाषण नहीं करना पड़ता। जो जानता हूं और जिसे ठीक समझता हूं, वही लिखता हूं और फिर उसके अनुसार अपना व्यवहार रखता हूं। मैंने अपनी आवश्यकताएं इतनी सरल बना रखी हैं, कि उनकी पूर्ति के लिए मुझे अपने सीमित साधनों से बाहर जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

"परन्तु अनन्ता! यह भी इस कारण सम्भव हो पा रहा है कि अभी भारत में पाश्चात्य ढंग का सम्पूर्ण समाजवाद प्रसारित नहीं हो पाया। पूर्ण समाजवाद में तो व्यक्ति एक बहुत बड़ी मशीन का एक नगण्य पुर्जामात्र रह जाता है। उसमें व्यक्ति को समाज के साथ घूमना पड़ता है।

"इसमें भी आनन्द ही रहता, यदि समाज कोई सजीव वस्तु होती। वह समाज जिसमें व्यक्ति एक लोहे की कीलमात्र रह जाता है, स्वयं एक निर्जीव वस्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। यह स्वयं नहीं चल सकता। इसको चलाने के लिए समाज के तानाशाह मालिक की आवश्यकता होती है। वह अपनी बुद्धि के अनुसार समाज को चलाता है। परिणाम यह होता है कि समाज उस तानाशाह का दास बन जाता है और व्यक्ति तो दासानुदास हो जाता है।

"तब मैं भी स्वतन्त्र नहीं रह पाऊंगा। मैं भी अपने लेखों, प्रवचनों और सरलतम व्यवहार के लिए भी, समाज का अर्थात् समाज के तानाशाह का मुख देखा करूंगा।

"इस देश में ऐसा समाजवाद आ रहा है और जब तक स्वतन्त्रता से सांस लेने का अवसर है, मैं इसे खोना नहीं चाहता।"

: 9 :

अनन्ता बहुत प्रातःकाल उठी। सानन्द अपनी मेज पर बैठा एक लेख लिख रहा था। अनन्ता कुमुद के लिए दूध तैयार करने लगी। वह बहुत प्रातःकाल ही ग्लैक्सो की एक फीड उसको दिया करती थी। उसने इलैक्ट्रिक जग का स्विच ऑन किया। उसमें बच्चे के लिए तथा अपने और अपने पति की चाय के लिए पानी डाल दिया। इस समय उसको बच्चों की याद आ गई। कुमुद रात-भर मलावी के पास ही रही थी। इस बात की ओर ध्यान जाते ही वह मलावी के कमरे में जा पहुंची। किन्तु मलावी वहां नहीं थी। न ही कुमुद वहां थी। मलावी का लड़का अपने खटौले में सो रहा था।

एक क्षण तक विचाकर वह कमरे से निकल बाहर लॉन में देखने लगी। अभी उषाकाल का घुसमुसा प्रकाश था। मलावी और कुमुद वहां भी नहीं थे। अनन्ता परेशानी अनुभव करने लगी। वह बरामदे में खड़ी विचार ही कर रही थी कि उसको अपने सास-श्वसुर के कमरे में प्रकाश दिखाई दिया। वह वहां जा पहुंची।

कुमुद उसकी सास के पलंग पर लेटी हुई बोतल से दूध पी रही थी। और मलावी उसकी सास की टांगें दबा रही थी। उसके श्वसुर अपने नित्यकर्म से निवृत्त हो आसन जमाये पूजा कर रहे थे। इस प्रकार अपने श्वसुर को एक कोने में आसन जमाये बैठे देख वह बोलती-बोलती रुक गई। उसकी सास ने भी अपनी होंठों तक उंगली रख उसे चुप रहने का आदेश दिया।

एक क्षण तक लड़की को मजे में लेटे दूध पीते देख अनन्ता उलटे पांव लौट गई। अपने कमरे में पहुंच उसने अपने और अपने पति के लिए चाय बनाई और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति की मेज पर चाय का प्याला रेखते हुए बोली, "मलावी आपकी लड़की पर अपनी माया डाल रही प्रतीत होती है।"

सानन्द ने बिना दृष्टि उठाये पूछा, "कैसे?"

"वह रात उसको लेकर गई थी और अब उसको दूध पिला रही है।"

"रात क्यों ले गई थी?"

"कहती थी कि लड़की सो नहीं रही है इस कारण मैं आपकी सेवा से वंचित रह जाऊंगी सो वह उसको ले गई।"

"कैसी सेवा?" अब तो सानन्द को सिर उठाना ही पड़ा। उसने अपनी पत्नी की ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखा।

अनन्ता मुस्करा रही थी और उसकी आंखों में से विशेष प्रकार की चमक थी। सानन्द समझ गया। उसने अपनी कलम रख दी और प्याला उठा सुरकी लगाते हुए कहने लगा, "तो तुम औरतें इस प्रकार की बातें परस्पर कर लिया करती हो।"

"मुंह से तो कोई कुछ नहीं कहती। आंखों-ही-आंखों में सब समझ-समझा लेती हैं।"

"मलावी से पूछो। यदि वह चाहे तो उसका एक बहुत अच्छे लड़के से विवाह कर सकता हूं।"

"अपने से भी अच्छे लड़के से?"

"सब भली स्त्रियां अपने-अपने पति को संसार-भर के पुरुषों से श्रेष्ठ मानती हैं।"

इस समय अनन्ता भी अपना चाय का प्याला उठाकर अपने पति की कुर्सी के पास आ खड़ी हुई और सुरकी लगा-लगाकर चाय पीने लगी। अपने पति की इस बात को सुन बोली, "यह व्यर्थ की खुशामद छोड़िये। मैं तो आपको सर्वश्रेष्ठ नहीं मानती।"

"सत्य? परन्तु अनन्ता! हम बुद्धिजीवी मनुष्य हैं। हमारा जीवन तो विवाह और प्रणय से सर्वथा पृथक् है। परन्तु साधारण मनुष्य तो प्रणय-सुख को जीवन का परम ध्येय मानते हैं और जिससे यह प्राप्त होता है वह उनका परमप्रिय हो जाता है।"

खड़े-खड़े ही अनन्ता ने कह दिया, "परन्तु क्या आप इसको सर्वत्र और सर्वदा ठीक मानते हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, पशुओं के लिए नहीं। इस पर भी प्रणय-सुख प्राप्ति के समय तो इस सुख को देनेवाला ही परमप्रिय होता है। मनुष्य और पशु में यह अन्तर तो है ही कि एक उस क्षणिक सुख को सदा स्मरण रखता है और फिर उसके स्रोत को स्मरण रखता है। किन्तु पशु की स्मरणशक्ति इतनी दुर्बल होती है कि वह सुख-प्राप्ति के कुछ ही पीछे सुख और उसके देनेवाले को भूल जाता है।"

अनन्ता ने बात बदल दी। उसने कहा, "परन्तु मलावी विवाह करना नहीं चाहती। वह कहती है कि उसे पुरुष-वर्ग से ही घृणा हो गई है।"

"बात यह है कि दाताराम ने उसे बहुत धोखा दिया है। इससे वह घृणा करने लगी है। फिर भी तुम उससे पूछना। आज उस घटना को बीते चार वर्ष हो चुके हैं। आजकल क्षणों में विचारों में परिवर्तन होते रहते हैं।"

"कौन लड़का है आपकी दृष्टि में?"

"है कोई। यदि उसकी इच्छा हो तो दिखला सकता हूं।"

चाय समाप्त होने पर अनन्ता अपने नित्यकर्म के लिए चली गई। सानन्द को लिखते हुए तीन घंटे हो चुके थे। उसके आज के लेख का विषय था—कम्युनिज़्म का स्रोत और उसके प्रतिकार के उपाय। यह लेख वह पैरिस की एक मासिक पत्रिका के लिए लिख रहा था। इसमें उसने फ्रांस में कम्युनिज़्म के जन्म, विस्तार और उसके प्रतिरोध पर लिखा था।

लेख समाप्त हो गया था। अतः वह उठा और हजामत बनाने लगा। इस समय मलावी कुमुद को लिये वहां आ पहुंची। उसने आते ही पूछा, "कहां हैं बहनजी!"

"शौच के लिए गई है। इसने रात में तंग तो नहीं किया?"

"रात बहुत आनन्द रहा। डेढ़ बजे तक इससे बातें करती रही हूं।"

"बातें करती रही हो? भला कैसे? यह तो अभी ऊं-ऊं से अधिक कुछ बोल ही नहीं सकती।"

"हां, यह तो ऊं-ऊं करती रही है। बातें तो मैंने की हैं। इस पर भी यह समझती जरूर रही है। तभी तो बिना रोये ऊं-ऊं करती रही और हंसती रही। फिर एकाएक यह ऊंघने लगी तो मैं छाती से लगाकर सो गई। चार घंटे गहरी नींद सोकर जब मैं समझ गई कि यह जागेगी तो दूध मांगेगी। इस कारण मैं सन्तोष भाभी की पैण्ट्री में से ग्लैक्सो का डिब्बा निकाल लाई और मांजी के कमरे में ले जाकर दूध बना इसको पिला दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पिताजी पूजा में बैठ गये और यह मजे से दूध पीती रही। बहुत ही प्यारी लड़की है।"

"तुम्हारा जी बच्चे खिलाने को करता है?"

"हां, दे दीजिये। आपके तो और भी हो जायेंगे।"

"होने को तो तुम्हारे भी हो सकते हैं, मलावी! विवाह करा लो, फिर जीवन सरस हो जायेगा।"

"जी नहीं। अच्छा, इसको यहां पलंग पर लिटा जाती हूं। अब सोम के उठने का समय हो गया है।"

उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना उसने कुमुद को पलंग पर लिटा दिया। उसके सम्मुख एक रंगीन खिलौना डाल वह कमरे से भाग गई। सानन्द ने अनुमान लगाया कि उसकी आंखें तरल हो गई थीं।

अनन्ता स्नानागार से निकली तो कुमुद को पलंग पर लेटी देख उसको पुकारने लगी। अपनी मां का स्वर सुन उसने खिलौनेवाला हाथ ऊंचा कर दिया। अनन्ता उसे उठाकर प्यार करने लगी। उसने देखा कि कुमुद स्नानादि कर चुकी है। उसे पुनः पलंग पर बैठा अनन्ता ने उसके रातवाले कपड़े उतार दिये और दूसरे कपड़े पहना दिये। इस समय तक कमल भी जाग पड़ा था।

सानन्द भी नित्यकर्म से निवृत्त हो जब तक लौटा तब तक नौकर उनके लिए अल्पहार ले आया था। तीनों ने अल्पाहार किया और फिर सानन्द अपने काम पर चला गया।

जब वह दरियागंज रहता था तो मध्याह्न के भोजन के लिए घर पर आ जाया करता था। परन्तु उसके भैया का मकान इतनी दूर था कि केवल भोजन के लिए मध्याह्न में वहां पहुंच सकना सम्भव नहीं था। जब भी अपने भाई के घर में रहने के लिए आता, मध्याह्न का भोजन वह किसी रेस्टोरां में खा लिया करता था। पार्लियामेंट की प्रेस-गैलरी में वह प्रायः नित्य ही जाया करता था। और जिस दिन कोई विशेष एजैण्डा होता वह वहां बैठता था अन्यथा पुस्तकालय में बैठ अध्ययन करता था। इस अध्ययन के बल पर ही वह लेख लिखा करता था।

सायं की चाय वह अपने दो साथियों के साथ पिया करता था। एक का नाम मदनगोपाल और दूसरे का नाम था सतीशकुमार। दोनों ही समाचारपत्रों के प्रतिनिधि थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतीश तीस वर्ष का एक अविवाहित युवक था। अपने बिहारी पिता और बंगालिन माता की पांच सन्तानों में वह सबसे बड़ा था। बुद्धि में वह बिहारी कायस्थ और स्वभाव तथा रूप-रेखा में बंगाली लगता था। कोइ भी शिष्ट परिवार की बंगाली लड़की उससे विवाह करना नहीं चाहती थी। वह स्वयं किसी बिहारी कायस्थ लड़की को पसन्द नहीं कर पा रहा था। सानन्द मलावी का विवाह सतीश से करने की योजना बनाने लगा था।

आज उसने इसके लिए सक्रिय यत्न आरम्भ कर दिया था। जब उसने मलावी से कहा था तो उसने मुख से तो अस्वीकार किया था परन्तु उसकी आंखों के आंसू बता रहे थे कि वह पारिवारिक जीवन के लिए व्याकुल हो रही है। इससे आशान्वित हो उसने इस विषय में सतीश से भी पूछना उचित समझा।

तीनों मित्र उस दिन क्वालिटी में सायंकाल की चाय पी रहे थे तो सानन्द ने बात आरम्भ करते हुए कहा, "सतीश! क्या बंगालियों के अतिरिक्त अन्य किसी की कन्याएं होती ही नहीं?"

"यह किसने बताया है तुमको? हां, मेरा यह विचार है कि बंगालियों की अपनी विशिष्ठ सभ्यता होती है और वह मुझे पसन्द है। मुझे अपनी मां का व्यवहार स्मरण है और साथ ही अपने पिता का भी। इसी कारण मैं ऐसा कहता हूं।"

"भाई! यदि कहो तो तुम्हारे लिए कोई पंजाबी लड़की ढूंढू? मेरा तो उसी क्षेत्र में परिचय है।"

"चावल पंजाबियों को नहीं सुहाते। मछली के कांटे उनको भयीभीत करते हैं। भला किस प्रकार निर्वाह होगा ऐसी लड़की से?"

सतीश के दोनों साथी हंस पड़े। सानन्द तो उत्तर-प्रदेश निवासी ब्राह्मण परिवार का लड़का था और मदनगोपाल पंजाब का रहनेवाला व्यक्ति था। हंसते हुए मदनगोपाल ने कहा, "सतीश! यदि पत्नी सुन्दर सुशील और सुबुद्धिवाली हो तो मछली न खानेवाली होने से, वह हीन हो जायेगी क्या?"

सतीश चाय छोड़ दोनों का मुख देखने लगा। इस पर सानन्द ने कहा, "हां, हां, बताओ न? मछली खानेवाली काली-कलूटी चाहिए अथवा रोटी खानेवाली श्वेत कमल समान उज्जवल, सुन्दर और सरस्वती समान मधुर भाषिणी?"

"भाई! कोई दृष्टि में हो तो दिखा दो। मछली न खा सकने का अवगुण भूल भी सकता हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अभी तो कोई सामने नहीं है। क्योंकि आज तक तुमने कभी इस प्रकार की इच्छा भी व्यक्त नहीं की थी, लेकिन अब तुम कहते हो तो कोई शीघ्र ही ढूंढ़ निकालेंगे।"

"तुम बंगाली भी बड़े विचित्र जीव हो। किसी पत्नी के लिए मछली खा सकना आवश्यक बात मानते हो। हिन्दी भाषा के तिरस्कार में तुम अंग्रेजी को ग्रहण कर सकते हो। या तो धोती ही धारण करोगे और या पतलून ही, पाजामे जैसी साधारण पोशाक तुम्हें भाती ही नहीं। कैसी उलटी खोपड़ी है तुम बंगालियों की!"

"वाह! सानन्द! अब बंगालियों पर ही पिल पड़े। भाई सबके अपने-अपने गुण और दोष हैं। मैं अपनी जाति के दोष छोड़ रहा हूं परन्तु दूसरों के अवगुण पकड़ने की बात तो मत कहो।"

"तुम उत्तरी भारत के लोग अंग्रेजी न तो अच्छी बोल सकते हो और न लिख ही सकते हो। इस कारण तुम लोग यह चाहते हो कि हम भी अंग्रेजी लिखना-पढ़ना छोड़ दें?"

हंसते हुए मदनगोपाल ने कहा, "सतीश! अंग्रेजी बोलने और लिखने की बात तुम मुझसे तो कह सकते हो, परन्तु सानन्द से नहीं। मैं तो हिन्दी भी भली-भांति लिख अथवा बोल नहीं सकता। बनारस इलाहाबाद के रहनेवाले हिन्दी-भाषी तो हम पंजाबियों को हिन्दी भाषा की हत्या करने वाला ही कहते हैं। इस पर भी मैं हिन्दी का समर्थक हूं। वह इस कारण कि देश की एकता मेरी सुविधा की अपेक्षा अधिक आवश्यक है।"

सतीश ने पूछ लिया, "क्या यह इस कारण नहीं कि आपकी अपनी भाषा उन्नत नहीं हैं?"

"मैं आपकी उन्नत भाषा से अपनी पिछड़ी हुई पंजाबी की तुलना नहीं कर रहा। मैं तो यह भी नहीं कहता कि बंगाली को मिटा दिया जाय। मैं तो अंग्रेजी भाषा और रोमन लिपि की बात कर रहा हूं। यह तो भारत की रूपरेखा ही बदल देगी।"

"भाई मदनगोपाल! देश की रूपरेखा तो पण्डित जवाहरलाल बदल रहे है। भगवान करे वे पचास वर्ष और जीते रहें, फिर तुम वेदपंथियों का यहां नामोनिशान भी नहीं बचेगा?"

"और चेतन तथा देवदास अथवा रामकृष्ण परमहंस और टैगोर का नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रह जायेगा क्या? विवेकानन्द का वाग्जाल तो रह जायेगा किन्तु उसके प्रवचनों की आत्मा विलुप्त हो जायेगी।''

''रहे अथवा न रहे किन्तु यह होकर ही रहेगा। यह हो रहा है। भारत नहीं रहेगा। यह एक इंडियन फैड्रल स्टेट मात्र रह जायगी। यह कृषिप्रधान देश अमेरिका से अन्न मंगवाकर पेट भरेगा। यहां कपड़ा बनाने की मशीनें अधिक संख्या में बनेंगी किन्तु पेट भरने के लिए रोटियां कम होंगी।

''हां, यहां पर भी अमेरिका और इंग्लैंड की भांति पत्नियां तो बिरली ही रह जायेंगी और मिस्ट्रेसिज की खेती होती दिखाई देगी। यहां जात बिरादरी-जाननेवाले बच्चे कम दिखाई देगें और 'फौंडलिंग' की संख्या अधिक होगी।''

अपनी चाय समाप्त कर हाथ का प्याला सॉसर पर रखा और बैंच का ढासना लगाते हुए वह कहने लगा, ''और यह सब अंग्रेजी पढ़ने से होगा।''

सानन्द ने भी चाय समाप्त कर ली थी। मदनगोपाल अभी भी पकौड़े खा रहा था। सानन्द ने कहा, ''सतीश! बबूल का बीज देखा है क्या?''

''हां, क्यों?''

''कितना छोटा-सा होता है। और उस पर कांटा तो एक भी नहीं होता। फली में से निकालो तो बहुत सुन्दर और चिकना दिखाई देता है। परन्तु उसी बीज से कांटेदार और कष्टोत्पादक एक विशाल वृक्ष पैदा होता है। यही बात इस चिकनी-चुपड़ी डिप्लोमैटिक भाषा की उपज की भी है। भाषा, सभ्यता और संस्कृति की पिटारी होती है। इसमें से अंग्रेजी बोलनेवाली जातियों की संस्कृति और सभ्यता ही निकलेगी।''

: 10 :

इन दिनों नित्य ही रात्रि के समय समर्थ के घर पर गोष्ठियां होने लगीं। अनेकों योजनाएं बनीं और अन्त में प्लास्टिक बनाने का कार-खाना खोलने की योजना बनी। टेरिलिन और इसके सहायक रासायनिक योगों को बनाने की योजना बनी थी। इस विषय में प्रारम्भिक पत्र-व्यवहार भी सानन्द ने आरम्भ कर दिया। पश्चिमी जर्मनी से इन वस्तुओं के बनने के कारखाने के विषय में साहित्य प्राप्त हुआ तो पूर्ण योजना की रूपरेखा बनने लगी।

इस पर भी दो दिशाओं में आकर इस योजना की गाड़ी रुक गई। एक प्रश्न तो सरकार से इस योजना को स्वीकार कराने का था, साथ ही कारखाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए उपयुक्त मशीनरी आदि मंगवाने के लिए विदेशी मुद्रा की भी समस्या थी। दूसरी ओर सानन्द को मैंनेजिंग डायरेक्टर बनाने की ओर की प्रगति रुकी थी।

सरकार-सम्बन्धी कार्य तो समर्थ स्वयं कर रहा था। विभिन्न विभागों के अधिकारियों तथा मन्त्रियों से बातचीत हो रही थी। और इसके सब सूत्र किसी-न-किसी प्रकार की उलझन में फंसे हुए थे। सानन्द के विषय पर घर की गोष्ठी में बात होती थी। इस प्रकार बात चलते-चलते एक मास बीत गया।

प्रातः चार बजे से सात बजे तक सानन्द लेखन-कार्य करता था। तदनन्तर वह इस नवीन योजना के सम्बन्ध में पत्र व्यवहार करता और इस समय वह समर्थ से भी परामर्श कर लिया करता था। नौ बजे स्नानादि से निवृत्त हो अल्पाहार कर वह अपने 'न्यूज हंट' पर निकल पड़ता था। संसदीय पुस्तकालय में बैठकर वह अध्ययन करता। तदनन्तर किसी रेस्टोरां में मध्याह्न का भोजन कर वह पुनः पुस्तकालय में आकर बैठ जाता। सायंकाल की चाय पीकर वह अपने भैया की कोठी पर पहुंच जाता।

रात को भोजन समाप्त कर गोष्ठी बैठ जाती। अनन्ता को यहां आने पर बहुत सुख प्राप्त हुआ था। मलावी उसके बच्चों की देख-रेख जानकी की अपेक्षा अधिक सुघराई से कर रही थी। मलावी का पुत्र सोमनाथ कमल से छः मास छोटा था। दोनों परस्पर खेलते और अनन्ता से पढ़ते थे। कुमुद आठ मास की हो रही थी। अब वह ता-ता पा-पा करने लगी थी। तीनों बच्चों को सुलाना, जगाना, स्नानादि कराना, कपड़े पहनाना और भोजन कराना यह सब कार्य मलावी का हो गया था। ये तीनों मलावी के कमरे में ही सोते थे। प्रातःकाल का अल्पाहार कर सानन्द अपने काम पर चला जाता तो सोम और कमल अनन्ता से पढ़ने चले आते। मलावी कुमुद को लेकर कोठी के लॉन में घूमने चली जाती। मध्याह्न का भोजन सब पृथक्-पृथक् अपने-अपने सुभीते पर करते थे। सन्तोष घर का सामान लेने प्रायः नगर को चली जाया करती थी और उसके लौटने का कोई समय नहीं था। कभी तो वह बारह बजे ही लौट आया करती थी और कभी दो-तीन भी बज जाया करते। अनन्ता बच्चों की पढ़ाई पूर्ण करा कभी तो कोई पुस्तक पढ़ने बैठ जाती और कभी सन्तोष के साथ चली जाती।

सुचाला तो अब समर्थ की ठेकेदारी में ही पूर्णतया संलग्न थी। वास्तव में ठेकेदारी का सारा काम सुचाला और दाताराम के कन्धों पर चलने लगा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्थ का अधिकांश समय सरकारी अधिकारियों से मेल-मुलाकात में व्यतीत होता था। जब से प्लास्टिक के कारखाने के लिए प्रयत्न आरम्भ हुआ था, तबसे तो समर्थ की ठेकेदारी के काम पर से देख-रेख और भी कम हो रही थी।

सन्तोष अपनी मां के रुग्ण होने की सूचना पाकर लखनऊ गई तो उसका कार्य प्रायः अनन्ता को करना पड़ गया। अब घर की देख-भाल का कार्य मलावी पर था।

एक दिन सायं छः बजे सानन्द अपने कार्य से घर लौटा तो अनन्ता अपने कमरे में मलावी की मरहम-पट्टी कर रही थी। उसके माथे पर भारी घाव था और शरीर पर भी अनेकों स्थानों पर चोट लगी हुई थी।

सानन्द कमरे में प्रविष्ट होने लगा तो अनन्ता ने कहा, "अभी बाहर ही ठहरिये। मैं आपको बुलवा लूंगी।"

इसका अर्थ न समझते हुए भी सानन्द बाहर हो गया। वह अपने बरामदे में खड़ा था कि समर्थ के कमरे से अपना बैग उठाये हुए एक डाक्टर बाहर निकला। इससे तो सानन्द के विस्मय का ठिकाना नहीं रहा। वह लपककर कोठी के उस पार्श्व में जा पहुंचा जहां दाताराम डाक्टर के साथ बात कर रहा था। दाताराम ने डाक्टर को फीस दी और वह अपनी गाड़ी में जा बैठा। डाक्टर गया तो सानन्द से पूछा, "कौन बीमार है?"

"आइये, भीतर आइये। भैया को चोट लगी है।"

सानन्द भीतर गया तो सुचाला वहां बैठी थी। पट्टियों में लिपटा हुआ समर्थ पलंग पर लेटा था। सुचाला ने बताया, "इन्हें सोने का इंजेक्शन दिया गया है। डाक्टर का कथन है कि इनको सोने दिया जाय।"

दाताराम को लेकर सानन्द बाहर आ गया। सानन्द ने प्रश्नभरी दृष्टि से दाताराम की ओर देखा तो उसने बताया, "मैं काम से लगभग चार बजे घर लौटा तो भैया के कमरे में खटाखट वस्तुओं के गिरने का शब्द हो रहा था। द्वार भीतर से बन्द था। मैंने द्वार खटखटाया तो वह खुला नहीं। इसी समय भीतर किसी औरत की चीख-सी निकली। मुझे इससे बहुत विस्मय हुआ। मैंने शीशे को तोड़ खिड़की खोली और भीतर घुसा तो भैया और मलावी को गुत्थम-गुत्था हुए देखा। मलावी के वस्त्र फटकर चिथड़ें हो गये थे और भैया के माथे से रक्त बह रहा था।

"मैंने जोर से आवाज दी, "मलावी!" इससे भैया ने मालावी को छोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया। मलावी के हाथ में गुलदस्ता था। उसने छूटते ही वह भैया की और फेंका और वह भैया की आंख के नीचे के भाग को चीरता हुआ फर्श पर जा पड़ा। भैया पीड़ा से व्याकुल अथवा इस दृश्य को मेरे देख लेने पर लज्जित पलंग पर जा गिरे। इस पर मलावी ने भीतर से द्वार खोला और भागकर अनन्ता के कमरे में चली गई।"

"मैं भीतर गया तो भैया ने कहा कि उनका बहुत रक्त प्रवाहित हो रहा है। अतः शीघ्र ही किसी डाक्टर को बुलाना चाहिए।"

"मैंने डाक्टर साहनी को फोन कर दिया और स्वयं भैया को फर्स्टएड देने लगा। डाक्टर के आने से पूर्व सुचाला आई तो मैंने उसको बुला लिया। अब डाक्टर पट्टी कर गया है। तीन घाव तो बहुत बड़े हैं। एक माथे पर, दूसरा गाल पर और तीसरा हाथ पर। हाथ पर तो दांतों से काटा प्रतीत होता है।"

सानन्द की समझ में सारी बात आ गई। अतः उसने फिर कोई प्रश्न नहीं किया। चुपचाप अपने विचारों में लीन वह वहीं खड़ा रहा। कोठी की लॉन में कमल, सोम और भुवनेश्वर गेंद खेल रहे थे। सानन्द कोठी छोड़ जाने के विषय में विचार कर रहा था।

इससे एक दिन पहले ही उसने अपने मन में निश्चय किया था कि समर्थ के प्लास्टिक के कारखाने में किस प्रकार से सम्मिलित हो सकता है। अपने मन में वह इस कारखाने को एक आदर्श कारखाना बनाने का विचार कर रहा था। परन्तु आज की घटना से वह उस वातावरण में एक प्रकार की ग्लानि अनुभव करने लगा था।

बच्चों को आनन्द से लॉन में खेलते देख इस सुन्दर वातारण से उन्हें पुनः दरियागंज के मकान में ले जाने का उसे दुःख-सा हो रहा था। दरियागंज के मकान में ये ऊपर की मंजिल पर रहते थे। सड़क पर तो यातायात की भरमार रहा करती थी। वहां तो बच्चों का अकेला चलना भी भय से रहित नहीं था।

वह अभी किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पाया था कि अनन्ता कुमुद को गोद में लेकर बाहर आई और उसके समीप आकर बोली, "चलिये, चाय पी लीजिये।"

सानन्द ने दाताराम को वहीं बरामदे में खड़ा छोड़ दिया और अनन्ता के साथ अपने कमरे में आ पहुंचा। मलावी अभी भी अनन्ता के पलंग पर लेटी हुई थी। वह अचेत नहीं थी। उसके घाव भी कुछ अधिक नहीं थे, गाल पर पट्टी बंधी थी और हाथ तथा पांव पर साधारण चोटें आई थीं किन्तु गाल पर से बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्त बह गया था।

मलावी की पट्टी अनन्ता ने स्वयं की थी। अनन्ता ने कमरे में पहुंचकर पूछा, भैया को देखा है?''

''हां, डाक्टर पट्टी कर गया है, पीड़ा के कष्ट को दूर करने के लिए नींद का इंजेक्शन दे गया है।''

''मैंने मलावी से डाक्टर को बुलवाने के लिए पूछा तो यह कहने लगी कि घर की लज्जा की बात बाहर प्रकट होना ठीक नहीं। इस कारण मैंने ही घी और हल्दी जलाकर पट्टी कर दी है। शेष घाव तो साधारण हैं। केवल गाल का मांस कट गया है। मैं समझती हूं कि वह निशान तो आजीवन मिटेगा नहीं।''

''अब क्या करना चाहिए?''

''आज ही हमें यहां से चल देना चाहिए।''

''भैया को होश में आने दें और फिर माताजी एवं पिताजी से भी तो बात करनी होगी। वे कहां हैं?''

''पिताजी तो पटेलनगर के मकान से अपनी कुछ पुस्तकें लेने के लिए गये हैं। कल अपने कारखाने में सम्मिलित होने की बात कही तो वे कहने लगे कि अब तो कई मास तक यहां रहने का प्रबन्ध करना होगा। कदाचित् सदा के लिए ही यहां रह जाएं, इससे वे अपने स्वाध्याय का प्रबन्ध करने के लिए गये हैं।''

''वे गये तो उसके आधे घण्टे बाद यह घायल रक्त से लथपथ कमरे में आ गई। मैं कुमुद को दूध पिला रही थी। इसे इस प्रकार घायल देख मैंने इसका कारण जानना चाहा तो इसने कहा कि उसके गाल में बड़ा दर्द हो रहा है, उस पर कोई दवा लगा दूं।

''मैंने जल की पट्टी कर रक्त का प्रवाह बन्द किया। घाव पर हल्दी और घी लगाकर पट्टी कर दी है।''

''इसका कहना है कि बड़े भैया ने यह सब किया है।''

''इससे पूछा है कि यह कहां जाना चाहती है?''

''पूछा था, कहती थी, 'जुहन्नुम में'।''

सानन्द विस्मय से बैठा रहा अनन्ता ने चाय बनाई और मलावी को भी दे दी।

बाहर अंधेरा हो जाने के कारण बच्चे भीतर आ गये। उन्होंने अपने कमरे में मलावी को पलंग पर लेटे और स्थान-स्थान पर पट्टी बंधे देखा तो वे विस्मय करने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सानन्द अपने पिता के लौटने की प्रतीक्षा में था। वह यह तो निश्चय कर चुका था कि उसको अब चल देना चाहिए। उसने अपने पिछले दिन के निर्णय को कि कारखाने में सहयोग देगा, बदल दिया। वह अब केवल लेखक बने रहने में ही अपना भला समझने लगा था। इस पर भी अपने माता-पिता के मन पर इस घटना की प्रक्रिया और फिर मलावी के भविष्य के विषय में वह विचार कर रहा था। इसी समस्या पर विचार करने के लिए वह उठकर लॉन में जाने लगा तो मलावी पलंग से उठकर कहने लगी, "बहनजी! मैं अपने कमरे में जा सकती हूं। कमल के बाबूजी से कहिये मैं जा रही हूं।"

"मलावी! आज तुम यहीं सोना, मैं तुम्हारे कमरे में जाकर सो रहूंगा।"

"जी नहीं।" यह कहती वह लंगड़ाती हुई बाहर निकल गई।

सानन्द ने अनन्ता से कहा, "तुम इसके साथ जाओ। कहीं घाव में सैप्टिक हो गया तो डाक्टर को बुलाना पड़ जायेगा।"

अनन्ता उठकर मलावी के पीछे-पीछे चली गई। कमल ने अपने पिता के पास आकर पूछा, "आंटी को क्या हुआ?"

"बिच्छू ने काट खाया है।"

"वह क्या होता है?"

"एक खूंखार जानवर होता है, बहुत जोर से काटता है।"

"तो आंटी को बहुत पीड़ा हो रही है?"

"हां।"

"दवाई लगा दो।"

"लगा दी है।"

: 11 :

रात अनन्ता मलावी के कमरे में सोई। अगले दिन समर्थ भी होश-हवास में था। उसके गाल और माथे पर पट्टी बंधी थी। डाक्टर आया और पैनसलीन के इंजेक्शन दे गया।

सानन्द पूजा से उठने पर अपने पिता से मिलने के लिए गया। वहां उसने अपने जाने की बात बताई तो उसके पिता ने कहा, "सानन्द! दाताराम ने सब बात मुझे बताई है मैं समझता हूं कि तुम्हारे जाने का प्रश्न नही है इस समय विचारणीय बात तो मलावी की है। क्या वह अब यहां से जाने के योग्य हो गई है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी, वह चल-फिर सकती है। उसके तो एक ही घाव बड़ा है और वह गाल पर है।"

"तो उसको कह दो कि वह जा सकती है।"

"कहां?"

"जहां उसका जी चाहे।"

"आश्रय-विहीन होने के कारण ही तो वह आत्महत्या करने के लिए तैयार हुई थी। और आपका आश्रय प्राप्त होने पर ही उसने अपना विचार त्याग दिया था।"

"ठीक है, उस जैसी सुन्दर और युवा लड़की को किसी के आश्रय रहना चाहिए। समर्थ ने उसको आश्रय देना चाहा था किन्तु उसने स्वीकार नहीं किया।"

"परन्तु पिताजी! इसके लिए जो सेवा भैया उससे लेना चाहते थे वह देना नहीं चाहती थी।"

"यही तो कह रहा हूं कि जिसके योग्य वह है, वह करना नहीं चाहती। अन्य किसी कार्य के लिए उसकी आवश्यकता नहीं है।"

"किन्तु आपके पास तो वह वैसे रह ही सकती है, जैसे पहले रह रही थी?"

"परन्तु मैं तो अब अपने घर नहीं जा रहा। तुम्हारी परसों की योजना से मैं समझता हूं कि हमारा और तुम्हारा अभी कुछ काल के लिए यहां रहना ही ठीक होगा। जब कारखाना बनने लगेगा तो तब रहने की समस्या पर पुनः विचार कर लिया जायेगा।"

"योजना के विषय में भैया के ठीक हो जाने पर विचार करेंगे। अभी तो मैं इस घर से जा रहा हूं। यदि आपको यहां रहना हो तो मलावी मेरे साथ जायेगी।"

"तुम्हारी मां अभी समर्थ को देखकर आई है। डाक्टर भी अभी आया था और उसको हिदायत दे गया है कि एक सप्ताह तक उसे आराम करना चाहिए। तब तक तो कारखाने के विषय में किसी प्रकार की प्रगति नहीं हो सकती। कारण यह है कि काम सरकारी कार्यालय में अटका पड़ा है और वह समर्थ ही कर सकता है।"

"आप तब तक यहां रहेंगे?"

"हां तुम्हारी मां लड़के को छोड़कर जाना नहीं चाहती। सन्तोष भी यहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है।"

"ठीक! आप यहां रह सकते हैं, परन्तु मैं जा रहा हूं।"

"कहां?"

"अपने मकान में।"

"क्या है वहां?"

"मन की शान्ति।"

हरिशरणानन्द कुछ देर तक तो लड़के का मुख देखता रहा, फिर कुछ विचारकर कहने लगा, "देखो सानन्द! तुम मलावी को समझा कर तैयार कर लो। वह अब भी समर्थ की सेवा में रह सकती है। पूछ लो वह क्या कहती है। समर्थ उसकी सब इच्छाएं पूर्ण करने में समर्थ है।"

बात टालने के लिए सानन्द ने कह दिया, "अच्छी बात है। मैं कह दूंगा किन्तु इस पर भी पिताजी! बलात्कार करना तो अर्धम ही है।"

"वह तो समर्थ की मूर्खता थी। मुझसे कहता तो मैं मलावी को समझा देता। स्त्री भुक्ता है और पुरुष भोक्ता। यह स्वाभाविक सम्बन्ध बना रहना चाहिए और इसके बनने में विद्वान लोगों को सहायक सिद्ध होना चाहिए।"

"शास्त्र क्या कहता है इस विषय में?"

"शास्त्र का स्पष्ट कथन है कि स्त्री को सदा किसी-न-किसी पुरुष के अधीन रहना चाहिए। जिस प्रकार सोने के आभूषण को पहनकर रखने की अपेक्षा तिजोरी में रखना सुरक्षित समझा जाता है, वैसे ही सुन्दर स्त्री को किसी की पत्नी, पुत्री, माता अथवा बहन बनाकर रहना ठीक होता है।"

सानन्द शास्त्र की इस विवेचना को दोषपूर्ण समझता था। इस पर भी अपने पिता के साथ विवाद करने की रुचि ने होने के कारण वह बोला, "आपका कहना ठीक है। वह किसी की पत्नी और किसी की मां बन चुकी है। किसी की पुत्री भी बनने आई थी। इन तीनों सम्बन्धों के बनने में असफल हो जब वह किसी की बहन बनकर रहेगी।"

हरिशरणानन्द हंस पड़ा और बोला, "सानन्द! तुम्हारी पत्नी बनकर ही रहेगी। उसके मन में यह लालसा भी है। तुम्हारी रुचि हो तो ले जाओ।"

"यह भी देख लूंगा पिताजी! यदि पत्नी बनने पर ही उसकी रक्षा सम्भव हुई तो वह भी बना लूंगा।"

इतना कह वह वहां से निकला और सीधा अपने भाई के कमरे में चला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। समर्थ सुचाला को काम के विषय में समझा रहा था। दोनों की बात समाप्त होने की प्रतीक्षा में वह चुपचाप बैठा रहा। सुचाला जब अपने कागज आदि समेटकर गई तो सानन्द ने कहा, "भैया! मैं अब अपने घर जा रहा हूं।"

"तुम्हारी इच्छा है। सुचाला बता रही थी कि तुम मलावी को साथ लेकर जा रहे हो।"

"हां, वह अभी अनन्ता के साथ जा रही है। यों तो मैं कई दिन से जाने के विषय में सोच रहा था, परन्तु भाभी के यहां न होने के कारण टिका हुआ था, अब यहां रहना असम्भव मानकर ही जाना पड़ रहा है।"

"असम्भव क्यों हो गया है यहां रहना?"

"कल वाली घटना की पुनरावृत्ति भी तो हो सकती है। और उसमें केवल फूलदान और दांतों से मार-काट के स्थान पर रिवाल्वर भी चलाया जा सकता है।"

"बात यह है सानन्द! मलावी सुन्दर है, युवा है, निराश्रय है और बहुत ही मधुरभाषिणी भी है। मैंने समझा कि फल पका हुआ है, कोई अन्य तो उतारकर ले ही जायेगा, इससे मैं ही क्यों न उतार लूं। सो उतारने में पांव फिसल गया और मुझे चोट आ गई है। मैं अब समझा हूं कि फल उतारने के लिए मुझे बांस से काम लेना चाहिए था। मैं तो पेड़ पर चढकर ही उतारने लगा था। भविष्य में ऐसी भूल नहीं करूंगा। जरा ठीक हो जाऊं तो फिर उपयुक्त उपाय ही प्रयोग करूंगा।"

"तो अभी आपने उसका विचार छोड़ा नहीं?"

"पहली असफलता में ही हताश होना मनुष्य का धर्म नहीं है।"

"भैया! आज संसार इसी दिशा मे अंन्धाधुन्ध भागा चला जा रहा है। मैं किस-किसका मार्ग-दर्शन कर सकता हूं। आप भी उस दौड़ में भाग लेना चाहते हैं तो लीजिये, परन्तु मैं तो इस दौड़ में भाग नहीं ले रहा। इसलिए मैं तो एक ओर हटकर दर्शक बनकर रहना चाहता हूं।"

"ठीक है। तुम जा सकते हो। किन्तु मलावी को साथ ले जाओगे तो इससे तो तुम मेरी भावी सफलता में बाधक बन जाओगे!"

"भैया! यह तो अनन्ता कर रही है। आप उसको समझा दीजिये। किन्तु उसके समझ जाने पर भी कदाचित् बात बनेगी नहीं। मलावी स्वयं ही यहां से चली जाना चाहती है। यदि अनन्ता उसको साथ नहीं भी ले जायेगी तो वह पुनः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्महत्या का प्रयत्न कर सकती है।"

"बहुत देखी हैं आत्महत्या करने वाली। जरा अनन्ता को बुला दो। अगर सन्तोष यहां होती तो मैं यह कार्य बड़ी सरलता से कर लेता।"

"मैं अनन्ता को कह देता हूं। परन्तु वह नहीं भी आ सकती।"

"क्यों?"

"वह आपको केवल पशु मानती है और किसी उन्मत पशु के सम्मुख आने में उसको डर लग सकता है।"

"यह सब अपने मन से कह रहे हो या उससे इस विषय पर बात हुई है?"

"यह बात तो आपने अभी की है न! आप किसी को भेजकर उसे बुलवाकर पूछ लीजिये।"

"अच्छा बैठो, मैं उसे बुलवाता हूं।"

सानन्द अपने भाई से झगड़ा करना नहीं चाहता था। इस पर भी वह वहां से जाने का निश्चय कर चुका था। उसने कह दिया, "ठीक है, शीघ्रता कीजिये। मुझे पार्लियामेंट भी जाना है। आज प्रधानमन्त्री तिब्बत के विषय में अपना वक्तव्य देने वाले हैं।"

समर्थ ने घंटी बजाई। सुचाला भीतर आ गई। समर्थ ने उससे कहा कि वह अनन्ता और सम्भव हो तो मलावी को भी बुला लाये।

सुचाला आश्चर्य में मुख देखती रह गई। इस पर समर्थ ने अपनी बात दुहराकर कहा, "जल्दी करो। सानन्द को जल्दी जाना है और मैं इसके सम्मुख ही बात करना चाहता हूं।"

सुचाला गई और कुछ ही देर में तीनों वहां आ पहुंची।

उनके आते ही समर्थ ने कहा, "मलावी! कल की घटना पर मुझे बहुत खेद है। बात यह है कि मैं कल कुछ अधिक पी गया था। साथ ही मुझसे यह भूल हुई कि मैं तुम्हारी बातों का यह अर्थ समझा था कि तुम परिस्थिति के अधीन तिनके के समान एक नदी में बहती चली जा रही हो। तुम्हारी उस परिस्थिति में मैं भी एक निमित्त बनने का यत्न कर बैठा था।

"इसलिए तुम कल की भूल के लिए मुझे क्षमा कर दो। मेरा आग्रह है कि तुम मत जाओ। जाने की आवश्यकता भी नहीं है। अब तुम्हारी स्वीकृति के बिना मैं तुम्हारी ओर देखूंगा भी नहीं। माताजी एवं पिताजी तो जा नहीं रहे। सानन्द से अभी मेरी व्यापारिक सम्बन्ध की बात समाप्त नहीं हुई। साथ ही सन्तोष के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आने तक तो आप लोगों को जाना भी नहीं चाहिए।''

मलावी ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। किन्तु अनन्ता चुप नहीं रही। उसने कहा, ''मैं समझती हूं कि आपकी कमाई में तामसी गुण है। इसी कारण यह झगड़ा हो गया है। इस तामसी गुणयुक्त अन्न का भोग करने से मेरी बुद्धि भी मलिन हो रही प्रतीत होती है। इससे मैं तो अब यहां का एक बूंद जल भी ग्रहण नहीं करूंगी। मलावी के विषय में भी मेरी सम्मति वही है, जो अपने स्वयं के विषय में है।''

''मेरे ख्याल में यह मेरी कमाई का नहीं प्रत्युत तुम्हारे पिताजी की कमाई का प्रभाव है। वह तो मेरे से भी गई-गुजरी कमाई है। जो कार्य मैं विवश होकर करता हूं, सरकारी कर्मचारी वही कार्य बिना किसी विवशता के करते हैं, इस कारण वे मुझसे अधिक पातकी हैं।''

''ठीक है। परन्तु मुझे तो उनके घर का खाना छोड़े दो वर्ष से अधिक हो गये हैं। इन दो वर्षो में मन जितना शुद्ध हो पाया था, आपके घर के दो मास के अन्न-जल ने पुनः उतना ही मलिन कर दिया प्रतीत होता है। मैं यहां रहते हुए समझने लगी थी कि व्यापार में आपके धन का प्रयोग कर उन्नति करना अयुक्तिसंगत एवं अनुचित नहीं है।

''परन्तु कल इतना प्रबल झटका लगा कि मन का सब मैल छूट गया है। अब मैं यहां रहने में किसी प्रकार का कल्याण नहीं समझती।''

''तो ऐसा करो, तुम अपने देवता पति की कमाई का पकाओ और खाओ। मुझ पातकी का नमक मत छुओ। अभी तुम यहां रह जाओगी तो मलावी भी रह जायेगी। मैं तनिक ठीक हो जाऊं तो उसके साथ किये व्यवहार का प्रायश्चित करूंगा। इसका अवसर पाने के लिए ही मैं यह आग्रह तुमसे कर रहा हूं।''

''बोलो मलावी! क्या चाहती हो?'' अनन्ता ने पूछा।

''बहनजी! एक समय था जब मैं आत्महत्या करने के लिए तैयार थी। किन्तु फिर मुझे इस संसार में कुछ रस प्रतीत होने लगा और मैं आत्महत्या का विचार त्याग चुकी हूं। इस पर भी कल सायं की घटना से तो मैं ग्लानि से भर गई हूं।

''मैं अब आपके आश्रय ही हूं। यदि आप कहेंगी तो मैं यहां रह जाऊंगी, परन्तु इतना कह देना चाहती हूं कि अब मैं अपने पास सदा कोई इस प्रकार का साधन रखना चाहूंगी कि जिससे यदि कल वाली घटना की कभी पुनावृत्ति हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो तो तत्काल आत्महत्या कर सकूं।"

"यदि तुम आत्महत्या कर लोगी तो फिर संसार के रस का पान किस प्रकार करोगी?" समर्थ का प्रश्न था।

"वह रस तो पा रही थी। आपने उसको छीनना चाहा। इसी कारण यह झगड़ा हो गया। यदि आपने पुनः मेरे रसास्वादन में बाधा उपस्थित की तो दोनों में से किसी एक की हत्या हो जाना स्वाभाविक है। अब आप सोच-समझ लीजिये। स्त्री की दृढ़ निष्ठा का कुछ ज्ञान तो आपको हो ही गया होगा?"

"परन्तु वह रस क्या है जो तुम पान कर रही थीं, और मैंने उसमें बाधा उपस्थित की है?"

"आपका उससे कोई सम्बन्ध नहीं। वह मेरा रहस्य है। इस कारण आपको जानने की भी आवश्यकता नहीं।"

"अच्छी बात है। अनन्ता! अब तुम मान जाओ। देखो, बहुत यत्न से सानन्द को कम्पनी का मैनेजिंग डायरेक्टर बनने के लिए तैयार किया है। तुम उसमें बाधक न बनो।"

"तो क्या आप समझते हैं कि आपके प्रयत्नों के परिणामस्वरूप इन्होंने स्वीकृति दी थी? यदि यह सत्य है तो मैं बीच में बाधक नहीं बनूंगी।"

"तुम क्या समझती हो, यह किसके प्रयत्नों का फल था?"

अनन्ता ने बात समाप्त कर दी, "अच्छा जी! मैं अभी नहीं जा रही।"

इतना कह वह बाहर निकल आई। मलावी भी उसके पीछे चली गई। समर्थ ने सुचाला से कहा, "अब सन्तोष को तार देने की आवश्यकता नहीं, तुम काम पर जाओ।"

दाताराम तो प्रातःकाल ही काम पर चला गया था। सुचाला कमरे से निकल गई तो सानन्द ने कहा, "भैया! मैं तुम्हारी चतुराई को मान गया हूं। परन्तु एक बात बता देना चाहता हूं। यह कामवासना जलती अग्नि है। कहीं ऐसा न हो कि सब कुछ इसमें ही स्वाहा हो जाय।"

"ऐसा ही और इससे भी अधिक मात्रा में सब जगह पर हो रहा है। मैं तो भारत के सामाजिक पैटर्न में एक बिन्दु मात्र हूं। जब सब विध्वंस होगा तो मैं भी उसके साथ ही नष्ट हो जाऊंगा। तब मुझे किसी प्रकार का शोक नहीं होगा। आखिर जिस संसार का मैं एक अंग हूं उसके साथ ही तो बनूंगा अथवा बिगड़ूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सानन्द को यह पूर्ण प्रपंच असन्तोषजनक ही लग रहा था। बिना एक शब्द कहे वह बाहर आ गया।

एक बात में अन्तर आ गया। जब से सन्तोष अपने मायके गई थी तब से छोटी मोटी आवश्यकताओं में मलावी सहायता कर देती थी। अब उसके समर्थ के कमरे में आने की सम्भावना विलुप्त-सी हो गई।

वास्तव में इन छुटपुट अवसरों का लाभ उठाकर ही समर्थ ने मलावी से परिचय प्राप्त कर उससे घनिष्ठ सम्बन्ध बनाने का यत्न किया था। मलावी तो हंसमुख, मधुरभाषिणी और सेवापरायण थी और समर्थ ने इसका अभिप्राय अपने मन की इच्छाओं के अनुकूल समझा।

जाने से पूर्व सानन्द अपनी पत्नी के पास गया। मलावी और अनन्ता उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह आया तो अनन्ता ने पूछा, "क्यों जी! आप नाराज तो नहीं हैं?"

"नाराज होने का तो कोई कारण नहीं है परन्तु मैं तुम्हारे यहां रह जाने में किसी प्रकार का प्रयोजन नहीं जान पाया।"

"यह तो मैं भी नहीं समझी। अपने मन की प्रेरणा से ही मैंने यह स्वीकार किया है। मलावी तो कहती है कि यह केवल हमारे ही आश्रय पर है। इस कारण वह मेरे साथ ही रहना चाहती है। रात की घटना के बाद तो मैं भी इसको अकेली छोड़ना नहीं चाहती।

"किन्तु एक बात मैं करना चाहती हूं। वह यह कि इस पापमय पंक में हम निर्लेप होकर रहें। मैं इसी बात पर विचार कर रही हूं कि यह किस प्रकार किया जाय।"

"इसके लिए बहुत सावधानी से रहना पड़ेगा। साथ ही मैं यह भी नहीं चाहता कि कोई घटना घटित हो जिसकी ओर मलावी ने संकेत किया है।"

"किसी की भी हत्या होनी मैं पसन्द नहीं करता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

: 1 :

भारत धनवान होने की होड़ लगा बैठा था। धनवान होने के साथ-साथ बुद्धि की स्वाभाविक मलिनता भी आने लगी थी। धन जब अनायास ही आने लगे तो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार भी अनायास उत्पन्न होने लगते हैं और ये विनाश का कारण बन जाते हैं।

किसी प्रकार का बलिदान किये बिना ही कांग्रेस सत्तारूढ़ हो गई। कारागारों में टोस्ट और मक्खन खाते-खाते नेतागण मन्त्री और प्रधान- मन्त्री बन गये। कठिनाई और घरेलू युद्ध से भयभीत इन लोगों ने देश विभाजन स्वीकार कर लिया। अपनी अकर्मण्यता के कारण लाखों हिन्दू और मुसलमानों को परस्पर मारते-काटते देख, कबूतर की भांति आंखें मूंद ये लोग नाच-रंग में मस्त रहे।

पंजाब और बंगाल से मारकर भगाये गये हिन्दू ही कांग्रेस के सबसे बड़े समर्थक बन गये। 1952 के प्रथम निर्वाचन में कांग्रेस को आशातीत सफलता प्राप्त हुई। मानो देश को कांग्रेस दल और उसके नेता जवाहरलाल ने ही स्वराज्य दिलवाया हो। इस प्रकार अनायास प्राप्त सफलता पर नेताओं के मन में अभिमान समा गया।

पण्डित जवाहरलाल के मन में यह बात बैठ गई कि उसकी बुद्धि तेज और उसकी सूझ-बूझ ठीक, उसके चरित्र-सम्बन्धी विचार श्रेष्ठ, वाणी में सरस्वती और उसके साथियों में भगवान का वास है। जो कुछ वे कहते हैं वह सदा सत्य होता है।

इस अभिमान के वशीभूत वह अमेरिका से लड़ने के लिए उद्यत हो गया। रूस और चीन से मित्रता गांठ ली। इंग्लैण्ड को आंखें दिखाना आरम्भ कर दिया। गांधीजी की समाधि पर बैठ चर्खा कातनेवाले रूसी ढंग का समाजवाद चलाने लगे। हिन्दुओं को गालियां देना, गौरक्षा की खिल्ली उड़ाना, सैक्युलर होते हुए भी बुद्ध जयन्ती के अवसर पर सरकारी कोष के करोड़ों रुपये व्यय करना, अजमेर शरीफ में जा दस्तार बंधवाना, बुद्ध की अस्थियों को सिर पर रखकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलूस निकलवाना उनको बुद्धि-संगत एवं करणीय प्रेतीत होने लगा।

यदि कोई उन्हें इस ओर सचेत करता कि चीन की नीयत ठीक नहीं है, तो उसको ईडियट, वार-मांगर और अमेरिका का रुपया खानेवाला, और भी न जाने क्या-क्या कहा जाता।

इस अभिमान के परिणामस्वरूप सांस्कृतिक समारोहों में वासनामय संगीत तथा नृत्य होने लगे। सिनेमा हाउसेज की संख्या बढ़ने लगी। सौन्दर्य प्रतियोगितायें होनें लगी। अभिनेत्रियों के प्रदर्शन के अवसर पर लाखों रुपयों के टिकट बिकने लगे।

कहीं हवन-यज्ञ हुआ तो उनके कर्ताओं को गालियां दी जाने लगीं। पूजा-पाठ का मजाक उड़ाया जाने लगा।

इस पर भी जब समाजवाद असफल होता दिखाई देने लगा तो झूठ बोलकर लोगों को सान्त्वना दी जाने लगी। अंग्रेजी का प्रचार करने के लिए हिन्दी में त्रुटियां निकाली जाने लगीं और उनको दूर करने के लिए समितियों का संगठन किया जाने लगा। कारखाने असफल होने लगे तो आंकड़े प्रस्तुत कर उनको सफल सिद्ध किया जाने लगा। जनसाधारण निर्धन होने लगे तो राष्ट्रीय लाभ में प्रगति की घोषणा की जाने लगी। आवश्यक वस्तुओं का मूल्य बढ़ने लगा तो इसको भ्रान्ति कहकर टाला जाने लगा।

इस प्रकार अंधेरगर्दी मची तो समाचारपत्रों को विज्ञापनों का लोभ देकर, उन्हें अपना समर्थक बना भारत में सुख-सुविधा की वर्षा होने का प्रचार करना आरम्भ कर दिया।

एकाएक चीन ने तिब्बत को अपने अधिकार में किया तो भारत के प्रधानमंत्री ने कह दिया कि तिब्बत तो सदा से ही चीन का एक प्रान्त रहा है। किसी ने यदि इस बात को असत्य बताया तो उसे मूर्ख और इतिहास से अनभिज्ञ घोषित करने का प्रयास किया।

ऐसी स्थिति में कुछ लोगों के पास धन एकत्रित होने लगा तो उनको तस्कर कहा जाने लगा। मुख से तो कारखाने के मालिकों को गालियां दी जाती किन्तु निर्वाचनों के अवसर पर उनसे लाखों रुपये का चन्दा मांगा जाता। प्लेटफार्म पर उनके प्रति घृणा व्यक्त की जाती किन्तु परमिट देने के लिए सरकारी अधिकारी रिश्वत की मांग करने लगे।

इस प्रकार की अव्यवस्था का विचार करता सानन्द बस में बैठा पार्लियामेंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए चला जा रहा था। समर्थ और मलावी के झगड़े के कारण आज उसे विलम्ब हो गया था। पर्लियामेंट की कार्यवाही आरम्भ हो गई थी। वह बस से पी. ब्लाक के सामने उतरा तो वहां एक अन्य उलझन दिखाई दी। बस स्टैंड के समीप ही चालीस-पचास लोग भीड़ बांधे खड़े थे। सानन्द बस से उतर भीड़ में से एक व्यक्ति से पूछने लगा, "आज क्या हो रहा है यहां पर।"

"एक गरीब औरत को चपरासी ने धक्के दे-देकर दफ्तर से निकाला तो वह अचेत होकर गिर पड़ी है।"

"और तुम लोग क्या कर रहे हो?"

"हम क्या कर सकते हैं। यहां समीप तो कहीं पानी भी नहीं है, जिससे उसके मुख पर छींटा दिया जा सके।"

"तो हटो; मैं औषधि सुंघता हूं।" उसने लोगों को इधर-उधर करते हुए आगे बढ़ते हुए कहा।

उसने देखा कि वह अचेत पड़ी हुई स्त्री तो कौशल्या ब्राह्मणी है। उसका पुत्र विनोद उसके पास खड़ा रो रहा था।

"विनोद! क्या हो गया है मां को?"

"भापा! मां मर रही है।" कहता-कहता वह रो पड़ा।

सानन्द ने वहां पर एकत्रित भीड़ को सम्बोधित करते हुए कहा, "आप लोग जरा दूर-दूर हो जाइये, जिससे कि हवा आ सके।"

शोर मचाने पर लोग पीछे हटने लगे। खुली हवा आने लगी। सानन्द के हाथ में समाचारपत्र था, उसने वह विनोद के हाथ में दिया और उससे कहा कि वह हवा करे और स्वयं अपने थैले में से स्मैलिंग साल्ट निकाला। कुछ दिन पूर्व जुकाम होने पर उसने वह खरीदा था और अभी उसके थैले में रखा हुआ था। साल्ट की बोतल का ढकना खोलकर वह उसने कौशल्या की नाक पर लगा दिया। दो-तीन बार ऐसा करने पर कौशल्या को चेतना आई तो वह उठकर बैठ गई। उसके उठने पर सानन्द ने जेब से पैसे निकाले और विनोद को देकर कहा कि वह पी. ब्लाक के सामनेवाले हलवाई से लेमोनेड की बोतल ले आये।

जब विनोद बोतल ले आया तो कौशल्या को पीने को कह वह विनोद से पूछने लगा, "तुम लोग किसलिए आये थे यहां?"

"मां कहा करती थी उसकी समस्त सम्पत्ति के कागजात उसे मौसी और मौसा के पास रखे हुए थे। मौसाजी तो पाकिस्तान में मारे गए थे, किन्तु मौसीजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहां से चली आई और फिर उनका कोई पता नहीं चला। कुछ दिन हुए मौसीजी मां को पटेल नगर में मिल गई और फिर उनसे वह सारे कागजात भी मिल गये। मां ने क्लेम तो कर रखा था, किन्तु उसके साथ आवश्यक कागजात न होने के कारण वह अस्वीकार कर दिया गया था। मां ने उन कागजों की नकल कराकर दफ्तर में दी तो हमें हुक्म मिला कि असल कागज लेकर उपस्थित हो जाओ। मां और मैं उन कागजों को लेकर आज यहां आये थे। हमको एक कमरे में ले जाकर बैठा दिया। एक बाबू हमसे कागज लेकर दूसरे कमरे में चला गया। कितनी ही देर तक हम बैठे रहे। जब कोई नहीं आया तो मां उस कमरे में घुसी जिधर वह बाबू कागज लेकर गया था। किन्तु वह बाबू वहां नहीं था। बड़ी-सी मेज के पीछे एक दूसरा बाबू बैठा था। मां ने अपनी बात कही तो उसने कह दिया यहां कोई कागजात नहीं आये।

"मां जोर-जोर से पुकारने लगी तो उस आदमी ने अपने चपरासी से कहा कि वह हमें बाहर कर दे। चपरासी मां को धक्का देता हुआ बाहर निकालने लगा तो मां सीढ़ियों से गिर पड़ी। और फिर चपरासी उनको घसीटता हुआ यहां पर छोड़ गया। ये बीच में ही बेहोश हो गई थीं।"

सानन्द का रक्त खौलने लगा। किन्तु वह मन में विचार करता था कि कौन विश्वास करेगा इस लड़के की बात पर। इससे वह गम्भीर विचार में पड़ गया। बहुत विचार करने पर उसने कौशल्यादेवी से कहा, "मां! तुम वहां बैंच पर बैठ जाओ, मैं विनोद को लेकर उस अफसर के पास जाता हूं।"

विनोद को लेकर वह वहां गया तो वही चपरासी जिसने उसकी मां को धक्के दिये थे, उस कमरे से निकला और विनोद को वहां पर देख कहने लगा, "तो तुम फिर आ गये हो?"

सानन्द ने अपना विजिटिंग कार्ड उस चपरासी को देकर कहा, "साहब को दे दो।"

चमचमाती चांदी की डिबिया से चांदी-जैसा ही सफेद विजिटिंग काई देकर चपरासी उसे ले भीतर चला गया। कुछ ही क्षणों में लौटकर उसने सानन्द को भीतर जाने के लिए द्वार खोल दिया।

सानन्द भीतर चला गया। उसने सामने बैठे अधिकारी को नमस्कार किया और उसके सम्मुख रखी कुर्सी पर बैठ कहा, "आपसे तो एक विधवा मदद की आशा से आई थी और आपने उसकी बात सुने बिना उसे धक्के देकर बाहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकलवा दिया। मुझे बहुत अफसोस है।"

उस अधिकारी ने बीच में ही सानन्द की बात काटकर कहा, "मैंने उसकी बात सुनी थी। वह झूठ बोल रही है। मैंने जब उसको यह कहा तो वह हल्ला करने लगी। इससे मजबूर हो उसको यहां से बाहर निकालना पड़ा है।"

"बहुत झूठी है वह। इस पर भी यह ठीक नहीं होगा क्या कि उसकी बात की जांच की जाय। इससे उसको पुनर्वास-मन्त्री के पास जाने का अवसर नहीं रहेगा। कुछ लोग उसको ले जाने के लिए तैयार हो गये हैं। मैं उनको रोक आया हूं। मेरी प्रार्थना है कि यदि आप जांच कर लें तो इसमें आपका ही लाभ है।"

"क्या जांच कर लूं?"

"उस बूढ़िया के साथवाला लड़का कहता है कि वह उस क्लर्क को पहचानता है। जरा उसको अपने क्लर्कों को देख लेने दीजिये। बात समाप्त हो जायेगी।"

"यदि इसने भी झूठ बोल दिया तो?"

"तब उसकी बात की जांच का कोई ढंग निकाल लेंगे।"

अफसर मुख देखता रह गया। इस पर सानन्द ने कहा, "मेरा जैसा गवाह आपको मिलेगा नहीं। मैं राष्ट्रपति से लेकर प्राइममिनिस्टर तक के पास जाता रहता हूं।"

अफसर ने उठकर अपनी मेज की दराज को ताला लगा दिया और बोला, "ले आइये उस लड़के को।"

सानन्द ने आवाज दी, "विनोद!! आ जाओ।"

विनोद भीतर आया तो सानन्द ने कहा, "देखो, उस कमरे में दो दरवाजे हैं। तुम इन दोनों कमरों में देखो कि यहां कोई वैसा बाबू है जिसने तुम्हारी मां से कागज लिये थे।"

विनोद ने एक दरवाजे की चिक हटाई। वह दरवाजा एक बड़े-से कमरे में खुलता था। उसमें एक बड़ी मेज पर पांच क्लर्क बैठे थे। विनोद ने एक क्लर्क की बाह पकड़कर कहा, "यह है वह बाबू।"

उस व्यक्ति ने झटके से अपनी बांह छुड़ाते हुए कहा, "क्या किया है मैंने?"

सानन्द को अपने साथ देख विनोद का साहस बढ़ गया था। उसने कहा, "भापा! यही है।"

सानन्द ने विनोद को चुप रहने के लिए कह उस अधिकारी से कहा, "मेरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ख्याल है कि इन साहब को लेकर अब हमें आपके कमरे में चलना चाहिए।''

उस क्लर्क ने कह दिया, ''नहीं, मैं नही जाऊंगा।''

सानन्द ने उसकी बात की ओर ध्यान न देते हुए कहा, ''मैं तो यही कहूंगा कि बहुत हल्ला न किया जाय, बात शान्ति से ही हो सकती है।''

इस पर तो क्लर्क ने तमककर कहा, ''बट हू आर यू?''

''ए फ्रैंड ऑफ युवर्स।'' सानन्द ने सतर्क उत्तर दिया।

''ए हैल टु यू। गेट आउट।''

सानन्द हंस पड़ा। उसने उस अधिकारी की ओर देखकर कहा, ''बहुत अच्छा। आप तो आइये।''

वह अधिकारी अनिश्चित मन था। वह यह निश्चय नहीं कर पा रहा था कि इस बाहरी व्यक्ति को वह अपना मित्र समझे अथवा शत्रु। सानन्द और वह अफसर उस कमरे से बाहर निकल गये। अफसर के कमरे में पहुंचकर सानन्द ने नम्रता से कहा, ''अब बताइये, आपसे भी कुछ अर्ज कर सकता हूं कि नहीं?''

''आइये, मैं आपको समझाऊं।'' उसने सानन्द को कुर्सी पर बैठने के लिए कहा।

सानन्द ने संकेत से विनोद को बाहर जाने के लिए कह दिया और स्वयं कुर्सी पर बैठते हुए कहा, ''एक बात तो सिद्ध हो गई है कि यह क्लर्क उस बुढ़िया के कागज लेकर आपके कमरे में आया है।''

''कैसे।''

''उस क्लर्क ने बिना यह पूछे कि उस पर क्या आरोप है और बिना बात को जाने के मैं उसका शत्रु नहीं हूं, वह मुझे डांटने लगा है। इससे यह स्पष्ट हो गया कि उसके मन में चोर है।''

''तो आपको विश्वास है कि इस क्लर्क ने कागजात लिये है?''

''विश्वास की बात तो मैं जानता नहीं। हां, दो और दो चार की बात कहता हूं।

''देखिये! बाहर बहुत भीड़ जमा हो गई थी। वह औरत बेहोश हो गई थी और चपरासी ने धक्के दे-देकर भूमि पर घसीटा है। देखने वाले वहां विद्यमान हैं। मैंने स्वयं बुढ़िया को भूमि पर लेटे अचेत देखा है और उस बुढ़िया के शरीर एवं वस्त्रों पर घसीटे जाने के चिन्ह भी विद्यमान हैं। एक बात और बता दूं, कुछ दिन पूर्व उसने अपने कागजों की अटैस्टेड प्रतियां आपको दी हैं। वह टाइपिस्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अटैस्टिंग अथॉरिटी जिन्होंने प्रतिलिपि बनाई और अटैस्ट की भी उपलब्ध हैं। वह टाइपिंस्ट और अटेस्टिंग अथॉरिटी उसकी साक्षी देंगे।

"इतने प्रमाण तो मैंने दस मिनट में प्राप्त कर लिए हैं। कहीं मुकदमा चला तो देशभर के समाचार-पत्रों में इसकी धूम मच जायेगी और आप भी इससे अलिप्त नहीं रह पायेंगे।

"इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए मैं तो मामला निपटाने के ही पक्ष में आपको अपनी राय दूंगा।"

"आप बैठिये, मैं उस क्लर्क को बुलाता हूं।"

उस अफसर ने घंटी बजाई तो चपरासी आ गया। उसने कहा, "हजूर! वह औरत जीती है और स्टाल पर बैंच पर बैठी अपनी कहानी वहां पर इकट्ठे हुए लोगों को सुना रही है। कहीं से दो कांस्टेबल आ गये हैं और वे उसको थाने चलने के लिए कह रहे हैं।"

उसने उसकी बात का कोई उत्तर न देते हुए कहा, "जरा अवधबिहारी को बुलाओ।"

चपरासी उस कमरे में गया और उसको बुलाकर ले आया। सुपरिटेण्डेंट ने उससे कहा, "बाबू अवधविहारी! देखो, ये बुढ़िया के कोई सम्बन्धी नहीं है। ये तो समाचारपत्रों के संवाददाता हैं। इनका कहना है कि मामला रफा-दफा हो जाना चाहिए। वह बुढ़िया तो थाने में जा रही है।"

"तो फिर क्या हुआ?"

"उसके पास एक अटैस्टेड कापी अभी है और वह अटैस्टिंग आफिसर इन्कार नहीं कर सकता।"

इससे क्लर्क का जोश ठंडा हो गया और बोला, "तो आप क्या चाहते हैं?"

"मैं क्या चाहता हूं? तुम इन साहब से बाहर बैठकर बातचीत कर लो उस बुढ़िया का काम कर दो।"

अवधबिहारी उठा और सानन्द से कहने लगा, "आइये साहब!" सानन्द ने सुपरिण्टेण्डेंट का धन्यवाद किया और अवधबिहारी के साथ उठकर बाहर चला गया। विनोद बाहर खड़ा था। सानन्द ने विनोद से कहा, "तुम अपनी मां के पास जाकर बैठो। मैं अभी वहीं आता हूं।"

विनोद के जाने पर ये दोनों वहीं बैठ गये। अवधबिहारी ने बैठते हुए कहा, "साहब! यह सुपरिण्टेण्डेंट बड़ा बेईमान आदमी है। यही हमसे सारी बदमाशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कराता है और न जाने क्यों आज पहली बार वह अपने पाप-कर्म से भयभीत दिखाई दिया है।''

सानन्द ने मुस्कराते हुए कहा, ''कदाचित् इसे उस बुढ़िया में भगवान दिखाई देने लगा हो। छोड़ो इस बात को। बताओ क्या चाहता है साहब?''

''बात यह है कि यह दीन-हीन निराश्रितों को इतना तंग करता है कि वे लोग अपने कलेम इसके पास बेच जाते हैं ओर यह उनसे भारी लाभ उठाता है। उस लाभ में से हमें भी कुछ हिस्सा दे देता है।''

''यह तो यहां होगा नहीं। कुछ वैसा लेने-देने की बात हो तो मैं तय कर सकता हूं।

''नहीं, अब कुछ नहीं होगा। मैं आपको कागज ला देता हूं और जब उसका क्लेम मंजूर होगा तो उसको सूचित कर देंगे।''

''ठीक है, कागज ला दो। मैं बात को रफा-दफा करा दूंगा। और अगर तुम लोग चाहो तो क्लेम की मंजूरी पर जो दस्तूरी है, वह भी दिलवा सकता हूं। देखिये अवधबिहारी जी! बूढ़ों और गरीबों पर तो दया करनी ही चाहिए।''

अवधबिहारी ने कुछ कहा नहीं और कागज लेने भीतर चला गया सानन्द की समझ में कुछ ऐसा आया कि वे भीतर परस्पर कुछ राय कर रहे हैं। दस मिनट बाद वह बाहर आया और असल कागज सानन्द को देता हुआ बोला, ''हमने असल से नकल मिला ली है, वे सब ठीक हैं। शेष तो क्लेम मंजूर होने पर लिख देंगे। क्लेम मंजूर कराने के लिए वह बुढ़िया चाहे तो चपरासी को कुछ इनाम दे सकती है।''

सानन्द ने कहा, ''मैं उस बुढ़िया को आपसे मिला देता हूं। यह लेन-देन की बात आप आपस में तय कर लीजिए। मुझे बीच में गवाह क्यों बनाते हैं?''

बात बन गई। कौशल्या ब्राह्मणी आई और कागजों को ठीक-ठाक देख बोली, ''बेटा! जुग-जुग जियो!''

''अच्छा मां! जब चिट्ठी आये तो चली आना, इनसे मिलकर बात कर लेना। चलो, अब मैं तुमको बस में चढ़ा दूं।''

बाहर आ सानन्द ने कहा, ''अब तुम स्वयं मत आना। मलावी के हाथ ये कागज मेरे पास भेज देना, मैं सब प्रबन्ध करा दूंगा।''

: 2 :

सानन्द आज तिब्बत के विषय में प्रधानमन्त्री का वक्तव्य सुन नहीं सका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर भी उसको इसका शोक नहीं था। वह भारत की घोर पतनावस्था पर विचार कर रहा था। इन्हीं विचारों में वह संसद के पुस्तकालय में जा बैठा और उसमें एक पुस्तक ले पढ़ने लगा।

पुस्तक का नाम था 'वी हाइड दि आयरन कर्टन'। इसमें रूस के विषय में बहुत-सी बातें लिखी थीं, जो जनसाधरण को विदित नहीं थीं। वह उस पुस्तक में लिखित घटनाओं को पढ़कर चकित रह गया कि यह सब किस प्रकार सम्भव हो सका?

परन्तु आज वह अपने पिता का मलावी के विषय पर कथन सुन चुका था। अपने पिता को वह विद्वान और बुद्धिशील व्यक्ति मानता था। इस पर भी उन्होंने स्त्री-जाति के विषय में कुछ ऐसी बात कही थी जो उसके मस्तिष्क को अभी तक खुरच रही थी। उसके पिता ने कहा था कि मलावी जैसी सुन्दर युवा स्त्री को किसी पुरुष के आश्रय रहना ही चाहिए। समर्थ उसको आश्रय दे रहा था। उसने स्वीकार नहीं किया।

इतना ही नहीं, उन्होंने सानन्द को यह भी कहा था कि वह मलावी से मिलकर पूछ ले कि वह क्या चाहती है। समर्थ उसको अब भी रखने के लिए तैयार था। इन विचारों को सुनकर तो सानन्द सोचने लगा कि सब कुछ बदल गए हैं। यदि उसके पिता भी बदल सकते हैं तो फिर और किसी की क्या बात है।

इन सब परिवर्तनों के चिन्तन में लीन वह पुस्तक पढ़ना भूल गया। वह इस प्रकार बैठा था कि मदन गोपाल उसके पास आकर बैठ गया और पूछने लगा, "कहां रहे सानन्द! आज तो प्रधानमंत्री ने कमाल का वक्तव्य दिया है?"

"क्या कहा है?"

"यही कि तिब्बत को चीन के अधीन होकर रहना चाहिए। तिब्बत सदा चीन के अधीन रहा है।"

"सत्य! दुनिया के इतिहासज्ञ हमारे प्रधानमन्त्री का वक्तव्य देख कर हंसेंगे।"

"उनके हंसने से क्या होता है। जब तक वे इतने विशाल देश के विशाल बहुमत का प्रतिनिधित्व करते हैं, तब तक दुनिया का क्या अधिकार है कि वे इन पर हंसी करें?"

"बात तो अपने देश की है। परन्तु अपने देश में इतिहास जानने वाला ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौन है? देश मूर्खों से भरा पड़ा है इस कारण उनका राजा भी विद्वान होना आवश्यक नहीं। आप जैसे लोग जो इस वक्तव्य के मिथ्यात्व को जानते हैं उनका देश में कोई अस्तित्व नहीं है।

"फिर एक बात और है, इतिहास तो घटनाओं को बताता है। उन घटनाओं का अर्थ नहीं बताता। अर्थ तो मनुष्य अपने जन्म-जन्मान्तर के संस्कारों से लगता है। पण्डितजी तो मुगलों को यहां के नागरिक और राणा प्रताप को देशद्रोही मानते हैं।"

"परन्तु अब तो पण्डितजी अपनी भूल स्वीकार कर चुके हैं।"

"परन्तु उन्होंने अपनी पुस्तकों में संशोधन नहीं करवाया। यदि वे अपने इस विवेचन का संशोधन जीवन-काल में न कर गये तो भविष्य में होने वाली सन्तान ऐसे अनभिज्ञ व्यक्ति के भारत जैसे देश के प्रधानमन्त्री बन सकने पर विस्मय किया करेगी।"

"भविष्य किसने देखा है?"

"जो इतिहास को ध्यान से पढ़ते हैं भविष्य को भली-भांति समझते हैं। देखो, जब राउंड टेबल कांफ्रेन्स में रेमजे मैकडानेल्ड भारत को स्वराज्य देने की बात कर रहा था, उस समय चर्चिल ने कहा था बिना सेना को अंग्रजों के हाथ में रखे स्वराज्य देने से हिन्दू-मुसलमान हिंसक बन पशुओं की भांति एक-दूसरे को कच्चा चबा जायेंगे। और उसकी यह भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई। यह सन् 1931 की बात है। देश-विभाजन हुआ सन् 1947 में। अर्थात् इतिहास का जानने वाला पन्द्रह-सोलह वर्ष पहले ही भविष्य को समझ गया था।"

"चर्चिल तो 'वार मांगर' था। उस बदमाश और उसके साथी टोड़ी दलवालों ने ही तो हिन्दू-मुसलमानों में फूट डलवाई थी।"

सानन्द हंस पड़ा। हंसकर उसने कहा, "मदनजी! आप भी कुछ इतिहास पढ़ा करिये। इन अशिक्षित कांग्रेसियों की बातों को बिना प्रमाण के स्वीकार करने से स्वयं भी अशिक्षित ही कहायेंगे।

"देखिये इसी 'वार मांगर' की एक और बात बता दूं। द्वितीय विश्वयुद्ध में और उसकी समाप्ति पर वह निरन्तर कह रहा था कि कम्युनिस्ट नाजियों से कम खूंखार नहीं हैं। इनको उन्नति करने नहीं देना चाहिए। परन्तु मूर्ख लेबर पार्टीवाले उसको 'सीनाइल' कहते थे। परन्तु उसी ने अपने अनवरत पुरुषार्थ और अचूक सूझ-बूझ से इंग्लैड को मुसीबत से निकाला था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु लेबर पार्टी से ही तो हमको स्वराज्य मिला था। कहीं चर्चिल प्राइम मिनिस्टर होता तो भारत को स्वराज्य नहीं मिलता।"

"यह ठीक है। स्वराज्य 1947 में न मिलता परन्तु यदि हम 1935 के विधान को मान लेते तो देश का विभाजन न होता। राजा-महाराजाओं का चैम्बर भारत की व्यवस्था में सन्तुलन रखने वाला एक प्रभावशाली अंश होता; पं. जवाहरलाल देश को चीन और रूस के चंगुल में फंसाने वाला न होता। समय पाकर जहां मुसलमान अपना पृथकत्व का भाव त्याग देते वहां राजा-महाराजा भी इंग्लैंड के 'लॉर्ड्स' की भांति देश-हित में एक शक्ति बन जाते।

"इसी प्रकार 1947 में स्वराज्य न मिलता तो कनाडा आस्ट्रेलिया की भांति का औपनिवेशिक राज्य मिल जाता। तब भी देश का विभाजन न होता और हम आज से अधिक शक्तिशाली और संगठित होते।"

"यह मत तो आज भारत में किसी का भी नहीं है।"

"वह इसलिए कि इस दिशा में कभी किसी को विचार करने का अवसर भी तो नहीं दिया गया। एक समय था कि महात्मा गांधी जी हमारे देश के डिक्टेटर थे। और अब पंडित जवाहरलाल नेहरू डिक्टेटर हैं। महात्माजी की डिक्टेटरी चलती थी भूखे रहकर, मर जाने की धमकियों से, और पंडित जवाहरलाल की डिक्टेटरी चलती है जनसाधरण की अनभिज्ञता से लाभ उठाकर।

"कभी भी विचारशील लोगों को स्वतन्त्र होकर विचार करने का अवसर नहीं दिया गया। जब भी किसी विचारशील व्यक्ति ने महात्मा जी अथवा पंडितजी से मतभेद प्रकट करने का साहस किया तो जनसाधारण की हूं-हूं में उसकी आवाज को डुबो दिया गया।

"सन् 1942 में ऐसा ही हुआ। खिलाफत-आन्दोलन को कांग्रेस के कार्यक्रम में लाने के लिए नेताओं के विरुद्ध बाजारी लोगों को खड़ा कर दिया गया।

"देश-विभाजन को इसी प्रकार के लोगों से स्वीकार कराया गया। गांधीजी यह कहते-कहते कि पाकिस्तान उनकी हड्डियों पर बनेगा, एकदम जवाहरलाल और पटेल के पाकिस्तान मान जाने का समर्थन करने लगे और अपने नाम का वास्ता डालकर कांग्रेस कमेटी से पाकिस्तान का समर्थन मांगने लगे।

"फिर पाकिस्तान को पचपन करोड़ रुपया दिलाने के लिए भूख हड़ताल पर बैठे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब कम्युनिस्टों का तिब्बत पर अधिकार माननेवाले, देश के भाग्यविधाता बन बैठे हैं। यह सब इस कारण कि समय से पूर्व अनुभवविहीन, देश से अधिक अपनी ख्याति के अभिलाषी नेतागणों को स्वराज्य के बाद अधिकार मिल गया है।"

"परन्तु सानन्द! देखो न, वर्तमान स्वराज्य में भारत की जो भी उन्नति हुई है वह कितनी पीछे पड़ जाती, यदि 1947 में स्वराज्य न मिलता।"

"हां भाई! आज तो प्रातःकाल से ही उन्नति के दृश्य देखता आ रहा हूं। एक दृश्य में एक पुरुष को स्त्री को कुत्ते की तरह नोंचते हुए देख आया हूं। दूसरे दृश्य में एक आदरणीय विद्वान को एक स्त्री को किसी धनी-मानी की रखैल बनने की सम्मति देते देख आया हूं और एक अन्य दृश्य में एक उच्च वेतनभोगी अधिकारी को कुछ रुपयों की रिश्वत लेने के लोभ में एक निर्धन वृद्धा को मृतशव की भांति टांग से घसीटकर सड़क के किनारे फिंकवाते देख आया हूं।

"मत बात करो इस उन्नति की बात। ये सड़कें, ये बिजलियां और ऊंची-ऊंची इमारतें अथवा मोटरों की भांय-भांय तथा रेलों की खटखट को कोई भी सही दिमाग वाला उन्नति नहीं मान सकता। ये सड़कें उन्नति नहीं, जब उन पर चलने वाले जेबकतरे हों, उन कारखानों से उन्नति का परिचय नहीं मिलता जिनमें देश के शूद्र समाज का निर्माण हो अथवा उन हवाई जहाजों से देश-उन्नति का भान नहीं होता, जिनमें चोर और डाकू यात्रा करते हों।"

"आज क्या हो गया है तुम्हें सानन्द।"

"हां भाई! बताया तो है कि देश में होने वाली प्रगति के विशेष दर्शन हो रहे हैं आज।"

सतीश आया तो सानन्द ने किताब लाइब्रेरियन को वापस कर दी और तीनों चाय पीने स्टैंडर्ड में जा पहुंचे। सानन्द को यह देखकर विस्मय हुआ कि एक मेज पर डाक्टर माथुर अकेला बैठा हुआ सैंडविचेज खा रहा है। दोनों की दृष्टि मिली तो माथुर ने सानन्द को अपने पास बुला लिया।

तीनों मित्र उस ओर ही आ गये और माथुर के निमन्त्रण पर उसी मेज पर बैठ गये। मेज पर पहले ही प्लेटें रखी थीं, परन्तु माथुर अकेला ही था। माथुर ने कहा, "आज मैंने टेलीफोन पर पांच व्यक्तियों के लिए यह टेबल रिजर्व कराई थी। मेरे चार अन्य मित्र आनेवाले थे। आधे घण्टे की प्रतीक्षा के अनन्तर जब वे नहीं आये तो मैं अकेला ही चाय पीने लग गया था और अब आप लोग आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गये हैं। पांच से तो चार कम ही होते हैं, वैसे आज यहां किस प्रकार आना हुआ है?''

उत्तर दिया मदनगोपाल ने। वह डाक्टर को भली-भांति जानता था और उसको सानन्द के साथ उसके सम्बन्ध का भी ज्ञान था। उसने कहा, ''डाक्टर साहब! आज सानन्द नित्य से कुछ अधिक उदास है। इस कारण आज हम नित्य से कुछ अधिक अच्छे स्थान पर चाय पीने के लिए आये हैं।''

''क्यों, उदास क्यों हो जी?''

''इसको आज हिन्दुस्तान उलटे मार्ग पर चलता हुआ दिखाई दे रहा है।''

''इससे पूर्व सीधे मार्ग पर चलता हुआ दिखाई दे रहा था क्या?''

सानन्द ने कहा, ''नहीं, यह बात नहीं पिताजी!''

''ओह!'' डाक्टर ने बीच में ही टोकते हुए कहा, ''ऐसे उदास होना तो बहुत अच्छा रहा। आज तुमने पहली बार मुझे पिताजी कहा है।''

''जी!'' मैंने जान-बूझकर ही कहा है। बात यह है कि पिता शब्द को मैं बहुत ही आदर का सूचक मानता था और सदा उस व्यक्ति के लिए ही प्रयोग करता था जिसके लिए मेरे मन में बहुत आदर था। आज वह व्यक्ति भी रेत का पहलवान दिखाई दिया है। थोड़ी सुख-सुविधा के सम्मुख ही वह गिरकर समतल हो गया है। जब बड़े-बड़े पहलवान गिरने लगे तो फिर छोटों को भी बड़ा मानने में संकोच नहीं रहा।''

''बहुत चतुर हो बरखुदार! मेरा आदर भी कर दिया और मुझ को छोटा भी बना दिया। क्या अपने पिताजी से लड़कर आये हो?''

''जी नहीं लड़ता तो मैं किसी से भी नहीं हूं। जहां मतभेद हुआ, वहां से मैं किनारा कर लेता हूं। आज पिताजी से एक सैद्धान्तिक मत भेद हो गया तो उनसे कुछ कहे बिना चला आया हूं।''

''किस विषय पर मतभेद हो गया?''

इस समय बैरा दो टी पॉट और रख गया। खाने की अन्य वस्तुएं भी आ गईं। मदनगोपाल चाय बनाने लगा।

सानन्द ने अपने श्वसुर के प्रश्न का उत्तर दे दिया, मनुष्य में कुछ तो जन्म से ही श्रेष्ठताएं रहती है। एक देहाती अनपढ़ गंवार भी मानव होने के नाते एक प्रकार के आदर का अधिकारी होता है। यह उसके कुत्ता-बिल्ली आदि न होने के कारण है। इस आदर को ही मैं मानव अधिकार का नाम देता हूं। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकार में एक बात है उनकी रुचि-अरुचि। रुचि-अरुचि बलपूर्वक बदली नहीं जा सकती। जब कोई पढ़ा लिखा विद्वान इस रुचि-अरुचि में भी बल प्रयोग करे अथवा धन-वैभव के प्रलोभन को क्षम्य मानने लगे तो मानवता की जड़ों में तेल दिया जाता अनुभव होने लगता है।"

"तो यह बात तुमने आज देखी है? बरखुरदार! यह बात तो मानव-जाति में आदिम-काल से ही चली आ रही है।"

"हां, परन्तु पिताजी! मैं उन सबको जो ऐसा किया करते थे, मूर्ख मानता था। आज यही बात एक विद्वान, सभ्य सुशील सही दिमागवाले व्यक्ति को करते देखा तो फिर बुद्धिमान और मूर्ख में अन्तर मिट गया है।"

"और अगर मैं यह कहूं कि यह अन्तर तो पहले भी नहीं था, परन्तु आंखो पर रंगीन चश्मा चढ़ा था। आज एकाएक वह चश्मा उतर गया है और तुमको हम सब समान दिखाई देने लगे हैं। हां, एक बात मैं कह देना चाहता हूं कि बजाय अब अपने पिताजी को मूर्खों की पंक्ति में रखने के तुम मुझ-जैसों को विद्वानों की पंक्ति में क्यों नही समझ लेते। इतना समझते ही तुम्हारी उदासी दूर हो जायेगी और तुम भी उस उन्नति के मार्ग पर चल पड़ोगे, जिस पर मैं चल रहा हूं और कदाचित् जिस पर तुम्हारे पिताजी भी चलने का यत्न कर रहे हैं।"

सानन्द समझ रहा था कि एक विचार से माथुर साहब ठीक कह रहे हैं। मानवता का जो मापदण्ड वह अपने हाथ में लिये हुए है, उससे तो सभी बौने दिखाई देने लगे हैं। उस मापदण्ड से उसको अपने पिता एक ऊंचे दर्जे के व्यक्ति दिखाई दिये थे। परन्तु पहली ही परीक्षा के समय वे भी छोटे ही रह गये।

वह विचार करने लगा था कि क्या वह मापदण्ड पुराना हो गया है और उसे फेंक देना चाहिए?

सानन्द ने उत्तर देने से बचने के लिए चाय की प्याली उठा चुस्कियां लगानी आरम्भ कर दीं।

मदनगोपाल ने चुस्की लगाते हुए कहा, "अब बताओ भैया! आज मिले हो अपने गुरु से। नित्य हमको ही उपदेश दिया करते थे, अब दो न उत्तर!"

"इसका उत्तर तो मदनगोपाल! विचारकर ही दिया जायेगा। ये मुझसे बहुत बड़ी कुर्बानी चाहते हैं। मैं अपने हाथ में एक मापदण्ड लिये घूमता था और प्रत्येक व्यक्ति को उससे ही मापता फिरता था। मैं स्वयं को भी उसी मापदण्ड से मापता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपका कहना है कि मेरा मापदण्ड बहुत ऊंचा है। उससे तो कोई भी व्यक्ति पार नहीं उतरेगा। इस कारण मुझे उसको फेंक एक छोटा मापदण्ड बना लेना चाहिए।

"मेरे लिए कठिनाई यह आ जायेगी कि मेरा मापदण्ड अन्य बहुत से लोगों को तो माप लेगा, परन्तु मैं स्वयं उससे ऊंचा सिद्ध होने लगूंगा।

"तब या तो मुझे मापदण्ड बड़ा करना पड़ेगा अन्यथा स्वयं को छोटा बनाना पड़ेगा।

"इन दोनों बातों में ही मैं अभी निर्णय नहीं कर सका।"

डाक्टर माथुर ने कह दिया, "मैंने सुना है कि तुम अब एक कारखाने के मैंनेजिंग डायरेक्टर बनने जा रहे हो? इससे तो तुम स्वयं ही हमारे समान बन जाओगे और उसके लिए उपयुक्त मापदण्ड तुम्हारे लिए भी उपयुक्त ही हो जायेगा।"

"परन्तु यह आपको किसने बताया है कि हमारे यहां कोई कारखाना चालू करने का विचार है और उसमें मैं मैनेजिंग डायरेक्टर बनने वाला हूं?"

"यह गलत है क्या?"

सानन्द को स्मरण हो आया कि कम्पनी में एक हिस्सा तो डाक्टर माथुर का भी है। उसने कहा, "कल तक तो यह बात ठीक थी, परन्तु आज वह सत्य नहीं प्रतीत होती।"

"क्यों?"

"मैं यही विचार करता हूं कि क्या होगा बहुत धनवान बनने से। मैंने देखा है कि जब धन एकत्रित होने लगता हैं तो इसके लिए मोह बढ़ता चला जाता है। साथ इसको किसी धर्म-कार्य में व्यय करने की बुद्धि ही नहीं रहती। मैंने देखा है कि दान-दक्षिणा में भी कांग्रेस को ही सुपात्र समझा जाता है।

"कांग्रेस को देने का अर्थ तो है कि प्राप्ति में और भी वृद्धि और फिर अधिक व्यवसाय; जहां इस होड़ का अन्त होना हैं, उधर तो किसी का ध्यान जाता ही नहीं। इससे मेरी तो समझ में नहीं आ रहा कि धनी बना ही किसलिए जाय?"

"तुम्हारे अक्ल सीखने में अभी कुछ थोड़ी-सी कमी रह गई है। सानन्द! कितनी आयु हुई है तुम्हारी?"

"इस समय तीस पार कर चुका हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अभी दो वर्ष की कमी है। मैं समझता हूं कि बत्तीस वर्ष के बाद तुम्हारी अक्ल-दाढ़ निकलने लगेगी।

"देखो, मेरा कहना मानो। मनेजिंग डायरेक्टर बन जाओ, कारखाना लगते-लगते दो वर्ष निकल जायेंगे। तब तक तुम्हारे ज्ञान-चक्षु खुलने लगेंगे और तुम भी सम्पन्नता के राज-पथ पर चलने लगोगे। तब तुम अपनी योजनाएं चलाने का यत्न करना। मैं यदि तब तक जीवित रहा, तो इन्हीं मित्रों के सम्मुख फिर चाय-पार्टी दूंगा और इस विषय पर तुमसे बातचीत करूंगा।"

: 3 :

एक बात तो सानन्द समझ रहा था कि धन बहुत बड़ी शक्ति है और इसको प्राप्त कर देश में कोई भला-कार्य किया जाय तो कोरे लेख और पुस्तकें लिखने से तो कहीं अधिक हितकर होगा।

आज वह घर पहुंचा तो उसने देखा कि अनन्ता ने अपना एक नौकर रख लिया है। वह भोजन आदि बनाने के लिए था। समर्थ तथा उसके घर में आये अतिथियों का भोजन बनाने तथा उसको खिलाने-पिलाने के लिए चार नौकर पहले थे। यह उनसे पृथक था। कोठी में चार रसोईघर बने थे। अभी तक दो ही प्रयोग होते थे। तीसरा आज अनन्ता ने चालू कर दिया। उसने बिजली की घंटी भी इस रसोई-घर में लगवा ली थी। आज अनन्ता ने समर्थ से कहकर अपने कमरे के सैट के साथ ही एक और सैट अपने अधिकार में ले लिया जिससे कि उसके आनेवाले अतिथि वहां पर रह सकें।

सानन्द आया तो पहले भैया का स्वास्थ्य-समाचार लेने चला गया। वहां सुचाला पहले से ही बैठी थी। समर्थ के सिर पर अभी पट्टी बंधी ही थी। इस पर भी वह उठकर अपनी मेज पर कार्य कर रहा था।

उसने भीतर पहुंचने पर कहा, "तो भैया! अब आप ठीक हैं?"

"हां मगर मैं अभी भी घर से बाहर नहीं जा सकता। इन पट्टियों के साथ बहुत भद्दा दिखाई दूंगा। आज उद्योग-मन्त्रालय से एक पत्र आया है। मन्त्री महोदय ने बुलाया है। कारखाने के विषय में कुछ पूछताछ करना चाहता है। मैं समझता हूं कि तुम कल मेरा पत्र लेकर चले जाओ।"

"नहीं भैया! यह काम मुझसे नहीं हो सकेगा। कुछ लेने-देने की बात होगी जो मैं नहीं कर सकूंगा।"

"तो कौन जायेगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप लिख दीजिये कि आप बीमार है। डाक्टर ने एक सप्ताह तक घर से निकलने के लिए मना किया हुआ है।"

"नहीं सानन्द! काम ऐसे नहीं चल सकता। पिताजी से कहता हूं कि वे चले जायें। यदि वे भी न गये तो दाताराम को भेजना पड़ेगा।"

"मैं समझता हूं कि पिताजी को कष्ट देने की अपेक्षा दाताराम को भेजना ठीक रहेगा।"

"वह कुछ मूर्ख हैं। प्रायः समझाया कुछ जाता है और वह कर कुछ आता है।"

सुचाला चुपचाप खड़ी अपने पति की निन्दा सुन रही थी। सानन्द ने उसके मुख पर देखा तो उससे आंखें मिल गईं। सुचाला मुस्कराकर मुख दूसरी ओर कर खड़ी हो गई।

सानन्द इसका अभिप्राय समझने का यत्न कर रहा था। उसको सुचाला के मुस्कराने का अर्थ समझ में नहीं आया। समर्थ का ध्यान दूसरी ओर था। एकाएक सानन्द की ओर घूरकर पूछने लगा, "अनन्ता से मिलकर आये हो?"

"नहीं, अभी उधर नहीं गया। क्या कोई नई बात है?"

"हां, अनन्ता ने 'गवर्नमेंट विद-इन गवर्नमेंट' बना ली है।"

"क्या मतलब?"

"उसने अपना रसोइया पृथक् रख लिया है। रसोई-खाना भी पृथक् ले लिया है। अपने अभ्यागतों के लिए कमरों का एक अन्य सैट भी ले लिया है। वह यह भी कह गई है कि कोठी के उस भाग को जो उसने अपने लिए ले रखा है, किराया देगी।"

सानन्द हंस पड़ा। उसने कहा, "भैया! तुमने स्वयं ही जो कहा था कि वह अपना खाना-दाना पृथक् कर ले। इस पर भी यह सब बखेड़ा करने से तो मुझे दरियागंज जाकर रहना अधिक पसन्द था; सुबह मान भी गई थी। फिर स्वयं ही यहां रहने का निर्णय कर लिया क्यों? मैं नहीं कह सकता। इसमें मैं दखल नहीं दूंगा। मेरा सम्बन्ध तो आपके कारोबार में सम्मिलित होने से है। मैं अभी भी इस विषय में स्थिर चित्त नहीं हूं। प्रातः यहां से जाते समय मेरे मन में दृढ़ संकल्प था कि मैं अपना भावी जीवन लेखनकार्य में ही व्यतीत करूंगा। ब्राह्मण के पुत्र को अधिक धन एकत्रित करने का कोई प्रयोजन नहीं है।

"परन्तु आज अनन्ता के पिता मिले थे, उन्होंने पुनः मन में मैल भर दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
167851
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

है।"

"क्या मैल भर दिया है?"

"उन्होंने यह चुनौती दी है कि मैं सब अपनी विषमता भूल जाऊंगा। धन होने से मेरी आंखों पर से रंगीन चश्मा उतर जायेगा और मुझको दुनिया अधिक सुन्दर और आकर्षक तथा रहने योग्य दिखाई देने लगेगी। मैं उनकी यह चुनौती मान गया हूं।"

इस पर समर्थ ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा, "तब तो मुबारक हो!"

"फिर भी मैं विचार करता हूं कि अपने मकान में रहकर भी तो मैं आपके व्यवसाय में भागीदार बन सकता हूं।"

"देखो सानन्द! घर की बात घर की रानियां करेंगी। यह बात तुम अनन्ता पर छोड़ो। तुम तो अपने श्वसुर की चुनौती का उत्तर तैयार करने में लगो।"

"सानन्द वहां से उठ अपने कमरे में गया। उसके जाने पर समर्थ ने सुचाला से कहा, "धन-सम्पदा नमक की खान के समान है। जो इसमें घुसता है वह नमक ही हो जाता है।"

"भैया! सानन्द को बहुत तंग नहीं करना चाहिए। वह साधु स्वभाव का व्यक्ति है। उसको तो अपने काम में ही लगा रहने देते तो ठीक था।"

"तो उसकी योग्यता का परिवार को क्या लाभ होगा?"

"आखिर अन्य सब अयोग्य हैं क्या? माधव के पिता कह रहे थे कि आपको कम्पनी का मैंनेजिंग डायरेक्टर बनना चाहिए। ठेकेदारी का काम धीरे-धीरे समाप्त कर देना चाहिए। तब तक वे इसको संभाल ही रहे हैं।"

"नहीं सुचाला! तुम नहीं समझतीं। अभी दो-तीन योजना तक तो ठेकेदारी चलेगी ही। साथ ही मैं कम्पनी में अनन्ता का हिस्सा रख रहा हूं। इससे उसके पिता और उनके दोस्त हमारे काम में रुचि लेने लगे हैं। और उनकी इस काम में रुचि बनी रहने से बहुत-सी कठिनाइयां दूर हो जायेंगी।"

सुचाला निरुत्तर हो गई। उसी समय दाताराम आ गया और समर्थ अगले दिन उसको उद्योग-मन्त्रालय में जाकर सेक्रेटरी से बातचीत करने के लिए समझाने लगा। समर्थ ने बताया कि वह कुछ लेने-देने का वचन देकर न आये। हां, सुझाव देनेवालों को निराश भी नहीं करना चाहिए। उनकी आशा को बनी रहने देना चाहिए। इस प्रकार दो-चार दिन में वह स्वयं जाने योग्य हो जायेगा। तब वह स्वयं ही उनकी मांग से निपट लेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सानन्द आया तो मलावी उठकर अपने कमरे में चली गई। वह कुमुद को अपनी गोद में उठाकर ले गई और कमल तथा सोम उसके पीछे-पीछे चले गये। मलावी के तो अब केवल गालवाले घाव पर ही पट्टी रह गई थी। माथे की पट्टी खुल गई थी।

सानन्द ने अनन्ता को अकेले देख कह दिया, "तुम तो मक्खी की भांति मकड़ी के जाले में फंसी जाती हो?"

"कैसा जाल?"

"यह धन-दौलत प्रलोभन हैं। अब तुमने यहां रहने का पक्का प्रबन्ध कर लिया है। दिन-रात धन-वैभव देखा करोगी और स्वयं भी वैसा ही प्राप्त करने के लिए यत्नशील रहने की इच्छा करोगी। धन का वैभव तो धन होने से ही हो सकता है। अतः धन एकत्रित करने में लग गये तो फिर किसी काम-काज के नहीं रहेंगे।"

"दखिये जी! मेरा सम्बन्ध तो यहां रहने से है। आपके काम-काज से नही। मैं बच्चों को खेलने-कूदने के लिए यह स्थान दरियागंज की अपेक्षा अच्छा समझती हूं और यदि आपके भैया उचित किराया ले लें तो मैं अपने डिप्लोमैटिक एन्क्लेववाले मकान के किराये में से दे दूंगी। कुछ घर का खर्च बढ़ जायेगा। मैंने एक रसोइया-बैरा रख लिया है। उसका वेतन साठ रुपया मासिक और साथ में भोजन देना होगा। यह भी मैं दे दूंगी। शेष तो आप देते ही हैं। रही कारखाने में काम करने की बात? यह आप जानिये और आपके भैया जानें।"

"तुम क्या समझती हो, वे कितना किराया मांगेंगे?"

"मैं तीन सौ रुपया मासिक तक देने के लिए तैयार हूं।"

"अगर वे इतना मान जायेंगे तो मैं दरियागंजवाला मकान छोड़ दूंगा। हां, एक बात और करनी पड़ेगी। एक छोटी-सी मोटर-कार रखनी पड़ जायेगी।"

"तो रख लीजिये। कम-से-कम एक स्कूटर तो रख ही सकते हैं।"

"स्कूटर नहीं मोटर रखूंगा। शर्त यह है कि तुम स्वयं चलाना सीख लो।"

"कितना खर्च बैठ जायेगा?"

"दो सौ रुपया महीने में काम चल जायेगा।"

"यह तो हो जाएगा।"

"मलावी के विषय में क्या सोचा है?"

"वह आज माताजी के पास गई थी किन्तु वहां से उन्होंने उसे जवाब दे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया है।"

"क्यों?"

"इसलिए कि वह एक प्रलोभन है। उसको वह सदा अपने पुत्रों की दृष्टि में नहीं रहने देना चाहती।"

"तो फिर?"

"वह मुझसे पूछ रही थी कि क्या मैं भी इसी प्रकार सोचती हूं और उसे आपकी दृष्टि से बचाये रखना चाहती हूं।"

"तो तुमने क्या उत्तर दिया है?"

"मैंने तो यही कहा है कि आपसे पूछकर बताऊंगी। किन्तु वह शीघ्र ही इसका उत्तर चाहती है।"

"जल्दी किस बात की है?"

"यह तो उसने बताया नहीं। हां, प्रतीत होता है कि वह इस समय उठकर इसलिए गई है जिससे कि उसकी अनुपस्थिति में हम उसके विषय में बात कर सकें।"

"आज प्रातः तो वह कह रही थी कि उसका अब मरने के लिए मन नहीं करता। परन्तु माताजी के यहां से वापस आने के बाद वह गम्भीर और दृढ़ निश्चयी-सी दिखने लगी है। उसके मुख की हंसी और प्रफुल्लता विलीन हो गई है। बच्चों के विषय में भी वह कुछ उदासीन सी प्रतीत हो रही है।"

यह सुन सानन्द गम्भीर हो गया। उसने पूछा, "तुमको उसके इस समय के मन की अवस्था का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।"

"मैं चुपचाप उसकी चेष्टाओं का अध्ययन करती रही हूं। उसका परिणाम आपको बता रही हूं। इस परिवर्तित अवस्था में ही सम्भवतया उसने कुछ करने का निश्यच कर लिया है। या तो वह पुनः आत्महत्या करने के विषय में सोच चुकी है अथवा आपके भैया की सेवा में जाने के विषय में निश्चय कर लिया है। कुछ और भी करने का विकल्प उसके मन में हो सकता है। इतना मैं निश्चित कह सकती हूं कि जो कुछ भी निश्चय उसने किया है वह किसी विवशता के कारण ही प्रतीत होता है। उसका मन उसके लिए अभी तैयार नहीं हो पाया है।"

"मैं समझता हूं कि शीघ्रातिशीघ्र तुम उसको अपना निर्णय बता दो जिससे वह अनिश्चित अवस्था में न रहे। तदनन्तर उसका भावी कार्यक्रम जानकर उसको सन्मार्ग दिखाने का यत्न किया जाय।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस विषय में मैंने कोई निर्णय नहीं किया है। एक दिन आपकी भाभी ने मुझसे कहा था कि मैं जानकी के स्थान पर मलावी को नौकर रख लूं। मैंने कहा था कि वह इस घर में नौकर बनकर नहीं रह सकती। वह तुरन्त ही मालकिन बन जायेगी। मैं उस समय वही बात विचार रही थी, जो आज आपके माता-पिता सोचते हैं। परन्तु आज मेरे विचार बदल गये हैं।"

"अब क्या विचार बन गये हैं?"

"मेरा आपसे विवाह हुआ है। इसका अभिप्राय यह नहीं कि मैं आपके जेल की दरोगन बन गई हूं। न ही मैं इस घर को कोई जेल समझती हूं।"

"क्या मतलब है इसका?"

"आप जैसे विद्वान व्यक्ति को भला मैं इस मामूली-सी बात का अर्थ बताऊंगी? देखिये, माताजी मेरी और आपकी पूजनीय हैं। वे स्वयं को हमारी संरक्षिका मान सकती हैं। परन्तु मैं तो न ऐसी हूं और न ही इस प्रकार की कोई इच्छा मेरे मन में है।

"एक बात और बता देना चाहती हूं कि आप ही सदा यह कहा करते थे कि प्रलोभनों में सदा दो पक्ष हुआ करते है। एक प्रलोभन और दूसरा प्रलोभित। प्रलोभन तो निर्जीव है। उससे गिला नहीं किया जा सकता। दोषी तो प्रलोभित व्यक्ति है। आप पिताजी के रिश्वत लेने के विषय में कह रहे थे। आपने यह भी कहा था कि इस पर प्रतिबन्ध भी व्यर्थ है। प्रतिबन्धों से कोई व्यक्ति पतित होने से बच नहीं सकता। यह तो सदा अन्तःप्रेरणा ही है जो किसी को काम, क्रोध ा, लोभ, मोह और अहंकार से बचा सकती है।

"अब आप बुद्धिमान हैं। आप जो कहेंगे वह मैं उसको कह दूंगी।"

"यह सब तो तुमने मेरे विषय में ही विचार किया है न? मैं समझता हूं कि यहां तक तो तुम्हारा विचार ठीक ही है। तुम अपने विषय में भी विचार कर लेती तो ठीक था। खर्च का भी प्रश्न है।"

"यह सब मैंने विचार कर लिया है।"

"तब ठीक है। मैं तनिक पिताजी से मिलने के लिए जा रहा हूं। तुम मलावी को सान्त्वना दे सकती हो। उसको तुम निस्संकोच कह सकती हो कि वह अपनी प्रिय बात कर सकती है और उसमें से जो सहायता मुझसे अथवा तुमसे वह चाहती है बता सकती है। यथा शक्ति उसे पूर्ण करेंगे।"

सानन्द अपने पिता के पास चला गया। जिस समय वह आया था, उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय उसके माता-पिता कोठी के लॉन में घूम रहे थे। इस समय अंधेरा हो जाने के कारण अपने कमरे में चले गये थे। सानन्द वहां जा पहुंचा। हरिशरणानन्द ठण्डा जल पी रहा था। सानन्द ने प्रणाम किया तो हरिशरणानन्द ने पूछा, "सानन्द! मलावी गई?"

"कहां?"

"उसको हमने अपनी सेवा से पृथक् कर दिया है।"

"परन्तु पिताजी! क्या आपने उसको कभी अपनी सेविका के रूप में रखा भी था? मैंने तो आपके पास उसको लड़की बनाकर रखवाया था। कल तक आपकी लड़की के रूप में ही वह आपके पास थी। जब वह कभी सेविका थी ही नहीं तो उसको सेविका के रूप में निकालने का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता।

"जिसने उसको आपके पास जिस रूप में रखा था, उसी रूप में वह रहेगी। अब आपके पास नहीं तो आपके पोते के पास उसकी बुआ बनकर रहेगी।"

"देख लो, हम तो उसको आग समझने लगे हैं।"

"हां, है तो। परन्तु पिताजी! इस भय से कि आग से हाथ भी जल जाते हैं, आपने कभी आग का प्रयोग बन्द किया है? यहां कोठी में ए. सी. करण्ट है। उसके छू जाने से मृत्यु हो जाती है, परन्तु इस भय से क्या कभी किसी ने अपने घर में बिजली लगवानी बन्द कर दी है?"

"कामाग्नि और पार्थिव अग्नि तथा विद्युत में कोई अन्तर नहीं समझते हो क्या?"

"पार्थिव पदार्थों का पार्थिव शरीर से सम्बन्ध है और मानसिक पदार्थ का मन से। सिद्धान्त यही है कि वह अनन्ता के पास जब तक उसके रहने की इच्छा होगी, रहेगी। अनन्ता का भी ऐसा ही मत है।"

हरिशरणानन्द ने बात बदल दी। उसने कहा, "कारखाने के विषय में अब क्या स्थिति है?"

"वही स्थिति है जो दो दिन पूर्व थी। मैंने भैया को बताया था कि मैं नियम और धर्म के विपरीत कुछ नहीं करूंगा। यदि इस शर्त के साथ भैया और आप लोग मुझे मैनेजिंग डायरेक्टर बनाना चाहते हैं तो मैं बनूंगा।"

"अधर्माचरण तो आरम्भ में ही होगा। समर्थ बता रहा था कि उद्योग-मन्त्रालय से पत्र आया है कि वह सचिव महोदय से मिले। उसका विचार है कि कुछ लेन-देन की बात हो रही है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अभी कम्पनी बनी नहीं, इस कारण मैं अभी मैनेजिंग डायरेक्टर नहीं हूं। इसी कारण उस पत्र में क्या लिखा है और उसका क्या अभिप्राय है, यह जानने की मेरी इच्छा नहीं है। यह मेरा काम भी नहीं है।

"भैया ने मुझे कल मन्त्रालय में जाकर बात करने के लिए कहा था। मैंने कह दिया है कि इस प्रारम्भिक स्थिति में मैं कुछ भी नहीं करूंगा।"

"तुम्हारे सिद्धान्त दुनिया से विलक्षण हैं।"

"जी, मैं तीन लोक से न्यारा हूं। इस पर भी मैं समझता हूं कि जो कुछ भी यह है सब आपका बनाया हुआ है।"

"मेरा कैसे?"

"आपने न्याय-दर्शन पढ़ाया था और उसके पढ़ने पर मैं युक्ति करने का एक ढंग सीख गया हूं। उस युक्ति का ही यह परिणाम है।"

"परन्तु मैं पढ़ानेवाला स्वयं उस ढंग को नहीं जानता क्या?"

"यह मैं कैसे बता सकता हूं। इस पर भी मैं एक बात जानता हूं कि बीज के अतिरिक्त भूमि का भी प्रभाव होता है। बीज तो आपकी शिक्षा थी और शेष भूमि का परिणाम है जिससे बीज से पेड़ और पेड़ से फल में विलक्षणता उत्पन्न हो गई है।"

हरिशरणानन्द गम्भीर होकर विचार करने लगा। इस पर निपुणा जो समीप ही बैठी थी, पूछने लगी, "सुना है तुम्हारी बहू किराया देकर इस कोठी में रहना चाहती है।"

"हां, मांजी!"

"क्या किराया दोगे?"

"किरायेदार किराये का निश्चय कैसे कर सकता है। मकान मालिक निश्चय करेगा। यदि वह किराया हमारी सामर्थ्य के बाहर होगा तो फिर विचार कर लिया जायेगा।"

"तुम्हारी सामर्थ्य कितनी है?"

"मां! किराया दे रही है अनन्ता। डिप्लोमैटिक एन्क्लेव वाले उसके मकान का किराया सात सौ रुपया आता है, उनमें से ही वह किराया देना चाहती है। वह और भैया इसका निश्चय करेंगे। साथ ही वह एक मोटर कार भी लेना चाहती है। मैं इसमें उसको सहायता दूंगा।"

"और यदि यहां का किराया इससे भी अधिक हुआ तो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो हम यहां नहीं रहेंगे।"

"मैं समझती हूं कि मलावी अनन्ता के साथ रहने वाली है तो मैं राय दूंगी कि तुम लोग या तो अपने दरियागंज वाले मकान में जाकर रहो अथवा हमारे पटेलनगर वाले मकान में जाकर रहने लगो।"

"अर्थात् यहां नहीं रहना चाहिए।"

"नहीं, दो पशु यदि एक ही तबेले में बांधे जायें तो वे या तो मिलेंगे अन्यथा परस्पर लड़ेगे। यदि पुनः लड़ाई हुई तो वह और भी भयानक होगी। मैं समर्थ की मां होने से उनके ऊपर आनेवाली अनिष्ट की सम्भावना तक को मिटा देना चाहती हूं।"

"परन्तु मैं भैया को पशु नहीं समझता।"

"इस पर भी उसने अपने पशुपन का प्रमाण ही दिया है।"

: 4 :

मां का दृष्टिकोण भिन्न था। इसने सानन्द को पुनः विचार में डाल दिया। ठीक था कि समर्थ ने अपने पशुपन का प्रमाण दिया था। यह पशुपन उस पर कभी भी आरूढ़ हो सकता है। उस समय दो में से एक बात हो सकती है, या तो मलावी समर्थ की बात को मान ले अथवा उसकी हत्या कर दे। यह भी हो सकता है कि इसमें उसकी स्वयं की हत्या हो जाये। सानन्द यह मानता था कि मलावी स्वेच्छा से समर्थ के साथ सम्पर्क बनाना चाहे तो कुछ अधिक हानि नहीं होगी। यह ठीक था कि दिल्ली में दिन-प्रतिदिन व्यापक होने वाली उच्छृखंलता एक ब्राह्मण परिवार में भी आ जायेगी। परन्तु यह हत्याओं के होने से तो अच्छी रहेगी। उसमें तो बाहर जगत में बात फैलेगी और मुकदमेबाजी भी होगी। सब परिचित और अपरिचितों में चर्चा होगी। परिवारवालों के चरित्र पर तो इसका और भी अनर्थकारी प्रभाव होगा। इस कारण अपने और मलावी के वहां रहने को सानन्द पुनः अकल्याणकारी मानने लगा था। यह तो वह समझने लगा था कि यदि उनके साथ रहते हुए मलावी स्वयं को सुरक्षित समझती है तो उसे घर से नहीं निकालना चाहिए।

रात के भोजन के समय तक वह माता-पिता के पास रहा। वहीं से वह उनके साथ ही डाइनिंग हाल में आ गया। सारे परिवार के लोग वहां पर उपस्थित थे। केवल समर्थ नहीं आया था। वह उठकर चलने का यत्न करता था तो उसको चक्कर आने लगते थे। डाक्टर की सम्मति से उसको पलंग पर ही भोजन दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता था। आजकल सुचाला भाई की सेवा-सुश्रूषा में लगी रहती थी।

डाइनिंग हाल में मलावी और अनन्ता पास-पास बैठी थीं। सुचाला और दाताराम एक साथ थे। सानन्द अनन्ता और सुचाला के मध्य में था। दूसरी ओर मलावी और निपुणा साथ-साथ हो गईं।

भोजन करते हुए निपुणा ने पूछा, "मलावी! क्या निश्चय किया है तुमने अपने विषय में?"

"मांजी! जो कुछ मेरे निश्चय करने की बात थी वह तो बहुत सरल थी। मैंने निश्चय कर लिया है। मेरे लिए तीन विकल्प थे। एक तो यह कि मैं समर्थ भैया के पास जाऊं और उनसे कहूं कि आज से मैं उन्हें 'भैया' न कहकर 'प्रिय' कहा करूंगी। इसके लिए मन तैयार नहीं हुआ। दूसरा विकल्प तो बहुत पुराना है। कुतुब की लाट पर चढ़कर कूद मरूं। एक कारण-विशेष से पहले यह विचार छोड़ा था और मैं जानना चाहती हूं कि वह अभी है कि नहीं। विचार करने पर विदित हुआ कि वह कारण अभी विद्यमान है। एक तीसरा विकल्प भी था। उस तीसरे विकल्प की सिद्धि से ही दूसरे विकल्प का त्याग किया जा सकता है। तीसरा विकल्प सिद्ध हो रहा प्रतीत होता है, उसमें एक थोड़ी-सी बात रह गई है। मैं समझती हूं कि वह भी सिद्ध हो जायेगी। तब मेरा निश्चय हो जायेगा।"

"वह तीसरी बात कौन-सी है?"

इसी प्रश्न पर मलावी गम्भीर हो गई। फिर कुछ विचारकर बोली, "वैसे तो आपको बताने के लिए मैं बाध्य नहीं हूं, फिर भी मैं आपको मां मान चुकी हूं इस कारण मैं आपसे कुछ भी छिपाकर रखना नहीं चाहती। आप आज्ञा दें तो मैं अभी-अभी बता सकती हूं। इस पर भी मैं प्रार्थना करूंगी कि आप कल तक इस बात को इसी प्रकार रहने दें। इसमें यदि मेरी अकेली का सम्बन्ध होता तो सरल बात थी। एक अन्य व्यक्ति भी इसमें सम्मिलित है। उसकी स्वीकृति लिए बिना बताना उचित नहीं होगा।"

इससे निपुणा गम्भीर हो चुपचाप भोजन करने लगी। सानन्द सुचाला से समर्थ के स्वास्थ्य आदि के विषय में पूछता रहा। सुचाला यथोचित उत्तर देती रही। बातों ही बातों में उसने बताया, "आज प्रातःकाल ही मैंने भैया से कहा था कि भाभी को तार देकर बुला लिया जाय। किन्तु डाक्टर की राय सुनकर कि सिर की हड्डी में किसी प्रकार की क्षति नहीं पहुंची है वह निश्चिन्त हो गये हैं। और उन्होंने भाभी को तार देने से मना कर दिया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु सुना था कि भाभी की माताजी तो अब ठीक-ठाक हैं?"

"हां, मगर मुझे कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि भैया अभी भी मलावी को अपनी अविवाहिता बनाने में सफल होने की आशा लगाये बैठे हैं। आज वे कह रहे थे कि उन्होंने मलावी को एक अशिक्षित, निर्धन और केवल युवती मात्र माना था। वे यह सोच ही नहीं सके थे कि वह उनके प्रयत्नों को इतनी दृढ़ता से विरोध करेगी।

"भैया ने यह माना है कि उनको मलावी के साथ शिक्षित और दृढ़निष्ठ युवती का-सा व्यवहार करना चाहिए था। अब वे अपनी पहली भूल को दोहरायेंगे नहीं।"

"किन्तु शिक्षित और निष्ठावान लड़की को वे किस प्रकार अपने अनुकूल करने का विचार कर रहे हैं?"

निष्ठावान लड़की के मस्तिष्क में निष्ठा के पात्र बदल देने से। वह कहते थे कि जैसे कोई दुर्गा का उपासक हो और उसको शिव का उपासक बनाना हो तो दुर्गा के स्थान पर शिव की महिमा उसके मन पर अंकित करनी चाहिए। वे कहते थे कि इस बात का ज्ञान प्राप्त करना है कि उसका उपास्य देव कौन है। जब पता चल जावेगा तो उसके अपने उपास्य देव के स्थान पर दूसरा देवता स्थापित करना होगा। इस प्रकार सब ठीक हो जायेगा।"

"और यदि उसका उपास्य देव, धर्म, निराकार धर्म हुआ, तब क्या करेंगे भैया?"

"उस अवस्था में निराकार के स्थान पर साकार देवता, स्थापित करना होगा। लोग सदा साकार को निराकार पर उपमा देते हैं।"

सानन्द समझ रहा था कि यह कामातुर व्यक्ति की भ्रान्ति ही है। अथवा एक धनी-मानी का प्रलाप भी कहा जा सकता है। इस पर भी अपनी आंखों के सामने एक नाटक का श्रीगणेश हो रहा है, वह ऐसा समझने लगा था। साधारण नाटक तो उस मार-पीट पर जो पिछले दिनों यहां पर घटित हो चुकी थी समाप्त हो जाते है। किन्तु इसमें यह नाटक उस मार-पीट से प्रारम्भ हुआ है। इसमें वह स्वयं को एक दर्शक मात्र समझता था। और इस नाटक को देख वह आनन्द लेना चाहता था। हां, एक बात वह मन में विचार रहा था कि कहीं नाटक दुखान्त होने लगा तो देखनेवाले का भी मजा किरकिरा हो जायेगा। इस कारण वह दर्शक से कुछ अधिक बनकर रहना चाहता था। परन्तु उसके सम्मुख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न यही था कि वह किस प्रकार कुछ अधिक बन सकता है।

एक बात उसने निश्चय कर ली थी कि भाभी सन्तोष को अपने पति के पास आ जाना चाहिए। साथ ही वह भी नहीं चाहता था कि वह पति-पत्नी के बीच में आये और एक-दूसरे की शिकायत करनेवाला बने।

रात वह सोने के लिए अपने कमरे में आया तो मलावी बच्चों को लेकर अपने कमरे में चली गई। कई रात से यही हो रहा था। अनन्ता ने मलावी को जानकी से अच्छी गवर्नेस समझा था। मलावी पढ़ी तो केवल हिन्दी ही थी परन्तु उसने अपने छोटे-से जीवन की घटनाओं पर भली-भांति मनन किया और कौशल्या ब्राह्मणी के साथ बैठकर उन पर विचार भी किया था। इससे उसमें एक विशेष प्रकार की प्रतिभा जाग पड़ी थी और उससे वह अपना मार्ग-दर्शन कर रही थी।

पिछले दिन की घटना से तो अनन्ता के मन में मलावी की प्रतिष्ठा बढ़ी ही थी, परन्तु उस दिन जब वह मलावी को अपना निर्णय बताने लगी तो एक और रहस्योद्घाटन हो गया और अनन्ता पुनः अपने पति के साथ परामर्श करने की आवश्यकता अनुभव करने लगी। अनन्ता इसके लिए एकान्त समय की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही थी।

जब सानन्द आया और सोने की तैयारी करने लगा तो अनन्ता ने कहा, "एक और बात का पता चला है।"

"किस विषय में?"

"मलावी के विषय में।"

"क्या?"

"आपके कहे अनुसार मैंने उसको आपके जाने के बाद बुलाया था और उसको मैंने आपके निश्चय से अवगत कराया। इस पर वह पीत-मुख मेरी ओर देखती रह गई। मैंने उसको समझाने की दृष्टि से कहा कि आपका कहना यह है कि जो उसको अपना प्रिय मार्ग लगता हो, उस पर वह निस्संकोच चल सकती है। इस मार्ग में हमसे यदि किसी प्रकार की सहायता की अपेक्षा हो तो उसके लिए भी वह निःसंकोच कह सकती है। हम यथा-शक्ति उसकी सहायता करेंगे।

"मेरा इतना कहना था कि वह मेरे पांव पकड़कर आंसू बहाने लगी। मैंने उसको सान्त्वना देने का यत्न किया जो वह कहने लगी कि इस आश्वासन से वह प्रसन्न तो है और उसके आंसू भी प्रसन्नता के ही हैं, किन्तु हम लोगों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी उदारतापूर्ण निर्णय करने से पूर्व हमको एक बात बता देना चाहती है। उसने बताया कि पहले तो उसका यही निश्चय था कि वह जीवन-भर हम लोगों को नहीं बतायेगी, परन्तु जब हम उस पर इतना उपकार कर रहे हैं तो वह हमसे कुछ छिपाकर रखना नहीं चाहती। इसमें उसको संरक्षण देने से पूर्व वास्तविक परिस्थिति का हमें ज्ञान होना भी आवश्यक है।

"उसने बताया कि जिस दिन पहले-पहल आप उसको कौशल्या ब्राह्मणी के झोंपड़े से लेने के लिए गए थे, उसी दिन से वह आपसे प्रेम करने लगी है। उसके बाद भी आपके विचारों को सुन और आपके व्यवहार को देखकर आपके प्रति उसके प्रेम में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। इस पर भी पिछले तीन वर्ष के उसके व्यवहार से उसका कहना है कि आपके प्रति उसका प्रेम वैसा ही है जैसा कि गोपियों का कृष्ण के प्रति था। वह आपको ऐसी ही देखती है जैसे कोई उपासिका अपने उपास्य देव को देखा करती है।

"उसका कहना है कि वह भविष्य में भी इसी प्रकार आपकी पूजा करती रहेगी और कभी किसी प्रकार का कष्ट वह आपको नहीं देगी। उसका प्रेम केवल आत्मा से सम्बन्धित है।

"उसके मुख से यह सुनकर तो मैं स्तब्ध रह गई। मैंने उससे जब यह पूछा कि अपने चित की शान्ति के लिए वह किसी से विवाह क्यों नहीं कर लेती? इस प्रकार दिन-रात कामाग्नि में जलते रहने से तो वह कभी अपना अनिष्ट कर लेगी।

"उसका कहना था कि उनका सम्बन्ध केवल आपकी आत्मा से है। यदि उसकी कामना शरीर और इन्द्रियों की होती तो इसकी तृप्ति तो कभी को हो चुकी होती। उसका कहना था कि उसको कई प्रस्ताव विवाह के मिल चुके हैं। समर्थ भैया ही केवल एक रात का उसको सवा लाख रुपया देना चाहते थे। इसके अतिरिक्त भविष्य में रहने के लिए बारह सौ रुपया मासिक देना उन्होंने तय किया था और साथ एक मकान भी। समर्थ भैया ने उसको यह भी बताया है कि उनकी एक प्रेमिका इससे पूर्व भी है। उसको भी वे इतना ही कुछ देते हैं।

"किन्तु वह कहती है कि उसे यह सब कुछ नहीं चाहिए। और साथ ही अपनी इच्छाओं की तृप्ति के लिए कभी उसका खयाल आपकी ओर गया भी नहीं है। उसका यह सम्बन्ध आत्मा का है शरीर का नहीं। उसके लिए आपके दर्शनमात्र ही पर्याप्त हैं इसलिए वह हमारे घर पड़ी है। वह हमारे साथ हमारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौकरानी बनकर रह लेगी।

"परन्तु मुझे आशंका थी कि यदि कभी भविष्य में उसका सम्बन्ध क्रियात्मक रूप ले लेगा, तो उस समय मेरी क्या स्थिति होगी? प्रायः यही देखा जाता है कि पत्नियों को उप-पत्नियों की अपेक्षा घटिया समझा जाता है और फिर उनका तिरस्कार होने लगता है। फिर मैंने विचार किया कि मेरा इस बात का ध्यान करना और उसके लिए चिन्ता करना मूर्खता है। अतः मैंने उसे यह बता दिया कि उसके इन भावों को मैं आपसे छिपाकर रख नहीं सकती। उसके भावों को सुनकर आप अपने मन में क्या समझेंगे, यह मैं नहीं कह सकती। यह जानकर कि एक सुन्दर लड़की आपके प्रेम-पाश में आबद्ध है और आपके संकेतमात्र से ही वह अपना सर्वस्व आपके चरणों में निछावर कर देगी, ऐसी स्थिति में आपके लिए क्या हितकर है और आपको क्या करना चाहिए, यह मैं उसको नहीं बता सकती थी। मैंने उसको बताया कि इस विषय में अब निर्णय करना आपके हाथ में है।

"उससे इतनी बात करने के उपरान्त हम भोजन करने के लिए चल पड़े। भोजन करते समय माताजी के साथ वह स्थिर चित्त हो बात कर रही थी। उस समय उसके मुख पर किसी प्रकार की मलिनता नहीं दिखाई देती थी।

"हां मैं समझती हूं कि उसने अपने मन का रहस्य बताकर स्वयं को हल्का अनुभव किया है। अब आप बताइये कि इस परिस्थिति में आप क्या पसन्द करेंगे?"

सानन्द भी इस रहस्योद्घाटन से आश्चर्यचकित रह गया था। कुछ विचारकर उसने कहा, "मेरे मन में उसके प्रति कभी पत्नी की भावना बनी ही नहीं। वह सदा मेरी दया की पात्र रही। कल वाली घटना के बाद तो मेरी यह धारणा दृढ़ हो गई है। इस पर भी मैं तुमसे पूछना चाहता हूं कि यदि कभी किसी समय मेरे मन में विकार उत्पन्न हो जाय और उसकी काल्पनिक प्रेम-भावना मुझको आकर्षित करने लगे तो तुम कैसा अनुभव करोगी?"

"मैंने इस विषय में बहुत मनन किया है और इस परिणाम पर पहुंची हूं कि इस परिस्थिति में मुझे न हर्ष होगा न विषाद। आर्थिक दृष्टि से मैं स्वतन्त्र हूं। पारिवारिक विचार से मैं सौभाग्य शालिनी हूं। मेरे एक लड़का और एक लड़की है और अधिक सन्तान की मुझे लालसा भी नहीं है और प्रोफिलेक्टिक्स आप पसन्द नहीं करते। इस कारण यदि आप मुझे रिटार्यड पत्नी बना देंगे तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे किसी प्रकार का दुःख नहीं होगा। यदि नई पत्नी पाकर आपने मेरा किंचित् भी अपमान किया तो मैं अपने बच्चों को लेकर अपने पृथक् मकान में चली जाऊंगी।"

"और ऐसा करते हुए तुम्हें दुःख नहीं होगा?"

"यदि आप इतने मूर्ख बन जायेंगे कि सात वर्ष तक मेरा इतना आदर-सत्कार कर मेरा अपमान करने लगेंगे तो मुझको आपसे पृथक् होने में किसी प्रकार का दुःख नहीं होगा। मूर्ख पति की अपेक्षा तो उसका न होना ही ठीक होगा।"

सानन्द हंस पड़ा। उसने कहा, "तुम तो अभी से स्थितप्रज्ञ हो गई हो। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है—

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते।।
दुःखेष्वनुद्विग्नमनः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते।।"

आप तो हंसी उड़ा रहे हैं। मैंने तो आपके सम्मुख अपने मन की वास्तविक स्थिति का वर्णन किया है। मैं आपसे अलिप्त नहीं हुई। यह तो तभी होगा जब आप वह मूर्खता करने लगेंगे जिसकी ओर आपने संकेत किया है।"

"मैं समझता हूं कि मैं मूर्ख नहीं हूं। मैं आशा करता हूं कि मैं मूर्खता करूंगा भी नहीं।"

: 5 :

अनन्ता अथवा सानन्द ने मलावी को कुछ भी नहीं कहा। मलावी भी इस विषय में उनकी ओर से किसी बात की अपेक्षा नहीं रखती थी। उसको सहायता देने की बात कह ही दी गई थी। अगले दिन प्रातःकाल उठकर वह अपने निर्धारित कार्य में लग गई। यद्यपि वह स्वयं को एक नौकर के समान मानने लगी थी परन्तु अनन्ता उसको घर की एक सदस्या ही समझती थी। इससे एक तो कोठी में नौकरों के सम्मुख उसका आदर बना हुआ था और दूसरे उसको परिवार का एक अंग मान वह यह प्रकट करना चाहती थी कि यदि मलावी का कभी भी उसके पति से सम्बन्ध बन गया तो यह सब इतनी सरलता से हो कि किसी को इस पर आश्चर्य न हो सके और किसी प्रकार का वितण्डवाद भी खड़ा न हो।

सानन्द ने मैनेजिंग डाइरेक्टर बनना स्वीकार कर लिया। सरकारी अधिकारियों की ओर से भी प्लास्टिक का सामान बनाने का कारखाना खोलने की स्वीकृति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त हो गई। उचित मशीनरी के लिए जर्मनी में आर्डर भी भेज दिया गया। वहां से इस कार्य के विशेषज्ञों को भी आमन्त्रित कर लिया गया। मथुरा रोड पर बदरपुर के समीप कारखाना बनने लगा।

इससे सानन्द के दैनिक कार्यक्रम में परिवर्तन हो गया। वैसे वह अभी भी प्रातःकाल उठकर तीन-चार घण्टे लेखन-कार्य करता रहता था और मध्याह्नोत्तर अपने अध्ययन-कक्ष में बैठकर स्वाध्याय करता था। कारखाने की ओर से पांच व्यक्तियों को जर्मनी में प्रशिक्षण के लिए भेज दिया गया था।

सानन्द के इस परिवर्तित कार्यक्रम के कारण उसके मित्र मदनगोपाल और सतीश को उसके दर्शन दुर्लभ होते गये। सानन्द अब पार्लियामेंट के समीप फटकता नहीं था। एक दिन वे दोनों उसके दरियागंज वाले मकान पर गये किन्तु मकान को ताला लगा देख उनको और भी चिन्ता हुई।

इन्ही दिनों एक दिन उसको सानन्द के श्वसुर डाक्टर माथुर स्टैंडर्ड में चाय पीते हुए मिल गये। मदन ने डाक्टर को 'गुड ईवनिंग' की तो डाक्टर माथुर ने कहा, "ओह! मिस्टर मदन! कहिए कैसे हैं? आप यहां कैसे? यहां तो किसी प्रकार का समाचार मिलना कठिन है।"

"मैं तो आपसे सानन्द के विषय में पूछने आया हूं। दो मास से अधिक हो गये हैं, उसके कभी दर्शन भी नहीं हुए।"

"हां, वह आजकल एक कारखाना बनवाने में लगा हुआ है। वह स्वयं उस कारखाने का मैनेजिंग डायरेक्टर बननेवाला है।"

"परन्तु वह रहता कहां है?"

"अपने भाई के पास, 15, फ्रैंड्स कालोनी में। एक तो वहां से कारखाने का स्थान समीप है, दूसरे भाई के समीप रहने पर उसके साथ परामर्श की सुविधा रहती है।"

मदन और सतीश एक दिन टैक्सी लेकर सानन्द से मिलने जा पहुंचे। मध्याह्न का समय था। संयोगवश उस दिन मलावी के अतिरिक्त वहां अन्य कोई था ही नहीं। जब मलावी को विदित हुआ कि वे सानन्द के मित्र हैं तो उसने उनको बैठाया और पानी आदि के लिए पूछा। मदनगोपाल ने उससे सानन्द के विषय में पूछा। मलावी ने बता दिया कि वह कारखाने गया हुआ है और प्रायः चार बजे के बाद वह वहां से लौटा करता है।

उस समय घड़ी में डेढ़ बज रहा था। इसका अभिप्राय था कि तीन घण्टे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक उनको वहां प्रतीक्षा करनी होगी। इससे मदन ने पूछा, "यदि आपको आपत्ति न हो तो हम यहां बैठकर उनकी प्रतीक्षा करना चाहते हैं।"

"मुझे क्या आपत्ति हो सकती है। आप बैठिए। बोलिए क्या पीयेंगे, चाय अथवा कुछ ठण्डा?"

"केवल ठण्डा पानी।"

मलावी ने उस दिन के समाचारपत्र और कुछ पत्र-पत्रिकाएं उनके सम्मुख रख दीं और बैरे को कहकर उनके लिए स्क्वैश की व्यवस्था करवा दी। मदन ने पूछा, "अनन्ता भाभी कहां हैं?"

"वे बाहर शापिंग के लिए गई हैं। अब तो आनेवाली ही होंगी।"

"वे आयें तो उनसे कह दीजिये कि सानन्दजी के दो मित्र बैठे हुए हैं।"

मलावी चली गई और ये लोग शर्बत आदि पीकर परस्पर बातें करने लगे। सतीश ने अपना अनुमान बताते हुए कहा, "यह सानन्द के भाई की पत्नी हो सकती है।"

"ऐसा लगता तो नहीं क्योंकि यह तो बहुत ही सादे पहरावे में है। यहां तक कि उसके हाथ में चूड़ियां भी नहीं हैं। सम्भवतया वह कोई नौकरानी होगी।"

"है बहुत सुन्दर वह।"

"हां, परन्तु तुम्हें क्या? जिसकी वह पत्नी होगी उसके लिए सौभाग्य की बात हो सकती है।"

"दर्शन तो तुमने और मैंने भी किये हैं, इस कारण कुछ अंशों में तो हम भी सौभाग्यशाली हैं।"

मदनगोपाल हंस पड़ा। उसने कहा, "सतीश। पराये घर में आकर इधर-उधर ताकना उचित नहीं होता।"

"आज के सोशलिस्टिक समाज में इतना तो अनुचित नहीं माना जाता। समाज के सब घटक अब पर्दे से बाहर आकर परस्पर मेल-मुलाकात करने में प्रगतिशील होना मानते हैं। सबसे बढ़िया बात है इसका निस्संकोच भाव से मुस्कराते हुए बातें करना।"

"प्रतीत होता है तुम तो इस पर मोहित हो गये हो?"

"वाह! इसमें मोहित होने की बात कहां से आ गई?"

"देखो, बाहर किसी मोटर के आने का शब्द हो रहा है। कदाचित् श्रीमती सानन्द आ रही हैं। उनके सम्मुख इस प्रकार की बात मत करना। वे तो डांटती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी बहुत तेज हैं।"

इस समय सन्तोष और अनन्ता दोनों आ गईं। अनन्ता ने दोनों को पहचान लिया। वे कई बार उनके घर आ चुके थे।

"ओह, मदन भाई साहब और सतीश जी! आज आप लोगों के दर्शनों का सौभाग्य किस कारण समझा जाए?"

सतीश बोला, "सानन्दजी के सहसा सूचना-जगत से अन्तर्ध्यान हो जाने के कारण ही इतनी आलीशान कोठी में देखने का सौभाग्य ही कारण मानना चाहिए।"

"कोठी की मालकिन तो वो जा रही हैं। वे मेरी जेठानी हैं। हम तो इनके किरायेदार हैं।"

"किरायेदार?" मदन ने आश्चर्य से पूछा।

"हां, आज के समाज में तो प्रत्येक वस्तु मोल पर बिकती है। अब तो इन्सान भी बिकने लगे हैं।"

"इन्सान बिकते कब नहीं थे?"

अनन्ता ने बैरे के लिए घंटी बजाते हुए कहा, "एक युग था जब भारत में केवल शूद्र ही बिका करते थे। शेष वर्णों के लोग तो स्वतन्त्र रहकर ही निर्वाह किया करते थे। मुसलमानी राज्य में गड़बड़ मची। क्षत्रिय भी बिकने लगे। सेना में भरती होने के लिए क्षत्रिय स्वेच्छा से राजाओं के पास जाते थे और जब युद्ध-काल न हो तो प्रायः ग्रामों में जा खेती-बाड़ी का निर्वाह करते रहते थे। मुसलमानों के आने पर तो यहां निरन्तर युद्ध होते रहे। सैनिकों के लिए आजीवन युद्ध-क्षेत्र में अथवा अधिकार किये हुए क्षेत्र में रहना आवश्यक हो गया। विवश वे वेतनधारी बन गये।

"अंग्रेजों के काल में तो ब्राह्मण भी वेतनधारी बन गये। पढ़ाई-लिखाई का प्रयोजन ही यह समझा जाने लगा कि पढ़-लिखकर केवल नौकरी ही करनी होगी।"

'ब्राह्मण, क्षत्रिय और शूद्र तो वेतन धारी बन ही गये थे, अब वैश्यों को भी वैसा ही बनाया जाने लगा है। उनमें कार्य करनेवाले केवल वेतन के ही अधिकारी होते हैं। हानि-लाभ के नहीं।

"इस प्रकार इस समाजवादी समाज में तो पूर्ण जाति बिक रही है।"

"परन्तु हमारी भाभी तो बिकी हुई नहीं प्रतीत होती?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां, अभी इसे गनीमत समझिये। परन्तु आप देखते हैं कि आजकल की पढ़ी-लिखी लड़कियों के जीवन का उद्देश्य नौकरी प्राप्त करना ही रह गया है। ज्यों-ज्यों वर्तमान शिक्षा का प्रसार होता जाता है, पढ़ी-लिखी लड़कियां दफ्तरों की शोभा बनती जाती हैं।"

बैरा चाय ले आया। "हमने तो अभी जल पिया है?" मदन ने कहा।

"जल पीने के बाद चाय पीने में कोई हानि नहीं होती। कुछ खाने के लिए भी मंगवाऊं क्या?"

"हां, भाभी!" सतीश ने मदन को बोलने का अवसर न देते हुए कहा, "हमने तो आज लंच भी नहीं लिया।"

"ओह! तो कबके आये हुए हैं?"

"ढेढ़ बजे के करीब पहुंचे थे। एक देवीजी यहां मिली थीं किन्तु उन्होंने तो हमारे सामने भोजन का नाम तक नहीं लिया।"

"अच्छा, मलावी यहीं थी?"

"हम नाम तो जानते नहीं। परन्तु आपकी क्या लगती है?"

"वह मेरी छोटी बहन है।"

"बहन!" मदन को आश्चर्य हुआ।

"क्यों, इसमें आश्चर्य करने की क्या बात है?"

"हां," सतीश ने कहा, "आज के युग में कोई भी बात आश्चर्य करने की नहीं हो सकती। जब ब्राह्मण और वैश्य, शूद्र का कार्य करने लगे हैं तो कोई भी किसी की बहन और कोई भी किसी का भाई बन सकता है।"

"यही देखिए, आप इलाहाबाद की रहने वाली है और वे कोई पंजाबिन प्रतीत होती हैं।"

"बात यह है कि जब कोई निराश्रित महिला किसी की बहन बनना चाहे तो हम भारतीय तो इस सम्बन्ध को बनाने से इन्कार नहीं कर सकते।"

"परन्तु भाभी! अधिकांश औरतें तो भाइयों की बहन बनती हैं। भाभी की बहन बनने से तो भाभी के लिए घाटे का सौदा हो सकता है।"

"परन्तु मेरे लिए तो यह लाभ की ही बात हो रही है।"

"यह है कौन?"

"एक दुखिया स्त्री है, जिसको उसके पति ने छोड़ रखा है। पहले यह कमल के बाबा और दादी के पास रहा करती थी। अब हमारे पास आकर ही रहने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगी है।"

बैरा जब तक कुछ खाने के लिए लाया, इन लोगों में मलावी के विषय में बात होती रही। इसी बीच बच्चों के साथ मलावी भी वहां आ गई। अनन्ता ने उससे कहा, "तुमने इनसे कुछ खाने के लिए नहीं पूछा?"

"बहनजी! चाय के लिए तो पूछा था। परन्तु ये तो केवल ठंडा पानी ही मांग रहे थे।"

"ये कहते हैं कि किसी को जब भोजन की आवश्यकता हो और उससे केवल चाय के लिए पूछा जाय तो पानी की मांग करनी चाहिए।"

"और जब कोई पानी मांगे तो उसके लिए परौंठे बनवाने चाहिएं? यह आगे के लिए ध्यान में रखूंगी।"

इस पर दोनों मित्र और अनन्ता हंसने लगी।

ये लोग अभी चाय पी रहे थे कि सानन्द आ गया। समर्थ और दाताराम भी आ गये। सानन्द ने दोनों आने वालों का भैया से परिचय कराया तो वह भी वहीं बैठ गया।

दाताराम तो अपने घर की ओर चला गया। अनन्ता और सानन्द जानते थे कि मलावी यदि वहां हो तो समर्थ वहां टिक जाया करता है। पहले तो सानन्द मलावी को वहां से टल जाने के लिए कह दिया करता था परन्तु बाद में उसको विदित हो गया था कि मलावी को न तो समर्थ के सम्मुख बैठने में संकोच होता है और न ही उसे उससे भय लगता है।

यद्यपि झपटा-झपटी की घटना को अब तीन मास व्यतीत होने जा रहे थे, दोनों में परस्पर एक दूसरे के प्रति आदर-भाव बढ़ रहा था। समर्थ अभी भी यत्न कर रहा था कि मलावी उसके द्वारा प्रदत्त उपहार की वस्तुएं ग्रहण कर ले किन्तु इसमें उसको सफलता नहीं मिल रही थी।

सन्तोष जब लखनऊ से लौटी थी, तब तक मलावी और समर्थ के घाव भर गये थे। केवल घावों के चिन्हमात्र रह गये थे। मलावी के गाल का चिन्ह तो बहुत ही स्पष्ट दिखाई देता था। उस घाव को देखकर सन्तोष ने उससे पूछा था, "मलावी! यह गाल पर क्या हुआ है?"

"किसी जानवर ने काट खाया था।"

"जानवर ने? और वह भी सीधा मुख पर ही?"

"हां भाभी! बहुत भयानक जानवर था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह रहस्य तो समर्थ ने ही अपनी पत्नी को बताया था। उसने व्याख्या करते हुए कहा, "जब से मलावी यहां आकर रहने लगी है मैं उससे प्रेम करने लगा हूं। वह भी बहुत हंस-हंसकर बातें किया करती थी। मैंने समझा कि वह मेरे मन के भावों को समझती है और उन्हें पसन्द करती है। इस कारण जब वह एक दिन मध्याह्नोतर चाय लेकर आई तो मैं अलमारी से मद्य निकाल बैठा। वह मुझको चाय के स्थान सोडा और मद्य पिलाने लगी। मैं भूल कर बैठा। मैंने समझा कि वह मेरा प्रस्ताव मान जायेगी। मैंने उसको अपने वश में करने के लिए उस पर आक्रमण कर दिया। परन्तु उसने मुझसे युद्ध करना आरम्भ कर दिया। बस, समझो जान बची लाखों पाये।"

"तो आपने उसे कोठी से निकाल क्यों नहीं दिया?"

"इससे सानन्द ने भी चला जाना था। मैं यह नहीं चाहता था और मलावी उसके पास ही रहना पसन्द करती है।"

"इसलिए कि वह सानन्द से प्रेम करती है।"

"तो वह उसकी पत्नी है?"

"जहां तक मैं जानती हूं दोनों में इस प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं है। इस पर भी मलावी उससे प्रेम करती है और सानन्द का उसके प्रति दयाभाव है।"

"अर्थात् वह सानन्द की रखैल है?"

सन्तोष ने इसका उत्तर नहीं दिया। वह इस विषय में कुछ जानती भी नहीं थी। समर्थ यह समझता था कि यदि वह सानन्द की रखैल है तो उसकी भी हो सकती है। किसी भी दृष्टि से वह सानन्द से घटिया तो है नहीं। सानन्द तो अब उसकी मुट्ठी में हो गया था। उसके रुपये के बल पर ही तो वह कारोबार करने लगा है। यदि उसने उसके कार्य में किसी प्रकार बाधा डाली तो वह उसको निकालकर बाहर कर देगा। परन्तु इसके पूर्व वह मलावी को अपने अनुकूल कर लेना चाहता था। इसके लिए वह समय-समय पर उसको भेंट भेजता रहता था। किन्तु मलावी ने कभी इसे स्वीकार नहीं किया।

आज चाय ड्राइंगरूम-में ही पी जा रही थी। समर्थ की उपस्थिति के कारण कोई विशेष बात नहीं हुई। मदनगोपाल ने आगामी निर्वाचनों की चर्चा चला दी। उसने कहा, "इंग्लैंड और अमेरिका में निर्वाचनों की गति प्रदान करने वाले तो धनी लोग होते हैं। अमेरिका में डैमोक्रैटिक और रिपब्लिकन पार्टियां दोनों-की-दोनों धनवालों के रुपये से चलती हैं। दोनों दलों में बड़े-बड़े कारखाने वाले और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमींदार सम्मिलित हैं और वे करोड़ो डालर इन दलों को चुनाव के लिए दिया करते हैं। किन्तु यहां भारत में तो पैसे वालों की कोई राजनीति ही नहीं।"

समर्थ बोला, "हमारी राजनीति तो है। हम उस को सहायता देते हैं जो हमको सहायता देता है। देखिये, मैं आपको सन् 1952 के निर्वाचनों की बात बताता हूं। उस वर्ष एक नया दल स्थापित हुआ था। भारतीय जनसंघ। बड़ा हल्ला किया था। उसके संचालकों ने। मुझसे चन्दा लेने के लिए जब ये लोग आये तो मैंने उनसे सीधे ही पूछा कि उनके दल को बने हुए कितने महीने हुए हैं? उनका प्रवक्ता बोला, 'चार महीने।' 'तो मैं आपको चार रुपये दे सकता हूं।' मैंने कह दिया। वे चार रुपये ही लेकर चले गये। अब आप ही बताइये, इतने निम्नस्तर पर विचार करने वाले भला क्या राज करेंगे? उनके एक-दो सदस्य लोक-सभा में आ तो गये। लेकिन वह भी अपने धन के बल पर। दल के सिद्धान्तों के बल पर तो कोई भी सफल नहीं हुआ।"

"और कांग्रेस को आपने कितना दिया था?"

"एक लाख के लगभग दिया था।"

'किस आधार पर?"

"कांग्रेस का सिद्धान्त तो सर्वविदित है। वे हम पैसे वालों की सहायता करते हैं और हम उनकी सहायता करते हैं। कांग्रेस के प्रधान आये तो मैंने बीस हजार का चैक काट दिया। फिर होम-मिनिस्टर आये तो मुझे पचास हजार और देना पड़ा। निर्वाचन के दिनों में एक निमिस्टर का एस. ओ. एस. आया, तब दस हजार देना पड़ा। चुनाव के बाद सबकी सहायता से पचास लाख से अधिक कमा चुका हूं।"

"परन्तु समर्थजी! कांग्रेस तो कह रही है कि वह सब धनवालों को जनसाधारण के बराबर कर देगी। इसका यह अभिप्राय नहीं हुआ कि आप अपनी ही जड़ों में तेल दे रहे हैं?"

"जब होगा तब देखा जायेगा। मेरा सिद्धान्त तो यह है कि जो दल सफल होने वाला होगा, मैं उसकी सहायता करूंगा। उससे मेरा काम बन सकता है। मैं इतना मूर्ख नहीं कि असफल होने वाले दल से सांठ-गांठ करूं।"

इस वार्तालाप में सानन्द ने अपना कोई मत व्यक्त नहीं किया। वह मौन ही रहा।

: 6 :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन-रात के सतत प्रयत्न से कारखाना सन् 55 में ही चालू हो गया। प्लास्टिक का कई प्रकार का सामान बनने लगा था। इस सामान का सबसे बड़ा ग्राहक सरकार बन गई। यों तो बम्बई, कलकत्ता तथा दिल्ली में माल की बहुत खपत थी, परन्तु सरकार की ट्रेडिंग कारपोरेशन माल विदेशों में भेजने के लिए खरीद लेती थी। लगभग नव्वे प्रतिशत सामान इस प्रकार बिक जाने पर कारखाने के पास बाजार में बेचने के लिए इतना कम रह जाता था कि उसकी खपत के लिए विशेष प्रबन्ध करने की आवश्यकता ही नहीं थी।

इस प्रकार के प्रबन्ध से सानन्द प्रसन्न नहीं था। सानन्द देख रहा था कि सरकारी अधिकारी आते हैं और सामान का मूल्य निर्धारित कर जाते हैं। उस समय यदि उनको कुछ 'टिप' दे दी जाती तो मूल्य ऐसा निर्धारित हो जाता कि कुछ लाभ हो जाता अन्यथा इतना कम मूल्य निर्धारित हो जाता कि लाभ के स्थान हानि होने की सम्भावना हो जाती थी। अतः टिप देनी आवश्यक हो जाती थी।

सरकार यह समान खरीदकर विदेशों में और भी कम मूल्य पर बेचती थी और अपना घाटा टैक्स तथा विदेशों से आनेवाले माल पर लाभ उठाकर पूरी करती थी।

सन् 56 के आरम्भ में पहले छः मास का हानि-लाभ का चिट्ठा तैयार किया गया। वह चिट्ठा कम्पनी के डायरेक्टरों के सम्मुख प्रस्तुत किया गया तो बहुत ही शोकयुक्त वृत्तान्त बना।

सानन्द का वक्तव्य था कि नव्वे प्रतिशत सामान सरकार को दिया गया है। उससे जो लाभ हुआ है, वह बाजार में बेचे गये दस प्रतिशत सामान से प्राप्त लाभ से भी कम है। जो सामान एक नाममात्र लाभ पर सरकार को दिया गया था, सरकार ने उस पर एक करोड़ रुपया घाटा सहकर विदेशों में भेजा है। यह एक करोड़ रुपये का घाटा सरकार ने जनता पर टैक्स लगाकर तथा अन्य कई प्रकार से प्राप्त किया है।

"मैं इसका यह अर्थ समझता हूं कि इस प्रकार के आयोजन से हम अपने देश की आर्थिक दृष्टि से हत्या कर रहे हैं।"

"वह कैसे?" समर्थ का प्रश्न था।

"हम इस देश के निर्धन होने में सहायता दे रहे हैं।"

"परन्तु हम विदेशी मुद्रा प्राप्त करने में सफल हो रहे हैं। उससे देश में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये-नये उद्योग चालू होंगे। इस सब का अन्तिम परिमाण यह होनेवाला है कि हम धनी हो जायेंगे।"

"देखो भैया! देश धनी नहीं होगा। बड़ी-बड़ी मशीनें लग जायेंगी और हम कभी भी उनसे निर्मित सामान विदेशी मार्केट में, मुकाबले पर बेच नहीं सकेंगे। ये मशीनें नाकारा हो जायेंगी। हमको विदेशी मार्केट के लिए उद्योग-धन्धे का विचार करना नहीं चाहिए। हमें तो पहले अपने देश की रक्षा के प्रबन्ध में लगना चाहिए।"

"देखो सानन्द! देश की रक्षा अथवा देश के व्यापार की हमें चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। हमें तो यह देखना चाहिए कि हमारा कारखाना फले-फूले। यही हमारा देश है, यही हमारा धर्म है।"

"तो इसके लिए हमें सरकार के पास सामान बेचना बन्द कर देना चाहिए। हमको अपना सामान बाजार में बेचना चाहिए, जहां से हमें अधिक लाभ की आशा है।"

"परन्तु तुम सरकार को माल देने से इन्कार कैसे कर सकते हो?"

"उचित दाम पर ही देने से सरकार उनको विदेशों में बेचकर जब सीमा से अधिक घाटा उठायेगी तो स्वयंमेव बन्द कर देगी।"

"सानन्द! यह सोशियलिस्ट समाज है। तुम सरकार को किसी बात से इन्कार नहीं कर सकते। करोगे तो वह पूर्ण कराखाने को ही अपने अधिकार में कर लेगी।"

"तो फिर क्या किया जाये?"

"मेरी राय मानो। झूठे आंकड़े तैयार करो। माल प्रतिमास दस लाख का बने तो पांच लाख का लिखो और उस पांच लाख का नव्वे प्रतिशत सरकार के पास बेचो। इस प्रकार तुम्हारे पास दस प्रतिशत के स्थान पर पचपन प्रतिशत माल बाजार में बेचने के लिए बच जायेगा। साथ ही पचास प्रतिशत माल पर तुम्हें ऐक्साईज नहीं देना पड़ेगा। सेल्स टैक्स नहीं देना पड़ेगा और उसके लाभांश पर इन्कमटैक्स बच जायेगा।"

"पर भैया! यह तो भारी बेईमानी हो जायेगी।"

"किसके साथ होगी बेईमानी?"

"देश के साथ, कानून के साथ और अपने साथ भी"

"और जो सरकार देश के धन के साथ खिलवाड़ कर रही है, वह क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईमानदारी है?''

''परन्तु उसका इलाज तो है। सरकार को बदल दिया जाये। अगले वर्ष निर्वाचन होनेवाले हैं। भैया! क्यों नहीं सब कारखाने के मालिक मिलकर एक ऐसा दल बनाते जो कांग्रेस को चारों खाने चित्त कर दें?''

समर्थ हंस पड़ा। हंसकर बोला, ''बिल्ली की म्यों कौन पकड़ेगा? देखो सानन्द! यह कुछ नहीं हो सकेगा। सब-के-सब कारखानेवाले किसी-न किसी प्रकार की हेरा-फेरी कर रहे हैं। हमको भी वैसा करना ही पड़ेगा।''

''यह मुझसे नहीं होगा।''

''तो तुमको मैनेजिंग डायरेक्टरी छोड़नी पड़ेगी।''

''वह मैं आज से ही छोड़ता हूं। कल कोई मुझसे चार्ज ले ले।''

इस पर हरिशरणानन्द ने पूछ लिया, ''सानन्द! यह काम छोड़कर क्या करोगे?''

''जो पहले करता था।''

''परन्तु अब तुम्हारा खर्चा बढ़ गया है। दो-दो बीबियां। तीन बच्चे। चौथे की तैयारी और फिर इतनी बड़ी कोठी में रहने का मजा। अपनी कार पर सबारी का अभ्यास ये सब छोड़ने पड़ेगे।''

''छोड़ दूंगा पिताजी!''

इस पर समर्थ ने कह दिया, ''छोड़ना है तो एक वस्तु मुझको भी देते जाना।''

''क्या?''

''अपनी एक बीबी।''

सानन्द हंस पड़ा। हंसते हुए उसने कहा, ''मेरी एक ही बीबी और वे मेरी स्थावर सम्पत्ति नहीं है। उसको मैं दे नहीं सकता।''

''मैं तुम्हारी विवाहिता की बात नहीं कर रहा। मैं तुम्हारी अविवाहिता बीवी की बात कर रहा हूं। मेरा अभिप्राय मलावी से है।''

आप में साहस है तो ले लीजिये। मैं उसको रोकूंगा नहीं। परन्तु उस पर दृष्टि डालने से पहले पिछले वर्ष की घटना याद कर लीजियेगा।''

इस विषय पर वार्त्तालाप को सन्तोष तथा अनन्ता बहुत बुरा मान रही थीं। अनन्ता ने कहा, ''तो क्या यह निर्णय हो गया है कि कल से कौन मैनेजिंग डायरेक्टर बनेगा?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उसका निर्वाचन अभी हो जाना चाहिए।" दाताराम का कहना था।

"इसमें निर्वाचन की कौन-सी बात है।" बड़े भैया छोटे भैया का स्थान लेने के योग्य हैं।"

"तो तुम प्रस्ताव रखती हो कि समर्थ मैनेजिंग डायरेक्टर हो?" निपुणा का प्रश्न था।

"मैं प्रस्ताव रखनेवाली कौन हूं। कम्पनी में हमारा धन तो लगा हुआ है नहीं। जिसका धन है, वही तो यह कार्य कर सकता है।"

इस पर समर्थ ने कहा, "देखो सानन्द! मैंने धन के बल पर तुमको मैंनेजिंग डायरेक्टर नहीं बनाया था। तुम्हारी योग्यता और फिर तुम्हारा अपने ही परिवार का सदस्य होने के कारण तुमको यह पद दिया था। मेरा कहा मानो। आज के वार्त्तालाप की दृष्टि में यह निर्णय होना चाहिए कि तुम अपने निर्णय पर पुनः विचार करो। अगले सप्ताह हम पुनः बैठेंगे। तुम अपनी योजना बताना। मैंने अपनी योजना बता दी है। दोनों योजनाओं पर सब डायरेक्टर विचार-विनिमय करेंगे। यदि तुम्हारी योजना स्वीकृत होनी है तो फिर तुम ही मैनेजिंग ड़ायरेक्टर रहोगे। मेरी सम्मति है कि आज की बैठक अगले रविवार सायं तीन बजे तक स्थगित कर दी जाये। उस दिन हम पुनः बैठकर विचार-विनिमय करेंगे।"

सानन्द अपने मन को झूठे हिसाब रखने के लिए तैयार नहीं कर सका। इसमें उसकी योजना स्पष्ट थी। माल का मूल्य पचीस प्रतिशत बढ़ा दिया जाये। यदि सरकार इन बढ़े हुए मूल्यों को स्वीकार न करे तो माल सरकार के पास न बेचा जाये। तब जनसाधारण की मांग, के अनुसार उनके उपयोग का माल तैयार किया जाये और बाजार में बेचा जाये। यह योजना सब भागीदारों में वितरित कर दी गई। अनन्ता ने इस योजना का समर्थन कर दिया।

जब यह योजना समर्थ के पास आई तो वह सन्तोष के साथ इस पर राय करने लगा। समर्थ का कहना था कि वह सानन्द की योजना को ठीक तो मानता है, परन्तु सरकार ने इस कारखाने की योजना को स्वीकार ही इस कारण किया है कि यह विदेशी मुद्रा प्राप्त कराने में सहायक सिद्ध होगी। अब यदि ऐसा किया गया तो सरकार कारखाना चलाने में कई प्रकार की बाधाएं खड़ी कर देगी।

सन्तोष का कहना था, "आपने इतने बड़े कारखाने की योजना बनाई क्यों थी?"

"सबसे स्वीकार कर ही तो बनवाई गई थी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु यदि बेईमानी करते पकड़े गये तो क्या होगा?"

"अभी तक तो पकड़ा नहीं गया। भगवान की कृपा है कि सरकारी कर्मचारी पैसा लेकर सब काम कर देते हैं।

"परन्तु आपने उस दिन मलावी की बात फिर चला दी। आपको ऐसी बात अनन्ता के मुख पर तथा अपने माता-पिता के सम्मुख करते लज्जा नहीं लगी?"

"इसमें लज्जा की कौन बात है? सब जानते हैं कि मलावी सानन्द की अविवाहित पत्नी है।"

"परन्तु वह तो मानती नहीं।"

"चोर कभी अपनी चोरी स्वीकार करता है क्या?"

"यदि यह ठीक है कि वह आपके छोटे भाई की पत्नी है तो फिर उस पर कुदृष्टि रखना पाप हो जायेगा।"

"ये गये युग की बातें हैं।"

"तो आप मलावी से यह बात स्वयं तय क्यों नहीं कर लेते?"

"तुम उससे बात करने के लिए मेरी वकील बन जाओ।"

"मेरा पारिश्रमिक क्या होगा?"

"सफलता पर जो तुम चाहोगी। असफल रहने पर दस सहस्र रुपया।"

"मैं आपका काम नहीं करूंगी। यह पारिश्रमिक बहुत कम है।"

"तो तुम क्या चाहती हो?"

"मैं यह चाहती हूं कि सफलता-असफलता दोनों अवस्थाओं में पारिश्रमिक समान ही मिले।"

"और वह पारिश्रमिक क्या हो?"

"आपसे जीवन-भर के लिए पृथकता।"

"क्यों?"

"जब आप इतने निर्लज्ज हो गये हैं कि अपनी पत्नी को दलाली करवाने का विचार कर बैठे हैं, तो फिर आपकी पत्नी बनकर रहना ठीक नहीं होगा। मैं लज्जाहीन व्यक्ति के साथ नहीं रह सकती।"

"निर्लज्ज तो मैं चिरकाल से हूं।"

"ठीक है, परन्तु पिछली करतूतों में आप मुझसे काम नहीं लेते रहे। अब तो मुझसे इस घृणित काम में सहायता मांग रहे हैं।"

समर्थ चुप कर रहा। उसने इस विषय में अपनी पत्नी से बात तक न करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का निर्णय कर लिया।

सप्ताह व्यतीत होते देर नहीं लगी। रविवार के दिन कम्पनी के डायरेक्टरों की पुनः मिटिंग हुई और सानन्द तथा समर्थ, दोनों की योजनाएं उपस्थित हो गईं। समर्थ ने पुनः अपनी योजना की व्याख्या में कह दिया, "शठे शाठ्यम् समाचरेत्।"

"इस पर भी सानन्द के पक्ष में पांच मत थे और समर्थ के पक्ष में उसका अपना, दाताराम और सुचाला का। इस प्रकार तीन मतों के विरुद्ध पांच मतों से सानन्द की योजना स्वीकार हो गई। हरिशरणानन्द, निपुणा तथा सन्तोष ने सानन्द के पक्ष में मत दिया था।

अब समर्थ के सम्मुख दो ही मार्ग थे। या तो कम्पनी को तोड़ डाले और अकेला ही कारखाना चलाये अथवा सानन्द की योजनानुसार ही काम चलने दे। समर्थ ने सानन्द की योजनानुसार ही काम चलने देने का निर्णय कर लिया।

सानन्द अब निःशंक हो काम करने लगा। उसने माल का मूल्य बीस प्रतिशत बढ़ा दिया। इस विषय में सरकार की ट्रेडिंग कार्पोरेशन को उसने नोटिस दे दिया। सरकार तो पहले ही घाटे पर निर्यात कर रही थी, इस कारण नये दर सरकार ने मान्य नहीं किये और कह दिया कि सरकार निर्धारित मूल्य पर ही माल खरीदेगी।

सानन्द यह जानता था कि सरकार इतना प्रबल घाटा नहीं सह सकेगी। इस कारण उसने माल का निर्माण कम कर दिया। ऐसा करने के साथ-साथ मजदूरों की संख्या भी कम करनी आवश्यक हो गई। इस पर मजदूरों ने हड़ताल कर दी। उनकी यही मांग थी कि एक भी मजदूर काम से न निकाला जाये।

परिणाम यह हुआ कि कारखाना बन्द हो गया। सानन्द ने मजदूरों को बिना नोटिस दिये हड़ताल करने पर अनिश्चित काल के लिए कारखाना बन्द कर दिया।

इस पर सरकार के उद्योग-विभाग के अधिकारी बल देने लगे कि हड़ताल के विषय में आर्बिट्रेशन करा लिया जाये। सानन्द का स्पष्ट कथन था कि वह एक पैसा भी मजदूरों को हड़ताल के दिनों का देने को तैयार नहीं। वह कोर्ट में जाने को तैयार है। यह हड़ताल गैर- कानूनी है।

इस पर समर्थ पर दबाव पड़ने लगा कि वह अपने भाई को कहकर उससे आर्ब्रिट्रेशन स्वीकार कराये। हड़ताल का विषय डायरेक्टरों की मीटिंग में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपस्थित हुआ तो इस बार सानन्द की योजना का विरोध होने लगा। उसके पक्ष में केवल दो मत रह गये। उसका अपना तथा अनन्ता का। अन्य सभी इस बात के पक्ष में थे कि आर्बिट्रेशन का प्रस्ताव स्वीकार कर लेना चाहिए।

इस मिटिंग में एक विशेष बात यह हुई कि डाक्टर माथुर भी उपस्थित हुए और उन्होंने भी सानन्द के विरोध में मत दिया। वह पहली मीटिंग थी जिसमें डाक्टर माथुर उपस्थित हुए थे। आज वह बिना किसी आग्रह के मीटिंग में आया था और सानन्द का अनुमान था कि सरकारी अधिकारियों ने उसको उपस्थित होकर सानन्द के विरुद्ध अपना मत देने पर विवश किया है।

: 7 :

इस बार सानन्द ने उसी समय मैंनेजिंग डायरेक्टर के पद से त्याग पत्र नहीं दिया। उसका विचार था कि वह अपना भविष्य का कार्यक्रम बनाकर ही ऐसा करेगा। जब से वह कारखाने में काम करने लगा था, उसको अपने लेखन-कार्य के लिए अवकाश ही नहीं मिला था। इस कार्य को करने के लिए उसे अपना पूर्ण वातावरण बदलने की आवश्यकता थी।

जब से मलावी का झगड़ा हुआ था, वह अपने भाई की कोठी में ही दो कमरो का सेट तीन सौ रुपया मासिक किराये पर लेकर रहता था परन्तु इस बीच उसने अपनी निजी कोठी बनानी आरम्भ कर दी थी। उसने रिंग रोड़ पर आधे एकड़ की जमीन ले ली थी और दाताराम को कोठी बनाने का ठेका दे दिया था। कोठी के लिए उसने अपना सारा रुपया जो उसका विदेशों में जमा था, मंगवा लिया था।

कारखाने की मैंनेजिंग डायरेक्टरी से उसे जो वेतन मिलता था, उसमें से अपने निर्वाह के लिए आवश्यक धन निकालकर शेष वह अमानत के रूप में बैंक में जमा करा रहा था। उसका विचार था कि वह सब रुपया उसका अपना नहीं है। जिनका यह है, उनके उपयोग के लिए वह इसे व्यय करेगा।

मीटिंग में जब उसके विरुद्ध निर्णय हो गया तो वह वहां से उठकर अपने कमरे में चला गया। अनन्ता भी उसके साथ-साथ वहां आ गई। कमरे में आकर उसने पूछ लया, "अब क्या विचार कर रहे है?"

"मैं आज के और हड़ताल के पहले दिन के मतों पर विचार कर रहा हूं।"

"क्या विचार कर रहे हैं?"

"यही कि मैं अपनी बात डायरेक्टरों को समझा क्यों नहीं सका। आज एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विलक्षण बात यह थी कि तुम्हारे पिताजी डाक्टर माथुर मीटिंग में आये थे। आज से पहले वे किसी भी मीटिंग में उपस्थित नहीं हुए थे। आज आते ही उन्होंने मेरे विरुद्ध मत दे दिया।

"मैंने उनसे पूछा था कि क्या आज उनका आना उनके अधिकारियों की आज्ञानुसर नहीं है? उन्होंने इसका उत्तर नहीं दिया और केवल मुस्कराकर चुप कर रहे। अर्थात् उन्होंने मेरे अनुमान का समर्थन किया है। आज सरकार कारखानेदारों के विरुद्ध मजदूरों का पक्ष ले रही है। विशेष रूप में आगामी निर्वाचनों का विचार करते हुए।"

"मुझे भी कुछ ऐसा भास-सा हो रहा था। इस पर भी मैं अपने पिताजी के व्यवहार पर आश्चर्यचकित हूं। मतदान के उपरान्त मैंने उन से पूछा था कि कल तक जो वे कह रहे थे कि अन्याय के साथ सहयोग नहीं करना चाहिए उनका क्या हुआ? इस पर उन्होंने कह दिया, 'मैं आज भी यही कहता हूं। अन्तर इस बात में पड़ता है कि जिसको मैं कल न्याय समझता था, उसको आज अन्याय मानने लगा हूं। आज डाक्टर माथुर से बात करने पर पता चला था कि यदि हमने आर्बिट्रेशन का प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया तो हमें कच्चा माल मिलना बन्द हो जायेगा। बहुत-से कैमिकल्स हम जर्मनी से मंगवाते हैं। उनके लिए हमारा इम्पोर्ट लाइसेंस रद्द हो सकता है। यदि यह सब हुआ तो कारखाना बन्द हो जायेगा। उनका कहना था कि कारखाना बन्द करना तो अपने साथ अन्याय हो जायेगा और फिर समर्थ के रुपये के साथ भारी अन्याय हो जाता।'

"उनके इस पक्ष पर मैं विचार कर रहा हूं और मैं समझता हूं कि अब मुझे भी अपने साथ न्याय करना चाहिए। अभी तक मैं अपनी प्रतिभा के साथ अन्याय कर रहा था।"

"आप ठीक कहते हैं। मैं भी कुछ ऐसा ही समझ रही थी।"

"तब तो ठीक है। मैं अब यह सब-कुछ छोड़-छाड़कर किसी अन्य कार्य में लग जाऊंगा। इस कार्य में मुझे चित्त में शान्ति नहीं मिल रही। वास्तव में मैं समझता था कि ईमानदारी से कुछ तो कमाई हो सकती है। मैंने कारखाने को ऐसे ढंग से चलाया था कि कुछ-न-कुछ लाभ तो हुआ था। कर्मचारियों को वेतन भी अच्छा मिलता था। उनको बोनस देने का भी विचार था। साथ ही मेरा प्रयत्न था कि माल अच्छा तथा उपयोगी बने। परन्तु ये सब बातें सम्भव नहीं हो सकीं। इनमें सरकारी सहयोग की आवश्यकता है और सरकारी सहयोग उन शर्तों पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही मिल सकता है, जिनमें बेईमानी के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं रह जाता।"

"देखिये जी! मैं आपको एक बात और बताती हूं। दाताराम और सुचाला कुछ भीतर-ही-भीतर साजिश कर रहे लगते हैं। एक दिन सन्तोष बहन भी बता रही थी कि सुचाला के व्यवहार में कुछ लुकाव-छिपाव की गन्ध आने लगी है।"

"किस बात से ऐसी आशा कर रही हो?"

"एक दिन दाताराम का एक पत्र भूल से हमारी डाक में आ गया था। वह मैंने ड्राइंग-रूम की मेज पर बिना खोले ही रख दिया था, जिससे उसके आने पर उसे मिल जाये। कुछ देर बार सुचाला आई और पत्र को वहां पड़ा देख घबरा गई। उसने लपककर वह पत्र उठाया और यह देख कि वह खुला नहीं है एक निश्चिन्तता की सांस ले, उसने उसे अपने ब्लाउज में छिपा लिया। उसका विचार था कि उसकी घबराहट तथा बाद की निश्चिंतता की ओर किसी का ध्यान नहीं गया। मैंने भी इस विषय पर बात नहीं चलाई और वह दो-चार मिनट मेरे पास बैठ, चली गई। इसका अर्थ मैं यही समझी हूं कि कुछ हमसे चोरी अवश्य हो रहा है।"

"कुछ भी हो सकता है, जिसका हमसे कोई सम्बन्ध न हो।"

"परन्तु इसमें घबराने की क्या आवश्यकता थी?"

"छोड़ो इस बात को। मैं एक बात और तुमसे करना चाहता था। इस कारखाने के झगड़े में मैं उसे भूल जाता रहा हूं। कई दिन से सतीश मुझे फोन कर रहा है। वह चाहता है कि मलावी से उसका विवाह हो जाये। ऐसा प्रतीत होता है कि वह मलावी से मिलता भी रहा है और उसने उससे प्रस्ताव भी किया था, उसका कहना था कि यदि मैं उससे उसकी सिफारिश करूं तो वह मान जायेगी। एक बात उसने कही है कि यह लड़की दृढ़ आचार-विचार की है और वह ऐसी पत्नी से विवाह के लिए कुछ भी शर्त मानने को तैयार है।"

अनन्ता हंस पड़ी और बोली, "यह मैं जानती हूं कि वह हमारी कोठी में हमारी अनुपस्थिति में आता रहा है और उससे बातचीत करता रहा है इस बात का सन्देह तो मुझको भी हुआ था कि दोनों में घनिष्ठता बढ़ रही है, परन्तु न तो मलावी ने इस विषय में मुझसे कोई बात की है और न ही उससे कुछ पूछना मैंने उचित समझा।"

"अब सतीश का आग्रह हो रहा है और उसका कहना है कि मैं उस की सिफारिश करूं तो वह अवश्य मान जायेगी, यही प्रकट करता है कि दोनों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घनिष्ठता बढ़ चुकी है। अतः यदि यह सत्य है तो उसके विवाह का प्रबन्ध किया जा सकता है।"

"मैं समझती हूं कि आप ही उससे बात कीजिये। मैं नहीं चाहती कि उसे किसी प्रकार से यह भ्रम हो जाये कि हम उसको इस घर से निकालने का यत्न कर रहे हैं।"

"ठीक है। बात सावधानी से करनी पड़ेगी। परन्तु वह है कहां?"

"बाहर कुमुद को लेकर घुमा रही होगी।"

सानन्द और अनन्ता कमरे से बाहर निकल आये। बाहर लॉन में बच्चे क्रिकेट खेल रहे थे। मलावी कुमुद को ऊंगली से पकड़े हुए लॉन के किनारे खड़ी उसे खेल दिखा रही थी। सानन्द और अनन्ता को देख मलावी कुमुद को लेकर उनके समीप आ गई और कहने लगी, "कमल बैट लेकर जब खड़ा होता है तो ऐसा लगता है मानो पूर्व जन्म का खिलाड़ी हो। क्या शान से खड़ा है!"

इस समय सोम ने बाल फेंकी तो खट से उसकी विकट उड़ गई। सानन्द ने कहा, "और यह गई उसकी शान।"

कमल के बाद भुवनेश्वर बैट लेकर आया और दो ही बालों में वह भी आऊट हो गया। यह बाल भी सोम ने फेंकी थी। इस पर सानन्द ने सोम को आवाज दे दी, "शाबास सोम!" इतना कह उसने जेब से एक रुपया निकालकर कहा, "यह लो तुम्हारा इनाम।"

भुवनेश्वर के आऊट होने पर खेल समाप्त हो गया था। जब सानन्द ने नोट उसकी ओर बढ़ाया तो वह अपनी मां के मुख पर देखने लगा। मलावी ने हंसते हुए कहा, "ले लो और धन्यवाद कर दो।"

सोम हाथ जोड़कर धन्यवाद करने लगा तो सानन्द ने उसे बांह से पकड़कर अपने अंग से लगा लिया। बच्चे अपने साथियों सहित कोठी में क्रिकेट का सामान रखने के लिए चले गये तो सानन्द ने बहुत सावधानी से पूछा, "मलावी! आज सतीश आया था क्या?"

"नहीं, आज तो नहीं आया। वह दो सप्ताह से नहीं आ रहा है।"

"मेरे पास आज उसका टेलीफोन आया था। उसने तुम्हारे विषय में कुछ जानकारी प्राप्त करने का यत्न किया था। मैंने उसको जानकारी दी, तब उसने यह पूछा कि मैं तुमको विवाह करने की स्वीकृति क्यों नहीं देता।"

मलावी हंस पड़ी। उसने पूछा, "तो वह आपके पास अपनी अर्जी लेकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुंच गया है।"

"मैं इसे अर्जी तो कह नहीं सकता। हां, एक मित्र के नाते उसने मुझसे सहायता मांगी है।"

"तो फिर आपने सहायता देने का वचन दे दिया है?"

"मैं इस प्रकार के कार्य में सहायक नहीं होना चाहता। मैंने उसे यह कहा है कि यदि उसको अपनी अर्जी तुम्हारे सामने उपस्थित करने में लज्जा लगती है तो उसको किसी डाक्टर से विटामिन बी काप्लेक्स के इंजेक्शन ले लेने चाहिए। आज के युग में विवाह जैसे मामले में किसी तीसरे का हस्तक्षेप ठीक नहीं होता। इस पर उसने कहा था कि आज आएगा और बात करेगा।"

"तो ऐसा प्रतीत होता है कि अभी तक उसने आपकी सम्मति के अनुसार इंजेक्शन नहीं लिये। अन्यथा वे इस समय तक आ गये होते।" इस पर वे तीनों हंसने लगे। हंसते हुए मलावी ने कहा, "एक वर्ष से ऊपर हो गया जब से आपके यह मित्र मुझसे सम्पर्क बना रहे हैं। कभी तो वह ऐसे समय आ जाते थे, जब घर पर कोई भी नहीं होता था। कभी-कभी टेलीफोन पर भी बात करने लग जाते थे। इस सबसे मैंने यही अनुमान लगाया था कि मेरे विषय में वह अपना मन बना रहे हैं एक दिन उन्होने मेरा पूर्व इतिहास पूछा तो मैंने आद्योपान्त सब सुना दिया। उनको यह जानकर आश्चर्य हुआ कि सोम मेरा पुत्र है। मेरी कथा सुनने पर भी उन्होंने मेरे सम्मुख विवाह का प्रस्ताव रख दिया। मैंने उनको बताया कि आपकी राय के बिना मैं विवाह नहीं कर सकती।

"इसके बाद भी कई मास तक वह मिलने के लिए आते रहे। उनका मेरे हृदय तक पहुंचने का ढंग आपके भाई साहब से भिन्न था। आपके भाई साहब तो अपने धन का प्रदर्शन, अपने परिवार की श्रेष्ठता का वर्णन और अपने युवा होने की बातें करते रहे हैं। विपरीत इसके सतीशजी अपने विषय में एक शब्द भी न कहकर मेरे भावी जीवन के विषय में ही आशंकाएं व्यक्त किया करते थे। उनका कहना था कि मुझे गृहस्थ जीवन में प्रविष्ट हो जाना चाहिए, इससे मनुष्य समाज के ऋण से उऋण हो जाता है। सन्तान उत्पन्न किये बिना और उसकी उचित शिक्षा-दीक्षा किये बिना तो मनुष्य अन्तरिक्ष में ही लटका रहता है। मनुष्य की इसके बिना सद्गति नहीं होती।

"लगभग पन्द्रह दिन हुए जब वह आग्रह करने लगे तो मैंने उनसे कह दिया कि वह आपसे मिल लें। आपकी सम्मति के बिना मैं यह कार्य नहीं कर सकती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कदाचित् तब से ही वह मुझे फोन कर रहा है। मैं तो तुमसे पहले भी पूछ लेता, परन्तु कारखाने में हड़ताल के कारण मैं इस विषय पर ध्यान नहीं दे सका। आज मैंने उसे बता दिया है, "मियां बीवी राजी तो क्या करेगा काजी?' उसको स्वयं यहां आकर बात तय कर लेनी चाहिए।"

"तब तो ठीक है आपके सम्मुख ही सारी बात हो जाएगी।"

"देख मलावी! मैं तुम्हारे मन के उद्‌गारों को समझता हूं। परन्तु उन उद्‌गारों के मन में होते हुए भी तो तुम किसी के साथ गृहस्थ जीवन यापन कर सकती हो। हमारे समाज में तो गृहस्थ जीवन और लगन दो भिन्न-भिन्न बातें मानी जाती हैं। लड़कियों को लगन अथवा प्रेम शब्द के अर्थ ही विदित नहीं हो पाते थे कि उससे पूर्व वे पत्नियां बन जाती थीं। हमारे यहां स्त्री-पुरुष में पति-पत्नी के सम्बन्ध के अतिरिक्त बहन-भाई का भी सम्बन्ध है और बहन-भाई में लगाव पति-पत्नी के लगाव से कम तीव्र नहीं होता। यौन सम्बन्ध और लगाव दो भिन्न-भिन्न बातें हैं?"

"तो आप क्या चाहते हैं?"

"मैं कुछ भी नहीं चाहता। मैं तो तुम्हारे सम्मुख परिस्थिति का विश्लेषण कर रहा हूं। इस पर यदि तुमको पति-पत्नी का सम्बन्ध बनाने की इच्छा हो तो यह कोई विचित्र बात नहीं होगी। न ही यह अनहोनी होगी।"

"देखिये जी!" मलावी ने गम्भीर होते हुए कहा, "जिस दिन आपको मेरा आपकी रोटियां तोड़ना भारी लगने लगे, आप मुझे बता दीजियेगा। मैं यहां से चली जाऊंगी। किन्तु मेरा यह दृढ़ निश्चय है कि मैं विवाह नहीं करूंगी।

"सतीश को भी मैंने बताया था कि मेरा विवाह हो चुका है। परन्तु वे यही समझते रहे कि मैं सरदार नरेन्द्रसिंह के विषय में कह रही हूं। यदि मेरी अपनी कथा सुनने के बाद वे मुझसे पूछते कि मेरे पति का नाम क्या है तो मैं निस्संकोच अपने पति का नाम बता देती।

"जब आप मुझे अपने घर से निकाल देंगे तब भी मैं स्वयं को आपकी त्यक्ता पत्नी ही मानूंगी।"

अनन्ता बोली, "मलावी! घर से निकालने की बात तो यहां है ही नहीं। यहां तो हम एक स्त्री की स्वाभाविक इच्छाओं की बात कर रहे हैं।"

इस समय वे तीनों कोठी की ओर चल पड़े थे। जाते-जाते उसने कहा, "अनन्ता बहन! मुझे उन इच्छाओं की बात स्मरण कराकर अपनी निष्ठा से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पतित करने का यत्न मत करो। बार-बार किसी अकिंचन के सम्मुख स्वर्णभ्रमों को लाकर रखना अथवा किसी भूखे के सम्मुख स्वादिष्ट और भोज्य पदार्थ परोस देना तो उसको प्रलोभनों में डालना है। मेरा निवेदन है कि आपको मुझ पर दया करनी चाहिए और मुझको अपने संकल्पों के डिगाने के लिए प्रलोभनों में नहीं डालना चाहिए।"

वे अपने कमरे में आ गये थे। अन्धेरा हो गया था। सानन्द बैठ गया। अनन्ता बिजली का स्विच ऑन करने के लिए गई तो मलावी ने भूमि पर बैठ सानन्द के चरणों में अपना माथा टेक दिया। इतने में प्रकाश हो गया। सानन्द और अनन्ता ने उसे इस अवस्था में देखा तो चकित रह गये। सानन्द ने उठते हुए कहा, "क्या कर रही हो मलावी! उठो।"

अनन्ता ने उसे उठा अपने गले से लगा लिया। मलावी का मुख प्रफुल्लित हो रहा था। सानन्द ने भी अनुभव किया कि उसका सौन्दर्य द्विगुणित हो गया है। उसने पूछा, "यह तुमने क्या किया? मैं कोई पत्थर का देवता तो नहीं हूं, जिसको इस प्रकार साष्टांग प्रणाम किया जाये?"

"ऐसा तो मैं प्रायः करती रहती हूं। मेरे चित्त को इससे शान्ति मिलती है। मेरे मन में उभरनेवाले उद्‌गार इससे पूर्व स्थिति में आ जाते हैं।"

"इस प्रकार अपनी अवस्था का प्रदर्शन कर तुम मुझको निरन्तर परीक्षा में डाल देती हो।"

"किन्तु आप तो इतने दृढ़निष्ठ हैं कि लाखों की सम्पत्ति को भी पांव से ठोकर मारकर दूर कर रहे थे। उसके सम्मुख मेरी क्या विसात?"

"दोनों में अन्तर है। उस धन-सम्पदा को प्राप्त करने के लिए जहां मैं यह अनुभव करता हूं कि बेईमानी हो रही है वहां तुम पुकार-पुकार कर यह कह रही हो कि तुम तो मेरी अपनी हो। तुमको प्राप्त करने में किसी प्रकार की बेईमानी नहीं है।

"मैं समझता हूं कि तुम मेरे मार्ग में प्रलोभन प्रस्तुत कर मुझसे कोई अनुचित बात करने के लिए कह रही हो।"

मलावी को कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि सानन्द उसे डांट रहा है। उसके व्यवहार की निन्दा कर रहा है। इससे उसका मुख पीला पड़ गया। कुछ ही क्षण पूर्व प्रसन्नता से प्रफुल्लित उसका मुख कुम्हला गया। उसकी आंखें तर हो गईं।

अपने मन की इस नवीन अवस्था को छिपाने के लिए बिना एक भी शब्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहे मलावी उस कमरे से निकल अपने सोने के कमरे में चली गई।

अनन्ता ने यह देखा तो किसी अनिष्ट की आशंका से वह भी उसके पीछे-पीछे दौड़ती हुई चली गई।

: 8 :

इस समय सानन्द का पिता आया और सानन्द को आवाज देकर उसके कमरे में आ गया। सानन्द उनके सत्कार के लिए उठ गया और उनको बैठाकर प्रश्न भरी दृष्टि से उनकी ओर देखने लगा। उसे इस प्रकार अपनी ओर देखते पा हरिशरणानन्द ने कहा, "अनन्ता कहां है?"

"वह मलावी के कमरे में है।"

"सानन्द! मैं यह जानने के लिए आया हूं कि अब तुम क्या करने वाले हो। समर्थ ने मजदूरों की यूनियन के मन्त्री को बुलाकर कम्पनी के निर्णय से अवगत करा दिया है और वे इस निर्णय को अपनी विजय का प्रथम चरण मानकर कारखाने में जलसा कर रहे हैं। डा. माथुर ने अभी टेलीफोन से लेबर आफिसर को सूचित कर दिया है कि आर्बिट्रेशन का प्रस्ताव स्वीकार हो गया है। इसलिए वह अविलम्ब कोई आर्बिट्रेटर नियुक्त कर दें। मजदूरों को हड़ताल बंद करने के लिए भी कह दिया जाय। इधर कारखाना खोलने का प्रबन्ध हो रहा है।"

"हमारे निर्णय का यह अर्थ तो नहीं है। मैं तो इस निर्णय का यह अर्थ समझता हूं कि कारखाना बन्द रखने का हमारा निश्चय अभी ज्यों-का-ज्यों बना हुआ है। मैं यह समझता हूं कि कर्मचारियों ने दण्ड पाने के योग्य कार्य किया है और हमें चाहिए कि आर्बिट्रेटरों के द्वारा उन्हें दण्ड दिलवायें।"

"क्या लाभ होगा इस झगड़े से?"

"लाभ-हानि की बात तो मैंने कभी सोची ही नहीं। मैंने तो सदा सत्य, झूठ, उचितानुचित और न्यायान्याय की बात पर ही विचार किया है।

"कारखाने में हड़ताल कर कर्मचारियों ने अनुचित कार्य किया था। उसका प्रतिकार यही था कि सबको काम से निकाल दिया जाय और नये कर्मचारी भरती कर लिये जाएं। सरकार ने हम पर आर्बिट्रशन थोपकर अन्याय किया है। इसका प्रतिकार यह था कि सरकार के अन्याय का विरोध किया जाय। कम्पनी ने उलटे सरकार के अन्याय का स्वागत किया है। परन्तु कर्मचारियों की अनुचित बात को अभी स्वीकार नहीं किया। यदि भैया ने यह सब स्वीकार कर लिया है तो मुझे कारखाने का कार्य छोड़ना पड़ेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो सभी कह रहे हैं। सबका विचार है कि तुम ऐसा ही करने वाले हो। मैं यही जानने के लिए आया था।"

"सबमें कौन-कौन हैं?"

"समर्थ, सन्तोष, सुचाला और दाताराम। मैं तो पहले ही इस निश्चय पर पहुंच चुका हूं कि किसी कारखाने की मैनेजरी तुम्हारे वश की बात नहीं है।"

"तो आप सबकी यही सम्मति है कि मुझे त्याग-पत्र दे देना चाहिए?"

"यदि नहीं दोगे, तो कम्पनी तुमको नोटिस दे देगी।"

"ठीक है, कम्पनी को कष्ट करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। मैं अभी अपना त्याग-पत्र लिखकर भेज देता हूं।"

"हां, और तुम अभी उधर आ जाओ। मीटिंग अभी भी चल रही है। उसमें तुम्हारे त्याग-पत्र का भी हम निर्णय कर लेते है। अन्यथा पुनः मीटिंग बुलानी पड़ जायेगी और उसमें समय लग जायेगा।"

सानन्द उठकर अपने पिता के साथ चल पड़ा। हरिशरणानन्द ने कहा, "अनन्ता को भी ले चलो।"

"कोई आवश्यकता नहीं। वह इस निर्णय का विरोध नहीं करेगी।"

सानन्द को यह देखकर विस्मय हुआ कि कम्पनी के सब सदस्य अभी वैसे ही बैठे है जैसे वह उनको छोड़कर गया था। वह समझ गया कि परिवार के सदस्य उसके प्रस्ताव को अस्वीकार कर उसके विपरीत षड्यन्त्र कर रहे है। वह विचार करने लगा कि न जाने वे क्या सोच रहे होंगे जो उसको मैनेजिंग डायरेक्टर के पद से हटाने के लिए यह गुप्त गोष्ठी करनी पड़ रही है। पिताजी को इसके लिए उन्होंने उसके पास भेजा कि यदि उनके मत का समर्थन न करे तो वे अपने प्रभाव से उसे इसके लिए बाध्य करें।

मन में यह विचार आते ही सानन्द की हंसी निकल गई। पूर्व इसके कि वह कुछ कहे डाक्टर माथुर ने कहा, "सानन्द! परिवार की भलाई के लिए यह उचित समझा गया है कि तुमसे त्याग-पत्र मांग लिया जाय।"

"पिताजी! आप सब लोगों की इच्छा का आदर करने के लिए ही मैं यहां पर आ गया हूं।"

इसके अतिरिक्त बिना एक शब्द बोले सानन्द ने एक पत्र पर अपना त्याग-पत्र लिखकर दे दिया और डायरेक्टरों ने प्रस्ताव पारित कर उसे स्वीकार कर लिया। अब सानन्द का स्थानापन्न ढूंढ़ा गया। समर्थ ने दाताराम का नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपस्थित किया परन्तु माथुर ने समर्थ का नाम प्रस्तुत कर दिया।

दाताराम ने अपना नाम वापस ले लिया तो समर्थ सर्वसम्मति से मैंनेजिंग डायरेक्टर बन गया। उसी समय सानन्द ने सबकी उपस्थिति में अपना चार्ज समर्थ को दे दिया।

यह औपचारिक बात सम्पन्न होने पर माथुर और सानन्द बाहर निकल आये। माथुर ने पूछा, "अनन्ता कहां है?"

"यह मलावी के साथ बैठी बातें कर रही थी। मैंने उसको बुलाना आवश्यक नहीं समझा।"

"तुम मलावी को कहते क्यों नहीं? सतीश उससे विवाह करने के लिए कह रहा है तो करवा क्यों नहीं देते?"

"पिताजी! लड़की का विवाह और मैंनेजिंग डायरेक्टरी में बहुत अन्तर है। मैंनेजिंग डायरेक्टरी तो मेरे अकेले की बात थी किन्तु विवाह तो किसी दूसरे का किसी तीसरे के साथ होने की बात है। मैं उसमें क्या कर सकता हूं?"

"तुम ऐसे ही कर सकते हो जैसे हमने तुमको त्याग-पत्र देने के लिए विवश किया था। तुम उसको घर से निकाल देने की धमकी दो, वह मान जायेगी।"

"मैं ऐसा नहीं कर सकता।"

"क्यों?"

"क्योंकि यह मानवता के विपरीत है।"

"यह क्यों नहीं कहते कि प्रेम का बन्धन है?"

"एक ही बात है। मानवता ही प्रेम है।"

"क्यों स्वयं को और संसार को भी धोखा देना चाहते हो? तुम्हारी मानवता का सारा चिट्ठा मुझे मालूम हो गया है। तुम मुझसे, अपनी पत्नी से और अपने बच्चे से अन्याय कर रहे हो।"

"अपनी जानकारी में तो मैं किसी के साथ अन्याय नहीं कर रहा। प्रतीत होता है आपको किसी ने बहका दिया है।"

"बहकाया नहीं, उसने मुझे सचेत कर दिया है। तुम आस्तीन के सांप हो।"

"क्या मैं जान सकता हूं कि आपको सचेत करनेवाले वे आपके शुभचिन्तक महानुभव कौन हैं।"

"तुम्हारे भाई समर्थ और तुम्हारे पिताजी।"

"परन्तु क्या चेतावनी दी है उन्होंने?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यही कि तुम इतने चतुर हो कि अपनी पत्नी की आंखों में भी धूल झोंक रहे हो।"

सानन्द तो विस्मय में मुख देखता रह गया। उसने गम्भीर होकर कहा, "तो इतनी कृपा आप कन्या पर कर दीजिये कि उसको भी सचेत कर दीजिये। आपने परिवार के अन्य सदस्यों को कम्पनी के विषय में परामर्श दिया है, अपनी लड़की को भी इस सत्परामर्श से कृतार्थ करते जाइये। मैं आपका बहुत आभारी रहूंगा।"

डाक्टर माथुर हंस पड़ा। उसने कहा, "बात कुछ ऐसी प्रतीत होती है कि वे दोनों औरतें तुम्हारे सम्मोहन में फंसी हुई हैं। ऐसी स्थिति में वे किसी का परामर्श ग्रहण भी करेंगी क्या?

"देखो, समर्थ को मैंने कम्पनी आरम्भ करने के समय ही कहा था कि तुम विश्वस्त व्यक्ति नहीं हो। परन्तु तुम्हारे सम्मोहन में फंसा हुआ वह मेरी बात मानने के लिए तैयार नहीं होता था। बाद में जब उत्पादित माल के मूल्य में वृद्धि की बात चल रही थी, तब तक तो समर्थ तुम्हारे सम्मोहन से निकल चुका था परन्तु परिवार के अन्य सदस्यों पर से तुम्हारा जादू समाप्त नहीं हुआ था और उनसे तुम अपनी मूर्खतापूर्ण योजना मनवा बैठे।

"उसका परिणाम निकला तो सबके होश ठिकाने आ गये। इस प्रकार तुम्हारी पत्नी को भी जब तक कोई ठोकर नहीं लगती, तब तक उसको भी सचेत कराना सम्भव नहीं होगा। इस पर भी मैं आज उसको सचेत कर ही देता हूं।"

"यह तो आप बड़ी कृपा करेंगे।"

डाक्टर अनन्ता से मिलने के लिए चला गया। सानन्द ने पिता-पुत्री में निस्संकोच भाव से बातचीत करने का अवसर देने के लिए अनन्ता के पास जाना उचित नहीं समझा। माथुर को अनन्ता की ओर जाते देख सानन्द अपने पिता से बातचीत करने के लिए चला गया।

उसने देखा कि उसके माता-पिता कमेटी रूम से निकलकर अपने कमरे की ओर जा रहे थे। यद्यपि दोनों ने समर्थ तथा डाक्टर माथुर का समर्थन किया था, इस पर भी वे प्रसन्न नहीं थे। इस कारण अपने पीछे-पीछे सानन्द को आते देख दोनों खड़े हो गये। सानन्द ने उनके साथ चलते हुए कहा, "पिताजी! अब तो प्रसन्न हैं?"

"नहीं।"

"क्यों?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम्हें कितना वेतन मिलता था?"

"अठारह सौ रुपया मासिक।"

"जब इतना वेतन कहां मिलेगा तुम्हें?"

"मुझे इतने वेतन की आवश्यकता ही क्या है। मैं अपना निर्वाह बहुत कम में कर सकता हूं। उतना तो मैं स्वयं पैदा कर सकता हूं।"

"कितने में तुम्हारा निर्वाह हो सकता है?"

"यही ढाई सौ रुपये तक में।"

"इस समय कितने खर्च करते थे?"

अभी तो एक मोटर थी, घर का किराया था, एक नौकर था। सब मिल-मिलाकर आठ-नौ सौ मासिक पड़ जाता था। सात सौ रुपया अनन्ता के मकान का किराया आ जाता था। दो-तीन सौ मैं अपने वेतन से देता था।"

"जमा कितना कर लिया है?"

"मैंने डेढ़ वर्ष कम्पनी की नौकरी की है। इस अवधि में लगभग सत्ताईस हजार रुपया मेरे पास बच गया है। यह सब रुपया मेरे पास सुरक्षित है किन्तु अब मैं इसमें से एक पाई भी अपने पास नहीं रखूंगा।"

"तो क्या करोगे?"

"कहीं दान कर दूंगा।"

"क्यों?"

"क्योंकि मैं इसे अपना नहीं समझता।"

"यह तो तुम्हारे परिश्रम का पैसा है। हां, कम्पनी के लाभ में से भले ही तुम कुछ न लो।"

"जी नहीं, मैं इस प्रकार नहीं समझता।"

"इसके अतिरिक्त भी तुम्हारे पास कुछ जमा है।"

"जब मैंने लेखन-कार्य छोड़ा था, तो उस समय साठ हजार रुपया अमेरिका में और दस हजार रुपया भारत में था। उसमें से पचपन हजार रुपया मैंने मकान पर खर्च कर दिया है। शेष इधर- उधर के खर्चे में समाप्त हो गया है।

"मकान पर अभी कुछ और खर्च होनेवाला है। उसमें फर्नीचर और पंखे इत्यादि लगने शेष हैं। उस पर चार-पांच हजार रुपया लग जायेगा। यह मैं मकान में जाकर और पुनः लेखन-कार्य से उत्पन्न कर लगाऊंगा।"

"तो तुम अपने मकान में जा रहे हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी! एक-दो दिन में ही चला जाऊंगा।"

"परन्तु उतने बड़े मकान में दो-ढाई सौ में गुजारा नहीं हो पायेगा।"

"चलाना ही होगा। जब तक आय बढ़ नहीं जाती तब तक तो इतने में ही निर्वाह करना पड़ेगा।"

"कुछ आवश्यता हो तो अपनी मां से ले सकते हो।"

"यों तो सब कुछ आपका और उनका ही दिया हुआ है, इस पर भी अभी मुझे आवश्यकता नहीं है।"

"मलावी भी तुम्हारे साथ नये मकान में जाकर रहेगी?"

"कह नहीं सकता। यदि वह चाहेगी तो उसके लिए वहां स्थान बन जायेगा।"

"उसको छोड़ क्यों नहीं देते?"

"छोडू तो तब, जब मैंने उसको पकड़कर रखा हुआ हो?"

"तो फिर वह तुम्हारे साथ जायेगी क्यों?"

"यह तो उससे पूछने की बात है। मैं इतना ही बता सकता हूं कि यदि उसे मेरे आश्रय की आवश्यकता होगी तो मैं इन्कार नहीं करूंगा।"

"उसको पहले की भांति हमारे पास छोड़ सकते हो।"

"मैं उसे बता दूंगा। यदि उसको पसन्द होगा तो मुझे कोई आपत्ति नहीं।"

रात के भोजन के समय तक सानन्द वहीं बैठा रहा। वहीं से वह डाइनिंग हाल में चला गया। समर्थ, डाक्टर माथुर और मलावी एक साथ ही खाने के कमरे में आये। प्रतीत होता था कि अनन्ता रोती रही है। मलावी अभी गम्भीर थी। वह बच्चों में बैठी उनसे बातें कर रही थी। सानन्द को ऐसा अनुभव हुआ कि वह अपने मन की अवस्था को छिपाने के लिए बच्चों से बातें कर रही है। समर्थ प्रसन्न प्रतीत होता था और माथुर गम्भीर। दाताराम और सुचाला तथा उसके बच्चे सबसे बाद कमरे में आये और उनके आते ही खाना परोसा जाने लगा। सन्तोष अपने बच्चों में बैठी थी। खाने के समय कोई बातचीत नहीं हुई।

अनन्ता के विवाह के बाद आज प्रथम दिन था कि जब डाक्टर माथुर समर्थ के घर पर भोजन करने के लिए बैठा था। विवाह के पूर्व तो वह कई बार उसके घर पर भोजन कर चुका था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ परिच्छेद

: 1 :

भारत के इतिहास में सन् 1948 से 1960 तक का काल भारी परिवर्तन का काल बन गया। इस परिवर्तन का श्रेय अथवा दोष कांग्रेस दल को ही देना पड़ेगा। यद्यपि कांग्रेस में कर्ता-धर्ता पंडित जवाहरलाल ही थे, परन्तु यह सब कुछ, अच्छा या बुरा, जो कुछ भी इसको कहा जाये, कांग्रेस के समर्थन से ही पंडित जवाहरलाल कर सके थे। इस कारण कांग्रेस ही इसके लिए उत्तरदायी है।

कांग्रेस के लोग तो जो कुछ उन्होंने किया अथवा करने का विचार रखते थे, उसे ठीक ही बता रहे थे। सन् सत्तावन के निर्वाचन आ रहे थे और प्रथम पंचवर्षीय योजना समाप्त हो द्वितीय पंचवर्षीय योजना बनकर जनता के सामने उपस्थित थी।

देश ने उद्योग-धन्धों के विषय में कुछ तो उन्नति की ही थी और जो चित्र द्वितीय योजना का देश के सम्मुख उपस्थित था, वह कांग्रेस के लोग गालें फुला-फुलाकर और गला फाड़कर जनता को बता रहे थे। देश के प्रायः सब अंग्रेजी समाचारपत्र कांग्रेस की नीति का समर्थन कर रहे थे। कहीं किसी समाचारपत्र अथवा किसी नेता की योजना की व्याख्या में मतभेद होता तो वह उसका सिद्धांतात्मक मतभेद न कहकर केवल योजना के आकार-विस्तार का मतभेद ही प्रकट करते थे।

अभी निर्वाचन में छः मास से अधिक समय था और भिन्न-भिन्न राजनीतिक दल अपने-अपने लंगोटे कसने लगे थे। इस समय दो-ढाई वर्ष के राजनीतिक क्षेत्र से पृथक् रहने के पश्चात् सानन्द एकाएक अपने क्षेत्र में आ पहुंचा।

सानन्द ने मिल-मिलाकर पुनः संसद की प्रेस-गैलरी का पास प्राप्त कर लिया और उसने विदेश और देश के कुछ समाचारपत्र एवं पत्रिकाओं में समाचार और लेख भेजने के लिए पत्र-व्यवहार आरम्भ कर दिया।

एक दिन वह प्रेस-गैलरी में अपने साथियों में बैठा दिखाई दिया। उस दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसद के अधिवेशन के समाप्त होने पर उसके परिचित और मित्र उसको घेरकर बैठ गये। मदन गोपाल और सतीश इनमें सबसे आगे थे।

परिचित लोग आ-आकर उससे हाथ मिलाते थे और पूछते थे, "कहां रहे सानन्दजी?"

कोई पूछता, "विदेश-भ्रमण के लिए गये थे क्या?" तो कोई-कोई पूछ लेता, "स्वास्थ्य तो ठीक रहा है न?"

इस प्रकार के प्रश्न सुन-सुनाकर मदनगोपाल और सतीश मुस्करा रहे थे। सानन्द सबके प्रश्नों का "हां जी, ठीक है" इस प्रकार के उत्तर देता जाता था।

जब इस प्रकार अपने सहयोगियों से घिरा हुआ सानंन्द संसद की लॉबी में आया तो कुछ परिचित संसद-सदस्य भी उससे हाथ मिला-मिलाकर उससे सुख-समाचार पूछने लगे।

एकाएक किसी ने पीठ की ओर उसके कंधे पर हाथ रखा तो सानन्द ने घूमकर देखा। हाथ रखनेवाले शिक्षा-मन्त्री थे। सानन्द ने आदाब अर्ज कर दिया तो उन्होंने कहा, "कहां रहे हो मिश्रा?"

"हजरत! एक दलदल में फंस गया था। बहुत मुश्किल से निकल कर आ सका हूं।"

"तो अब आजाद हो?"

"जी! ऐसा ही महसूस करता हूं।"

"तो आज सायंकाल की चाय मेरे यहां लेना। है फुरसत?"

"हाजिर हो जाऊंगा।"

"तो अभी चले आओ। मैं सीधा घर पर ही जा रहा हूं।"

"अभी आया।"

सानन्द ने मदनगोपाल तथा सतीश को अगले दिन लंच के समय संसद के रेस्टोरां में मिलने को कह शिक्षा-मंत्री की कोठी को चलने की तैयारी कर ली। इस समय मदनगोपाल ने सतीश से कहा, "बहुत भाग्यशाली है सानन्द। पहले ही दिन वह अपने काम में ऐसे डुबकियां लेने लगा है, जैसे मछली जल में तैरती है।"

"मदन! आज मैने मलावी को टेलीफोन किया। एक सप्ताह तो मैं अमृतसर, चण्डीगढ़ इत्यादि स्थानों पर चक्कर लगा रहा था। आज आया और टेलीफोन खड़का दिया। टेलीफोन सानन्द की भाभी सन्तोष ने उठाया था। मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम पूछा और फिर बता दिया, 'मुझको मलावी से काम है।"

"उसने मेरा नाम पूछ लिया। मैंने अपना नाम बताया तो वे कहने लगीं, मलावी कोठी पर नहीं है।"

"कहां गई है?" मैंने पूछा।

"जहन्नुम में।"

"वहां कौन से नम्बर की बस जाती है?"

"इस पर वह कहने लगी, मैं तो कभी बस पर चढ़ी नहीं और न ही मैंने कभी जहन्नुम की यात्रा की है। इससे वहां पहुंचने का रास्ता अथवा वहां जानेवाली बस का नम्बर बताने में असमर्थ हूं।"

"मैं इतना जल्दी छोड़ने का विचार नहीं रखता था। इस पर मैंने पूछ लिया, समर्थजी से बात कर सकता हूं क्या?"

"वे सरकारी आर्बिट्रेटरों से बातचीत कर रहे हैं। इस समय बात नहीं कर सकते।"

"सानन्द कहा है?"

"वही तो मलावी को जहन्नुम में ले गये हैं?"

"और भाभी अनन्ता भी साथ हैं?"

"इस पर उन्होंने टेलीफोन बन्द कर दिया। मैं इन सबका अर्थ सानन्द से पूछना चाहता था कि अब शिक्षा-मंत्री उसको झपटकर ले गये।"

"तुम मलावी के पीछे क्यों पड़े हो? मैंने तुमको एक बंगाली लड़की बताई जो थी। उसको घर ले आओ और अपना जीवन चलाओ।"

"वह मलावी जितनी सुन्दर नहीं है।"

"मुझको तो ईड़ा अधिक सुन्दर दिखाई देती है। मछली बहुत ही स्वादिष्ट बनाती है।"

"बात यह है कि पिछली बार जब मैंने बहुत आग्रह किया तो मलावी ने कहा था कि सानन्द कहेगा तो वह मान जायेगी। इस पर मैंने टेलीफोन पर सानन्द से बात की थी। सानन्द ने कहा था कि मैं कोठी पर उससे मिलूं। वह मलावी को मेरे सामने ही कह देगा।

"दुर्भाग्य से मेरे समाचारपत्र वालों का आदेश आया कि मैं पंजाब की स्थिति पर एक लेख लिखूं। इससे पंजाब की राजनीतिक स्थिति पर लेख लिखने के लिए उसी सायं अमृतसर के लिए चला गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आज लौटा तो पता चला कि सानन्द उसको लेकर जहन्नुम को चला गया है।"

इस पर दोनों मित्र हंस पड़े। वे दोनों चाय पीने के लिए क्वालिटी रेस्टोरां को चल पड़े। मार्ग में चलते हुए मदन गोपाल ने बताया, "मैंने तुमको बताया था कि मलावी सानन्द के सम्मोहन में फंसी हुई वहां पड़ी है। अतः तुमको वह प्राप्त नहीं हो सकेगी। तुममें शक्ति नहीं कि उसका सम्मोहन तोड़ सको।"

"परन्तु अब क्या वह सानन्द की पत्नी बन गई है? सन्तोष भाभी के कहने का यही अर्थ समझ आया है।"

"हो सकता है। इस पर भी मैं तो तुमको ईड़ा के विषय में ही कहूंगा। मुझको वह बहुत ही सुशील दिखाई देती है। बात यह है कि मैं विवाहित हूं। मेरे घर में चार बच्चे हैं। यदि वह झंझट न होता तो मैंने उससे कब का विवाह कर लिया होता।"

"परन्तु मदन! तुम्हारा उससे क्या सम्बन्ध है?"

"ईड़ा का पिता डाक्टर सेन हमारा चिकित्सक है। वह बेचारा साधारण क्लर्क है और साथ ही होम्योपैथिक चिकित्सा करता है। घर की हालत पतली है, सात लड़कियां हैं। कोई बंगाली युवक बिना दहेज के लड़कियों की ओर देखता भी नहीं।"

"तो तुमने मुझको बलि का बकरा समझ रखा है।"

"तो मलावी भारी दहेज को लाने वाली है?"

"उसकी बात ही दूसरी है।"

"क्या दूसरी है? जैसे वह लड़की है वैसे ही ईड़ा है। उसके तो एक लड़का भी है और अभी कंवारी है।"

"अच्छा! एक बार सानन्द से बात तो कर लूं। वहां काम नहीं बनेगा तो इस दिशा में विचार कर लूंगा।"

अगले दिन मदन और सतीश उत्सुकता से सानन्द की प्रतीक्षा कर रहे थे। सानन्द संसद में पहुंचा तो शिक्षा-मंत्री हिन्दी के विषय में एक वक्तव्य दे रहे थे और सानन्द आते ही नोट लेने लगा था।

लंच के समय तीनों मित्र संसद के रेस्टोरां में जा पहुंचे। सतीश ने बैठते ही कहा, "आज तो शिक्षा-मंत्री ने हिन्दी के पक्ष में अपना वक्तव्य दिया है।"

"हां! परन्तु यह शिक्षा-मंत्री की विवशता थी। विधान के अनुसार हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का विषय राष्ट्रपति के अधीन है। वे शीघ्र ही एक कमीशन नियुक्त करनेवाले है जो देश में हिन्दी की प्रगति के विषय में जांच करेगा और जो भविष्य में इसके विकास के लिए प्रस्ताव करेगा। इसको शिक्षा-मंत्री चाहते हुए भी रद्द नहीं कर सकते। इस कारण विवश हो उन्होंने यह वक्तव्य दिया है।"

"इस पर भी आज का वक्तव्य तो कुछ ऐसा था जिसमें सानन्द बोलता-सा प्रतीत होता था।"

सानन्द हंस पड़ा। हंसते हुए उसने कहा, "तो तुम शिक्षा-मन्त्री को केवल एक नमूना समझते हो। यह वक्तव्य उनका अपना तैयार किया हुआ है। मुझसे तो कल उन्होंने यत्र-तत्र शब्द ठीक करवाये थे।"

"तो मेरा अनुमान ठीक है न? वक्तव्य में सानन्द की आत्मा थी।"

"यदि मैं होता तो बहुत कुछ बंगालियों और मद्रासियों के विरुद्ध भी कहता। मैं समझता हूं कि यह उनका अधिकार नहीं कि वह देश के विधान की निन्दा करें और स्पष्ट रूप में उसकी अवहेलना करने की राय दें।"

"सानन्द! तुमने देश उत्तरी भारतवालों का समझ रखा है क्या?"

"नहीं तो। परन्तु सतीश! यह मद्रास और बंगाल के रहनेवालों का भी तो नहीं है। यह हम उनका अधिकार नहीं मानते कि वे देश के एकीकरण में बाधा बनकर बैठ जायें।"

"वाह! भला हम बाधा है अथवा हिन्दी भाषा-भाषी राज्य के लोग बाधक हैं? देश को एक पिछड़ी हुई भाषा से जोड़कर आप लोग देश की उन्नति में बाधक हो रहे हैं?"

"पिछड़ी हुई भाषा से क्या मतलब?"

"हिन्दी में टैक्निकल शब्द नहीं हैं।"

"तो ये शब्द उधार लिए जायेंगे।"

"जिससे उधार लोगे, उसें ही क्यों नहीं स्वीकार कर लेते?"

"इसलिए कि कहीं उसके दोष भी जो गुणों से अधिक होते हैं स्वीकार न करने पड़ जायें।"

"क्या दोष है अंग्रेजी भाषा में?"

"एक तो वह विदेशी भाषा है। अंग्रेजी भाषा रूपी ट्रक में इतना कूड़ा-करकट लदा है कि वह सब-का-सब हमको भी कूड़ा-करकट कर देगा। साथ ही इस भाषा की लीपि थर्ड क्लास है। यह अधूरी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भाषा का वाहन है लिपि और भाषा स्वयं है वाहन विचारों का। रोमन लिपि अधूरी है। न तो इसमें 'वावल' सब स्वरों का प्रतिनिधित्व करते हैं न ही इसमें संयुक्ताक्षर लिखने का प्रबन्ध है।"

"इस पर भी विश्व के एक बहुत बड़े भाग में यह बोली और पढ़ी जाती है।"

"दुनिया में एक बहुत भरी संख्या में प्राणी तो भाषा बोल ही नहीं सकते। सब कीट-पतंग, पक्षी-पशु आदि तो बोल सकते ही नहीं, तो क्या हम, जो बोलने की शक्ति रखते हैं बोलना बन्द कर दें?

"देखो सतीश! तुम्हारी युक्ति यह है कि अंग्रेजी में टैक्निकल शब्द है। मैं कहता हूं कि अंग्रेजी में भी वे नहीं हैं। अंग्रेजो ने उधार लिये है। ग्रीक और लेटिन से हिन्दी भी उधार ले सकती है। क्यों नहीं ले सकती?

"तुम्हारी दूसरी आपत्ति है कि अंग्रजी बहुत-से लोग बोल सकते है। मेरा कहना है कि सबसे अधिक संख्या में प्राणी तो बोलते ही नहीं। इससे कम संख्या में अर्ध-गूंगी भाषा बोलते हैं। हम, जो बालेने में सक्षम हैं, वह न तो सर्वथा गूंगे प्राणियों का अनुकरण करना चाहते हैं न ही अर्ध-गूंगों का।

"देखो बी-ए-टी में ए का उच्चारण है ऐ का। फिर बी-ए-एस-टी-ए-आर-डी शब्द में ए का उच्चारण है आ का। और ए-एफ-ओ-ओ-टी में ए का उच्चारण है अ का।

"इस प्रकार सी-यू-टी में यू का उच्चारण है अ का और पी-यू-टी में यू का उच्चारण है उ का।

"बताओ किस प्रकार की प्रशंसा कर रहे हो तुम। अच्छा क्रिकेट में क्रि का क लिखते हो सी अक्षर से, 'किम' शब्द में कि का क लिखा जाता है के अक्षर से और फिर के-एन-ओ-डब्ल्यू नो में के अक्षर की ध्वनि कहां गई?

"और भी सुनो, एल-आई-ई-यू-टी-ई-एन-ए-एन-टी का उच्चारण भला लेफ्टिनेंट कैसे हो गया? इस उच्चारण में ए तथा फ कहां से आ गये और इसके आई-ई-यू कहां गये?"

मदनगोपाल हंस पड़ा। हंसकर बोला, "बताओ सतीश! अब क्या कहते हो?"

सतीश ने निरुतर हो क्रोध में कह दिया, "भाषा में युक्ति नहीं चलती।"

"परन्तु सतीश, युक्ति तो तुम देने लगे थे कि हिन्दी घटिया है और अंग्रेजी भाषा बहुत बढ़िया है। जब उत्तर नहीं बना तो युक्ति छोड़ भावना पर आ गये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु भावना से तो हम अंग्रेज और अंग्रेजी दोनों को म्लेच्छ मानते हैं।''

सतीश ने कह दिया, ''मैं तो एक दूसरी बात के सम्बन्ध में कई दिन से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था। तुम मलावी को कहां ले गये हो?''

इस प्रकार एकदम बात बदलती देखकर सानन्द खिलखिलाकर हंस पड़ा। उसने हंसते हुए कहा, ''बाबा! मलावी तो अंग्रेजी का एक अक्षर भी नहीं जानती।''

''मैंने दो दिन हुए तुम्हारी कोठी पर टेलीफोन किया था और पता चला था कि मलावी को सानन्द जहन्नुम में ले गया है।''

''यह शुभ संवाद किसने दिया था। तुमको?''

''सन्तोष भाभी ने।''

''बात यह है कि हमारे परिवार में सन्तोष भाभी सहचारिता के लिए व्याकुल रहती हैं। मेरे वहां से चले आने पर अनन्ता आई और मलावी भी आ गई। साथ ही पिताजी तथा माताजी भी अपने पटेल नगरवाले मकान में चले गये हैं और भाभी अपनी कोठी सूनी-सूनी अनुभव कर नाराज हो गई हैं।''

''मैंने तुमको उससे बातचीत करने के लिए बुलाया था। तुम आये नहीं। अब तो मैं समझता हूं कि तुम लेट हो गये हो। उसका विवाह हो गया है।''

''किससे?''

''यह तो तुम उसको बधाई तथा कुछ भेंट देने आओगे, तो स्वयं बता देगी।''

''वह है कहां?''

''अपने पति के घर में।''

''और वह कहां है?''

''रिंग रोड नम्बर बीस में एक फ्लैट उसके पास है।''

''तो तुम कहां चले गये हो?''

''मैं भी उसी कोठी के दूसरे फ्लैट में अनन्ता के साथ रह रहा हूं।''

''ओह! उसके घरवाला क्या करता है?''

''आवारागर्दी करता है। दिनभर घूमा करता है।''

''कुछ काम तो करता होगा?''

''कुछ कमाकर तो जरूर लाता होगा। मैं तो इतना जानता हूं कि मलावी अभी भी अनन्ता की नौकरी करती है और अपने पति की आय में अपनी आय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमा कर ही निर्वाह कर सकती है।''

''तो उसने ऐसे आदमी से विवाह क्यों किया?''

''यह तुम कभी आओगे, तो उससे पूछ लेना।''

इस पर मदनगोपाल ने कहा दिया, ''सतीश! अब ईड़ा के विषय में निश्चय कर लेना चाहिए।''

''मिस्टर निर्मलचन्द्र सेन की लड़की के विषय में कह रहे हो?'' सानन्द ने मदनगोपाल से पूछ लिया।

''हां। सेन मुझसे कई बार कह चुका है। परन्तु सतीश तो मलावी के पीछे पागल हो रहा था। अब उसने विवाह कर लिया है तो मैं समझता हूं कि अब इसको भी विवाह कर लेना चाहिए।''

सतीश चुप रहा मदनगोपाल ने खाना समाप्त कर उठते हुए कहा, ''हां! तो बताओ सतीश! करूं टेलीफोन? आज तुम्हारी सगाई हो जायेगी और एक-दो सप्ताह में विवाह भी हो जायेगा।''

''और, ''सानन्द ने कहा, ''दस वर्ष में दस बच्चे भी हो जायेंगे।''

इससे तीनों हंसने लगे। तीनों पार्लियामेंट की 'लॉबी' में चले गये। वहां काम फीका पा वे संसद-भवन से बाहर चले आये। मदनगोपाल ने 'लॉबी' में से निर्मलचन्द्र सेन को टेलीफोन कर दिया था। उसने अब सतीश को बताया, ''आज हमारी चाय मिस्टर सेन के क्वार्टर में होगी।''

''किसलिए?'' सतीश ने पूछा।

''तुम्हारी सगाई के उपलक्ष्य में।''

''पर मैं पूछता हूं मदन! तुमको दलाली में क्या मिलने वाला है?''

''एक नवल-नवेली भाभी।''

''तो तुमसे हंसी-मजाक करने के लिए एक भाभी चाहिए। इसलिए मुझको विवाह कराना चाहिए। यही कह रहे हो न?''

''हां। साथ ही एक घर दावत के लिए और बन जाने का लाभ भी तो है। सबसे बड़ी बात यह है कि वहां बहुत बढ़िया मछली खाने को मिला करेगी।''

''और देखो मदन! अगर वह मुझसे झगड़ा करने लगी तो उसको तुम्हारे घर छोड़ आऊंगा।''

''यह मंजूर है और अगर वह तुम्हारे पास जाने से इन्कार करने लगी तो नाराज न होना।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 2 :

जब सानन्द ने यह निश्चय किया कि मलावी को उसके घर रहते हुए प्रत्यक्ष में उसके साथ पत्नी बनकर ही रहना चाहिए अन्यथा मूर्ख दुनिया अनेकानेक कल्पनाओं के घोड़े दौड़ाती रहेगी और उन दोनों को बदनाम करती फिरेगी, तब अनन्ता ने यह कहा था, "जब पति-पत्नी होने की घोषणा करनी है तो फिर वास्तव में यह सम्बन्ध क्यों नही बना लिया जाता?"

"मूर्ख संसार को मूर्खता करने से रोकने के लिए क्या स्वयं भी मूर्ख बनना चाहिए?"

"परन्तु आपको इसमें आपत्ति क्या है?"

"मेरी आपत्ति तो सार्थक है। मैंने एक पत्नीक रहने का वचन दिया हुआ है। मुझको वह वचन भंग करने में कोई कारण प्रतीत नहीं होता।"

"मैं आपको वचन से टल जाने की स्वीकृति देती हूं।"

"तुम कौन हो स्वीकृति देने वाली? देखो अनन्ता! पति-पत्नी बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हुए भी कुछ बातों में सदा स्वतन्त्र रहते है। वे बातें हैं अपनी आत्मा से सम्बन्ध रखनेवाली। यह विवाह सम्बन्ध में निष्ठावान होना भी आत्मा से ही सम्बन्ध रखनेवाली बात है।

"यही कारण है कि जब मलावी ने अपने मन में मेरे प्रति प्रेम की निष्ठा बनाई तो यह निष्ठा मन, शरीर और इन्द्रियों के सुखों के असीम होने पर भी, भैया उसको डिगा नहीं सके।

"मैं ऐसा ही कुछ तुम्हारे प्रति, अपनी आत्मा की बात समझता हूं।"

बात समाप्त हो गई। किसी निष्ठा को निर्माण करते समय, भले ही बुद्धि सहायक हो, परन्तु निष्ठा बन जाने के पश्चात् तो बुद्धि बहुत नीचे रह जाती है। वह पुनः निष्ठा की ऊंचाई को पा नहीं सकती।

कभी मन विकृत होने से अथवा आत्मा दुर्बल होने से निष्ठा उस ऊंचाई पर से लुढ़क भी पड़ती है। तब वह अपने साथ आत्मा को भी गर्त में ले जाती है। सानन्द ऐसा नहीं होने देना चाहता था।

यह बात उस रात हुई थी जब कम्पनी की मैनेजिंग डायरेक्टरी से त्याग-पत्र देकर वह रात के भोजनोपरान्त अपने सोने के कमरे में आया था। अनन्ता की आंखें अभी भी फूली हुई थीं। सानन्द ने पत्नी से पूछ लिया, "डाक्टर साहब ने बहुत डांटा प्रतीत होता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आज के युग में," अनन्ता ने आंखें नीचे किये हुए कहा, "धन मनुष्य की प्रत्येक गतिविधि में सक्रिय प्रतीत होता है। पिताजी ने मलावी के विषय में यही समझा है कि वह हमारे निर्धन होने के कारण बन रही है। जब मैंने मलावी के विषय में उनका प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया तो वे मुझको बद्दुआ दे गये हैं।"

"क्या प्रस्ताव था उनका?"

"उनका प्रस्ताव था कि मैं मलावी को समर्थ भैया की रखैल बन जाने के लिए तैयार कर दूं तो मुझको सवा लाख रुपया अपने स्नेह के रूप भेंट देंगे। जब मैंने इन्कार किया तो वे इसमें कारण पूछने लगे। मैंने अपनी जान छुड़ाने के लिए कह दिया कि आपका मलावी से विवाह हो चुका है; विधिवत् और दोनों परस्पर वचनबद्ध है।"

"यह तुमने कह दिया है?" सानन्द ने आश्चर्य में पूछा।

"हां। वैसे तो मैंने पिताजी के आग्रह को टालने के लिए कहा था, परन्तु मैं समझती हूं कि यदि मलावी ने हमारे पास ही रहना है तो इसको इस रूप में स्वीकार कर लेने से बहुत-से झंझटों से छुटकारा मिल जायेगा। न सतीश उसके पीछे पड़ेगा, न ही आपके भैया। यों भी एक सुन्दर युवा स्त्री के लिए पति का ही संरक्षण सर्वश्रेष्ठ और मानयुक्त माना जाता है।"

सानन्द इससे गम्भीर विचार में पड़ गया। बहुत देर तक अपने मन की दुविधा में निमग्न बैठा रहा। एकाएक उसके मन में विचार आया तो उसने पूछा, "इस घोषणा के विषय में मलावी को बताया है क्या?"

"हां। बताया है।"

"वह क्या कहती है?"

"उसने कहा है कि वह तो अपने मन में यह निर्णय कर चुकी है। वह इस बात की सबके सामने घोषणा तब तक नहीं कर सकती, जब तक हम ऐसा करने की उसे स्वीकृति न दें। जहां तक उसका सम्बन्ध है, घोषणा हो अथवा न हो। वह तो एकरस ही रहना चाहती है। इस घोषणा का हानि-लाभ हम सोच लें।"

"अच्छा, उसको बुलाओ।"

अनन्ता उसके कमरे में गई। बच्चे सो रहे थे और मलावी एक पुस्तक पढ़ रही थी। अनन्ता उसको बुला लाई। अनन्ता और वह कुर्सियों पर बैठ गईं। सानन्द ने पूछ लिया, "मलावी! अनन्ता ने तुम्हारे विषय में कुछ अपने पिता से कहा है और मैं समझता हूं कि वह बात कल अपने सब परिचितों में विख्यात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जायेगी।"

"जी बहनजी ने मुझको बताया है।"

"तो तुम क्या चाहती हो?"

"मेरा इस विषय में कुछ भी चाहना नहीं। बहनजी ने मेरी पदवी पहले से भी ऊंची कर दी है। यदि इनको इस बात के कहने का दुःख है तो कल प्रातःकाल सब सम्बन्धियों से कह दें कि यह बात उन्होंने हंसी-हंसी में कह दी थी पर वास्तव में ऐसी कोई बात नहीं।"

"बताओ अनन्ता! मलावी ने इस कही बात से निकलने का मार्ग बना दिया है।"

"जी नहीं। मैंने कहने के बाद अपने कथन पर विचार किया है और मैं इस परिणाम पर पहुंचती हूं कि यह बात परमात्मा ने ही मेरे मुख से निकाली है। अभी दो विवाह वर्जित नहीं। कुछ लोग इसको विचित्र मानेंगे, परन्तु दो-चार बार कहेंगे और फिर चुप कर जायेंगे। कुछ काल व्यतीत होने पर तो वे इस बात को भूल भी जायेंगे।

"इस कारण मैं समझती हूं कि आप दो-चार चूड़ियां, एक गले की कंठी और कुछ अपनी पत्नी के पहनने योग्य कपड़े बनवा दीजिये। कल प्रातःकाल माथे पर बिन्दी और मांग में सिन्दूर भरने लगे। बस, हो गया विवाह। अब यह आपके बायें और मैं दायें बैठा करूंगी।"

सानन्द हंस पड़ा। हंसकर बोला, "अनन्ता! तुमने तो जीवन की समस्याओं को सर्वथा सरल बना दिया है। यदि बिन्दी और सिन्दूर लगाने से विवाह सम्पन्न हो जाते तो मनुष्य की बहुत-सी विषमताएं निर्मूल हो जातीं।"

"यह तो है ही। जीवन है ही अति सरल। यह तो मूर्ख लोगों ने प्रथाओं और सामाजिक बन्धनों में अपने को जकड़ मुसीबत मोल ले रखी है। देखिये जी, मैंने घोषणा कर दी है कि आप दोनों पति-पत्नी हैं। यह घोषणा कल मैं बहन मलावी का शृंगार कर निर्विवाद कर दूंगी।"

मलावी ने अनन्ता के कथन को स्वीकार करने के लिए उसके चरण छुए और सानन्द के सामने भूमि पर अपना माथा टेक दिया। सानन्द ने अपने मन की उलझन को दोनों के सामने उपस्थित कर दिया।

"देखो, मलावी और अनन्ता! मैं विवाह को सामाजिक कृत्य मानता हूं। सो तो हो गया। अर्थात् मैं समाज की दृष्टि में मलावी को पत्नी का संरक्षण प्रदान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता हूं। परन्तु मैं अभी यह बात नहीं मानता कि मेरा इससे सन्तानोत्पत्ति के लिए भी सम्बन्ध होगा। यह बात अनन्ता को विदित है और मैं मलावी को भी बता देना चाहता हूं कि वैसे मैंने कुमुद के जन्म के पश्चात् से अनन्ता से भी नहीं रखा। अनन्ता ने कहा था कि सन्तान नहीं चाहती। मैं न तो प्रोफिलेक्टिक्स को पसन्द करता हूं, न ही ऑपरेशन को। इससे मैंने अनन्ता को बिना इन कृत्रिम उपायों के भी निर्भय कर रखा है।

"मलावी के विषय में मैं यह बता देना चाहता हूं कि मैं अपने विवाह के अवसर पर दिये अनन्ता को एकपत्नीक होने के वचन को भंग करने का विचार नहीं रखता। इस सामाजिक कृत्य का यह अर्थ नहीं होगा कि मैं आत्मा की निष्ठा को भी तिलांजलि दे दूं।"

मलावी अभी भी भूमि पर बैठी थी। उसने पुनः अपनी बात दुहरा दी। मैं आपसे कुछ नहीं मांगती। न मांगा है न मांगूंगी। जो कुछ आप देंगे, जितना अधिकार स्वेच्छा से देंगे, उतने पर ही सन्तोष करूंगी। मुझको भी अब और सन्तान नहीं चाहिए।"

इसके अगले दिन मलावी ने पांच सौ रुपये की रेशमी साड़ी और ब्लाउज पहना हुआ था। हाथों में पांच-पांच सोने की चूड़ियां थीं। गले में सोने का लॉकेट था। कानों में मणि-माणिक-जड़ित कर्णफूल थे। माथे पर बिन्दी और मांग में सिन्दूर भरा था। यह सब शृंगार और भूषण अनन्ता ने मलावी को पहनने को दिये थे। इस अवसर पर वह स्वयं तो इससे भी मूल्यवान वस्त्र-भूषण पहने थी। दोनों इकट्ठी प्रातः का अल्पहार लेने डाईनिंग हाल में पहुंची। वे वहां सबसे पहले गई थीं। इसके पश्चात् सानन्द अपने माता-पिता के साथ वहां आया। समर्थ और सन्तोष उसके बाद आये। बच्चे तो अल्पाहार लेकर मोटर-गाड़ी में अपने-अपने स्कूलों को जा चुके थे।

निपुणा की, डाईनिंग हाल में आते ही मलावी पर दृष्टि गई। वह चकित खड़ी रह गई। उसको मलावी तथा अनन्ता दोनों का शृंगारयुक्त वेश में वहां उपस्थित होना समझने में कठिनाई हो रही थी। वह इसका तात्पर्य समझ ही रही थी कि सन्तोष और समर्थ और साथ ही दाताराम तथा सुचाला आ गये। दाताराम ने आते ही कहा, "मजदूरों ने हड़ताल वापस ले ली है और वे आशा कर रहे हैं कि कारखाना खुल जायेगा।"

"तो नोटिस लगवा दो कि कल से कारखाना खुलेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बहुत अच्छा! परन्तु इंजीनियर्स और पावर हाउस के कर्मचारियों को तो आज ही काम पर बुला लेना चाहिए। अन्यथा कल सब कर्मचारियों को आधा दिन कारखाना चालू होने तक की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।"

"ठीक है, यह भी कर दो।"

दाताराम ने ठेकेदारी के काम के विषय में अपनी समस्याओं पर बातचीत आरम्भ कर दी। सन्तोष अभी तक इन दोनों की बातें सुन रही थी। जब बातों का विषय बदला तो उसने देखा कि मां अभी तक खड़ी अनन्ता और मलावी की ओर देख रही है। इससे उसका ध्यान इन दोनों की ओर चला गया। अनन्ता मलावी को कुछ बता रही थी।

सन्तोष ने देखा तो उसको भी नवीन बात समझ आई। इससे उसने भी ध्यान से देखा तो अकस्मात् वह भी खड़ी हो पूछने लगी, "मलावी! यह किससे गठ-बन्धन कर आई हो?"

इस प्रश्न पर दोनों ने बातें बन्द कर दीं। मलावी मुस्कराते हुए संतोष और निपुणा की ओर देखने लगी। उत्तर अनन्ता ने दिया, "मालवी ने कमल के पिता से विवाह किया हुआ है। मुझको आज ही पता चला है। इस कारण मैंने इसको सधवा की भांति सजा दिया है।"

"तुमको शर्म नहीं आई ऐसा करते हुए?"

"बहनजी! इसमें शर्म की बात कहां से आ गई? लज्जा की बात तो तब थी जब एक पत्नी को यह कहने की स्वीकृति न हो कि वह भी एक विवाहिता है।"

समर्थ पिछली रात से यह विचार कर रहा था कि सानन्द अब पुनः अपने जर्नलिस्टिक व्यवसाय में लगेगा तो मलावी को अपने साथ नहीं रख सकेगा। स्वाभाविक रूप से मलावी उसके माता-पिता की सेवा में आ जायेगी और वहां उस पर सुगमता से विजय प्राप्त कर लेगा। रात को कम्पनी के विषय में हुई घटना से वह इस दिशा में भी प्रसन्न था। वह अब ठेकेदारी के काम को दाताराम के अधीन कर स्वयं कारखाने के कार्य में लग जाने का विचार रखता था।

परन्तु अनन्ता की बात सुन और समझ उसके माथे पर त्योरी चढ़ गई। उसने सानन्द को सम्बोधन कर पूछा, "सानन्द! यह क्या बात है?"

"भैया! अनन्ता ठीक कहती है। मैंने इतने काल तक इस बात को छुपाकर रखा हुआ था। मैं इसलिए शर्मिन्दा हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम आस्तीन के सांप निकले?"

यह तो मुझको मिथ्या आरोप प्रतीत होता है। मैंने आपके मार्ग में कभी बाधा नहीं डाली। प्रत्युत आपके मलावी से झगड़े के बाद भी मैं यहां ही रहा और इसको भी यहीं रखा। इस पर भी आप इसको निष्ठा से गिरा नहीं सके। इसमें मेरा क्या दोष है?"

"मैं समझता हूं कि तुम तुरन्त कोठी से निकल जाओ। यदि सायंकाल से पूर्व तुम यहां से गये नहीं तो नौकरों से धक्के दिलवाकर निकाल दूंगा।"

"इसकी कोई आवश्यकता नहीं पड़ेगी, भैया!"

अनन्ता और मलावी खाने की मेज पर से उठ खड़ी हुई, तो सन्तोष ने कहा, "अनन्ता, बैठो!"

"जी नहीं। बस हद हो गई है। इस सम्भावना का विचार कर ही हम कोठी के उस भाग का, जिसमें हम रहते थे, तीन सौ रुपया मासिक किराया देते थे और खाने पीने का प्रबन्ध भी अपना निजी कर रखा था। नौकर भी अपना पृथक रखा था। इस पर भी भैया का यह नोटिस तो अपमान की पराकाष्ठा हो गई है। यदि कोई अन्य होता तो वह यहां डट जाता और कम-से-कम एक मास के शेष दिनों के लिए यहां रहने का हठ करता परन्तु ये बड़े हैं। हम इनसे झगड़ा नहीं करेंगे।"

अनन्ता ने अपने बैरे से कहा, "किशोर! हमारा नाश्ता हमारे कमरे में ले आओ।"

अनन्ता और मलावी डाईनिंग हाल से निकल गईं। उनके पीछे-पीछे सानन्द भी चला गया। एक क्षण तक सब इस झगड़े के विषय में विचार करते रहे। तब एकाएक हरिशरणानन्द और निपुणा भी उठे। हरिशरणानन्द ने समर्थ की ओर देखकर कहा, "समर्थ! मैं आज पटेल नगर जा रहा हूं।"

"क्यों?"

"ऐसे ही। एक बात तो है कि मैं ऐसा अपमान नहीं सह सकता जैसा तुमने सानन्द का किया है। उसने ठीक किया अथवा गलत किया, यह दूसरी बात है। हां, उसने तुमसे सदैव अच्छा बर्ताव किया है। तुम सर्वथा अनाचार करने जा रहे थे। अपने छोटे भाई की पत्नी से बलात्कार करने के अपराधी हो तुम। अतः मैं जा रहा हूं।"

सन्तोष की आंखों में आंसू छलक आये। उसने उठकर कहा, "पिताजी!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु हरिशरणानन्द कमरें से निकल गया। निपुणा उनके पीछे-पीछे थी।

सन्तोष का चित्त खाने को नहीं किया। वह भी उठ अपने कमरे में चली गई। वहां बैठे रह गये दाताराम और सुचाला।

समर्थ की विचार-शक्ति क्रोध से क्षीण हो चुकी थी। इससे उसने दाताराम से पूछ लिया, "तुम नहीं जा रहे दाताराम?"

"मैं भी जाऊंगा।"

"कब जाओगे?"

"पेट भरने के पश्चात्!" इस पर सुचाला हंस पड़ी। समर्थ को तो क्रोध चढ़ रहा था। इससे वह बिना अल्पाहार लिये चला गया। दाताराम और सुचाला खाना लेते रहे और वे पेट भरकर ही उठे।"

: 3 :

सानन्द ने ट्रक मंगवा लिया और उसमें अपना सामान लाद रिंग रोडवाली कोठी में जाने को तैयार हो गया। जाने से पूर्व वह और अनन्ता माता-पिता से मिलने गये उसने देखा कि वे भी अपनी पुस्तकें इत्यादि बांध रहे है। सानन्द ने कहा, "मां! मैं अपने मकान पर जा रहा हूं।

"ठीक है बेटा! हम भी पटेलनगर जा रहे हैं।"

"तो इसलिए पिताजी की पुस्तकें बांधी जा रही है?"

"हां।"

"यह सामान कैसे जायेगा?"

"दाताराम ने कहा है कि वह एक ट्रक तीन बजे के लगभग भेज देगा। तब तक हमारा सामान बंध जायेगा।"

"यदि कहें तो मैं अपना ट्रक भिजवा सकता हूं।"

"नहीं। दाताराम ट्रक भेजने के लिए कह गया है।"

इसके बाद सानन्द और अनन्ता सन्तोष से मिलने चले गये। सन्तोष पलंग पर औंधे मुख लेटी हुई थी। उन्होंने कमरे के बाहर से ही आवाज दी, "भाभी!"

सन्तोष उठकर पलंग पर बैठ गई। ये दोनों गये तो अनन्ता ने कहा, बहन जी! हमारी भूल-चूक क्षमा करना। अब हम जा रहे हैं।"

"जाओ, सुखी रहो। मेरा रोष तो मलावी पर है। वह दोनों भाईयों में झगड़ा करा चली है।"

"अब जो कुछ भी हो गया है, भाभी! उसके लिए क्षमा चाहते हैं। यह तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमात्मा ही जानता है कि किसका कितना दोष है। यह मानव तो अल्पज्ञ है। हमको तो अपने कर्मो के लिए क्षमा मांगनी चाहिए।''

''ढाई वर्ष से इस कोठी में चहल-पहल थी और मेरा मन बहला हुआ था। अब नहीं जानती कि क्या करूंगी?''

''भाभी! कभी दिल उदास हो तो उधर आ जाया करना। फिर पिताजी के घर भी तो जा सकती हो?''

''आया करूंगी।''

सानन्द और अनन्ता वहां से निकले तो अपनी मोटर-गाड़ी में जा बैठे। मलावी वहां पहले ही पहुंची हुई थी। मलावी के पास योगेश्वर, सन्तोष का सबसे बड़ा लड़का और चपरासी करीम की लड़की शबनम खड़े थे। योगेश्वर कह रहा था, ''भापा ने आप सबको निकाल दिया है न?''

मलावी उसके कहने पर मुस्कराती हुई चुप खड़ी थी। इस समय सानन्द और अनन्ता आ गये। मलावी ने मुस्कराते हुए कहा, ''योगेश्वर कह रहा है कि इसके भापा ने आपको कोठी से निकल दिया है।''

''हां, देखो योगेश्वर! कभी तुमको भी भापाजी निकाल दें तो हमारे मकान पर आ जाना। हमारा नया मकान रिंग रोड पर है। वहां तुम्हारे लिए स्थान होगा।''

''मुझको क्यों निकालेंगे भापा?''

''जिसलिए मुझको निकाला है?''

''आपको किसलिए निकाला है?''

''यह तुम अपने भापा से पूछ लेना।''

शबनम माथे पर त्योरी चढ़ाये इन जाने वालों की ओर देख रही थी। सानन्द के कहने का आशय समझ अनन्ता खिलखिलाकर हंस पड़ी।

ये लोग अपनी कोठी में पुहंचे तो अनन्ता कोठी में सामान ढंग से लगवाने और ठीक-ठाक करवाने के लिए काम तेजी से करने लगी।

एक दिन मलावी ने सानन्द से कह दिया, ''देखिये जी'' प्रायः लड़कियों का नाम सुसराल में जाने पर बदल दिया जाता है। मैं भी चाहती हूं कि आप मेरा नाम बदल दें।''

''बात तो तुम ठीक कहती हो। बताओ अनन्ता! क्या नाम ठीक रहेगा?''

अनन्ता ने कुछ विचारकर कहा, ''माधवी बहुत अच्छा रहेगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अर्थात् शराब?"

"हां! शराब तो यह है ही। आप शराब पीते नहीं। छूते भी नहीं। वह बात इसके साथ भी कर रहे हैं।"

बस, उस दिन से मलावी माधवी हो गई।

इसके कई दिन पीछे की बात है जब सतीश को सन्तोष ने मलावी के जहन्नुम में जाने की बात कही थी। उसके दूसरे दिन मदनगोपाल ने निर्मलचन्द्र सेन को उसके दफ्तर में टेलीफोन किया और निर्मलचन्द्र ने उसको मित्रों सहित शाम की चाय पर आमंत्रित कर दिया।

ठीक पांच बजे तीनों मित्र टैक्सी में राउज एवेन्यू निर्मलचन्द्र के निवास-स्थान पर जा पहुंचे। टैक्सी की आवाज सुन एक दुबला-पतला बंगाली महाशय धोती और गंजी पहने क्वार्टर से बाहर आ गया, "आइये, आइये मदनगोपालजी!" उसने कह दिया।

मदन गोपाल ने सतीश का परिचय करा दिया। निर्मलचन्द्र ने सतीश से कहा, "आशुन! सतीश बाबू!"

इस पर मदनगोपाल ने हंसते हुए कह दिया "डाक्टर! यहां बंगाली में बात नहीं होगी। हमारे सामने हिन्दुस्तानी में बात होगी।"

सानन्द हंस पड़ा। इस पर मदनगोपाल ने सानन्द का भी परिचय करा दिया। साथ ही कह दिया, "हम बंगला भाषा नहीं जानते। अगर हमारे सामने बंगला में बात की तो हम लड़की की निन्दा कर सगाई नहीं होने देगे। समझे न! लड़की को भी समझा दो।"

निर्मलचन्द्र सबको भीतर बैठक में ले गया। जब सब बैठ गये तो उसने अपनी पत्नी को आवाज दी। निर्मलचन्द्र की पत्नी अपनी लड़कियों और एक लड़के के साथ बाहर आ गई। सब एक ही ढंग की पोशाक पहने थीं। एक ही रंग की फ्रांक, एक ही रंग के रिबन और एक ही रंग के मुख।

सबको कतार बांधे बैठने के कमरे में आते देखा तो सानन्द ने मन-ही-मन उनकी गणना की और कहा, "बस अथवा कोई और भी है?"

मदन और सतीश इस पर खिलखिलाकर हंस पड़े। निर्मलचन्द्र ने गम्भीर हो कहा, "अभी ईड़ा नहीं आई वह लज्जा अनुभव कर रही है?"

इस समय निर्मलचन्द्र की पत्नी सरस्वती पुनः भीतर गई और एक साड़ी-जम्पर पहने लड़की को पकड़कर बाहर ले आई। लड़की ने माथे पर बिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगाई हुई थी, परन्तु बाल खुले पीठ पर लटक रहे थे। उसको सरस्वस्ती ने अपने समीप बैठा लिया और शेष लड़कियां नमस्कार कर जैसे आई थीं, वैसे एक-एक कर चली गईं। लड़का मां और बड़ी बहन के दूसरी ओर बैठ गया।

जब ये बैठ गये तो निर्मलचन्द्र ने कहा, "मैं पहले परिचय करा दूं। पीछे घर की गृहणी चाय का प्रबन्ध करेगी।"

"यह है मेरी धर्मपत्नी सरस्वती सेन। यह ईड़ा कुमारी और यह इसका भाई बैद्यनाथ सेन।"

इस पर मदनगोपाल ने कह दिया, "मुझको तो आप सब जानते ही हैं। ये मेरे मित्र सानन्द मिश्र। लाखोंपति का लड़का है और हमारी भांति जर्नलिस्ट है।

"आज के मुख्य मेहमान को तो आप जानते ही हैं। इनके ननिहाल वारीसाल के रहनेवाले थे और इनके पिता भागलपुर के। माता-पिता दोनों का देहान्त हो चुका है। अब इनका पीछे किसी से कोई सम्बन्ध नहीं रहा। ये कलकत्ता से वकालत पास कर जर्नलिस्ट का काम करने दिल्ली आये हुए हैं। काम अच्छा है। ये अभी कश्मीरी गेट में निकलसन रोड पर रहते हैं।

"इनका विचार है कि अभी तो ये वहां ही रहेंगे। हां, यदि ईश्वर की कृपा हुई और निर्मलचन्द्रजी की भांति इनके भी सौभाग्य लग गया तो ये कोई बड़ा मकान ले लेंगे अथवा बनवा लेंगे।

इस पर निर्मलचन्द्र ने भी सविस्तार परिचय देना उचित समझा। वह बोला, "मैं मिदनापुर का रहनेवाला हूं। केवल मैट्रिक तक पढ़ा हूं। यहां थर्ड ग्रेड क्लर्क के रूप में भरती हुआ था और बंगाली समुदाय वालों से मद्रासी समुदाय की सहानुभूति न होने के कारण अभी तक थर्ड ग्रेड में ही पड़ा हुआ हूं। कल के मद्रासी लौंडे अब सुपरिण्टेडेंट और सुपरवाईजर बन गये हैं परन्तु गरीब निर्मलचन्द्र की कोई सुनता ही नहीं।

"और यह है मेरी धर्मपत्नी सरस्वती कलकत्ता के एक क्लर्क की छठी लड़की हैं। इस कारण हमको अपने ससुराल से न कभी किसी प्रकार की सहायता मिली है, न मिलने की आशा है। मेरी आठ सन्तान हैं। सात लड़कियां और एक लड़का, लड़का इस समय कॉलेज की बी. ए. फाइनल में पढ़ता है। लड़की ईड़ा दिल्ली युनिवर्सिटी की ग्रेजुएट है। यह अब रेलवे बोर्ड के दफ्तर में स्टेनो टाइपिस्ट का काम कर रही है और ढाई सौ रुपया महीना लाती है। वास्तव में जब से यह नौकर हुई है, हमारे घर की अवस्था सुधरने लगी है। मैं आशा करता हूं कि अगले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष वैद्यनाथ भी कहीं नौकर हो जायेगा तब सुचारु रूप से काम चलता रहेगा।

"वैद्यनाथ से छोटी लड़की अनिमा बी. ए. सैकेण्ड ईयर में है। इसी प्रकार अन्य लड़कियां पढ़ाई में एक-एक वर्ष के अन्तर पर हैं।

"सब-की-सब लड़कियां घर के काम में सुघड़ और पढ़ाई में तेज हैं।"

सानन्द ने मुस्कराते हुए कहा, "ईड़ा का विवाह कर तो आपको भारी हानि होगी?"

"क्यों? हानि किसलिए होगी?"

"परिवार की ढाई सौ रुपया महीना की आय जाती रहेगी?"

"क्यों? क्या सतीश बाबू इसको काम छोड़ने के लिए कहेंगे?"

"सतीश बाबू के तो कुछ ऐसे ही विचार प्रतीत होते हैं और फिर यदि इन्होंने पत्नी को नौकरी की छूट दे भी दी तो कदाचित् ईड़ा विवाह के पश्चात् अपनी आय अपने भाई-बहनों पर व्यय न करे।"

इससे निर्मलचन्द्र का मुख मलिन हो गया, परन्तु सरस्वती ने कहा, "इसकी आय पर हम निर्भर नहीं हैं। वैद्यनाथ के पिता का मतलब यह है कि लड़की अपना खर्चा स्वयं करने लगी है। हमारा बोझ कम हो गया है।"

"ओह! तो यह बात है। तब तो ठीक है। इस पर भी यदि लड़की चाहेगी तो अपने बहन-भाइयों की सहायता कर सकेगी। क्यों सतीश बाबू! क्या समझते हो तुम?"

"मैं तो अपनी पत्नी को घर की मालकिन बनाकर रखूंगा जो किसी के सामने हिसाब-किताब देने में जिम्मेदार नहीं होगी।"

इस आश्वासन से निर्मलचन्द्र के मुख का रंग फिर लौट आया। इस समय लड़कियों ने सबके सामने तिपाइयां रख दीं। ईड़ा और सरस्वती भी उठकर भीतर चली गई और रसगुल्ले, चमचम, मोहन भोग तथ घर के बने पकौड़े इत्यादि आने लगे।

अब पुनः विवाह की बातचीत होने लगी। निर्मलचन्द्र ने बताया, "लड़की के पास अपनी कमाई का दो सहस्र के लगभग रुपया जमा है। यदि सतीश बाबू चाहें वह इस धन को बारातियों की आवभगत पर खर्च कर सकते हैं। मेरे पास तो बैंक-बैलेंस निल है। मैं तो दस रुपये व्यय कर लड़की का कन्यादान ही कर सकूंगा।"

इस पर सतीश ने कहा, "मेरी तो यह योजना है कि मैं अपने पांच मित्रों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के साथ नियत दिन यहां आऊंगा। विवाह हो जाये और विवाह के तुरन्त पश्चात् मैं लड़की को अपने घर ले जाऊंगा। अगले दिन मैं अपने मित्रों तथा आपके सम्बन्धियों को दोनों परिवारों की ओर से रिसेप्शन अपने घर पर दूंगा। बस और कुछ नहीं होगा।"

"ठीक है।"

"मैं यह भी चाहूंगा कि ईड़ा को आप एक पैसा भी अपनी आय में से व्यय करने के लिए न कहें।"

"अपने वस्त्र-भूषणों पर भी नहीं?"

"देखिये जी! मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि आप उसको व्यय करने के लिए नहीं कहें। इस पर भी वह अपने धन की स्वामिनी स्वयं है। वह उसमें से जो उसकी इच्छा हो ले सकती है। मैं यत्न करूंगा कि उसको एक पैसा भी व्यय करने की आवश्यकता न पड़े।"

इस प्रकार चाय आने तक और पुनः ईड़ा के आकर सबके लिए चाय बनाने तक विवाह का सविस्तार कार्यक्रम बन गया। विवाह की तथा रिसेप्शन की तिथि और उस पर मेहमानों की संख्या का निश्चय भी हो गया।

सतीश ने जाने से पूर्व ईड़ा से पूछा, "आप कब और किसके साथ अपने लिए वस्त्र, भूषण इत्यादि लेने चलेंगी?"

"मुझको अनुभव नहीं है वस्तुएं खरीदने का।" ईड़ा ने सिर झुका कर कह दिया।

"मदनजी ती तथा सानन्दजी की धर्मपत्नियां भी साथ चलेंगी।"

"तब कल ही आ जाइये। यदि आप सायं पांच बजे आ सकें तो मुझको दफ्तर से छुट्टी लेने की आवश्यकता नहीं होगी।"

"अभी छुट्टी लेने की आवश्यकता भी नहीं है। मैं समझता हूं कि विवाह और उसके पीछे 'हनीमूनिंग' के लिए पन्द्रह दिन की छुट्टी तो लेनी ही होगी।"

ईड़ा लज्जा से लाल होती हुई चुप रही। घर लौटते समय सतीश ने कहा, "सानन्द! भाभी को मेरी ओर से निवेदन कर देना कि कल अपनी मोटर-गाड़ी में हमारी भावी श्रीमतीजी को ले जाकर बाजार से कुछ खरीदवा दें।"

"कितना बजट बनाया है इस सबके लिए?"

"भूषणादि के लिए पांच हजार रुपया। रिसेप्शन के लिए दो हजार रुपया। घर का सामान, फर्नीचर के लिए दो हजार रुपया और एक हजार अन्य मिश्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खर्चों के लिए।"

"तो दस हजार खर्च कर रहे हो?"

"हां! मैं चाहता हूं कि ईड़ा अपने रुपयों का प्रयोग अपने भाई-बहनों को भेंट में करे।"

"तो अभी से ही निर्मलचन्द्र के परिवार से सहानुभूति उत्पन्न हो गई है क्या?"

"निर्मलचन्द्र के बच्चों से नहीं। प्रत्युत ईड़ा के बहन-भाईयों के लिए। मेरी इच्छा है कि उनके मन पर ईड़ा के विवाह का एक स्थायी प्रभाव रह जाये।"

"यह तो तुम ईड़ा को स्वयं समझा देना।"

"हां मैं कल भाभी अनन्ता और भाभी कमला के साथ यहां तक आऊंगा। उस समय ईड़ा से कह दूंगा। आशा करता हूं कि वह मान जायेगी।"

"कैसी लगी है अपनी भावी पत्नी?" मदनगोपाल ने टेढ़ी दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए पूछ लिया।

"अभी तो पालतू बकरी मालूम हुई है।"

इस पर तीनों मित्र हंसने लगे।

: 4 :

सानन्द संसद-भवन से सायं पांच बजे निकला तो उसको एक सुगठित शरीरवाला युवक मिला। वह धोती-कुरता धारण किये और पांव में चप्पल पहने था। वह हाथ जोड़ नमस्कार कर सामने खड़ा हुआ तो सानन्द ने भी नमस्कार कर दी। वह बोला, "क्षमा करें। आप सानन्द मिश्र हैं न?"

"जी हां! फरमाइये।"

"मुझको किसी ने आपके पास भेजा है। दस मिनट आपके पास अभी हों तो हम किसी स्थान पर एकान्त में बात कर सकते हैं?"

सानन्द आजकल अकेला था। मदनगोपाल और सतीश विवाह के उपलक्ष्य में दिये जानेवाले रिसेप्शन का प्रबन्ध करने गये हुए थे। अनन्ता अपनी मोटर में ईड़ा से मिलने उसके घर पर गई हुई थी। इस कारण सानन्द को कुछ भी काम नहीं था। अतः उसने कह दिया, "मैं इस समय बिलकुल खाली हूं। आइये, अगर किसी प्रकार की आपत्ति न हो तो कहीं बैठकर चाय पियेंगे और बात भी कर लेंगे।"

दोनों टैक्सी में सवार हो रीगल के पास आ पहुंचे। वहां से वे स्टैंडर्ड रेस्टोरां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में चले गये। हाल में एक कोने की एक मेज पर बैठ सानन्द ने पूछा, "हां, तो साहब फरमाइये। क्या आज्ञा है?"

"मैं सदाशिव पांडे हूं। जनसंघ का कार्यकर्ता। उस दिन संसद भवन के रेस्टोरां में आपको दो अन्य सज्जनों से हिन्दी के विषय में बात करते सुन रहा था। आपके विचार बहुत कुछ हमारी पार्टी के साथ मेल खाते हैं। इससे मैं अब अपने दल का आपसे परिचय कराना चाहता हूं।"

"तो कराइये। यों तो मैं समाचारपत्रों में जनसंघ के विषय में कुछ पढ़ता ही रहता हूं। यह मुझको ज्ञात है। इसके अतिरिक्त आप क्या बता सकते हैं?"

"हमारा परिचय कराने का ढंग यह है कि आप हमारी गोष्ठियों में आइये। वहां आपको हमारा परिचय मिल जायेगा?"

सानन्द हंस पड़ा, हंसकर उसने कहा, "आपका यह ढंग ठीक है अथवा गलत है, इस विषय में अपनी सम्मति न देते हुए भी मैं यह कहना चाहता हूं मेरे पास इतना समय नहीं कि मैं वही बात जानने के लिए, जो दस मिनट में जानी जा सकती है, आपकी गोष्ठियों में सालों जाता रहूं। फिर भी सम्भव है वह बात जो मूल है, जान न पाऊं।"

इस प्रकार की बात से पांडे बहुत घबराया। इस समय बैरा आया और सानन्द से आर्डर ले गया। इतने समय में सामने बैठे युवक ने साहस बांध कहा, "आप हमारे मन्त्रीजी से मिलिए।"

"और आप कौन हैं?"

"मैं तो एक साधारण स्वयंसेवक हूं।"

"तो तुम किस लिए आये हो? तुम्हारे मन्त्री क्यों नहीं आये?"

"वह अभी यह जानना चाहते थे कि आप हमारे साथ मिलना स्वीकार भी करेंगे अथवा नहीं।"

"कितना समय व्यर्थ गंवाते हो तुम। देखो, मैं जानना चाहता हूं कि तुम्हारे दल के मौलिक सिद्धान्त क्या हैं। यदि तुम बता सकते हो तो बताओ। नहीं तो कल इसी समय यहीं पर अपने मन्त्री से कह देना कि मुझको मिल लें।"

"कुछ तो मैं बता सकता हूं।"

"तो हां! बताओ। मैं सुन रहा हूं।"

इस समय बैरा चाय, सैंडविच और काजू की प्लेट रख गया। स्वयंसेवक ने चाय बनानी आरम्भ कर दी। चाय बनाते हुए उसने कहा, "हमने देश में राष्ट्रीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा प्रजातन्त्रात्मक सिद्धान्तों को चलने देने के लिए भारतीय जनसंघ पार्टी बनाई है।"

"कांग्रेस से कोई विशेषता है इसमें?"

"जी है! कांग्रेस का नैशनलिज्म मुस्लिमपरस्त है।"

"देखो, यह व्याख्या की बात है। उसूल की बात है कि कांग्रेस का नाम इंडियन नैशनल कांग्रेस है। यह नैशनल है। इस कारण राष्ट्रीय है। इसने देश का विधान प्रजातन्त्र बनाया है। सो यह प्रजातन्त्र सिद्धान्त के माननेवाली भी है। यह मुसलमानों से रियायत करती है अथवा फैड्रल ढंग की सरकार चाहती है, ये सब व्याख्या की बातें हैं। व्याख्या की बातों के लिए नित नये दल नहीं बनाये जा सकते। यदि जनसंघ के सिद्धान्तों में कोई मौलिकता हो तो बताओ।"

"हम हिन्दुओं को यहां का नैशनल समझते हैं।"

"और जो हिन्दू नहीं हैं, वे क्या हैं?"

अब फिर पांडे घबराया और टुकुर-टुकुर मुख देखने लगा। उसने अपने सामने रख प्याले को उठाकर एक घूंट चाय पी दिल को ठीक कर कहा, "हिन्दू भारत का रहनेवाला है। यह ही इससे प्रेम करता है और इसके लिए त्याग और तपस्या करता रहा है। आगे भी करता रहेगा। इस कारण भारतीय जनसंघ दल हिन्दुओं की संस्कृति और परम्परा को चलने देने के लिए बनाया गया है।"

"इस कार्य के लिए तो पहले ही एक दल हिन्दू-महासभा था। फिर इस नये दल को बनाने की क्या आवश्यकता थी?"

"हमारी संस्था में अन्य मज़हबोंवाले भी आ सकते हैं।"

"अर्थात हिन्दू से अतिरिक्त मज़हबोंवाले भी?"

"जी।"

"तो हिन्दू भी कोई मजहब है?"

"नहीं, हम हिन्दू को भारत का नैशनल मानते हैं।"

"तो तुम्हारे कहने का अर्थ यह है कि भारत के नैशनल के अतिरिक्त भी आपके दल में सम्मिलित हो सकते हैं।"

"जी यह कैसे?"

"अभी तो तुमने कहा है कि हिन्दुओं के अतिरिक्त भी भारतीय जनसंघ में आ सकते हैं और कहा है कि हिन्दू भारतीय नैशनल हैं। अर्थात् भारतीय नैशनल के अतिरिक्त भी इस दल में शामिल हो सकते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बार फिर पांडे की घबराहट देख सानन्द खिलखिलाकर हंस पड़ा। इस हंसने का कारण पांडे ने यह समझा कि सानन्द उसको निरुत्तर हो गया समझा रहा है। इससे उसने कहा, "मैं तो एक साधारण स्वयंसेवक हूं अतः इस प्रकार की पेचीदा बातों का समाधान नहीं कर सकता। कल इसी स्थान पर मन्त्री को भेज दूंगा।"

"ठीक है, भेज देना। परन्तु एक बात तो तुम उसको पहले ही कह देना। मैं कांग्रेस को स्वार्थी मूर्खों का टोला समझता हूं। इसमें एक व्यक्ति है जो कि देश की बात समझता है। वह है पंडित जवाहरलाल। कांग्रेस की पूर्ण विचारधारा इस एक व्यक्ति के दिमाग की उपज है। अतः यदि कुछ दोष है तो इस एक व्यक्ति की विचारधारा में है।

"इसकी विचारधारा और इसके आचरण दोनों ऐसे हैं कि इसके चारों ओर स्वार्थियों का जमघट एकत्रित हो गया है। यदि आज कांग्रेस में झूठे, बेईमान, स्वार्थी, अवसरवादी, कुटुम्बपरवर और देश द्रोही हैं तो यह सब पंडितजी की विचारधारा और आचरण के कारण है।

"अतः कांग्रेस का विरोध करने का मतलब इस एक व्यक्ति के विरोध करने से है। यदि जनसंघ पण्डित जवाहरलाल का विरोध करने का विचार रखता है तो मन्त्रीजी को कहना कि मुझसे मिल लें। मैं उनकी पार्टी का समर्थन करूंगा। अन्यथा व्यर्थ की बातें करने के लिए मेरे पास समय नहीं है।"

"ऐसा तो देश में कोई सामर्थ्य नहीं रखता।"

"इसी कारण देश में 'कन्फ्यूजन' उपस्थित है। यह ऐसे ही है, जैसे किसी सात-आठ वर्ष का बालक का अठारह-उन्नीस वर्ष की युवती के साथ विवाह कर, उसको युवती की बगल में लेटा दिया जाये। जिस बात को वह जानने की योग्यता ही नहीं रखता, वहीं काम उसको करने के लिए कहा जाता है। जैसे वह परेशान होता है, वैसे ही देश के राजनीतिज्ञ हो रहे हैं। वे अभी पोलिटिकली-एडल्ट अर्थात् राजनीतिक दृष्टि से व्यस्क नहीं हुए और उनको राज्य-सत्ता मिल गई है। उनमें एक एडल्ट तो हैं परन्तु अपने संस्कारों के कारण, वह मां-तुल्या भारतमाता को बीबी समझ बैठा है। यह भारतमाता को आदर की वस्तु न मान भोग की वस्तु मान बैठा है।"

इतने बड़े लांछन को सुन मिस्टर सदाशिव पांडे एक बार तो कांप उठा। उसको कुछ क्रोध भी आया। उसने बात बदलने के लिए कह दिया, "हमने दल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी व्यक्ति का विरोध अथवा समर्थन करने के लिए नहीं बनाया। हमने तो सिद्धान्तों के आधार पर जनसंघ की स्थापना की है। जो भी व्यक्ति उस सिद्धान्त का विरोध करेगा, उसका खण्डन स्वयंमेव हो जायेगा।''

''सानन्द मुस्कराया और बोला, ''तुम इतिहास पढ़े हो।''

''जी, मैंने इतिहास में एम. ए. किया है।''

''ओह! तुम तो अपने को साधारण स्वयंसेवक कह रहे थे। तो क्या मैं तुमको पुस्तकें रटकर परीक्षा पास कर किया हुआ स्नातक समझूं अथवा तुमको पढ़ानेवाले विश्वविद्यालय को अशिक्षित और गंवारों का संस्थान समझूं? तनिक यह बताओ कि कभी इतिहास में ऐसे व्यक्तियों का उल्लेख आया है जो सिद्धान्तों से भी ऊपर हुए हैं?''

सदाशिव पांडे टुकुर-टुकुर मुंह देख रहा था। सानन्द ने अपना कहना जारी रखा, ''उदाहरण के रूप में भगवान कृष्ण और राम तो थे ही, कदाचित् तुम उन्हें ऐतिहासिक रूप नहीं मानते होंगे। इस पर भी अशोक, चन्द्रगुप्त, शिवाजी और राणाप्रताप तो ऐतिहासिक व्यक्ति थे ही। यूरोप में नैपोलियन और हिठलर भी ऐतिहासिक पुरुष थे। लेकिन लेनिन और स्टालिन भी ऐतिहासिक पुरुष थे। फिर गांधी थे और अब जवाहरलाल हैं।

''ये सब ऐतिहासिक पुरुष हम जनसाधारणों के सिद्धान्तों को पार कर आगे निकल गये हैं। सब-के-सब स्वयं अपने सिद्धान्तों के निर्माता थे। मुख से भले ही यह कहें, परन्तु थे सब सिद्धान्त-निर्माता। कुछ ठीक सिद्धान्तों के बनानेवाले और कुछ बुद्धि, नेकी और लोकहित के विरुद्ध सिद्धान्तों के निर्माण करनेवाले।

''नैपोलियन, हिटलर, लेनिन, स्टालिन और पंडित जवाहरलाल गलत सिद्धान्तों के निर्माता हैं। इसका कारण इनका विरोध इन द्वारा निर्मित सिद्धान्तों का विरोध है। जैसे स्टालिन, लेनिन का समर्थन करते हुए कम्युनिज्म के विरोध में कोई युक्तियुक्त बात नहीं बनती, इसी प्रकार कांग्रेस के भ्रष्टाचार का विरोध करते हुए पंडित जवाहरलाल का समर्थन करना कोई ताल-मेल नहीं रखता।''

''तो आपका मतलब है कि कांग्रेस राज्य में प्रत्येक प्रकार का भ्रष्टाचार नेहरूजी के कारण है?''

''मेरा तो कहना है पंडितजी के विचार और कार्य ही उनके चारों ओर सब प्रकार के चोर, दुराचारी, झूठे, ठग और भीरु एकत्रित कर रहे हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आज सब प्रकार के दुराचारी, अनाचारी, देशद्रोही और विदेशी राज्यों से यहां के प्रजातन्त्र के विरुद्ध सांठ-गांठ करनेवाले पंडितजी के साथी हैं और उनसे समर्थन पाते हैं।"

चाय समाप्त हुई तो सदाशिव ने उठते हुए कह दिया, "आपका कहना कुछ ठीक प्रतीत होता है। मैं मन्त्रीजी से कहूंगा कि वह आपसे मिलें और आपका सहयोग प्राप्त करने का यत्न करें। तो क्या कल ठीक रहेगा?"

"हां, मुझको उनसे मिलकर बहुत प्रसन्नता होगी।"

सानन्द ने भारत की राजनीति और इसके राजनीतिक दलों के विषय में बहुत-सी जानकारी प्राप्त की थी और वह किसी से भी अपने अध्ययन के निष्कर्ष बताने के लिए तैयार रहता था। इससे वह अगले दिन भारतीय जनसंघ के प्रभावी प्रवक्ता से मिलने के लिए तैयार हो गया।

अनन्ता कई दिन से नित्य ईड़ा के साथ सामान खरीदने के लिए जा रही थी। आज सानन्द घर गया तो अनन्ता सतीश के विवाह के दो निमंत्रण-पत्र लेकर वहां आ पहुंची। एक था मिस्टर और मिसेज सानन्द मिश्र के लिए और दूसरा था श्रीमती माधवी और उनके पतिदेव के लिए।

"तो सतीश ने माधवी के पति का नाम नहीं पूछा?"

"वह घर से कार्ड लिखकर लाया था। उसने कार्ड देते हुए कहा भी था, "मैं तो मलावी, उपनाम माधवी को ही जानता हूं। इसलिए कार्ड उसके नाम ही लिखूंगा।' मैं मुस्कराकर चुप कर रही।"

"ठीक है। जब तक चलेगी, चलने दो।"

माधवी को भी जब कार्ड मिला तो वह हंस पड़ी।

निमन्त्रण-पत्र अंग्रेजी में और बंगला भाषा में था। मलावी इन दोनों में एक भाषा भी नहीं पढ़ सकती थी। उसने अनन्ता से कहा, "बहनजी, आप ही पढ़कर बता दीजिये। यह क्या है?"

अनन्ता ने निमन्त्रण-पत्र पढ़ हंसते हुए कहा, "सतीश बाबू अपने ईड़ा कुमारी से विवाह पर पधारने के लिए मलावीदेवी को अपने पति सहित निमन्त्रण देते है। विवाह आगामी रविवार पांच अगस्त को साढ़े पांच बजे, तैंतीस राउज़ एवेन्यू में होगा।"

मलावी ने हंसते हुए सानन्द से पूछ लिया, "तो आपने अपने मित्रों को भी मेरे विवाह के विषय में बता दिया है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां, इतना ही बताया है कि तुमने विवाह कर लिया है और तुम अब हमारे घर के एक फ्लैट में अपने पति के साथ रहती हो। साथ ही यह भी बता दिया है कि तुम्हारा पति घुमक्कड़ है। इस पर भी कमाई इतनी कम करता है कि तुमको अपने निर्वाह के लिए अनन्ता की नौकरी करनी पड़ती है।"

इस पर मलावी और भी हंसी। अनन्ता मुस्कराती रही। मलावी ने पूछ लिया, "और उसने मेरे पतिदेव का नाम नहीं पूछा?"

"नहीं, इस और उसका ध्यान ही नहीं गया।"

"देख लीजिये। मैने आपसे इतना कुछ नहीं मांगा था। मैं तो केवल यह चाहती थी कि अनन्ता बहन की सेवा में रह सकूं जिससे आपके निरन्तर दर्शन करती रहूं और अपनी निष्ठा में डिग न सकूं।"

"मैंने केवल इतना अधिक किया है तुम उनकी दृष्टि में भी विवाहिता बन जाओ जो तुमसे विवाह कर अथवा बिना विवाह के तुमको तुम्हारी निष्ठा से गिराने का यत्न कर रहे हैं। अब वे तुमसे विवाह की अथवा वैसे ही सम्बन्ध की याचना नहीं करेंगे।"

"आपके मित्र भी आपको दो पत्नीवाला पति मानने लगेंगे। आप व्यर्थ में बदनाम होंगे।"

"मेरी इस किंचित्-सी बदनामी के कारण तुम बहुत-सी परेशानियों से बच जाओगी। इसके अतिरिक्त कहीं कोई अन्य भैया समर्थ की भांति तुमसे झगड़ा करेगा, तो मैं तुम्हारी रक्षा करने का अधिकारी हो गया हूं।"

इस पर माधवी ने कह दिया, "तो मुझको भी कुछ उसकी पत्नी के लिए भेंट के रूप में ले जाना चाहिए।"

"क्या ले जाना चाहती हो?"

"मैं विचार कर रही हूं कि मेरी सामर्थ्य कितने दाम की भेंट देने की है। यह निर्णय नहीं कर पा रही।"

"अपने पति से पूछ क्यों नहीं लेती?"अनन्ता ने कह दिया।

माधवी ने लाल मुख होते हुए कहा, "वह अभी अनजान है। उसको अभी पति का भाग मिला नहीं। इससे उसको अभी अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान नहीं।"

सानन्द ने हंसते हुए कहा, "इस पर भी माधवी? तुम उसको आज्ञा देने का अधिकार रखती हो। वह कुछ न जानता हुआ और समझने के अयोग्य होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर भी तुम्हारी बात का उल्लंघन नहीं करेगा।"

"सत्य?"

"हां।"

"तब तो उससे कहूंगी।"

परिणाम यह हुआ कि अगले दिन अनन्ता और माधवी दोनों ईड़ा के साथ गई और अनन्ता उसके लिए एक रेडियो सेट और माधवी उस के लिए एक तिल्लई साड़ी-जम्पर ले आई।

: 5 :

"हमारी इच्छा थी कि आप हमारे टिकट पर दिल्ली में पार्लियामेंट के लिए खड़े हो जाय।" जनसंघ के प्रवक्ता सानन्द से स्टैंडर्ड रेस्टोरां में चाय पीते हुए कह रहे थे।

"मैंने सुना है कि आप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों के अतिरिक्त किसी का समर्थन करते ही नहीं?" सानन्द का कहना था।

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। आप हमारे टिकट पर खड़े होकर परीक्षा करें। यह बात किसी ने गलत बताई है।"

"इस पर भी मैं आपके टिकट पर निर्वाचन लड़ने का कोई विचार नहीं रखता।"

"क्यों?"

"इसलिए कि प्रथम मैं आपके कार्यकर्ताओं के लिए 'परसोना नान ग्रुप' अर्थात् अविश्वस्त व्यक्ति हूं। यह ठीक हो सकता है कि आपके दल में, कुछ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से बाहर के लोग भी होंगे, परन्तु कार्यकर्त्ता प्रायः संघ के स्वयंसेवक होने से गैर-संघियों के लिए वह रुचि नहीं ले सकते, जो कार्यकर्ताओं को लेनी चाहिए।

"यह जनसंघ की प्रारम्भिक अवस्था के कारण भी हो सकता है, परन्तु जब तक जनसंघ के अन्दर साधारण जनता में से पर्याप्त संख्या में कार्यकर्ता आ नहीं जाते तब तक गैर-संघी के लिए आपके दल के टिकट पर खड़ा होना अस्वाभाविक और साथ ही अरक्षित है।

"इस त्रुटि को दूर करने का उपाय यह है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से बाहर के लोग आपकी संस्था मे आयें। यह मैं कर सकता हूं और करूंगा भी। रही आपके टिकट पर निर्वाचन लड़ने की बात। उसके लिए अभी समय नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया। हां, मैं आपके दल में सम्मिलित होकर उस समय को समीप लाने का यत्न कर सकता हूं।

"परन्तु समस्या यह है कि कोई बाहर का व्यक्ति तभी आपके दल में सम्मिलित होगा जब उसको यह अनुभव होगा कि आपके दल के सिद्धान्त, दूसरे राजनीतिक दलों से विलक्षण और श्रेष्ठ हैं।

"कल आपके एक कार्यकर्त्ता, जो कहते थे कि एम. ए. पास हैं, मुझको बता नहीं सकें कि कांग्रेस और जनसंघ में मौलिक अन्तर क्या है। उनकी बातों से मैं यह समझा था कि वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का एक स्वयंसेवक है और संघ के नियन्त्रण में बंधा हुआ जनसंघ का कार्य कर रहा है। बिना समझे, बिना मनन किये वह एक सैनिक की भांति युद्ध में जूझ गया है।

"मैं उनकी प्रशंसा करता हूं। उनकी भावना के आगे नतमस्तक हूं, परन्तु एक बाहरी व्यक्ति से आप इस प्रकार के आज्ञा-पालन की आशा नहीं कर सकते; उसको तो समझाना होगा कि सत्य ही जनसंघ को जन्म देने के लिए कोई सैद्धान्तिक आधार है।"

"बात यह है," जनसंघ के प्रवक्ता ने कहा, "कि हम तो अपने दल के आधारभूत सिद्धान्त और देश के अन्य दलों में आधारभूत सिद्धान्तों में मौलिक अन्तर मानते हैं। हम राष्ट्रीय हैं। हम प्रजातन्त्रवादी हैं। हम न तो सरमायदार-वर्ग हैं न मजदूर-वर्ग हैं। हम शुद्ध पवित्र भारतीय हैं। हमारी विदेशी-नीति भी 'ऐनलाइटेन्ड सेल्फ इन्टरैस्ट' अर्थात् सविचारित देश के हितों पर आधारित है।"

सानन्द ने हंसते हुए कहा, "परन्तु आपकी इन बातों में क्या ऐसी कोई बात है, जो कोई भी कांग्रेसी स्वीकार न करता हो? देखिए, कांग्रेस देश के संविधान के साथ वचनबद्ध है। यदि वह कोई बात आपके विचारों के विपरीत संविधान में लाना चाहते हैं तो आपको कांग्रेस में घुसकर उन को ऐसा करने से रोकना चाहिए। वे दल जो विधान को ठीक समझते हैं उनको इकट्ठे मिलकर काम करना चाहिए।

"मैं समझता हूं कि विधान एक सिद्धान्त है। उस पर सहमत होते हुए भिन्न-भिन्न दल बनाने की आवश्यकता नहीं।

"हमारे विधान के आधार है 'एडल्ट फ्रेंचाइज' अर्थात् सज्ञान मताधिकार, फैंड्रल कान्स्टीट्यूशन अर्थात संयुक्त राज्य संगठन, सैक्युलर स्टेट लैजिस्लेटिव और एडमिनिस्टीरियल (विधानात्मक और शासनात्मक) कार्यों का एक स्थान पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयोग और सोशियलिस्टिक सोसायटी। ये मुख्य बातें है जो कांग्रेस ने चलाई हैं। बताइये, आपने इनको बदलने के लिए दल बनाया है अथवा चालू रखने के लिए?

"यदि तो उक्त बातों को जारी रखने के लिए ही आपने दल बनाया है अथवा इन बातों के चलने में गति को तीव्र करने के लिए तो मैं समझता हूं कि इस दल की कोई आवश्यकता नहीं है। आपको कांग्रेस में ही घुस जाना चाहिए और जो कुछ उसमें खराबी है, उसको भीतर से दूर करना चाहिए।"

प्रवक्ता ने धीरे से कान के समीप होकर कहा, "वास्तव में इनमें से अधिकांश बातों को बदलना चाहते हैं। परन्तु हम अभी इसकी घोषणा नहीं कर सकते।"

"क्यों?"

"जनता हमारा साथ नहीं देगी।"

"तो आप जनता को धोखा देकर अपने साथ लगाना चाहते हैं।"

"नहीं, यह बात नहीं। हमारे सब कार्यकर्त्ता विधान के इन दोषों को समझते है और वे सोच-विचारकर उनको विधान में से निकालने के लिए कटिबद्ध हैं। परन्तु देश की वर्तमान स्थिति में हम लिखित घोषणा नहीं कर सकते।"

"अर्थात् आप पहले इस विधान का समर्थन कर जनता का विश्वास प्राप्त करना चाहते है और सत्ता प्राप्त कर आप विधान बदल देंगे? मैं आपको ऐसा विश्वासघात करने वाला व्यक्ति नहीं समझता था।"

"तो आप क्य चाहते हैं?"

"मैं तो यह चाहता हूं कि भारतीय जनसंघ अथवा मेरे मनोनीत दल का आधार यह हो कि इस देश मे हिन्दू राज्य स्थापित करना चाहिए। हिन्दू के लक्षण बताए जाएं। हिन्दू के अर्थ हिन्दू मां के पेट से पैदा हुआ नहीं, प्रत्युत इस देश, यहां के धर्म और संस्कृति के भक्त को भी हिन्दू कहा जायेगा। यहां के धर्म, राज्य और संस्कृति का विरोध करने वाले को यहां का नैशनल नहीं माना जायेगा।

"मैं यह चाहता हूं कि मताधिकार का आधार आयु न होकर शिक्षा, चरित्र और समाज का उपयोगी अंग होना हो।

"मैं यह चाहता हूं कि देश का प्रशानाधिकारी अर्थात् राष्ट्रपति उक्त मताधिकार प्राप्त जनता से निर्वाचित हो, परन्तु विधानात्मक व्यवस्था देने अर्थात् कानून बनाने का अधिकार न रखे। धर्म-व्यवस्था अर्थात् विधान-निर्माण का अधिकार उन लोगों को हो, जो धर्म के ज्ञाता, उच्च शिक्षा प्राप्त, इतिहास और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान के पण्डित अर्थात विद्वान हों।

"ये प्रायः विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक अथवा कानून और अन्य विषयों में स्नातक हों।

"मेरा मत है कि भारत के राज्य की एक इकाई हो। राष्ट्रपति उसका मुख्य शासक हो और देश में राज्यों के स्थान प्रान्त हों। वहां के उपशासक राष्ट्रपति नियुक्त करे।

"मेरे मत में वहां का प्रत्येक व्यक्ति विचार करने, विचार प्रसार करने और कार्य करने मे सर्वरूपेण स्वतन्त्र हो। इस स्वतन्त्रता पर केवल एक प्रतिबन्ध हो—

'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।'

अर्थात् जो स्वतन्त्रता तुम स्वयं भोग करना चाहते हो, वह ऐसी न हो जो किसी अन्य की स्वतन्त्रता छीनने वाली हो।

"बताइये! क्या आपका दल संविधान में इन दिशाओं में संशोधन करने की घोषणा करना चाहेगा?"

जनसंघ का प्रवक्ता अनिश्चित मन मुख देखता रह गया। सानन्द को कुछ ऐसा समझ आया कि सामने बैठा व्यक्ति यह सब कुछ चाहता है, परन्तु दल की सफलता का विचार कर इनकी घोषणा नहीं चाहता।

चाय समाप्त हो चुकी थी। बात भी लगभग समाप्त हो गई थी। प्रवक्ता ने नेपकिन से हाथ पोंछते हुए कहा, "इन सब परिवर्तनों के लिए हम अभी समय उपयुक्त नहीं समझते। हमको अभी शक्ति प्राप्त करनी है। शक्ति है जनमत की। जिस किसी भांति भी हम उसको प्राप्त कर सकें प्राप्त करेंगे। पीछे इन बातों पर विचार कर लेंगे।"

"मैं बताऊं क्या होगा?"

"हां, बताइये।"

"आप पिछले निर्वाचनों की भांति इसमें भी बुरी तरह पराजित होंगे। हो सकता है, आपको पहले से कुछ अधिक मत प्राप्त हों परन्तु यह उन्नति नगण्य होगी। इसमें युक्ति यह है कि जनता को धोखा देने के लिए धन, जन बल, वाक्शक्ति और चतुराई होनी चाहिए। इन अनर्थकारी शक्तियों में आपके पास कोई नहीं है। मैं इनका निर्वाचनों में प्रयोग अनुचित समझता हूं, परन्तु इनके बिना आप जनता को धोखा नहीं दे सकेंगे।

"हां, आप एक बात कर सकते हैं। आप निर्भय होकर धर्मयुक्त व्यवहार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनाइये। आपको अधिक लाभ होगा। धोखा देकर विश्वास जमाने से सत्य बोलकर विश्वास जमाना अधिक सुगम है।"

"सानन्द!" प्रवक्ता ने उठते हुए कहा, "लेट अस ऐग्री टू डिफर।"

सानन्द उठा तो मदनगोपाल, सतीश और डाक्टर माथुर आ गये। सानन्द ने राजनीतिक नेता से छुट्टी ली और अपने श्वसुर को हाथ जोड़ नमस्कार कर एक बड़ी मेज पर पुनः उनके साथ बैठ गया। डाक्टर माथुर ने कहा, "मैं चाय के लिए यहां आ रहा था कि रास्ते में तुम्हारे ये दोनों दोस्त मिल गये। ये कहने लगे कि हम भी चाय पीयेंगे। मैं इन्कार न कर सका। परन्तु मुझे यह विदित नहीं था कि तुम यहां पहले ही विराजमान हो।"

"यहां एक नये मित्र मिल गये थे और बहुत रुचिकर वार्त्तालाप होने लगा था जिससे एक घंटा यहां बैठा रह गया।"

"यह महाशय तो जनसंघ के नेता हैं।"

"हां! उसीके विषय में बातचीत हो रही थी।"

"क्या कहते थे?"

"मुझको अपने टिकट पर खड़ा करना चाहते थे।"

"तो तुम मान गये हो?"

"नहीं।"

"देखो सानन्द!" डाक्टर ने कहा, "मान जाओ और मैं गारंटी करता हूं कि तुम जीत जाओगे।"

"कैसे गारंटी करते हैं?"

"मैं कांग्रेस की पूर्ण मशीनरी का नई दिल्ली में तो सैबोटेज (विध्वंस) कर दूंगा।"

"सरकारी नौकरी में होते हुए भी?"

"शरीर पर के कपड़ों से चमड़ी अधिक समीप है। समझते हो? सानन्द, तुम चाहे कितनी ही खरमस्तियों करो, पर हो तो अनन्ता के पति न?"

"पर पिताजी! मैंने क्या खरमस्ती की है। मैं सदा आपकी लड़की का एक वफादार खाविंद बनकर रहा हूं और अभी भी हूं।"

"देखो, मैंने तुम्हारी करतूत का सब काला चिट्ठा तुम्हारे दोस्तों को बता दिया है। क्यों मदन! तुम इसको शराफत समझते हो?"

"ओह! आप माधवी के विषय में कह रहे हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"माधवी? उसका नाम तो मलावी था?"

मदन और सतीश खिलखिलाकर हंस पड़े। सतीश ने कहा, "पिताजी! अनन्ता भाभी ने बताया है कि उसका नाम माधवी रख दिया गया है।"

"परन्तु उससे तो तुम विवाह करनेवाले थे?"

"जी! पर क्या करूं, सानन्द मुझसे अधिक सुन्दर और गौरवर्णीय है। मैं पसन्द नहीं आया।"

इस पर मदनगोपाल ने कह दिया, "यह पसन्द का प्रश्न नहीं है। यह तो उस बेचारी की विशेष परिस्थिति से लाभ उठाने की बात प्रतीत होती है। सानन्द! मैं तुमको ऐसा गिरा हुआ व्यक्ति नहीं समझता था।"

सानन्द ने कुछ उत्तर नहीं दिया। वह मुस्कराता रहा। सतीश ने सामने रखी प्लेट में से एक पेस्टरी का पीस उठाकर एकदम मुख में डालते हुए कहा, "मैं इसमें पतन की बात नहीं देखता। वास्तव में मुझको कुछ ऐसा समझ आया है कि माधवी सानन्द की पत्नी तो बहुत पहले से थी। भाभी अनन्ता, इनकी पत्नी यह सब कुछ जानती थी। यही कारण है कि वह अपने पति की सुख-सुविधा के लिए सब बात पर पर्दा डाले हुए थी।

"मेरे साथ बातें करते हुए माधवी ने कभी शिष्टाचार की सीमा पार नहीं की। वह सदा कहती रही कि उसका विवाह हो चुका है और वह एक निष्ठावान पत्नी है। मैं समझता था कि वह अपने नरेन्द्रसिंह से विवाह की चर्चा करती रही है।

"कल जब मैंने माधवी को निमन्त्रण-पत्र भेजा तो मैंने उसके पति का नाम जानने का भी यत्न नहीं किया। यदि डाक्टर माथुर आज न बताते तो हम भाभी अनन्ता को अपने पति की एकाकी भागीदार ही मान रहे थे।"

"खैर छोड़ो।" डाक्टर ने कह दिया, "मैं आज सर्राफे मे गया था। अनन्ता और मलावी कुछ खरीद कर रही थी। मैंने पूछा क्या लेने आई है तो बताने लगी कि वे दोनों पृथक्-पृथक् वस्तुएं सतीश की बीबी को भेंट में देने के लिए खरीदने आई हैं। दोनों परस्पर बहुत हेल-मेल रखती प्रतीत होती है। मैं इससे खुश हूं, परन्तु देखना तो यह है कि यह सब कब तक चलेगा।"

"पिताजी!" सानन्द ने कहा, "आपके आशीर्वाद से यह सब ठीक रहेगा और फिर हमारी कृपालु सरकार हिन्दुओं में भी तलाक कानून बना रही है। यदि कुछ गड़बड़ हुई तो तलाक दिया जा सकता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कौन तलाक देगा?" डाक्टर माथुर ने खाते-खाते रुककर पूछा।

"जिसको वर्तमान प्रबन्ध में दुःख होगा।"

"माथुर परेशानी में सानन्द का मुख देखता रह गया। फिर कुछ विचारकर कहने लगा, "ईश्वर का धन्यवाद है कि मैंने अनन्ता को पहले ही, आर्थिक दृष्टि से स्वतन्त्र कर रखा है। इस पर भी मैं हृदय से चाहता हूं कि तलाक का विषय अनन्ता न हो।"

इस पर मदनगोपाल ने कह दिया, "डाक्टर साहब! यदि मैं सानन्द के विचारों को भली-भांति समझा हूं तो मैं आपको आश्वासन दिलाता हूं कि तलाक देने वाला यह नहीं होगा।"

"परन्तु यह नई बीबी के मोह में पुरानी को कष्ट दे सकता है।"

"क्यों सानन्द! क्या इरादा है तुम्हारा?"

"अरे भाई! व्यर्थ की चिन्ता कर रहे हो। ऐसा कुछ भी नहीं होगा।" फिर सानन्द ने बात बदल दी, "सतीश, अपने विवाह के समय रिसेप्शन का निमन्त्रण डाक्टर साहब को दिया है अथवा नहीं?"

"उसी रिसेप्शन का कार्ड देते हुए ही तो तुम्हारे नवीन विवाह का रहस्य खुला है। डाक्टर साहब कहने लगे कि अनन्ता और मलावी मेरी पत्नी के लिए प्रेजेन्ट खरीदती मिली हैं। इस पर मदन ने पूछ लिया, 'मलावी ने क्या खरीदा है?" तो डाक्टर साहब ने बताया, 'पांच-छः सौ रुपये के मूल्य का साड़ी-जम्पर उसने खरीद लिया है। अनन्ता ने एक फिलिप्स का रेडियो सैट।' इस पर मदन ने यही अनुमान लगाया कि मलावी का पति भी अवश्य कोई धनी-मानी व्यक्ति होगा। यह सुन डाक्टर साहब ने आश्चर्य से पूछ लिया, 'तो तुम उसके पति को नहीं जानते?"

"मदन ने अनभिज्ञता प्रकट की तो डाक्टर साहब ने कह दिया, 'अरे भाई, वह अनन्ता की सौकन बन गई है। मैं हैरान तो इस बात पर हूं कि दोनों में सुलह है।"

"इसके बाद हैरान होने की बारी हमारी थी। अब तो तुमने यह स्वीकार ही कर लिया है।"

: 6 :

यद्यपि जनसंघ के एक प्रवक्ता ने सानन्द से 'ऐग्री टू डिफर' का फतवा पास कर दिया था, परन्तु सानन्द कुछ ऐसे भंवर में फंस गया था कि वह जनसंघ के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारों ओर चक्कर काटने लगा। ईड़ा का भाई वैद्यनाथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का स्वयंसेवक था। वह प्रातः शाखा में जाता था। जब जनसंघ का निर्वाचन-अभियान आरम्भ हुआ तो प्रायः सब स्वयंसेवक संघ के लिए चन्दा एकत्रित करने के लिए लग गये।

सतीश 'हनीमून' से लौटा तो सानन्द, अनन्ता और माधवी, सतीश और ईड़ा से मिलने निकलसन रोडवाले मकान पर गये। वहां ईड़ा की सातों बहनें और भाई भी उपस्थित थे।

अनन्ता और माधवी भीतर ईड़ा के पास चली गई। ईड़ा की बहनें भी वहां पर थीं। सतीश और वैद्यनाथ बाहर बैठक में बैठ बातचीत कर रहे थे। सानन्द को आया देख सतीश ने कहा, आओ सानन्द! तुम्हारे मतलब की एक बात यहां हो रही है।"

वैद्यनाथ ने हाथ में एक चन्दे की कापी पकड़ी हुई थी। सानन्द आया तो उसने नमस्ते कर दी। सानन्द ने पूछ लिया, "हां। क्या बात है मास्टर सेन?"

"जीजा जी से कह रहा हूं कि कश्मीर की सैर पर तो डेढ़ हजार खर्च कर आये हैं। कुछ धर्म-कर्म के लिए भी दे दें।"

"कहीं यज्ञ हो रहा है क्या?" सानन्द ने पूछते हुए साथ ही चन्दे की कापी को देखने के लिए हाथ बढ़ा दिया।

वैद्यनाथ ने कहा, "आपसे भी लूंगा। पहले जीजाजी की जेब हल्की कर लूं।"

"पर है क्या?"

"बात सतीश ने बताई, "यह जनसंघ मेरे घर में घुसता आ रहा है। यह महाशय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक हैं और जनसंघ के निर्वाचन-अभियान के लिए चन्दा एकत्रित कर रहे हैं। मैं इनसे पूछ रहा था कि दोनों संस्थाओ का क्या सम्बन्ध है। ये बताते नहीं, परन्तु चन्दा मांग रहे है।"

"देखो वैद्यनाथ! सतीश ने आज तक किसी भी सार्वजनिक संस्था को एक पैसा भी नहीं दिया। इनके लिए काली के मन्दिर के अतिरिक्त अन्य कोई धर्म-स्थान ही नहीं। इस कारण यह तो कुछ तुमको देगा नहीं। परन्तु तुम मुझको कहो तो मैं अवश्य ही कुछ दूंगा।"

"तो आप ही श्रीगणेश करिये।" वैद्यनाथ ने कापी सानन्द के हाथों में दे दी। सानन्द ने अपने कुरते की जेब से कलम निकाली और और उसे खोल पूछने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा, "तुम सतीश से कितने की आशा करते थे?"

"एक सौ एक रुपया।"

"बस! यह लो।" सानन्द ने सतीश का नाम लिखकर नीचे एक सौ एक रुपया लिख दिया। तदन्तर रसीद फाड़कर सतीश के हाथों में पकड़ा दी।

"और आप?" वैद्यनाथ ने पूछ लिया।

"वैद्यनाथ! मैं तुम्हारे जाजाजी से निर्धन नहीं हूं।" इतना कह उसने भी एक सौ एक रुपये की रकम अपने नाम लिखकर रसीद काट ली।

"सानन्द! आज तो खुले हाथ रुपये लुटा रहे हो?"

अरे भाई! जेब में हो तो लुटाता हूं।"

"पर मैं तो कश्मीर से जेब खाली करके आया हूं।"

"तो फिर क्या हुआ?" सानन्द ने अपनी चैक बुक निकाल कर दो सौ दो रुपये का चैक काट दिया।

इसके बाद तो जनसंघ और सानन्द में वैद्यनाथ एक कड़ी बन गया। सतीश तो राजनीतिज्ञ दलों से दूर-दूर रहता था। उसकी जर्नलिज़्म समाचारों के एकत्रित करने और भेजने तक ही सीमित थी। सानन्द केवल समाचार-संग्रह करनेवाला व्यक्ति नहीं था। वह समाचारों की आलोचना भी किया करता था। अतएव दोनों के राजनीति समझने में अन्तर था।

एक के लिए राजनीति एक बहती नदी के तुल्य थी, जिसके तट पर खड़ा वह बदलनेवाले दृश्यों को देख रहा है। दूसरे के लिए राजनीति एक नदी थी जिसमें बाढ़ आई हुई थी और जल किनारों को तोड़ आसपास के खेतो में तबाही मचानेवाला था। वह टूटते किनारों को सुदृढ़ बनाने में सहयोग देने का प्रयत्न कर रहा था।

एक केवल दार्शनिक मात्र था। दूसरा राजनीति की बाढ़ के विनाशात्मक प्रवाह को रोकने में संलग्न था। इस पर भी वह इसमें कूदकर इसके साथ बहनेवालों में नही था। वैद्यनाथ सानन्द को जनसंघ को चार आनेवाला सदस्य बनाने में भी सफल हो गया। उसको वह समय-समय पर सार्वजनिक सभाओं में ले जाकर भाषण आदि भी दिलवाने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि सानन्द जनसंघ का नेता माना जाने लगा। निर्वाचनों में उसने जनसंघ की ओर से खुलकर भाग लिया। संगठन-कार्य तो प्रायः राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक करते थे। सानन्द उनमें था जो सभाओं में जाकर जनसंघ की नीति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की व्याख्या करते थे।

सदर बाजार में एक मीटिंग में भाषण कर सानन्द पर लौट रहा था कि जनसंघ का यही प्रवक्ता जो उसको स्टैंडर्ड रेस्टोरां में मिला था, मार्ग में मिल गया और पूछने लगा, "किधर जा रहे है सानन्दजी?"

"मैं रिंग रोड पर रहता हूं। उधर ही जाने का विचार था।"

"आपके पास अपनी गाड़ी है?"

"हां! आपको किधर जाना है?"

"लाजपत नगर जाना है। यदि आप निजामुद्दीन के नाले तक पहुंचा दे तो में आगे पैदल चला जाऊंगा।"

"आइये, आपको लाजपत नगर में आपके स्थान तक पहुंचा दूंगा।"

सानन्द स्वयं गाड़ी चला रहा था। दोनों अगली सीट पर बैठ गये। उस जनसंघी ने कहा, "उस दिन रेस्टोरां में वार्त्तालाप से तो मैं सर्वथा निराश लौटा था, परन्तु आज के व्याख्यान से तो मेरे विचारों में अन्तर पड़ गया है। आप तो हमारे दल के सबसे बड़े वकील बन गये हैं।"

सानन्द ने हंसते हुए कहा, "मैं स्वयं अपने पर विस्मय करता हूं कि आप कौन-सी बात मुझमें देख मुझको बुला लेते हैं।"

"आपको बुलाने की बात तो कुछ भी विस्मयजनक नहीं। विस्मय करने की बात तो यह है कि आप उस वार्त्तालाप के बाद कैसे हमारे प्लेटफार्म पर बोल जाते हैं।"

"यह तो बहुत सरल बात है। मैं जब आपके बहुत-से कार्यकर्त्ताओं के त्याग और तपस्या का विचार करता हूं तो अनायास ही आपके आग्रह को स्वीकार करना पड़ता है। मैं देख रहा हूं कि सहस्रों की संख्या में युवक अविवाहित रहकर अपने विचारानुसार देश और जाति की सेवा कर रहे हैं। इससे उनसे मतभेद रखते हुए भी श्रद्धा से उनके सामने सिर झुक जाता है।"

"परन्तु यह मतभेद भी रहना नहीं चाहिए।"

"समझने और समझाने का यत्न कर रहा हूं। कह नहीं सकता कि इस जीवन में सफल हो सकूंगा अथवा नहीं। देखिए, हम हिन्दुओं में ब्रह्मचारी, त्यागी, तपस्वी और सन्यासी की बहुत महिमा है। ये सब बाते बाह्य व्यवहार के साथ सम्बन्ध रखती हुई भी, एक सबल अन्तर्प्रेरणा से ही सम्भव हो सकती है। यह अन्तर्प्रेरणा किसी स्वार्थ के हेतु नहीं, यह देख ही मैं भागा हआ चला आ रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूं।

"इस पर भी आपने देखा होगा कि आपके दृष्टिकोण से मेरे दृष्टिकोण में अन्तर है।"

"मुझको तो कुछ समझ आया नहीं।"

"तो आपने मेरा पूर्ण भाषण सुना नहीं। देखिये, मैं जब इस सभा में पहुंचा था तो आपके एक प्रसिद्ध कवि एक कविता सुना रहे थे। उस कविता का आशय था कि महाराज दलीप ने ऊबड़-खाबड़ भूमि को समतल कर खेती के योग्य किया था। भूमि को समतल कर उसने नगर बसाये थे। इसी प्रकार हमने समाज की ऊंच-नीच की समतल करने के लिए भारतीय जनसंघ की स्थापना की है।

"मैंने अपने भाषण में कहा कि समाज योग्य, अयोग्य, बुद्धिमान और मूर्ख, धनी और निर्धन, पढ़े-लिखे और अनपढ़, मजदूर-दुकानदार सैनिक और मास्टर, प्रोफेसर, क्लर्क और अफसर, अभिप्राय यह कि सब प्रकार के लोग हैं। इनको बराबर करना सम्भव नहीं। ये पूर्व जन्म के कर्म-फल से ऐसे बनते हैं। इस जन्म के प्रयास से भी असमानता उत्पन्न होती है। यह सदा रही है और सदा बनी रहेगी। इसको मिटाया नहीं जा सकता। परन्तु हम भारतीय जनसंघ के लोग ऐसा राज्य-निर्माण करना चाहते हैं कि जिसमें यह असमानता, चोरी ठगी, झूठ, अधर्माचरण इत्यादि गैर-कानूनी ढंग से न होकर मानव की स्वाभाविक असमान शक्तियों के कारण ही हो। एक प्रोफेसर को मजदूर के समान जीवन व्यतीत करने के लिए कहना तो अन्याय हो जायेगा। व्यापार के कुशल एक व्यक्ति को जमा-बाकी गुणा और भाग भी न कर सकने वाले के समान वेतनधारी बना देना तो समाज में अन्यायचरण हो जायेगा। भारतीय जनसंघ प्रत्येक को अपनी योग्यता के अनुसार फल प्राप्त करने का अवसर दिलाने के लिए स्थापित हुआ है।"

"परन्तु मिश्रजी! क्या आप यह नहीं मानते कि संसार में असमानता बहुत सीमा तक उन्नति करने के समान अवसर न होने से पैदा हुआ करती है?"

"सबको समान अवसर प्राप्त न हो सकना मैं अन्याय मानता हूं। मैंने अपने भाषण में बताया भी है कि एक ही श्रेणी में एक ही अध्यापक से पढ़ते हुए भी विद्यार्थी फेल और पास होते हैं। कम और अधिक अंक प्राप्त करते है। फर्स्ट, सैकण्ड अथवा थर्ड डिविज़न में पास होते है। धनियों के बेटे कई-कई वर्ष में एक श्रेणी उत्तीर्ण करते हैं और प्रायः निर्धन बालक दो-दो श्रेणियां एक वर्ष में लांघ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाते हैं इस कारण यह कहना कि सब असमानता समान अवसर न मिलने से ही पैदा होती है गलत है।

"मैंने यह भी बताया है कि सरकार सबके लिए समानावसर उत्पन्न करने की जिम्मेदार है। परन्तु समान परिस्थितियों में रहते हुए व्यक्तियों की आय तथा अन्य प्रकार से उन्नति में बाधक नहीं हो सकती। कानून से आय में अथवा सम्पत्ति रखने तथा उसका उपयोग करने में हम सीमा नहीं बांध सकते। यह तो उनके प्रति अन्याय हो जायेगा।"

"परन्तु किसी की योग्यता का पुरस्कार धन मे ही मिलेगा क्या? उसकी पदवी, अधिकार, मान और सम्मान भी तो योग्यता के बदले में ही हो सकते है।"

"हां। परन्तु यह तब हो सकेगा, जब वस्तुओं के मूल्य रुपये-पैसे में न रहकर मान और पदवी के सिक्कों में निश्चित कर दिये जायेंगे। जिस दिन एक मास्टर बिसाती की दुकान से अपनी पत्नी के लिए श्रृंगारसामग्री मास्टरी के अधिकार से ले सकेगा और एक कुली नहीं ले सकेगा, उस दिन मास्टर अथवा व्यापारी की आय पर सीमा बांधी जा सकेगी।"

"हमारे शास्त्र में तो लिखा है कि ब्राह्मण को अपने घर में एक-दो दिन से अधिक भोजन नहीं रखना चाहिए। यह क्यों लिखा है?"

सानन्द ने हंसते हुए कहा, परन्तु यह कहां लिखा है कि सरकार ब्राह्मणों के घर में तलाशी लेकर तीन दिन से अधिक सामग्री हो तो छीनकर ले जाये।"

"धर्म और कानून में मुख्य अन्तर यही है कि एक स्वेच्छा से स्वीकार किया जाता है तो दूसरा राज्य-दण्ड से लगाया जाता है। ब्राह्मण का धर्म है कि वह अपनी आवश्यकताओं से अधिक संचय न करें परन्तु किसी भी राजनियम में यह नहीं आ सकता कि यदि किसी वकील अथवा डाक्टर की आय दो सहस्र से अधिक हो तो राजा अपने कर्मचारी भेजकर उसकी अधिक आय को छीन ले।"

"परन्तु एक सोशियलिस्ट समाज में यह अधिकार सरकार का माना जाता है।"

"मैं ऐसे समाज को गुण्डों का समाज समझता हूं। राज्य यह तो कर सकता है कि किसी निर्धन का मुकदमा बिना वकील के भी सुने। मैजिस्ट्रेट स्वयं उसकी वकालत करे अथवा सरकार उसके लिए वकील नियुक्त कर दे। परन्तु यह नहीं हो सकता कि सुप्रीम कोर्ट में जाकर बहस करने की योग्यता रखनेवाला वकील एक सामान्य असफल वकील के बराबर ही फीस लेकर काम करे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इससे तो संसार में बहुत अन्यायाचरण बढ़ जायेगा?"

"नहीं अन्याय तो तब होगा, जब एक व्यक्ति को उसकी काबिलियत का फल नहीं मिलेगा।"

"हां! चोरों का समाज में ईमानदार मूर्ख कहायेंगे। गुण्डों की समाज में भले लोग बेईमान का नाम पायेंगे।

लाजपत नगर में प्रवक्ता महोदय को छोड़ सानन्द घर पहुंचा तो माधवी ने बताया कि अनन्ता सन्तोष के बुलाने पर फ्रैंड्स कालोनी में गई हुई है।"

"क्या बात है?"

"सिद्धेश्वर का टेलीफोन आया था कि माताजी चाची को बुला रही हैं?"

"कितनी देर हुई है गये हुए?"

"साढें आठ बजे गई थीं। अब तो साढ़े ग्यारह बज रहे हैं।"

सानन्द ने ड्राइंग-रूम में पहुंच अपने भाई की कोठी पर टेलीफोन कर दिया। वहां से किसी अपरिचित व्यक्ति की आवाज आई। सानन्द ने पूछा, "आप कौन बोल रहे हैं?"

"मैं गोपाल बैरा हूं?"

"समर्थजी हैं?"

"वे पकड़ लिये गये हैं।"

"क्यों?"

"उनका मेम साहब से झगड़ा हो गया था। मेम साहब बहुत बुरी तरह घायल हो गई हैं। हस्पताल में हैं। पुलिस पंडितजी को पकड़कर ले गई है।"

"देखो, योगेश्वर है?"

"वह तो साहब तीन दिन से लापता है। योगेश्वर करीम की लड़की शबनम, करीम और करीम के बाल-बच्चे कई दिन से मिल नहीं रहे।"

"अच्छा दाताराम को बुलाओ।"

"दाताराम और सुचाला बहन अपने बच्चों के साथ आज प्रातः बम्बई के लिए रवाना हो गये हैं।"

"कोई कोठी पर है भी?"

"अनन्ता भाभीजी तो मेम साहब के साथ हस्पताल गई हैं। घर पर तो हम ही हैं। सिद्धेश्वर, भुवनेश्वर और भामिनी भी हैं।"

सानन्द ने परिस्थिति माधवी को बताई और कहा, मैं उनकी कोठी पर जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा हूं। तुमको यहां अकेले में डर तो नहीं लगेगा?"

माधवी मुस्कराई और बोली, "आपको अभी भी मेरे विषय में बहुत कम ज्ञान है।"

"वह तो है ही माधवी! इस पर भी यह तो एक साधारण-सा प्रश्न है। देखो, मैं जा रहा हूं वहां से कदाचित-हस्पताल जाना पड़े। कह नहीं सकता किस समय लौटूं।"

"आप निश्चिन्त होकर जाइये। वहां से पूर्ण परिस्थिति टेलीफोन से बता दीजियेगा। मुझको कोई भयंकर घटना घटित हो गई प्रतीत होती है। अन्यथा पुलिस को हस्तक्षेप करने की आवश्यकता न होती। मैं यहां टेलीफोन के पास ही बैठी हूं।"

सानन्द पुनः मोटर में बैठ समर्थ की कोठी में जा पहुंचा। वहां गोपाल ने बताया, "पंडितजी, जब से योगेश्वर लापता हुआ है, बहुत परेशान थे। आज वे कारखाना से लौटे तो दफ्तर में बैठे रहे, हिसाब-किताब देखते रहे थे। भोजन के समय पंडितजी अपने कमरे में गये। दो मिनट पश्चात् ही मेम साहब की बहुत जोर से चीख मारने की आवाज आई तो मैं और दूसरे नौकर भागे हुए उनके कमरे में गये। बीबीजी रक्त से लथपथ भूमि पर पड़ी थी और पंडितजी हाथ में छुरी लिये थे। मैं समझ गया। पंडितजी भाग जाना चाहते थे, परन्तु मैंने पंडितजी को पकड़ लिया और दूसरे नौकरों ने डाक्टर और पुलिस को टेलीफोन कर दिया।

"सिद्धेश्वर ने आपकी कोठी पर टेलीफोन कर दिया। सबसे पहले डाक्टर आया। उन्होंने बीबीजी की पट्टी की और मोटर में लाद हस्पताल ले गये। पीछे भाभी अनन्ता आईं और वे भी हस्पताल चली गईं। पुलिस आई तो पंडितजी को पकड़कर ले गई। तब से हम प्रतीक्षा में बैठे हैं। कोई समाचार नहीं आया।"

सानन्द ने पूछा, "किस हस्पताल में गये हैं?"

ओखला के हैप्पी होम में।"

सानन्द मोटर में बैठ हस्पताल जा पहुंचा। वहां पहुंच उसे पता चला कि सन्तोष अभी अचेत पड़ी है। डाक्टर खून दे रहे हैं। मरहम-पट्टी हो गई है। पेट में छुरे का घाव है। बहुत-सा रक्त निकल गया है। कहीं गुप्त चोट भी है जिसका अभी पता नहीं चल रहा।"

अनन्ता से पता चला, "नौकरों ने डाक्टर को बुलाने में बहुत सतर्कता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दिखाई है। मेरे कोठी पहुंचने से पहले ही सन्तोष भाभी यहां ले आई गई थीं। सुना है कि ये अचेत तो वहां ही हो गई थीं।"

डाक्टरों का कहना था कि घायल के बच सकने की आशा कम है। सानन्द ने माधवी और अपने माता-पिता को टेलीफोन पर यह सब बात बता दी और स्वयं हस्पताल में ही रह गया।

अगले दिन वह पुलिस-हवालात में गया तो पुलिस-मजिस्ट्रेट समर्थ के बयान लिख रहा था। समर्थ बता रहा था, "मेरा बड़ा लड़का योगेश्वर तीन दिन से लापता है। वह सेफ से पचास हजार नकद निकालकर ले गया है। परसों दाताराम ने बताया था कि वह एक आवश्यक काम से बम्बई जा रहा है और सुचाला उसकी पत्नी बम्बई की सैर करने उसके साथ जा रही है। कल प्रातः पांच बजे के हवाई जहाज से वे चले गये थे। मैं मध्याह्न के समय काम पर गया तो पता चला कि एक महीने से मजदूरों में वेतन वितरित नहीं हुआ। मेरे काम पर यह कायदा नहीं था। मुझको रुपये की कमी कभी नहीं हुई और मैंने गरीब मजदूरों का वेतन कभी नहीं रोका।

मैं वहां से कारखाने गया और अगले दिन वेतन बांटने की घोषणा कर कार्यालय में पहुंच गया। वहां बैंक की किताब देखने से पता चला कि बैंक में रुपये हैं ही नहीं। मैंने हिसाब की किताब देखी तो पता चला कि पिछले एक वर्ष में दाताराम, सुचाला और मेरी पत्नी ने बहुत-सा रुपया निकाला है। लगभग पचास लाख रुपया इन तीनों के नाम लिखा मिला।

"मुझको दाल में काला दिखाई दिया। मैंने ट्रैवल एजेंट को टेलीफोन किया तो जानकर आगबबूला हो गया कि दाताराम अपने बच्चों के साथ बर्लिन गया है। मुझको पता चला कि उस समय तक हवाई जहाज को बर्लिन में पहुंचे आध ा घंटा हो चुका है।"

"रुपये निकालने वालों में केवल सन्तोष ही घर पर थी। मैंने उससे पूछा, तो वह खिलखिलाकर हंस पड़ी। मुझे सन्देह हुआ कि वह भी इस षड्यन्त्र में सम्मिलित है। मैंने कमरे में पड़ा फूलदान उसके सिर पर दे मारा। सामने मेज पर छुरी पड़ी थी। मैंने उठाई और उसके पेट में घोंप दी। पहली चोट लगने से पूर्व ही उसने भय से चीख मारी थी, परन्तु गोपाल आदि नौकर तो छुरी लगने के बाद पहुंचे। मैं छुरी फेंक भागने लगा था तो गोपाल ने मुझको बाहों में जकड़ लिया। पीछे मेरे हाथ पांव बांध दिये गये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब समर्थ का बयान हो रहा था तो हरिशरणानन्द वहां आ पहुंचा। वह हस्पताल से होकर आया था। उसका कहना था कि सन्तोष अभी भी अचेत पड़ी है। निपुणा वहां बैठी है और अनन्ता आराम करने घर चली गई है।

मजिस्ट्रेट ने जांच-पड़ताल करने के पश्चात् समर्थ को हवालात में रखने को कहा और पूरी जांच करने के लिए पुलिस को पन्द्रह दिन की रिमांड दे दी।

जब समर्थ हवालात में ले जाया जा रहा था तो हरिशरणानन्द ने उसको डांटकर कहा, "तुमने बयान क्यों दिये हैं? वकील से राय कर बयान देने चाहिए थे।"

"मेरा अब जीने का चित्त नहीं करता।"

"बहुत मूर्ख होते जा रहे हो समर्थ!"

"जी।"

"देखो, अब एक शब्द भी और मत कहना। मैं अभी देखता हूं कि क्या किया जा सकता है तुम्हें बचाने के लिए?"

सानन्द देख रहा था कि समर्थ को बचाने के लिए पिता का पुत्र के प्रति स्नेह उमड़ पड़ा है। सानन्द ने अपने मन में तो पूर्ण कथा सुनने पर यह प्रतिक्रिया अनुभव की कि न्याय को अपने मार्ग पर चलने देना चाहिए। इस पर भी वह पिताजी के उद्‌गारों का विरोध नहीं कर सका।

: 7 :

सन्तोष को तीन दिन के पश्चात् चेतना हुई तो उसके जीवन बच जाने की आशा की जाने लगी। यह तो घटना से ठीक पन्द्रह दिन व्यतीत हो जाने पर ही डाक्टर कह सके कि वह बच गई है। इस पर भी सन्तोष के बयान एक मास के पश्चात् ही हो सके। इस सब काल में कारखाना तो चलता ही रहा परन्तु ठेकेदारी का काम बन्द रहा।

हरिशरणानन्द ने सानन्द से कहा कि वह समर्थ के कारोबार का प्रबन्ध करे। परन्तु सानन्द ने स्पष्ट इन्कार कर दिया। हरिशरणानन्द का विचार था कि सन्तोष जब ठीक हो जायेगी और सानन्द से कहेगी तो वह मान जायेगा। समर्थ के विरुद्ध हत्या करने के प्रयत्न का आरोप लगाकर पुलिस ने चालान कर दिया।

सन्तोष का बयान था कि उसके पति ने उसको मार डालने का यत्न किया। वह नहीं जानती कि क्या कारण था? उसने अपने बयानों में यह भी बताया कि जबसे उसके देवर की दूसरी पत्नी माधवी से उस के पति ने दुर्व्यवहार किया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तबसे ही वह विरक्तता का जीवन व्यतीत कर रही थी। उस दुर्व्यवहार का भी पूर्ण वृत्तांत उसने बता दिया। अपने पति के धन की चोरी पर उसको हंसी इस कारण आई थी कि वह बेईमानी का धन व्यर्थ में जाता देख रही थी।

इस बयान देने से पहले हरिशरणानन्द ने सन्तोष को कहा था कि वह यह बयान दे कि वह छुरी से फल कतर रही थी। उसका पति उसे पीटना चाहता था और वह भागकर कमरे से बाहर जाना चाहती थी। वह भागी तो किसी वस्तु से टकराकर गिर पड़ी और उसके हाथ की छुरी उसके पेट में धंस गई। हरिशरणानन्द ने समर्थ को भी कहा कि वह अपना बयान बदल कर कहे कि जब संतोष गिर पड़ी और उस का रक्त बहने लगा तो उसने छुरी उसके पेट से निकाल ली और ठीक उसी समय गोपाल भीतर आया। वह डर गया और छुरी फेंक बाहर जाकर डाक्टर को टेलीफोन करना चाहता था परन्तु गोपाल ने यह समझा कि मैं भाग जाना चाहता हूं, मेरे हाथ पांव बांध दिये।

और अपने पहले बयानों के विषय में वह यह कह दे कि उसको विश्वास दिला दिया गया था कि संतोष बच नहीं सकती। इस कारण वह निराश हो जीने में कुछ सार न समझ सब दोष अपने सिर लेने को तैयार हो गया था।

परन्तु सन्तोष ने अपने श्वसुर को कह दिया, "पिताजी! मैं झूठ नहीं बोलूंगी। मैं सब बात सत्य-सत्य बता दूंगी।"

हरिशरणानन्द ने बहुत मिन्नत-समाजत की। संतोष के माता-पिता को बुलाकर भी उसे समझाने को कहा गया।

संतोष के पिता हरिओम उपाध्याय ने संतोष से पृथक में बातचीत की तो संतोष ने कह दिया, "पिताजी! मैं कौन होती हूं जो परमात्मा के न्यायदण्ड में और अपराधी के मध्य में खड़ी हो जाऊं? मैं जो बात असत्य समझती हूं वह कभी नहीं कहूंगी।"

"बेटी!" उपाध्याय जी का कहना था, "वह तुम्हारा पति है!"

"तो क्या हुआ? क्या वह मेरे पापों को बांटेगा? वह तो पहले ही पाप के बोझ से दबा हुआ है। वह क्या बांटेगा? मैं अपना पुण्य तो बांट सकती हूं, परन्तु वह कुछ हो भी तो। पाप कमाकर, बांटने के लिए पुण्य, कहां से लाऊंगी। नहीं पिताजी, यह नहीं होगा।"

जब सन्तोष के बयान पुलिस में हो चुके तो वह घर लौट आई। घर आकर उसने सानन्द को टेलीफोन कर दिया, "सानन्द! मैं घर आ गई हूं। पुलिस में मेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बयान हो गये हैं।"

"क्या बयान दिये हैं भाभी?" सानन्द ने पूछा।

"जो कुछ मैं जानती थी और मुझको स्मरण था, सब सत्य-सत्य कह दिया है।"

"भाभी! मैं और अनन्ता अभी आ रहे हैं।"

"आ जाओ।"

वे दोनों आये तो संतोष अपना एक अटैची-केस तैयार कर बैठी थी। इसमें उसने अपने साधारण कपड़े और कुछ आभूषण जो वह अपनी मां के घर से लेकर आई थी, रख लिये थे।

"कहां जा रही हो भाभी?" सानन्द ने पूछ लिया।

"मेरी देवरानी ने एक दिन मुझको अपने घर पर चलकर रहने का निमन्त्रण दिया था। आज विचार आया कि उसके घर चलूं।"

"तो चलो भाभी" अनन्ता ने कहा, "यद्यपि इस प्रकार के चलने का तो निमन्त्रण नहीं था, इस पर भी बहनजी! वह घर तो आपका अपना ही है। बताइये! बच्चे भी साथ चलेंगे न?"

"चलेंगे तो। नहीं जानती उनको कहां छोड़ जाऊं। देखो सानन्द! मेरा मन कहता है कि योगेश्वर के पिता को कम-से-कम सात वर्ष की कैद होगी, परंन्तु मैं तो सदा के लिए आ रही हूं। ये बच्चे अब वहां ही रहेंगे।"

सानन्द और अनन्ता टुकुर-टुकुर मुख देखते रह गये! अनन्ता की आंखें तरल हो गईं। वह कुछ कह नहीं सकी। सानन्द ने कहा, "कहां हैं सिद्धेश्वर आदि?"

"तीनों स्कूल गये हैं। रिंग रोड से गाड़ी भेजकर उनको वहां ही बुला लूंगी।"

"और यहां के नौकर-चाकर?"

"आपके माता-पिता यहां रहने के लिए आ रहे हैं। मुझको उन्होंने बताया है कि तुमने कारखाना और अन्य कारोबार की देखभाल करने से इन्कार कर दिया है।"

"भाभी! मैं यह सब भैया के लिए करने को तैयार नहीं। हां, तुम कहो तो अपनी नीति से चल सकूंगा।"

"मैं क्या कहूंगी? दो रोटियां खाने के लिए इतना बड़ा पाप का बोझा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे सिर पर नहीं डालूंगी। तुम्हारे घर पर बैठकर ही कुछ काम कर लूंगी।"

"भाभी! चलो।"

संतोष ने गोपाल को बुलाकर कहा, "गोपाल! पिताजी आने वाले हैं। उनको कह देना मैं अनन्ता के घर पर हूं। टेलीफोन से बात कर लें। देखो, आज से वे इस घर का प्रबन्ध करेंगे।"

इतना कह वह सानन्द और अनन्ता के साथ चल पड़ी।

माधवी ने संतोष को आया देखा तो भागकर कोठी से निकल आई और मोटर के समीप आकर संतोष का अटैची-केस पकड़कर और संतोष को आश्रय देकर भीतर ले चली। संतोष का दूसरा हाथ अनन्ता के कंधे पर था।

चलते हुए माधवी ने कहा, "भाभी, हम तो तुम्हारे आने की प्रतीक्षा पांच-छः दिन से कर रहे है।"

"सत्य? कौन-कौन प्रतीक्षा कर रहे थे?"

"मैं और अनन्ता बहन। जब हमको पता चला कि आप झूठ नहीं बोल रही तो हम विचार कर रही थीं कि आप फ्रैंड्स कालोनी वाली कोठी में अब नहीं रह सकेंगी। इस पर अनन्ता बहन ने कहा था कि आप यहां आयेंगी।"

"अनन्ता! तमने यह तो बताया ही नहीं।"

"बहन जी! जब आपको वही करते देखा जो करना चाहिए था, तो बताने की आवश्यकता ही क्या थी?"

इस समय वे कोठी में ड्रांइग-रूम में पहुंच गये। संतोष के लिए सानन्द ने एक कमरे में बिस्तर लगा दिया और उसको वहां आराम करने के लिए कह, सानन्द अपने काम पर चला गया। माधवी संतोष की सेवा में लग गई। अनन्ता खाना इत्यादि बनाने लगी। कमल, सोम और कुमुद भी स्कूल गये हुए थे।

लगभग एक बजे संतोष को हरिशरणानन्द का टेलीफोन आया। हरिशरणानन्द ने पूछा, "संतोष! सानन्द के घर चली गई हो?"

"जी!"

"बच्चे कहा हैं?"

"स्कूल गये हुए हैं। तीन बजे छुट्टी होगी तो उनको लेने के लिए कार भेज दूंगी।"

"उनको भी वहां ही रखोगी?"

"विचार तो यही है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यहां किस समय आओगी?"

"क्यों, कुछ काम है?"

"हां। हम चाहते थे कि तुम यहां रहती तो तुम्हारे नाम से कोठी और कारोबार का काम करते।"

"पिताजी! मैं इसमें कुछ भी सम्मति देना नहीं चाहती। कदाचित् दे सकती भी नहीं। अधिकारी आपके पुत्र हैं। आप उनसे अधिकार पत्र ले लीजिये। मैं अंब वहां नहीं आऊंगी।"

"क्यों?"

"मैंने योगेश्वर के पिता को तलाक दे दिया है।"

"तलाक? किस कानून के अनुसार?"

"कानून तो मैं जानती नहीं परन्तु एक विश्वव्यापी धर्म को जानती हूं और उसके अनुसार आपके पुत्र से पृथक् हो चुकी हूं।"

"कब से?"

"ढाई वर्ष से अधिक हो चुके हैं। जब मलावी से उनका मल्लयुद्ध हुआ था। तब मैं लखनऊ से लौटी थी और दोनों के घायल होने की कहानी सुनी तो मन से उनका त्याग कर बैठी थी। पीछे जब सानन्द ने कारखाने में बेईमानी का व्यवहार करना स्वीकार नहीं किया था, तब मैंने स्पष्ट उनको कह दिया था कि मैं अब उनकी पत्नी नहीं।

"मैंने कम्पनी की मीटिंग में सानन्द के पक्ष में सम्मति नहीं दी थी। इसमें भी उद्देश्य यही था कि कारखाना जिनका है उनके पास चला जाना चाहिए जिससे सानन्द का परिवार और मैं उस पाप के स्रोत से पृथक् हो सकें।

"अभी तक भाग्य की विडम्बना के कारण मैं उस कोठी में पड़ी थी। अब इस घटना के पश्चात् वह विडम्बना भी विलीन हो गई है। मैं अब वहां आने का विचार नहीं रखती।"

"तो सानन्द के पास रहोगी?"

"हां, जब तक रह सकी। नहीं रह सकूंगी तो कहीं अन्यत्र ठिकाना कर लूंगी। एक बार जब आप अपने बड़े पुत्र को अपने छोटे भाई से दुर्व्यवहार देख पटेल नगर चले गये थे तो मैं विचार किया करती थी कि सानन्द के स्थान आपकी सेवा में रहने पर अधिक पुण्य लाभ करूंगी। परन्तु आपके बार-बार झूठे बयान देने के आग्रह से तो मुझको आप में और आपके बड़े पुत्र में अन्तर प्रतीत नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ।

"अनन्ता ने एक बार यहां आकर रहने का निमन्त्रण भी दिया था। इसलिए मुझे वहां पर रहना ही ठीक प्रतीत हुआ।"

"परन्तु बच्चों को वहां क्यों मंगवा रही हो? उनको अपने पिता के पास क्यों नहीं रहने देना चाहिए?"

"उनके पिता जेल में हैं और शीघ्र उनके बाहर आने की सम्भावना प्रतीत नहीं होती।"

"परन्तु तुम समर्थ में और मुझमें तो कोई अन्तर नहीं समझतीं और मैं तो जेल में नहीं हूं।"

"यदि आप उनको रखने का कष्ट करते हैं तो मुझको आपत्ति नहीं।"

"मैं सानन्द से बात करना चाहता हूं, उसको टेलीफोन पर बुलाओ।"

सानन्द अभी-अभी खाना खाने के लिए आया था। संतोष ने उसको बुलाकर टेलीफोन पकड़ाते हुए कह दिया, 'पिताजी हैं।'

सानन्द ने टेलीफोन पकड़कर पूछ लिया, "कहिए, क्या आज्ञा हैं?"

"संतोष को तुम यहां आकर ले गये हो?"

"जी!"

"क्यों?"

"उसकी इच्छा थी, वह उस कोठी में रहना पसन्द नहीं करती। स्वाभाविक रूप से उसकी इच्छा यहां आने की हुई। मैं और अनन्ता उसको ले आये हैं।"

"यह तुमने अच्छा नहीं किया। एक ओर तो तुम अपने भाई के कारोबार को हानि से बचाने के लिए स्वयं यत्न नहीं कर रहे और दूसरी ओर तुम भाई के अपराध से मुक्त होने में बाधक हो रहे हो।"

"पिताजी! मैंने ऐसी कोई बात नहीं की जिससे भैया के छूटने में किसी प्रकार की भी बाधा खड़ी हो जाये।"

"यह संतोष को अपने घर में ले जाना बहुत बड़ी बाधा है। वह यहां रहती तो हम उसको समझा-बुझाकर जिरह के समय अपने अनुकूल कर लेने का यत्न करते। अब यह असम्भव है। करेला तो वह पहले ही है अब तुमने उसको अधपका बना दिया है।"

"पिताजी! मैंने उसको इस विषय में कुछ भी नहीं कहा। यदि आप समझाना चाहते हैं तो यहां आकर भी तो समझा सकते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने संतोष से कह दिया है कि बच्चों को यहां ले आऊंगा। तुम उनको वहां ले जाने के लिए मत जाना।"

भोजन करते समय सानन्द ने संतोष से कहा, "पिताजी कहते हैं कि मैंने भाभी को यहां लाकर भैया के छूटने में बाधा खड़ी कर दी है।"

"सत्य? यह उन्होंने कहा?" संतोष ने पूछ लिया।

"वे कहते थे कि फ्रैंड्स कालोनी वाली कोठी में रखकर भाभी को समझाने का यत्न करना था, जिससे जिरह में वह अपने बयान ठीक कर देती। यहां उसको समझाया नहीं जा सकेगा।"

"पिताजी वृद्ध हो गये हैं। इस कारण वे मोह-माया में पहले से अधिक फंस गये हैं।

"देखिये, मैं आज अपने जीवन के परिवर्तन का वृतान्त सुनाती हूं। मेरे पिताजी तो पूजा-पाठ, धर्म-कर्म की चर्चा करते थे। जब आपके भैया की मेरे साथ सगाई की चर्चा आरम्भ हुई तो पिताजी आपके पिता के शास्त्र-ज्ञान और धर्म में निष्ठा की बातें किया करते थे कि हमारा भले लोगों से वास्ता पड़ा है।"

"मेरे विवाहित जीवन के प्रारम्भिक काल में तो मुझको अपनी धारणा सत्य ही प्रतीत हुई, परन्तु अभी दरियागंजवाले मकान में ही थे कि आपके भैया की उच्छृखंलता के दर्शन होने लगे। वे वेश्यागामी भी हो गये थे। पश्चात् यह लत बढ़ती ही गई। एक दिन मुझमें और उनमें एक भारी विवाद हुआ। मैं तो उस समय ही उनका घर छोड़ कर चली जाना चाहती थी, परन्तु उन्होंने मेरे साथ कुछ शर्तें तय कर लीं। उनमें एक यह थी कि वे मद्य घर पर नहीं लायेंगे। दूसरे वे अपनी किसी भी रखैल को घर पर नहीं लायेंगे। मैं वातावरण सर्वथा पवित्र रखना चाहती थी।

"दरियागंज में यह वचन पालन होता रहा, परन्तु जब हम फ्रैंड्स कालोनी में कोठी बनवाकर रहने लगे, तब तक मेरे घर चार बच्चे हो चुके थे। इस पर वे पुनः कुछ आवारागर्दी करने लगे। इन्होंने एक रखैल नई दिल्ली कनॉट सरकस में रख ली थी। वह एक मुसलमान औरत मिस कुरैशी थी। इसके पश्चात् उस मिस कुरैशी ने एक चपरासी करीम नाम का हमारे पास नौकर रखवा दिया। वास्तव में वह हमारे घर और उसमें कड़ी था। तीन वर्ष हुए वह औरत पाकिस्तानी एजेण्ट समझ सरकार द्वारा पकड़कर देश से निर्वासित कर दी गई। तब से यह मलावी से सांठ-गांठ लगाने लगे। जब माताजी के बीमार होने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण मैं लखनऊ गई तो इन्होंने मलावी को बहुल प्रलोभन दिखाये और उन प्रलोभनों में उसे न फंसते देख, उस पर बलात्कार करने लगे। दोनों घायल हुए तो भाण्डा फूट गया। मैं लौटी तो सब बात जान मैने तुम्हारे भैया से वचन भंग करने की बात कही। उन्होंने कहा कि मलावी को वेश्या नहीं समझते। वे उसको पत्नी बनाकर रखना चाहते थे। पर मेरा मन नही माना और मैंने उनसे किनारा कर लिया। यों तो जब से इन्होंने कुरैशी से सम्बन्ध बनाया था मुझसे सम्बन्ध टूट चुका था, परन्तु मलावी की घटना के पश्चात तो मैंने सरल और सादा जीवन व्यतीत करना आरम्भ कर दिया।

"इनके मिस कुरैशी से सम्बन्ध बनने पर मैं इनके घर में रहते हुए भी अकेली-अकेली अनुभव करती थी और अपने मन को बहलाने के लिए अपने सम्बन्धियों अथवा सहेलियों को कोठी में लाकर रखा करती थी।

"कारखाने की योजना मेरी थी और उसमें सानन्द को काम पर लगाने का प्रस्ताव भी मेरा था। मैं यह समझती थी कि सानन्द ईमानदारी से कारखाना चलायेगा और उस ईमानदारी की आय से निर्वाह कर मेरे और सब परिवारवालों के हृदय शुद्ध-पवित्र बन सकेंगे।

"परन्तु सानन्द के मार्ग में कठिनाइयां उत्पन्न होने लगी। राजेश्वर के पिता सानन्द को हेरा-फेरी करने का ढंग बताने लगे और जब सानन्द नहीं माना तो मैं सदा ही उसका समर्थन करती थी।

"यह चलता रहा जब तक हड़ताल नहीं हुई। हड़ताल राजेश्वर के पिता ने कहकर करवाई थी। मजदूर तो सानन्द जैसे नेक और खुले दिलवाले मालिक से प्रसन्न थे। सानन्द ने उनको आश्वासन भी दिलाया कि जो लोग कारखाने से निकाले जायेंगे, उनको काम दिलाने का उत्तरदायित्व उसका होगा। इस आश्वासन पर सब मजदूर राजी हो गए थे। दाताराम के द्वारा राजेश्वर के पिता ने उनको भड़काकर हड़ताल करवा दी। पीछे अनन्ता के पिता से षड्यन्त्र कर सरकार से आर्बिट्रेटर नियुक्ति पर बल दिलाने लगे।

"जब सानन्द नहीं माना तो कम्पनी की मीटिंग इस मतलब से बुलाई गई। मैंने यह विचार कर कि सानन्द के लिए कारखाने को छोड़ देना ठीक रहेगा, उसका समर्थन छोड़ दिया, जिससे सानन्द को कम्पनी छोड़ने के लिए विवश होना पड़े।

"इससे अगले दिन सानन्द और अनन्ता से दुर्व्यवहार देख मैंने भी इनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर छोड़ देने का निश्चय कर लिया था।

"तिनका टूटते-टूटते भी छः मास और निकल गये और फिर उस घर से मेरी अर्थी ही निकलने वाली थी। यह तो डाक्टरों ने बचा लिया। मुझको होश आया तो इनके पिता मुझको अपने वकील साहब के कथनानुसार बयान देने के लिए आग्रह करने लगे। मेरा मन नहीं मानता था।

"हैप्पी होम में एक पादरी आया करते थे। एक दिन मैंने उनसे अपने मन की बात बताई तो कहने लगे, "इन्सान का सम्बन्ध परमात्मा से पिता-पुत्र का है, ये दुनियावी संबन्ध तो अस्थायी हैं। परमात्मा अपनी इच्छा उस समय बनाते हैं जब इन्सान पाक-साफ हो उसकी शरण में जाकर उससे प्रकाश की याचना करने लगता है।"

"मैंने ऐसा ही किया और मेरा मन सत्य बोलने पर दृढ़ हो गया। मैंने पुलिस और मजिस्ट्रेट के सामने सत्य-सत्य, जैसी बात मुझको स्मरण थी, बता दी। मैंने मलावी की कहानी भी बता दी। मुझको विश्वास हो रहा था कि बयान के बाद न तो मेरा राजेश्वर के पिता की कमाई का प्रयोग करना ठीक है, न ही मैं कर सकूंगी। अतः अपने पिता के घर के शेष बचे कुछ भूषण-वस्त्र लेकर घर छोड़ने को तैयार हो गई। उस समय मैंने सानन्द को टेलीफोन किया। मुझको अनन्ता का निमन्त्रण स्मरण हो आया था। मैंने सानन्द को बुला लिया।

"ऐसा प्रतीत होता है कि सानन्द भी कुछ वैसा ही विचार कर रहा था, जैसा मैं कर रही थी। अतः जब मैंने कहा कि मैंने सत्य-सत्य बयान दिये हैं तो सानन्द ने कह दिया कि वह और अनन्ता आ रहे हैं। मैं समझ गई थी कि तुम दोनों मुझको लेने आ रहे हो।

"यह तो यहां मलावी ने बताया कि तुम कई दिन से मेरे यहां आने की बात पर विचार कर रहे थे।"

: 8 :

समर्थ सैशन के सुपुर्द हो गया और वहां मुकदमे में पुलिस ने सन्तोष को सरकारी गवाह के रूप में उपस्थित किया। मलावी को भी उपस्थित किया गया। समर्थ के वकील ने जिरह में सानन्द और सन्तोष का अनुचित सम्बन्ध बताया और मलावी को एक बाजारी वेश्या सिद्ध करने का यत्न किया। वकील का कहना था कि मान और धन लुट जाने से समर्थ क्रोधवश सन्तोष पर आक्रमण कर बैठा था परन्तु प्रमाण के अभाव में उसकी युक्ति नहीं मानी गई और सैशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोर्ट द्वारा समर्थ को आजन्म कैद का दण्ड दिया गया।

सैशन जज ने यह लिखा कि 'अपराधी ने अपने विचार से तो हत्या कर ही दी थी। उसको तो हत्या करने का ही दण्ड मिलना चाहिए। यदि संतोष मरी नहीं तो वह इस कारण कि डाक्टरों ने अपनी श्रेष्ठ योग्यता का परिचय दिया और चिकित्सा करने में सतर्कता से काम किया। इस कारण इस धारा में वर्णित पूर्ण दण्ड देना मैं मुनासिब समझता हूं।'

इस पर हाई कोर्ट में अपील की गई, जिससे दण्ड सात वर्ष कर दिया गया। इसके पश्चात् सुप्रीम कोर्ट ने पुनः दण्ड आजन्म कैद का कर दिया। सुप्रीम कोर्ट के जजों का कहना था कि 'हत्याओं में दण्ड के दो कारणों से कम किया जा सकता है—एक तो जब अपराधी स्वयं पश्चाताप करता है और पुनः वैसा अपराध न करने का आश्वासन देता है। दूसरा जब कोई साक्षी दुर्बल हो और अपराधी के हत्या करने की नीयत न हो और वह क्रोधवश किसी को मार देना चाहता हो। यहां तो अपराधी इसी क्रोध के वश अपने भाई की पत्नी की हत्या भी कर देनेवाला था। इसका अर्थ यह है कि अपराधी बार-बार क्रोध के वश में होकर हत्या कर देने का स्वभाव रखता है। ऐसे व्यक्ति को खुला छोड़ देना भय से खाली नहीं। हम समझते हैं कि इसको आजन्म कैद का दण्ड दिया जाना चाहिए। यही न्यायोचित है।'

मुकदमे का अन्तिम निर्णय होते-होते दो वर्ष लग गये। तब तक कारखाना प्रबन्ध और पूंजी के अभाव में असफल हो रहा था। हरिशरणानन्द सदा कहता रहा कि सानन्द इसका प्रबन्ध ले ले, पर सानन्द का स्पष्ट उत्तर था कि वह इस धन को चिमटे से भी नहीं पकड़ेगा।

परिणामस्वरूप कारखाने में घाटा होने लगा और फिर इसे नीलाम कर दिया गया।

तीस लाख की सम्पत्ति दस लाख में बिक गई।

इस मुकदमे में फंसा हुए सानन्द सन् 1957 के निर्वाचनों में विशेष भाग न ले सका। सदर बाजार से सभा कर वापस आते हुए जनसंघ के प्रवक्ता से मोटर में हुई बातचीत के पश्चात् सानन्द को किसी ने सभा में बुलाने का यत्न नहीं किया। यत्न होता तो भी कदाचित् यह भाग न ले सकता। संतोष मरणासन्न हस्पताल में पड़ी थी और समर्थ फांसी पर लटकेगा अथवा साधारण दण्ड पायेगा इसका निर्णय हो रहा था। यदि संतोष मर जाती तो समर्थ को फांसी पर लटकाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना तो निश्चित-सा था।

निर्वाचनों के परिणाम घोषित हुए। अभी भी कांग्रेस के पक्ष में असाधारण बहुमत था। जनसंघ आटे में नमक भी नहीं था। प्रजा सोशियलिस्ट पार्टी भारत में दूसरे दर्जे पर थी। कम्युनिस्ट तीसरे स्थान पर और जनसंघ इन सबसे कहीं पीछे था।

सानन्द इन परिणामों से इस निष्कर्ष पर पहुंचा था कि भारत की जनता में राजनीतिक सूझ-बूझ बिलकुल नहीं है और सत्तारूढ़ दल अपनी सत्ता बनाये रखने के लिए जनता को भ्रम में डालने का प्रत्येक उपाय कर रहा है। विशाल साधनों के बल पर जनता को धोखा दे सकना सुगम था।

यों तो सब दल जनता को वास्तविक बात न बताकर उन बातों को बताते थे जिनसे असल बात तक पहुंच ही न सकें और भ्रम में फंसे हुए मत उनको दें। देश के सामने आदर्श, त्याग की भावना, चरित्र और विचार में श्रेष्ठता लाने की बात ही कोई नहीं कर रहा था। सत्तारूढ़ दल के वोट मांगने का आधार था भौतिक उन्नति और दूसरे दल के लोग भी भौतिक उन्नति को मुख्य मानते थे। सत्तारूढ़ दल के पास व्यक्गित और सामूहिक भौतिक उन्नति को दिखाने के साधन थे और दूसरों के पास नहीं थे। अतः सत्तारूढ़ दल का भ्रमजाल चल गया और विरोधी दलों का नहीं चला।

मुकदमे के दिनों में ही एक रहस्योद्घाटन हो गया। चीन ने तिब्बत पर अधिकार तो सन 1950 में ही कर लिया था। इस समय भारत ने तिब्बत के प्रशासक दलाई लामा को यह राय दी थी कि वह चीन के एक प्रान्त का अधिकारी बनकर रहे। इसी में उसका और उसके देश का कल्याण है। चीन ने भी तिब्बत को आभ्यन्तरिक स्वतन्त्रता देने का आश्वासन दिया था।

सन् 1951 में तिब्बत-चीनी समझौते के कारण भारत-तिब्बत के पहले के सम्बन्धों में अन्तर आ गया था। समझौता हुआ, परन्तु उसका जो प्रभाव भारत-तिब्बत सम्बन्धों पर आया, इसका उल्लेख भारत के विदेशीय विभाग ने संसद में बताया ही नहीं। पीछे 1952 में एक घोषणा कर दी गई कि ल्हासा-स्थित भारतीय मिशन को भविष्य में कौंसूलेट जनरल अर्थात् महावाणिज्यालय कहा जायेगा। इसका स्पष्ट अर्थ था कि भारत का तिब्बत से राजनीति सम्बन्ध समाप्त होकर केवल व्यापारिक सम्बन्ध मात्र रह गया। सन् 1954 में भारत और चीन सम्बन्धी करार हुआ और उसमें तिब्बत में भारत की स्थिति को और भी सीमित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया गया। यहां तक कि व्यापार की मण्डियां तक निश्चित कर दी गईं और उन तक जाने के मार्ग भी निश्चित कर दिये गये।

सन् पचपन में तिब्बत-स्थित चीनियों ने लद्दाख में एक सड़क बनाई थी और भारत सरकार ने भारत की संसद और जनता से इसको छुपाकर रखा। यह सब रहस्योद्घाटन एक अंग्रेजी समाचारपत्र ने किया, परन्तु भारत के प्रधान मन्त्री ने पहले तो ऐसी किसी सड़क के होने से अपनी अनभिज्ञता प्रकट की, पीछे स्वीकार किया तो इसके महत्व को कम करने का यत्न किया। परन्तु जब संसद के विरोधी दल के सदस्यों ने भारत के प्रधान मन्त्री को लताड़ा तो प्रधान मंत्री ने चीनियों पर विश्वासघात का लांछन लगा दिया।

इस स्थिति में सानन्द ने भारत की संसद-सदस्यों में जानकारी पैदा करने के लिए मासिक विज्ञप्तियां निकालनी आरम्भ कीं, जिनका प्रयोजन यह था कि संसद-सदस्यों में भारत के विदेशी मामलों के विभाग के कामों में रुचि उत्पन्न की जाये और उसके कुछ समाघोषों के जादू को दूर किया जाये।

इस सम्बन्ध में प्रथम विज्ञप्ति थी, "भारत लाल-चीनी सरकार को संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य बनाने में क्यों रुचि लेता है?"

एक सहस्र विज्ञप्तियां छपवाकर संसद-सदस्यों, कुछ अन्य नेताओं तथा समाचारपत्रों के पास भेज दी गईं। इस विज्ञप्ति के भेजने के पन्द्रह दिन पश्चात् संसद के अनेकों सदस्यों से सानन्द मिलता रहा और उस विज्ञप्ति के विषय में जानकारी प्राप्त करता रहा।

अधिकांश सदस्यों ने तो उस विज्ञप्ति की सूरत तक नहीं देखी थी। कइयों ने उसको किसी पुस्तक का विज्ञापन समझ रद्दी की टोकरी में फेंक दिया था। लगभग पांच सौ सदस्यों में से केवल एक प्रजा सोशियलिस्ट दल के सदस्य ने इस विज्ञप्ति को पढ़ा था। इससे सानन्द को बहुत दुःख हुआ। परन्तु भारत की स्थिति में जहां प्रायः जनता और नेताओं ने अपने मस्तिष्क पंडित जवाहरलाल के पास गिरवी रखे हुए थे, एक सदस्य ने उसकी विज्ञप्ति पढ़ने का कष्ट किया है, इतना जानकर भी उसे सन्तोष ही हुआ था। यह सदस्य एक बिहार के सज्जन थे और सानन्द के प्रश्न पर पूछने लगे, "तो आप हैं मिस्टर सानन्द मिश्र?"

"जी।"

"आपके विषय में सुना तो बहुत था, परन्तु उस विज्ञप्ति में आपके विचार पढ़कर तो निराशा ही हुई।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझको बहुत शोक है, परन्तु आपको कौन-सी बात उसमें गलत प्रतीत हुई है?"

"सारी बात ही गलत है। आप भारत को उस आदर्शवाद से जिस पर कि महात्माजी ने इसको ले जाकर बैठा दिया है, नीचे गिराना चाहते हैं?"

"वह क्या आदर्शवाद है?"

"हम अहिंसा के पुजारी हैं। अपनी हानि सहकर भी दूसरों का कल्याण करना अपना कर्तव्य समझते हैं।"

"तो महात्माजी ने यह बताया था क्या? मुझको ज्ञान नहीं था। मैं अभी तक तो यही समझा था कि महात्माजी सत्य को सबसे ऊपर समझते थे।"

"तो मिस्टर सानन्द! आप गलत समझे हैं। महात्माजी अहिंसा के सामने सत्य का मूल्य भी कम समझते थे। यदि ऐसा न होता तो महात्माजी पाकिस्तान कभी स्वीकार न करते। पाकिस्तान का आधार कि मुसलमान और हिन्दू भिन्न-भिन्न जातियां हैं, असत्य मानते हुए भी अहिंसा के सिद्धान्त का अनुकरण करते हुए महात्माजी पाकिस्तान स्वीकार कर बैठे थे।"

"तो आप समझते हैं कि हिंसक जन्तु को सभ्य समाज में ले जाकर बैठाना और उसके कार्यों की सराहना करना अहिंसा है?"

"बिलकुल! अहिंसा के सिद्धान्त का तत्व ही यह है कि हिंसकों को अहिंसावादियों में बैठाकर अहिंसावादी बनने का निमन्त्रण दिया जाये।"

सानन्द भारत के एक क्षेत्र के ढाई-तीन लाख मतदाताओं के इस प्रतिनिधि की मानसिक अवस्था देख रो पड़ा। इस पर भी वह विचार रखता था कि गरीब ने पढ़ने का तो यत्न किया है और अन्य करोड़ों मतदाताओं के प्रतिनिधियों ने तो उसके कथन की ओर देखने का यत्न भी नहीं किया।

अगले मास उसने 'लद्दाख रोड और भारत का कर्तव्य' पर एक छोटी-सी पुस्तिका छपवाकर भिजवा दी।

पहले की भांति इस बार भी सानन्द संसद-सदस्यों से मिल-मिलकर अपनी भेजी पुस्तिका के विषय की प्रतिक्रिया जानने का यत्न करता रहा। इस बार पहले से परिणाम अच्छा था। अधिक संख्या में सदस्यों ने उसको पढ़ा था।

तीसरी विज्ञप्ति 'भारत की तटस्थ नीति' पर थी। इस विज्ञप्ति में तो भारत सरकार की किसी से मित्रता न रखने की नीति पर कठोर आघात था। इसने तो सदस्यों की नींद हराम कर दी। सदा की भांति इस विज्ञप्ति के पढ़नेवाले तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कम ही थे, परन्तु इसकी चर्चा करते-करते अधिक संख्या में लोग इस विज्ञप्ति को जान गये।

इस पर एक नई बात हुई। सानन्द सदा की भांति संसद के रेस्टोरां में बैठा हुआ खाना खा रहा था कि एक सिक्ख महानुभाव उसके पास आ बैठा और नमस्कार कर वह पूछने लगा, "क्या मैं सानन्द मिश्र से बात कर रहा हूं?"

"जी। क्या मैं आपका परिचय प्राप्त कर सकता हूं?"

"मैं भारत के 'इंटेलिजैंस' विभाग का कर्मचारी हूं और आपसे कुछ सूचना लेने के लिए आया हूं।"

"हां, कहिये?"

"आप कहां रहते हैं?"

"रिंग रोड नम्बर तीस पर।"

"वह कोठी आपकी अपनी है क्या?"

"जी, मैंने जमीन खरीदकर बनवाई है।"

"कितना रुपया लगा दिया है उस पर?"

"लगभग अस्सी हजार की लागत लगी है।"

"आप क्या काम करत हैं।"

"जर्नलिस्ट हूं।"

"तो आप इस पेशे में भी लखपति बन सकते हैं?"

सानन्द को इस सब जांच का कारण समझ आने लगा था। इस पर मुस्कराया और पूछने लगा, "यह रेस्टोरांवाले, जहां मैं भोजन कर रहा हूं, खाने के चार रुपये चार्ज करते हैं। परन्तु इरविन रोड पर हनुमान मन्दिर की बगल पर एक ढाबा है वहां खाने के आठ आने लगते हैं। इससे यदि इस रेस्टोरां का मालिक दस-बीस वर्ष में लाख-सवा लाख बना ले तो विस्मय करने की क्या बात है? दोनों एक जैसा व्यापार ही करते हैं। इसी प्रकार की बात हमारे व्यवसाय की भी है?"

"आपके लेख प्रायः कहां स्वीकार होते हैं?"

"अधिक संख्या में भारत में ही। इलस्ट्रेटिड वीकली, हिन्दू मद्रास, स्टेट्समैन कलकत्ता इत्यादि में छपते रहते हैं।"

"आपके लेख अमेरिका में भी जाते हैं क्या?"

"हां, जाते है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वहां से आपको कितनी आय हो जाती होगी?"

"कोई नियमित बात तो है नहीं। जब कोई लेख-स्वीकार हो जाता है तो उसका पारिश्रमिक वहां के छापनेवाले ही निश्चय करते हैं। प्रायः एक लेख का सौ डालर से पांच सौ डालर तक मिलता है।"

"पिछले मास आपके कितने लेख वहां छपे थे?"

"दो।"

"पारिश्रमिक मिला है?"

"दोनों का मिलाकर साढे छः सौ डालर।"

"किसी अन्य देश में भी आपके लेख छपते हैं?"

"जी हां, फ्रांस और इंग्लैंड में भी छपते हैं।"

"फ्रांस इत्यादि में भी पारिश्रमिक इतना ही मिलता है?"

"नहीं, वहां से कम प्राप्त होता है। प्रायः लेख का एक सौ रुपया मिलता है।"

"आपका बैंक बैलेंस कितना है?"

इस पर सानन्द ने गम्भीर हो बात करनेवाले की आंखों में देखते हुए कहा, "यद्यपि मैं बताने के लिए बाध्य नहीं हूं, इस पर भी इस जांच का प्रयोजन समझ मैं कुछ छुपाकर रखना नहीं चाहता। मेरा बैंक बैलेंस सात हजार के लगभग है। मेरा बैंक में एक और खाता है। उसमें मेरे नाम पच्चीस हजार जमा है, परन्तु यह मेरे पास एक दान खाते का रुपया है, जो मैं किसी धार्मिक संस्था को दान देना चाहता हूं।"

"यह रुपया है किसका?"

"एक समय मैं एक कारखाने में मैंनेजर था। अठारह सौ वेतन पाता था। उसमें से लगभग एक सहस्र बच जाता था। उस समय की बचत मैंने दान में देने का निश्चय किया हुआ है। वह एक फिक्स डिपाजिट में रखी है। शीघ्र ही वह किसी संस्था को दान कर दी जाने वाली है।"

यह जांच समाप्त हुई। सानन्द का विचार था कि उसके हिसाब स्पष्ट हैं और इंटेलिजैंस के अधिकारी को सन्तोष हो गया हो। परन्तु उसको आश्चर्य हुआ जब भारत के विदेशीय विभाग के एक प्रवक्ता ने संसद में यही वक्तव्य दिया कि सरकार इस बात को जानती है कि विदेशीय धन, संसद के सदस्यों को बरगलाने के लिए प्रयोग में लाया जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों ने यह समझा कि यह आरोप रूसी सरकार पर है परन्तु सानन्द को यह समझ आया कि यह आरोप उसके विषय में और अमेरिका के विषय में है। इसके कुछ ही बाद यह समाचार बम्बई के कम्युनिस्ट पर्चे में, उसके दिल्ली-स्थित संवाददाता ने भेज दिया कि यू. एस. ए. पार्लियामेंट के सदस्यों में चीन के विरुद्ध प्रचार करने के लिए सहस्त्रों रुपये व्यय कर रहा है।

इसके साथ ही सानन्द को यह समझ आया कि संसद-सदस्य उससे मिलने में संकोच अनुभव करने लगे हैं। जो लोग पहले बहुत सभ्यता से मिलते थे, अब हाथ उठा अभिवादन कर समीप से निकल जाते हैं।

इससे सानन्द को यही समझ आया कि उसका वह प्रयास भी असफल हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचम परिच्छेद

: 1 :

कहावत है कि बड़े घर की घरोड़ी भी बहुत होती है। वस्तु जिस पर परमात्मा का कोप हो जाये उसकी घरोडी तो क्या धूल भी नहीं बचती। यही बात समर्थ के घर की हुई।

सन्तोष अपने को विधवा मान सानन्द के घर रहती थी। उसकी इच्छा थी, अपने बच्चों को दूषित वातावरण से बाहर कर उनकी गतिविधि ठीक करे, परन्तु उसके अपने पति के विरुद्ध बयान देने से समर्थ के पिता और समर्थ ने भी बच्चों को उसके पास रखने से इन्कार कर दिया।

पण्डित हरिशरणानन्द के परिवार के तीन भाग हो गये। एक तो सानन्द का भाग था। इसमें सानन्द, माधवी, अनन्ता, सन्तोष और तीन बच्चे थे। दूसरा भाग समर्थ का था। हरिशरणानन्द, निपुणा और समर्थ के तीन बच्चे पटेलनगर के मकान में रहते थे और समर्थ जेलखाने में था। तीसरे भाग में सुचाला, दाताराम और दो बच्चे थे। दाताराम अब दक्षिण अमेरिका के ब्राजील राज्य में लकड़ी का व्यापार करता था। इस समय दाताराम करोड़ोंपति हो गया था।

आर्थिक दृष्टि से हरिशरणानन्द की अवस्था बहुत खराब थी। कारखाना बिक गया था। फ्रैंड्स कालोनीवाली कोठी बिक चुकी थी और दाताराम के कारण अभी भी ऋण इतना हो गया था कि हरिशरणानन्द की सम्पत्ति देने के पश्चात् भी सब नहीं चुकाया जा सका।

सानन्द का निर्वाह ठीक हो रहा था। उसने पुनः देश की राजनीति पर लिखना छोड़ भारतीय कला-कौशल, स्थापत्य-कला और उद्योग-धन्धों पर लिखना आरम्भ कर दिया था। ये विषय प्रायः विवाद से बाहर होते थे और विदेशी पत्र-पत्रिकाएं इन्हें अच्छे-खासे मूल्य पर लेकर छापती थीं।

इस वर्ष में सबसे अधिक दाम पर बिकनेवाला लेख था, "अमेरिकन स्कर्ट एण्ड इण्डियन साड़ी।' जब उस लेख का नौ सौ डालर पारिश्रमिक मिला तो सानन्द की हंसी निकल गई। वह समझ रहा था कि मानव अभी ज्ञान-विज्ञान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के विचार से खिलौने खेलने वाला बालक मात्र ही है।

सानन्द हंस ही रहा था कि किसी ने बाहर से दरवाजे को खट-खटाया। सरदी का मौसम था। ठंडी हवा से बचने के लिए सानन्द ने बैठक का दरवाजा बन्द कर रखा था। दरवाजा खटखटाना सुन सानन्द ने आवाज दे दी, "कौन है?"

इसके उत्तर में पुनः द्वार खटखटाया गया। सानन्द ने उठकर द्वार खोल दिया। ठंडी हवा का झोंका भीतर आया और उसके साथ एक भिखारी के कपड़ों में युवक भीतर आकर खड़ा हो गया।

बाहर अंधेरा था, भीतर प्रकाश था। इस प्रकाश में सानन्द ने युवक को सिर से पांव तक देखा। वह पांव और सिर से नंगा, निकर पहने था, जो घिस कर तार-तार हो रही थी। कमीज में बीसों स्थान पर पेबन्द लगे थे। इस पर भी बड़े-बड़े छिद्र थे उसमें। युवक की दाढ़ी बढ़ी हुई थी और गालें पिचकी हुई थीं।

सानन्द को सन्देह हुआ कि यह योगेश्वर हो सकता है, परन्तु उसमें और इस युवक में भारी अन्तर था।

"कौन हो तुम? क्या चाहते हो?"

"तो पहचाना नहीं आपने चाचाजी?"

"आंखों को सन्देह हो रहा है। योगेश्वर हो क्या?"

"चाचाजी! वही हूं।"

"सुना था कि तुम अपने बाप का पचास हजार रुपया लेकर भाग गये थे?"

"पचास हजार? जी नहीं पांच लाख। सत्य कहता हूं उस थैले में पांच लाख था, जो मैं उठाकर ले गया था।"

"किस थैले में?"

"तो आपको सब बात विदित नहीं?"

"नहीं।"

"दाताराम जी कहां है?"

"वह दक्षिणी अमेरिका के जंगलों में लकड़ी का व्यापार कर रहा है।"

"उसको जेलखाने में होना चाहिए था।"

"जेलखाने में तो तुम्हारे पिताजी हैं।"

"क्यों?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उन्होंने तुम्हारी माताजी की हत्या करने का यत्न किया था। परन्तु तुम कहां रहे हो?"

"मैं नैपाल और फिर तिब्बत चला गया था। वहां से कम्युनिस्टों ने मार-मारकर भगा दिया है।"

"अच्छा, पहले बैठो तो।"

"चाचाजी! बहुत भूख लगी है। दो दिन से अन्न का एक दाना भी मुख में नहीं गया। केवल जल पीकर जीवित हूं।"

सानन्द ने घंटी बजाई। माधवी आ गई। वह भी एक भिखारी से युवक को सानन्द के सामने कुर्सी पर बैठे देख विस्मय में खड़ी रह गई। सानन्द ने कहा, "माधवी! इस समय जो कुछ भी खाने को है, तुरन्त ले आओ। एक प्याला चाय बना लाओ। शीघ्र करो और सन्तोष भाभी को भेज दो।"

योगेश्वर आंखें नीचे किये हुए बैठा रहा। वह अनुभव कर रहा था कि माधवी उसको पहचान नहीं रही और अपने उस व्यंग्य को स्मरण कर जो उसने उसके साथ उस दिन किया था, जब वह सानन्द और अनन्ता के साथ उसके पिता की कोठी से आ रही थी, लज्जा अनुभव कर रहा था।

माधवी सानन्द की खाना लाने की बात सुन घूमी, परन्तु उसी समय उसके मन में विद्युत् की चमक की भांति यह बात आई कि यह तो योगेश्वर है। इससे वह पुनः घूमकर उसको देखकर कुछ कहने लगी, परन्तु सानन्द के मुख पर उत्सुकता देख वह खाना लेने के लिए बैठक के बाहर चली गई।

माधवी ने अनन्ता को जो बच्चों को भोजन करा रही थी जाकर कहा, "वे कह रहे हैं कि एक आदमी का खाना जो भी हो तुरन्त ले जाऊं।"

इतना कहकर प्लेट ले उसमें चार रोटियां, साग और दो टुकड़े मिठाई रख पुनः अनन्ता से बोली, "बहन! भाभी को बाहर भेज दो। मैं समझती हूं कि योगेश्वर आया है।"

"योगेश्वर?"

अनन्ता बच्चों को खाना देकर सन्तोष के कमरे में जा पहुंची। वह गीता पढ़ रही थी। अनन्ता ने दरवाजे में खड़े-खड़े ही कहा, "भाभी! बाहर कोई आया है। योगेश्वर प्रतीत होता है। कमल के पिता बुला रहे हैं।"

दोनो बैठक में आकर खड़ी हुईं।

योगेश्वर प्लेट घुटनों पर रख खाना खा रहा था। माधवी चाय बनाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए चली गई थी। सानन्द ने उससे खाते हुए कुछ पूछने का यत्न नहीं किया। उसको चुपचाप खाना खाने दिया। योगेश्वर ने अभी दो रोटियां ही खाई थीं कि माधवी एक प्याले में चाय लेकर आ पहुंची। योगेश्वर ने खाना छोड़कर चाय ले ली और सुरकी लगा कर पीने लगा। फिर कुछ विचार कर उसने शेष खाने की प्लेट वापस माधवी को देते हुए कहा, "बस, और अभी नहीं खाया जायेगा।"

चाय पीते हुए उसने सानन्द की ओर देखते हुए कहा, "चाचाजी! आपने कहा था कभी घर से निकल गया तो आपके पास आ जाऊं! काठमंडू से यही स्मरण कर दिल्ली को चला था। मुझको विश्वास हो रहा था कि पिताजी के घर में जाने पर गोली से उड़ा दिया जाऊंगा। परन्तु आप तो कुछ और ही बता रहे हैं।"

"हां, मैं समझता हूं कि कपड़े बदल डालो। हाथ-मुख धो लो और सो जाओ। शेष बातें कल होंगी।"

यही तो योगेश्वर चाहता था। चाय समाप्त की तो सन्तोष उसे गुसलखाने लें ले गई। वहां उसको धोती-कुरता देकर बोली, "मुख-हाथ धो लो और चले आओ। मैं तुम्हारे लिए बिस्तर ठीक करती हूं।"

साथ ही उसने पानी गरम करने का हीटर जला दिया और साबुन, तेल, तौलिया देकर चली गई।

अगले दिन अल्पहार के समय योगेश्वर ने बताया, "करीम की लड़की शबनम मुझसे दो वर्ष बड़ी थी और उसने ही मुझको वासना का मार्ग सिखाया और बताया था। करीम सब कुछ जानता था और जान-बूझकर आंखें मूंदे था। करीम, मिस कुरैशी का रिश्तेदार था, परन्तु भापाजी को यह बात विदित न थी। जब मिस कुरैशी पकड़ी गई और देश से निकाली गईं तब भी करीम भापा के पास नौकर रहा।

"जो कार्य मिस कुरैशी करती थीं वह करीम करने लगा। मेरा मतलब कि वह पाकिस्तानी भेदिये का काम करता था। भापाजी के कारण उसकी सरकारी अधिकारियों से मेल-मुलाकात हो रही थी और वह अपना कार्य मिस कुरैशी से अधिक अच्छी तरह कर रहा था।

"मैंने पढ़ाई छोड़ दी और दाताराम जी के अधीन कार्य करने लगा। एक दिन दाताराम जी ने घर आते समय मुझको एक बैग दिया और कहा कि वह बैग में अपने पास रखूं। कार्यालय में न ले जाऊं, न ही किसी को बताऊं। उसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत-से जरूरी सरकारी दस्तावेज हैं। उसका विचार था कि तीन-चार दिन के बाद वह थैला ले लेगा।

"मैं उनकी बात पर विश्वास कर वह थैला अपने घर ले आया। मोटर से उतरा तो करीम मेरे पास आकर कहने लगा, "शबनम याद कर रही है तुम्हें।"

"मैं उस थैले के साथ ही उसके क्वार्टर में जा पहुंचा। मैं तनिक सावधानी से उस थैले को पकड़े हुए था कि करीम ने पूछ लिया, बाबू, क्या है इस में?"

"दाताराम ने दिया है। उसका कहना है कि कुछ सरकारी कागजात हैं।"

"अच्छा, तब तो खोलकर देखने चाहिए।"

"क्या लाभ होगा इससे?"

"लाखों मिलेंगे यदि कुछ मतलब की बात हुई इसमें।"

"मैं इस समय तक यह नहीं जानता था कि वह पाकिस्तानी ऐजेण्ट है। इससे मैंने हंसी समझकर कह दिया, बैग को ताला लगा है।"

"बाबू, तुम कहो तो एक चुटकी में खोल सकता हूं।"

शबनम ने मेरे गलें में बांह डालकर कहा, "जरा देखें तो क्या है जिसको दाताराम अपनी पत्नी से छुपाकर तुम्हारे पास रख रहा है।"

"मैं चुप रहा। वास्तव में मैं निश्चय नहीं कर सका था क्या कहूं। मुझको चुप देख करीम ने मेरी स्वीकृति समझी और भीतर जा चाबियों का एक गुच्छा निकाल लाया। उसने दो-चार चाबियों से खोलने का यत्न किया । एक से वह वह खुल गया।

"थैले में किसी प्रकार के कागजात नहीं थे। वह नोटों से ठसा-ठस भरा था। करीम ने बंडल-के-बंडल बाहर निकालकर कहा, "इनमें सरकारी कागज तो एक भी नहीं। यह तो नोट-ही-नोट हैं।"

"हम तीनों गिनने लगें। पांच लाख छः हजार सात सौ के नौट थे। सब सौ-सौ रुपये के नोट थे। करीम ने कई नोट उठाकर रोशनी के सामने रखकर जहा, 'जाली तो मालूम नहीं होते।'

"मैं विचार कर रहा था इनको किससे चोरी-चोरी दाताराम ने उसके पास भेजे हैं। करीम ने मेरे मुख पर से मेरे भावों को पढ़कर कहा, 'बाबू! मैं बताऊं इसका क्या मतलब है?"

"क्या मतलब है?"

"दाताराम ने यह रुपया चोरी किया है। वह इस डर के मारे कि कहीं सेठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहब पकड़ न लें, तुम्हारे पास रख देना चाहता है। दो-तीन दिन में जब इनको हजम करने का तरीका विचार लेगा तो फिर तुमसे ले लेगा।"

"बहुत बेईमान है।" मेरे मुख से निकल गया, "अभी जाकर पिताजी को बतलाता हूं।"

"तो तुम भी मूर्ख हो।" करीम ने कहा, "इतने रुपये में तो तुम दुनिया की सैर कर सकते हो। मैं समझता हूं कि तुम शबनम से निकाह पढ़ा लो और यहां से भाग जाओ। चलो मैं तुमको सीमा पार करा आता हूं।"

"मैं अभी भी अपने को तैयार नहीं कर सका था। परन्तु दुनिया की सैर और वह भी शबनम के साथ, एक बहुत बड़ा प्रलोभन था। मैंने करीम से कह दिया, "जाना है तो आज रात ही जाना चाहिए। कल तक यह रुपया मांगा जा सकता है।"

"करीम के मन में भी यही बात थी। वहां से हम पटना चले गये। पटना से रक्सौल और वहां से पैदल काठमंडू। रक्सौल में हमने एक नैपाली तस्कर को नौकर रख लिया। उसका काम ही था माल बिना चुंगी के सीमा पार इधर-से-उधर पहुंचाये। वह हमको बिना देखे-पहचाने नैपाल ले गया। काठमंडू में हम कुछ दिन रहे। पीछे उसी नैपाली के आश्रय हम तिब्बत जा पहुंचे। परन्तु वहां करीम और नैपाली मिल गये और सब धन, जो हमने नैपाली नोटों में कर लिया था, चुराकर भाग गये। मैं और शबनम उस वीराने स्थान पर ही रह गये।

"मैं और शबनम दोनों जिस मार्ग से तिब्बत में गये थे, उसी मार्ग से नैपाल को लौट पड़े, परन्तु मार्ग भूल गये और एक चीनी चौकी पर पहुंच गये। वहां पर हम कैद कर लिये गये। कई दिन की कैद के पश्चात् हमसे पूछताछ की गई। मैंने बताया कि हम पहाड़ी इलाके में घूमते हुए मार्ग भूलकर तिब्बत में आ गये थे। हमारा सामान और रुपया चोरी हो गया है और हम वापस जा रहे हैं।

"जो आदमी पूछताछ करने आया था, उसको मेरे कहने पर विश्वास नहीं आया, परन्तु शबनम के एक घंटा पृथक में समझाने से वह समझ गया। अतः हमको सैनिकों की सुरक्षा में सीमा पार कर नैपाल में छोड़ दिया गया। मार्ग में शबनम ने बताया कि पूछताछ करने वाले अधिकारी और सैनिकों के सामने उसको अपनी अस्मतवर्दी करनी पड़ी है। तब ही तो वे बचकर इधर आ सके हैं।

"मेरा विचार था कि काठमंडू पहुंचकर किसी-न-किसी प्रकार भापा से पत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारा सम्पर्क बनाऊंगा और फिर इधर आ जाऊंगा परन्तु हमको एक-एक दिन के भोजन के लिए मजदूरी अथवा शबनम को अपने आपको बेचना पड़ता था। इससे हम एक दिन पाटन पहुंचे तो शबनम लापता हो गई। मैं काठमंडू में मजदूरी करता रहा और शबनम को ढूंढ़ता रहा। एक वर्ष तक ढूंढ़ने पर भी वह नहीं मिली। तब मैं वहां से पैदल ही भारत को चल पड़ा। मार्ग में मजदूरी करता-करता चला आया हूं। दो वर्ष इस सब में लग गये हैं। तीन दिन हुए मुरादाबाद में था। वहां से पैदल चल यहां पहुंचा हूं। जेब में तीन रुपये थे। गढ़मुक्तेश्वर ठहरा था कि किसी ने जेब कतर ली और वे तीन रुपये भी नहीं रहे। इस प्रकार दो दिन से बिना खाये-पीये आ रहा हूं। आखिर यहां पहुंच गया हूं।"

"अब क्या करना चाहते हो?"

"चाचाजी! कुछ दिन थकावट दूर करने दीजिये। पीछे जो कहेंगे, करूंगा।"

"अच्छी बात है।"

इस पर सन्तोष ने पूछ लिया, "अपने बहन-भाइयों के पास जाओगे अथवा यहां रहोगे?"

"पर मां! तुम तो कहती हो कि तुमसे बोलते तक नहीं?"

"हां, क्या जाने तुम भी हमसे बोलना न चाहो।"

"तनिक मेरी सूरत-शक्ल ठीक होने दीजिए। फिर मैं उनसे मिल कर कारण पूछना चाहूंगा।"

"हां, कोई काम करने से पहले अपने बाबा से मिल लेना।" सानन्द ने यह कहकर बात समाप्त कर दी।

: 2 :

सानन्द के घर में एक और रुचिकर बात उत्पन्न हो गई थी। अनन्ता के सात वर्ष उपरान्त गर्भ ठहर गया था। दूसरा महीना चल रहा था कि अनन्ता अपचि अनुभव करने लगी थी। एक दिन प्रातः के अल्पहार करते-करते अनन्ता भागी-भागी गई और 'वाश बेसन' में सब कुछ उलट आई।

जब वह लौटी तो सन्तोष ने प्रश्न-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा तो वह मुस्कराती हुई अपने सोने के कमरे में चली गई।

सन्तोष ने माधवी से पूछ लिया, "अनन्ता को दिन चढ़े हैं क्या?"

"कह नहीं सकती। सात वर्ष से ऊपर हो गये हैं, कुमुद को हुए।"

"मैं तो यह समझी थी कि तुम दोनों बांझ हो चुकी हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधवी का मुख लज्जा से लाल हो गया। इसका अर्थ सन्तोष समझ न सकी। उसने पूछ लिया, "क्यों क्या बात है?"

"कुछ नहीं बहनजी! मैं अनन्ता से पता करती हूं।" इतना कह वह अनन्ता के शयनागार में जा पहुंची।

अनन्ता पलंग पर लेटी थी। माधवी उसके पास बैठती हुई बोली, "क्या बात है अनन्ता बहन?"

"बात साफ है। सात वर्ष का संयम टूट गया और परिणाम देख रही हो।"

"तो सन्तोषजी का अनुमान ठीक है।"

"हां। परन्तु मैं तुम्हारे सामने शर्मिन्दा हूं।"

"क्यों, मेरा तुमने क्या बिगाड़ा है?"

"जो कुछ तुमको प्राप्त नहीं हो सका, वह मैंने स्वयं भोग कर लिया है।"

"परन्तु मैंने तो इसकी कभी इच्छा नहीं की।"

"बिना इच्छा किये ही तो यह मिलता है। तुम तो उनकी पत्नी घोषित होने की भी इच्छा नहीं करती थीं। परन्तु परिस्थिति बदली और तुमको उनकी पत्नी बने रहते हुए भी कई वर्ष हो गये हैं।"

"ठीक है। परन्तु मेरी बात तो यह है कि मैंने 'स्वेच्छा से अपने व्यवहार पर सीमा बांधी हुई है। अन्यथा सतीश जी तो मुझको परेशान कर रहे थे। वे तो मेरे नाम रुपया भी जमा कराने के लिए तैयार थे।" यह कहते-कहते माधवी सजल-नेत्र हो रही थी।

"क्यों? अब इस संयम पर पश्चाताप लगने लगा है?"

"नहीं अनन्ता बहन! यह बात नहीं। ये तो अपने इतने वर्ष तक एक निष्ठा के पीछे संयम का जीवन निभा सकने की प्रसन्नता के आंसू है। मैं समझती हूं कि सोम अब ग्यारह वर्ष का हो गया है। लगभग एक तिहाई यौवन तो निकल गया। दो-तिहाई भी निकल जायेगा।"

अनन्ता विचार कर रही थी कि क्या उसको पत्नी का अधिकार नहीं मिलना चाहिए? उसको सानन्द का यह कहना था कि वह अनन्ता से एक-पत्नीक व्रत लिये हुए है, कोई ऐसी बात प्रतीत नहीं होती थी, जो सुलझ न सके। वह विचार करती थी मेरे साथ भी कुमुद के बाद यह वचन हुआ था कि अब और सन्तान नहीं होगी। इस पर भी शरीर मन से प्रबल सिद्ध हुआ।

इस समय उसको सन्तोष का कहना स्मरण हो आया था। उसका कहना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था कि वह मलावी को जानकी के स्थान पर नौकर रख ले और उसने कहा था कि नौकर से वह मालकिन बन जायेगी। अब इतने वर्ष पश्चात् भी अवस्था यही थी कि वह नाम की मालकिन बनी हुई थी, परन्तु अभी भी नौकर-की-नौकर ही थी।

माधवी ने अपने मन को धीरज दे आंखें पोंछते हुए कह दिया, "बहन! इस विचार को छोड़ो। अब तुम घर का काम करना बन्द कर दो। भगवान करे इस बार लड़का हो।"

"लड़के में क्या विशेषता है? कुमुद ठीक प्रतीत नहीं हो रही क्या?"

"यह बात नहीं। मुझको कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि एक-एक पैसा जो कुमुद पर व्यय हो रहा है, वह किसी अन्य की जेब में डाला जा रहा है।"

अपनी बात चालू रखते हुए माधवी ने कहा, "यह बात नहीं कि यह खर्चा करना नहीं चाहिए। इस पर भी यह किसी दूसरे के लड़के के लिए व्यय किया हुआ प्रतीत होता है। ऐसा प्रतीत होता है अपनी जेब में जा रहा है।"

"यह एक लम्बे काल से चल रही प्रथा के कारण है। वर्तमान युग में बातें तथा विचार बदल रहे हैं। अब लड़की पिता की उतनी ही उत्तराधिकारिणी है जितना लड़का है। धीरे-धीरे लड़की पर व्यय किया धन भी अपनी जेब में ही जा रहा प्रतीत होगा।"

अनन्ता ने यह कह तो दिया, परन्तु उसको अपनी युक्ति ही थोथी लगी। उसके पिता ने भी उसके नाम चालीस-पचास हजार की सम्पत्ति दे रखी है और अभी और भी मिलनेवाली है। इस पर भी वह देख रही थी उसके विवाहित जीवन में मुख्य प्रभाव उसके पति का रहा है, पिता का नहीं। विवाह के आरम्भ में वह अपने पिता की भांति बाहर से कुछ और थी, भीतर से कुछ और।

उसके मन में गांधीजी के विचारों के लिए किंचित् मात्र भी श्रद्धा नहीं थी, परन्तु उनकी हत्या पर मतभेद हुआ और वह अपने पिता के घर में ही रह गई। पीछे वह एकाकी जीवन व्यतीत करती-करती ऊब गई तो अपनी माता की सम्मति से अपने-आप पति के घर आ पहुंची। फिर धीरे-धीरे उसमें कुछ परिवर्तन होने लगे। उसका फूहड़पन मिटने लगा और जीवन की वास्तविक समस्यायें सामने आने लगीं। दिन-दिन के सुख और दुःख पति के साथ बांटे जाने लगे और उसको अपने पिता के घर के चलन हेय प्रतीत होने लगे।

इस समय ऑल इण्डिया विमेंज कान्फ्रेंस की घटना घटी। उसको स्मरण हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया कि वह दो दिन भी अपने पिता के घर में नहीं रह सकी थी। इसके पश्चात् तो उसको अपने पिता का व्यवहार, कार्य और चरित्र भी पसन्द नहीं रहा था।

इस कारण भी वह समझ रही थी कि लड़का सत्य ही माता-पिता का होता है और लड़की अपने पति की।

उसी सायंकाल सन्तोष और सानन्द को भी पता चल गया कि अनन्ता फिर गर्भ धारण किये हुए है। सानन्द ने अनन्ता को बधाई दी तो अनन्ता ने कह दिया, "माधवी तो यह कहती है लड़का होना चाहिए। लड़की नहीं।"

"क्यों?"

"यह कहती है कि इसको कुछ ऐसा अनुभव होता है कि लड़के पर व्यय किया धन अपनी जेब में जमा हो रहा है और लड़की पर खर्च किया धन किसी दूसरे की जेब में जा रहा है।"

"तुम क्या समझती हो?"

"मैं भी कुछ ऐसा ही अनुभव करने लगी हूं।"

"तो दूसरे को कुछ देना माधवी को पसन्द नहीं है?"

"देना पड़े तो देंगे।" माधवी ने कह दिया, "टैक्स भी तो सब लोग देते ही हैं। इस पर भी देकर चित प्रसन्न नहीं होता।"

"बहुत स्वार्थ की बात कर रही हो माधवी!"

"इसमें स्वार्थ की बात कहां से आ गई?"

"देखो, मैं बताता हूं धन पैदा कर सब-का-सब जमा ही किया जाये और उसमें दान-दक्षिणा में न दिया जाये तो इसके पैदा करने में क्या मजा? शास्त्र में तो लिखा है कि गृहस्थ-जीवन में दान देना एक महापुण्य का कार्य है।"

"तो लड़कियों को पढ़ाना-लिखाना, वस्त्रादि देना दान-दक्षिणा में मानना चाहिए?"

"दान-दक्षिणा से भी कुछ अधिक। दान में दिया धन तो बस दे दिया समझना चाहिए। लड़की पर व्यय किया धन तो उसमें चक्रवृत्ति ब्याज की भांति बढ़ता चला जाता है। इस कारण लड़की के विवाह का नाम कन्या-दान कहा जाता है। यह ऋण उतारने के तुल्य है।"

संतोष ने कह दिया, "तब तो एक लड़की माधवी के भी होनी चाहिए। नहीं तो यह ऋणी रह जायेगी।

माधवी हंस पड़ी, "क्यों?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संतोष ने पूछ लिया, "तुम्हारा जी नहीं करता लड़की के लिए?"

"बहनजी! यह बच्चों की बात तो परमात्मा की इच्छा के बिना होती ही नहीं। यदि भाग्य में उऋण होना नहीं लिखा तो फिर कैसे लड़की हो सकती है?"

"क्यों अनन्ता! क्या इतनी देर तक प्रोफिलैक्टिक्स प्रयोग करती रही हो?"

"नहीं जी।"

"तो फिर इतने वर्ष कहां रही हो?"

"आपको विदित नहीं कि कहां रही हूं।"

बात यहीं समाप्त नहीं हुई। अनन्ता ने एकान्त में सानन्द से माधवी के विषय में कहा तो सानन्द ने कह दिया, "यह असम्भव है अनन्ता!"

"क्यों असम्भव है?"

"मैं वचनबद्ध हूं।"

"किससे?"

"तुमसे। परमात्मा से, पितरों और गुरुओं से।"

"उनको बीच में लाने की आवाश्यकता नहीं। उनके सामने तो वह आपकी पत्नी घोषित हो चुकी है। किसी ने आपत्ति की प्रतीत नही होती। इसके विपरीत आपकी माताजी उस दिन मिली थीं और पहले की तरह वह माधवी के विषय में पूछती थीं कि उसके कोई बच्चा हुआ है अथवा नहीं?

"और जब मैंने कहा कि अभी नहीं तो वे पूछने लगीं, 'कुछ उम्मीद भी दिखाई देती है अथवा नहीं?'

"जब मैं इस बात का भी नकारात्मक उत्तर देती हूं तो वह गम्भीर हो जाया करती हैं।"

"आखिरी बार कब मिली थीं माताजी।"

"आठ-दस दिन की बात है। मैं स्वयं ही उनके घर गई थी। वे मुझको देख मकान के नीचे के कमरे में बैठ गईं और कहने लगी, "सानन्द के पिता का रोष अभी मिटा नहीं। इस कारण उनसे मिलना अभी ठीक नहीं। उनकी आर्थिक अवस्था ठीक नहीं।"

"तो कुछ दे आना था।"

"मैंने सौ रुपये का नोट दिया था। उन्होंने कहा था पिताजी नाराज होंगे।"

"मैंने कहा, 'आप रखिये। नाराज होंगे तो वापस ले जाऊंगी। अभी तो मेरी जेब में अधिक हैं नहीं। इस कारण और अधिक दे नहीं सकती। अगली बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आऊंगी तो कुछ नियमित रूप से देने का प्रबन्ध कर जाऊंगी।'

"वे चुप रहीं। नोट उनके पांवों में पड़ा रहा। उन्होंने उठाया नहीं। न ही उन्होंने ले जाने का आग्रह किया था।"

"इसका अर्थ है कि कष्ट बहुत अधिक है।"

"जी।"

"तब तो मुझको जाना चाहिए।"

"हां जरूर जाइये और उनकी अवस्था सुधारने का यत्न करना चाहिए।"

इस वर्त्तालाप के एक सप्ताह पश्चात् सानन्द अपने माता-पिता से मिलने गया। वह चाहता था कि माताजी से पहले मिले परन्तु वे बाजार गई हुई थी। मिले पण्डितजी। सानन्द ने चरण स्पर्श किये तो पिता ने पांव पीछे कर लिए और कह दिया, "इन्सान बनो सानन्द! यह क्या पशुओं की भांति जमीन पर रेंगने लगे हो।"

सानन्द हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, "पिताजी! आपने देवता बनने की शिक्षा दी थी और अब मुझको नालायक जान एक श्रेणी पीछे कर रहे हैं।"

"तो यह पांव छुना देवताओं के गुणों में है क्या?"

"जी, दैवी गुणों में आपने यह भी सिखाया था—

'तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानतः।

और मान करने का प्रत्यक्ष रूप अपने से बड़ो के चरण-स्पर्श करता है।"

पिता का क्रोध शान्त हो गया। उसने कह दिया, "वाचालता तो तुम्हारा जन्म से गुण चला आता है।"

सानन्द ने बात बदल दी, "माताजी कहां है?"

"क्यों? आज फिर कुछ देने के लिए आये हो?"

"कुछ देने? क्या देने? पिताजी मैंने कभी कुछ दिया है? देती तो सदा मां है। जन्म से लेकर देने लगती है और फिर देती ही रहती है।"

"उस दिन अनन्ता आई थी। मुझसे मिली नहीं। तुम्हारी मां को एक सौ रुपया दे गई थी। वह बेचारी आतुर होने से ले बैठी।"

"सत्य? वे आतुर हैं? यह तो कुछ अच्छा समाचार नहीं।"

"अच्छा-बुरा जो कुछ भी है तुम्हारे करने से ही तो है न। देखो सानन्द! समर्थ को और मुझको भी यह विश्वास हो रहा है कि तुमने संतोष की मति को भ्रष्ट कर दिया है, जिससे वह अपने पति को क्षमा नहीं कर सकी। यदि वह अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बयान बदल देती तो समर्थ बच जाता। सैशन कोर्ट का पूर्ण निर्णय उसी के बयानों पर ही आधारित रहा है।"

"मैं सत्य ही दुर्भागा हूं, पिताजी! जो आप मुझको संतोष के बयानों में कारण मानते हैं। क्या माताजी भी ऐसा सोचती हैं?"

"यह तो माताजी से पूछना कि वे अपने पति की सूझ-बूझ पर विश्वास रखती हैं अथवा नहीं।"

"परन्तु पिताजी! इसमें कोई प्रमाण नहीं कि भाभी ने मुझसे राय कर बयान दिया था। मैं सत्य कहता हूं कि मैंने उनके बयानों में एक अक्षर का भी समावेश नहीं किया।"

"तुम्हारा व्यवहार इस बात का साक्षी है कि तुम्हारे, अनन्ता और संतोष के षड्यन्त्र से ही समर्थ जेल में पड़ा है।"

"मेरे व्यवहार का भाभी के बयानों से क्या सम्बन्ध हो सकता है?"

"तुम्हारा उसको आश्रय देना यही सिद्ध करता है कि तुम उसके व्यवहार का समर्थन करते हो।"

"पिताजी यह तो आप मुझपर अन्याय कर रहे हैं। देखिये, मैं आज आपसे मिलने आया हूं। इसका अर्थ यह नहीं कि मैं आपके कथन और व्यवहार का समर्थन करता हूं। मैं चाहता हूं कि आपको अपने घर ले चलूं। परन्तु इसका अर्थ के आपकी भूलों का भूल समझना छोड़ बैठा हूं, यह भी नहीं।"

"क्या भूल की है मैंने?" हरिशरणानन्द के माथे पर फिर त्योरी चढ़ गई।

"आप सदा मलावी को एक आवारा स्त्री समझते रहे हैं। आप उसको भैया की रखैल बनने को ही ठीक समझते रहे हैं। जहां तक मैं जानता हूं, आप भैया को इस दशा में चलने के लिए प्रोत्साहन देते रहे हैं।"

"और तुम आरम्भ से ही उसको भैया से सम्बन्ध बनाने के लिए मना करते रहे हो। मैं समझता हूं कि मेरे व्यवहार से नहीं प्रत्युत तुम्हारे अस्वाभाविक व्यवहार ने इस सब दुर्घटना को जन्म दिया था।"

"मलावी के भैया से सम्बन्ध न बनाने में अस्वाभाविकता है क्या?"

"हां, धन-संचय के साथ स्वाभाव में रजोगुण उभर पड़ता है और एक से अधिक स्त्रियों के भोग की इच्छा रजोगुण के परिणाम-स्वरूप ही है। यदि मलावी उसकी इच्छा पूर्ण कर देती तो उसको कहीं अन्यत्र मुख काला करने की आवश्यकता न पड़ती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सानन्द अपने पिता के मलावी-सम्बन्धी व्यवहार में उनकी सत्, रज-तमोगुणों की विकृत व्याख्या का करण जान विस्मय करने लगा। उसे समझ आया कि समर्थ भैया में रजोगुण उभर आया था अथवा नहीं कहा नहीं जा सकता, परन्तु पिताजी की सात्विक प्रवृति तो अवश्य तमोगुण से दब गई है। इस पतन पर उसे भारी शोक हुआ। इस पर भी आज पिताजी को शान्ति से विचार करने की स्थिति में देख उन्हें समझाने का यत्न करने लगा।

"पिताजी! क्षमा, करें मेरी उस समय की परिस्थिति का अध्ययन ऐसा नहीं जैसा आपका है। यदि आप कहें तो मैं बताऊं।"

हरिशरणानन्द ध्यान से पुत्र के कहने की प्रतीक्षा करने लगा। सानन्द ने पिता को चुप देख कहा, "मुझको कुछ ऐसा समझ आया था कि भैया में रजोगुण नहीं प्रत्यक्ष तमोगुण की उष्णता थी। रजोगुणवाले बलात्कार करने का यत्न नहीं करते। वे तो अपने तेज प्रभाव से अपने अनुकूल पदार्थों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। वे चुम्बक की भांति लौह कणों को अपनी ओर खींचते हैं। तमोगुण का तो डंडे से हांकने की भांति प्रभाव होता है। डंडे से तो गधे हांके जाते हैं, मानव नहीं। यही कारण है कि रजोगुण सम्पन्न मानवों में नरेश कहाते हैं और तमोगुणी तानाशाह।

"साथ ही पिताजी! रजोगुण सद्गुणोत्पन्न मन की अवस्था का नाम है और तमोगुण काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार जनित होता है। भैया का व्यवहार तो बेईमानी से उपार्जित धन और अभिमान तथा क्रोधजनित ही था।"

यह बलात्कार और आकर्षण की तमोगुणी और रजोगुणी व्याख्या में अन्तर तो इतना स्पष्ट था कि हरिशरशानन्द का मुख बन्द हो गया।

सानन्द भी देख रहा था कि उसके पिता का भ्रम दूर हो रहा है। इसी समय निपुणा आ गई। सानन्द के चरण-स्पर्श करने पर वह आशीर्वाद दे बैठ गई। सानन्द ने अपने आने का प्रयोजन बता दिया, "मां! मैं पिताजी को रिंग रोडवाले मकान पर ले चलने के लिए आया हूं।"

"वहां तुम्हारी कोठी में उतना स्थान तो है नहीं, जितना समर्थ की कोठी में था और यहां हम पांच प्राणी हैं। तुम्हारे यहां भी तो आठ प्राणी हैं। सुना है योगेश्वर भी लुट-पिटकर आ पहुंचा है।"

"माताजी! इसमें योगेश्वर का दोष नहीं। दोष था उस धन का जो भैया के घर में आता था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु सानन्द!" हरिशरणानन्द ने पुनः वार्ता में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "भारत में आज कांग्रेसी युग में पिचानवे प्रतिशत बेईमान और हरामखोर फल-फूल रहे हैं। उनके पेट में शूल क्यों नहीं उत्पन्न होता?"

"पिताजी! यह तो आपके पुण्य-प्रताप का फल है कि पूर्ण परिवार रसातल में डूबता-डूबता बच गया है। केवल समर्थ भैया ही पूर्ण पाप के बोझ में दब गये है। केवल उन्हीं पर ही उस पाप की कमाई का प्रभाव हुआ है नहीं तो यह प्रभाव भैया से चलकर भाभी, बच्चों, योगेश्वर इत्यादि पर और आप तथा मुझ पर भी होने लगा था।

"मुझ पर सबसे कम प्रभाव हुआ था। कारण यह कि मैं घर में खर्चे के लिए उस धन में से कम-से-कम प्रयोग में लाता था।"

"और तुम्हारा मलावी से व्यवहार क्या तुम्हारे सतोगुण के अधीन था?" हरिशरणानन्द ने मुस्कराते हुए पूछा।

"मैं तो यही मानता हूं।"

"एक पत्नी के रखते हुए दूसरी स्त्री पर पति की-सी दृष्टि रखना भला कहां की सात्विक प्रवृति है और किस शास्त्र के अनुसार दैवी गुण है?"

"पिताजी! आपकी यह धारणा और यह युक्ति मेरे तथा मलावी के विशय में बहुत न्यून ज्ञान होने के कारण है। मैं आपको यह बता देता यदि वह केवल मेरी ही बात होती। पति-पत्नी के गुह्य व्यवहार को एक-दूसरे की स्वीकृति के बिना बताया नहीं जा सकता। इस पर भी इतना तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि हमारे परस्पर के व्यवहार में न कोई धर्म-विरुद्ध बात है, न ही उसमें तमोगुण का समावेश है।"

"यही तो मैं उस दिन अनन्ता से कह रही थी।" निपुणा ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कह दिया, "जब उसने बताया था कि उसके अभी गर्भ भी स्थित नहीं हुआ तो मैंने उससे कहा था कि तुम पाप कमा रहे हो, जो एक स्त्री को अपने सम्मोहिनी मन्त्र से बांधकर उसकी स्वाभाविक इच्छाओं की भी पूर्ति नहीं कर पा रहे।

"उसका कहना था कि इस विषय में वह कुछ नहीं जानती। तुम दोनों के मेल-जोल में वह किसी प्रकार की बाधा अथवा आपत्ति नहीं रखती। तुम दोनों भी परस्पर मेल-जोल में निस्संकोच भाव में बैठते उठते हो। इससे मेरे मन में सन्देह हो गया कि कदाचित तुम बीमार न हो, परन्तु इस बात का विश्वास नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हुआ। मैंने अनन्ता से उसके अपने विषय में पूछा तो वह कहने लगी कि वह तो और सन्तान उत्पन्न करने वाली है।

"इस पर मैंने पूछा था कि क्या मलावी को भी और सन्तान से डर लगता है? उस बेचारी का जीवन बरबाद हो रहा है।"

सानन्द ने इस अनुमान को न तो सत्य कहा, न ही इसका समर्थन किया। वह मुस्कराता हुआ देखता रहा। उसे चुप देख पिता ने कहा, "यदि यह ठीक है तब तो तुम महापातकी हो?"

"हो सकता है पिताजी! परन्तु यह न तो रजोगुण के अधीन है न तमोगुण के अधीन। यह मुझमें अथवा मलावी में सात्विक गुण का परिणाम है क्या? इसका निर्णय तो परमात्मा, जो सर्वान्तर्यामी है, ही कर सकता है।

"सत्, रज, तम ये अति गहन गुण हैं प्रकृति के। परन्तु मैं पूछता हूं कि सतोगुण में पत्नी रखना या पत्नियां रखना वर्जित है क्या? भगवान कृष्ण ने भी तो एक से अधिक पत्नियां रखी थीं। महर्षि याज्ञवल्क्य की भी दो पत्नियां थीं।

"और राम की एक पत्नी थी। पिताजी! इस पर भी राम में रजोगुण नहीं था, कौन कह सकता है?"

"यह ठीक हैं परन्तु राम ने किसी को अपनी पत्नी मान, बन्धन में बांध, उसको निःसन्तान नहीं रखा था।"

"परन्तु मैंने उससे स्पष्ट रूप में कह दिया था कि मैं उसको सन्तान नहीं दे सकूंगा।"

"यह सब व्यर्थ की बात है। यह स्वाभाविक नहीं। इससे तुम कभी उसके घोर पतन का कारण भी बन सकते हो।"

"पर मैं तो आपको वहां ले चलने के लिए लेने आया था।"

"हम अभी नहीं जायेंगे। हमको अपनी परिस्थिति का ज्ञान तो होने दो।"

जाने से पूर्व सानन्द अपनी मां को दो सौ रुपये और दे गया। वह कहा गया कि वह नियम से तीन सौ रुपया मासिक उनको दे जाया करेगा। इस पर भी उसे इसमें प्रसन्नता होगी यदि वे उसके घर चलकर रहें।

घर जाते हुए सानन्द विचार कर रहा था कि रस्सी तो जल गई परन्तु बल नहीं गया।

: 3 :

देश में चीन के विषय में बहुत हल्ला उठाया गया। इसका प्रभाव भी प्रतीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ। एक ओर तो पंडित जवाहरलाल नेहरू के विषय में यह भ्रम कि वह भूल नहीं कर सकता, दूर होने लगा। उसका संसद में वक्तव्य कि तिब्बत सदा चीन के अधीन रहा है, यह सिद्ध करने वाला हुआ कि पंडित जी को इतिहास का ज्ञान बहुत कम है। पंडित जी की पूर्ण विदेश नीति पर सन्देह उत्पन्न हो गया।

दूसरी ओर यह भी स्पष्ट होने लगा कि कम्युनिस्ट भी साम्राज्यवादी हैं। कम्युनिस्ट अन्य साम्राज्यवादी देशों की भांति आततायी हैं। साथ-ही-साथ पंडित नेहरू और कम्युनिस्टों द्वारा चीन और रूस पर डाला हुआ प्रकाशमय आवरण छिन्न-भिन्न होने लगा।

इसके साथ ही ख्रुश्चेव की कलाबाजियां, नेहरू और उसकी श्रेणी के लोगों के भ्रमोत्पादक वक्तव्यों के होने पर भी, कम्युनिस्टों को वास्तविक रंग में प्रस्तुत करने लगीं।

सानन्द ने इस अवसर को पुनः अपना दृष्टिकोण संसद के विरोधी पक्षवालों के सम्मुख रखने के लिए यत्न किया। उसने एक लेख लिखा, 'ब्रैड एण्ड थॉट—रोटी और विचार। इस लेख में उसने यह बताया कि यह भ्रम कम्युनिस्टों ने ही फैलाया हुआ है कि कम्युनिज्म का प्रचार निर्धनता अथवा साधन-विहीनता से ही होता है। सानन्द ने लिखा कि यह विचार न तो घटनाओं से सिद्ध होता है न ही निर्धनता दूर करने से कम्युनिज्म में बाधा खड़ी हुई है। इसके विपरीत ज्यों-ज्यों और जिन-जिन देशों में अमेरिका अपने देश से धन तथा साधन भेजता है त्यों-त्यों उन देशों में कम्युनिज्म का प्रसार होता जाता है। परन्तु उसको यह समझ लेना चाहिए कि इससे और जो कुछ भी हो परन्तु कम्युनिज्म का ह्रास नहीं होगा।

कम्युनिज्म के विरोध के लिए श्रेष्ठ विचारों की कमी को दूर करना चाहिए। ये विचार भौतिकवाद का उन्मूलन करने के लिए होने चाहिए। श्रेष्ठ विचारों का कोई स्थापन्न नहीं हो सकता।

यह लेख उसने घटनाओं और आंकड़ों से भरकर अमेरिका के एक विख्यात साप्ताहिक को भेज दिया। दो वर्ष के कुतुब और ताज पर लेख लिखने के पश्चात् यह पहला भावात्मक लेख सानन्द ने अमेरिका में भेजा था। उसने समझा था कि इस बार तो यह लेख अवश्य छपेगा और अमेरिका की जनता इसका स्वागत करेगी।

उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब उसका लेख सम्पादक की टिप्पणी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के साथ वापस आ गया। टिप्पणी में लिखा था–

"हमको दुःख है कि यह लेख हम छाप नहीं सकते। यह हमारी नीति के विरुद्ध है। हम समझते है कि अमेरिका धनी है और साधन सम्पन्न है और यदि हमने इन दोनों के महत्व को कम दिखाया तो अमेरिका की महत्ता भी कम हो जायेगी। जो कुछ हम दे सकते हैं वह देकर ही हम अमेरिका, उसके लोगों के रहन-सहन तथा उसकी नीति की श्रेष्ठता को संसार-जन के हृदय पर बैठा सकते हैं। हम यही कम्युनिज्म के विरोध का ढंग समझते है।"

सानन्द का इस टिप्पणी से विस्मय जाता रहा। वह समझ गया कि अमेरिका के पास कोई विचार नहीं है। यदि कुछ विचार हैं तो वे इतने निकृष्ट हैं कि उनकी उपयोगिता पर उसे विश्वास नहीं। इसी कारण वह विचार-शक्ति पर विश्वास प्रकट कर ही नहीं सकता।

परन्तु सानन्द का विचार था कि भारत तो महान् विचारों का जन्मदाता है। अमेरिका की ओर मुख किये बिना उसका भारत की जनता में विचारोत्पादक प्रयास करना चाहिए। अतः उसने सबसे पहले संसद के विरोधी दलों के नेताओं से मिलकर उनके विचारों को एक दिशा प्रदान करने का यत्न किया।

वह एक दिन प्रजा सोशियलिस्ट पार्टी के प्रमुख नेता से मिलने जा पहुंचा। अपना संवाददाता का कार्ड दिखाकर उसने उनसे कहा, "मैं आपका संसार की वर्तमान अवस्था के विषय में वक्तव्य लेना चाहता हूं।"

"यह तो आपने पत्र में भी लिखा है। और मैंने एक वक्तव्य तैयार कर रखा है।"

इतना कह नेता ने अपनी मेज के दराज से एक टाइप किया वक्तव्य निकालकर देते हुए कहा, "मैं समझता हूं कि मैंने सब आवश्यक बातों पर प्रकाश डाल दिया है।"

वक्तव्य दो फुलस्केप साइज के पृष्ठों पर टाइप किया हुआ था। सानन्द ने वक्तव्य पढ़ डाला। उसमें मुख्य बातें इस प्रकार की थीं–

"संसार के निर्धन और साधन-विहीन देशों की दशा सुधारना साधन सम्पन्न देशों का प्रथम कर्तव्य है। यह अमेरिका और रूस का कर्तव्य है कि वे एक विश्वव्यापी संगठन बनायें, जिससे पृथ्वी पर कारखानों और मशीनों की गूंज उठने लगे। दोनों गुटों से निष्पक्ष लोगों को अपना संगठन सुदृढ़ करना चाहिए। संसार की यही एक आशा है। एटम बम परीक्षण बन्द करने चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इन्हीं बातों की व्याख्या में दो पृष्ठ भर दिये गये थे।

सानन्द को इस दृष्टिकोण से तो भारी निराशा हुई। इस पर भी उसने किसी प्रकार का भाव प्रकट नहीं किया। उसने पूछ लिया 'रोटी, कपड़ा, उत्पादन-यन्त्रों का अभाव क्या हृदय में किसी प्रकार का असंतोष उत्पन्न करता है अथवा यह अभाव किसी प्रकार के विचार के बिना विद्रोह उत्पन्न करता है?"

"मैं आपकी बात समझा नहीं।"

"जब किसी राजा-रईस को कांग्रेस की सहायता और समर्थन करते देखते हैं तो क्या आप यह नतीजा नहीं निकालते कि साधन भिन्न बात है और विचार भिन्न बात है?"

इस पर नेताजी बोल उठे, "आप एक राजा द्वारा कांग्रेस का टिकट लेने में क्या उद्देश्य समझते हैं उसका?"

"उसका स्वार्थ और उसी पद-लोलुपता। यह केवल कांग्रेस ही पूरा कर सकती है। इस कारण सब चरित्र-सम्बन्धी मतभेदों को भूलकर स्वार्थ से बंधा हुआ वह भी कांग्रेस में सम्मिलित हो जाता है।

"इसी प्रकार यदि कम्युनिस्टों के विरुद्ध हमने कोई भावात्मक आन्दोलन चलाया तो लोग निर्धन रहते हुए भी उनके विरोध में तत्पर हो जायेंगे।"

"तो आप स्वार्थ को और पद-लोलुपता को भावात्मक बात समझते हैं?"

"हां, उस रईस की यह भावना ही है। वास्तव में तो कांग्रेस ने उनके हितों को हानि पहुंचाई है।"

"परन्तु निर्धन रहते हुए कोई कम्युनिज्म का विरोध क्यों करेगा?"

"इस कारण कि कम्युनिज्म निर्धनता को ही दूर करने का उपाय नहीं। यह तो मन का एक भ्रम के आधार में किसी प्रकार की सच्चाई तो है ही नहीं। इस कारण इसमें कोई सच्चाई ढूंढ़नी मरे गधे को पीटने के समान होगा।"

"हमने तो सुना है कि रूस और चीन में निर्धनता दूर हो रही है?"

"यह क्या एक महान् झूठ नहीं? यदि झूठ न होता तो सम्पन्न लोगों को बाहर के संसार के सम्पर्क में आने क्यों नहीं दिया जाता? क्यों कम्युनिज्म-विरोधी दलों को भी वहां अपना प्रचार करने नहीं दिया जाता?"

"इसके दूसरे कारण हैं। वास्तविक बात यह है कि देश में अरबों रुपये हाईड्रोजन बम बनाने पर व्यय करने के लिए कहां से आये हैं यदि वहां निर्धनता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सानन्द हंस पड़ा। उसने हंसते हुए कहा, "देश में दस-बीस सरमायेदारों के धनी हो जाने से क्या देश की सम्पन्नता प्रमाणित हो जाती है? यदि नहीं तो एकमात्र रूस सरकार के अतुल धन-सम्पन्न हो जाने से रूस धनी हो गया मान सकते हैं क्या?"

नेता निरुत्तर होकर बोले, "तुम नहीं समझ सकते। मेरा वक्तव्य पूर्ण है।"

इस पर सानन्द ने बात बदल दी। उसने पूछा, " क्या आप भी इस बात को मानते हैं कि कांग्रेस में पंडित नेहरूजी ही सर्वेसर्वा हैं?"

"इस कारण क्या आप भी यह मानते हैं कि नेहरूजी के परास्त होने पर कांग्रेस टूक-टूक हो जायेगी।"

"हां, ऐसा होना सम्भव है।"

"तो क्या आप नेहरूजी की नीति, विशेष रूप से विदेश-नीति का खण्डन करने के लिए मैदान में आना चाहेंगे?"

"यह निश्चय करना पार्टी का काम है। मैं नेहरूजी की स्थिति को अभी दुर्बल करना उचित नहीं समझता।"

"परन्तु नेहरूजी की प्रतिष्ठा का अर्थ यह नहीं कि नेहरूजी की नीति देश के हित में है?"

"हां, यह तो है।"

"और नेहरूजी की नीति कांग्रेस की नीति है। यह तो आप मान चुके हैं?"

नेताजी भौंचक्के हो मुख देखने लगे। इस पर सानन्द ने कह दिया, "क्या आपके कहने का यह मतलब है कि कांग्रेस का विरोध अभी उचित नहीं?"

नेताजी ने मुस्कराकर चुप रहना ही उचित समझा। सानन्द ने अपना बैग समेटते हुए कहा, "क्या आप अपने दल वालों को अभी अपने दल की चटाई समेटने की राय देंगे?"

परन्तु इससे भी मजेदार भेंट तो जनसंघ के नेता से हुई। सानन्द ने एक पत्र द्वारा जनसंघ नेता को नानकिंग रेस्टोरां में चाय के लिए आमंत्रित किया। वह वही महाशय थे, जिसने सानन्द की भेंठ सन् 1957 के निर्वाचनों से पूर्व स्टैंडर्ड रेस्टोरां में हुई थी।

सानन्द ने उनको बैठाते हुए कहा, "आपसे ढाई वर्ष पूर्व भी बातचीत करने का अवसर मिला था। आपने आज पुनः आने का कष्ट किया है। मैं आपका बहुत आभारी हूं। मैंने अपने पत्र में लिखा कि मैं आपकी पार्टी के विचार विश्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की वर्तमान परिस्थिति पर जानना चाहता हूं। आशा है आप इस विषय पर अपना कोई वक्तव्य तैयार कर लाये होंगे।"

"लिखित में तो कुछ नहीं लाया। हां, पूछिये। मैं अपने दल के निर्णयों के अनुसार आपको बताने का यत्न करूंगा।"

सानन्द ने चाय तथा रसगुल्ले, कुछ नमकीन और बर्फी आदि दो प्लेटों में परोस दी। प्रवक्ता महोदय खाने लगे तो सानन्द ने चाय बनाते हुए पूछ लिया, "तृतीय विश्वव्यापी युद्ध की सम्भावना आप समझते हैं कि है अथवा नहीं?"

"हो सकता है और नहीं भी हो सकता। इसका पूर्ण दारोमदार अमेरिका की नीयत पर निर्भर है।"

"आप अमेरिका का व्यवहार शराफत का समझते हैं अथवा बेईमानी का?"

"अभी तक तो अमेरिका का हस्तक्षेप अन्य देशों के आभ्यन्तरिक मामलों में उसकी शराफत का सूचक नहीं।"

"उदाहरण के रूप में?"

"कोरिया में टांग अड़ाना, जापान में अपनी सेना बैठा रखना, लाओस में झगड़ा करा देना, अल्जीरिया और अन्य अफ्रीकी देशों में गड़बड़ कराना, पाकिस्तान में अपनी सेनाएं भेजना; यह नाटो और सीटो संस्थाएं बनाना और अनेकों अन्य उदाहरण उपस्थित किये जा सकते हैं।"

"परन्तु लोग कहते हैं कि अमेरिका यह सब कुछ न करता तो विश्व-भर में कम्युनिज्म का प्रसार हो जाता। आप इसमें क्या कहना चाहते है?"

"कम्युनिज्म हो जाता तो हो जाता। अमेरिका को इसकी चिन्ता क्यों है?"

"देखिये, भारत में नागा और भील आदि पिछड़ी जातियों में ईसाई लोग ईसाई धर्म का प्रचार कर रहे हैं। इसका आर्यसमाज विरोध कर रही है। क्या इसको भी खराब बात समझते हैं?"

"यह तो हमारे अपने देश की बात है। इसमें हमारी राय है। परन्तु वह विदेशीय मामला है। उसमें हम किसी विदेशीय राज्य का हस्तक्षेप पसन्द नहीं करते।"

"देखिये, कोरिया की बात ही लीजिये। रूस और चीन की सहायता से उत्तरी कोरियावालों ने दक्षिण कोरिया पर आक्रमण किया था। अमेरिका और कुछ संयुक्त राष्ट्र संघ के राष्ट्र दक्षिणी कोरिया की सहायता में पहुंच गये। इसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोष रूस और चीन का है अथवा अमेरिका और संयुक्त राष्ट्र संघ का?''

''दोनों का।''

''परन्तु आपने तो अभी तक अमेरिका के हस्तक्षेप की बात ही कही है। कम्युनिस्ट हस्तक्षेप के विषय में तो आपने कुछ कहा नहीं।''

''यह बात हमने अपने प्रस्तावों में स्पष्ट की। हम किसी भी देश में बाहरी शक्तियों का हस्तक्षेप पसन्द नहीं करते।''

''शुक्र है। आपने अपनी बातों को कुछ तो युक्तियुक्त किया है। खैर! अब आप यह बतलाइये कि जब रूस ने हंगरी पर जुल्म ढाया था, तो आपने रूस की निन्दा की थी अथवा नहीं?''

''की थी।''

''परन्तु हंगरी दुर्बल था और रूस शक्तिशाली। तो क्या विश्व के किसी भी राष्ट्र का यह कर्तव्य था अथवा नहीं कि हंगरी की सहायता के लिए वहां सेना भेजता।''

''परन्तु भेजी तो नहीं।''

''यदि भेज देता तो आप उसकी भी वैसे ही निन्दा करते जैसे अमेरिका की कोरिया के विषय में कर रहे हैं?''

सानन्द ने बात को स्पष्ट करने के लिए कह दिया, ''जब कोई भला परन्तु दुर्बल पड़ोसी हो और उस पर किसी बलवान डाकू का आक्रमण हो जाये तो अन्य पड़ोसियों को उसकी सहायता करनी चाहिए अथवा नहीं?''

''इसमें हम अपने देश के 'एनलाइटेण्ड सैल्फ इण्टरैस्ट' अर्थात् विचारित स्वहित से बात करेंगे।''

सानन्द हंस पड़ा और हंसकर पूछने लगा, ''तो क्या मैं समझूंगा कि आप भी कम्युनिज्म के प्रसार को अमेरिकन हस्तक्षेप से श्रेष्ठ समझते है?''

''अमेरिका ने कभी भी कम्युनिस्टों का विरोध नहीं किया। वे मुख से तो कहते हैं कि कम्युनिस्टों के विरोध के लिए आये हैं परन्तु वास्तव में वे कार्य-रूप में देश के कम्युनिस्टों की सहायता करते हैं।''

''हां, ऐसा कई स्थानों पर हो रहा है, परन्तु क्या इसमें कुछ ऐसा कारण नहीं, जो उन देशों की जनता के अपने दोष ही हों। मैं आपको एक उदाहरण से बात स्पष्ट करता हूं। भारत के सुरक्षा मंत्री कृष्णा मैनन एक विख्यात कम्युनिस्ट हैं और भारत में निर्वाचन लड़ वे संसद सदस्य बने हैं। भारत का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधान प्रजातन्त्रात्मक है। हमारी प्रजातन्त्रात्मक संसद मैनन के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव नहीं कर सकी। अब बताइये यदि मैनन साहब की हिमायत अमेरिका करे तो इसमें अमेरिका का क्या दोष है? अमेरिका तो भारत मनोनीत 'डिफेंस मिनिस्टर' की हिमायत करता है और यह समझकर कि ऐसा करने से वह भारत की सहायता कर रहा है।"

"पीछे यदि यही डिफेंस मिनिस्टर भारत में कम्युनिज्म लाने में सहायक हो जाये तो दोषी अमेरिका कैसे हो गया?"

"यह सब बाग्जाल है।" जनसंघ के प्रवक्ता कहने लगे, "वास्तविक बात तो सिद्धान्त की है कि किसी राज्य में बाहर के देशों को हस्तक्षेप नहीं करनी चाहिए। यदि भारत के लोग भारत के सुरक्षा मन्त्री पद पर एक कम्युनिस्ट को सहन करते हैं, तो करते रहें। अमेरिका को इस से क्या।"

"तो फिर एक कम्युनिस्ट को प्रोत्साहन और सहायता के लिए अमेरिका को दोषी क्यों कहते हैं?"

"मैं एक और उदाहरण देता हूं। मान लीजिए कि पंडित नेहरू जो इस समय देश के मनोनीत नेता हैं, वे चीन के भारत में घुस आने को यहां के देशवासियों से पहले छुपाते रहे, पीछे उसकी साधारण-सी बात मानते रहे और कभी भी भविष्य में ये चीन के भारत पर अपना राज्य जमाने में सहायक हो जायें तो आज अमेरिका द्वारा पंडितजी की प्रशंसा होने से क्या आप अमेरिका को दोषी मानेंगे। आज नेहरू सरकार की नीति को चालू करने के लिए अमेरिका सरकार अरबों रुपयों की सहायता दे रही है। इस नीति से कम्युनिज्म आ गया तो अमेरिका दोषी होगा अथवा भारत के लोग?"

"अमेरिका।"

"और आप नहीं जो इसका विरोध करते हुए भी नेहरूजी को पदच्युत करने के लिए कुछ नहीं करते।"

"हम क्या कर सकते हैं? हमारी शक्ति ही क्या है?"

"आपके दल ने कभी मांग की है कि देश के प्रधान मन्त्री ने देश के साथ दगा किया है, इससे देश इसको पद से निकाल बाहर करे?"

"हमारी कोई सुनेगा नहीं।"

"आप ऐसा मन से चाहते हैं?"

"नहीं। हमारी पार्टी ने इस विषय में विचार किया है और हम इसको देश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के हित में नहीं समझते।"

"आप कांग्रेस का विरोध क्यों करते हैं?"

"इस कारण कि इसकी नीति से देश का अहित हो रहा है।"

"क्या कांग्रेस में सर्वेसर्वा पंडित नेहरू नहीं हैं?"

"इस पर भी दल तो दल ही है। नेहरू नेहरू हैं। हम दोनों को एक मान कर भूल नहीं कर सकते।"

"मान लीजिये कि कांग्रेस टूट जाती है और नेहरू एक अन्य दल के नेता बन जनता को उस मान-प्रतिष्ठा के बल पर जो उनकी देश में है, अपने नये दल के पीछे ले जाकर पुनः अपनी यही नीति चलाते हैं तो आपकी क्या स्थिति होगी उस समय?"

"हम उस नये दल का विरोध करेंगे?"

"और दूषित नीति के स्रोत को पनपने देंगे?"

"दूषित नीति का स्रोत क्या है?"

"पंडित जवाहरलाल नेहरू जी की इतिहास, राजनीति और धर्म के विषय में अनभिज्ञता। पंडित जी अज्ञानवश हठधर्मी भी हैं।"

"पंडित जी के विरुद्ध हम इस कारण कुछ नहीं कहते, क्योंकि हम व्यक्ति का विरोध न कर सिद्धान्तों का विरोध करते हैं।"

"और विरोधी सिद्धान्तों के जन्मदाताओं की प्रतिष्ठा सुदृढ़ करते हैं।"

"हमको भय है कि गांधीजी की भांति कोई नेहरू जी के जीवन पर हाथ उठाये तो उनका विरोध करनेवाले इसमें अपराधी मान लिये जायेंगे।"

"परन्तु आप ऐसी कोई बात तो कहेंगे नहीं, जिससे जीवन को भय उत्पन्न हो जाये।"

"कहें न कहें। यह भारत है, यहां तो ऐसा मान लिया जायेगा।"

सानन्द गांधीजी के समय कांग्रेसियों को ऐसा कहते सुन चुका था। पंडित नेहरू जैसे उच्च पदवीधारी को भी संसद में यह कहते सुन चुका था कि कुछ हिन्दू-संस्थाओं के प्रचार के कारण वातावरण ऐसा बन गया था जिसमें यह हत्या हो गई है।

सानन्द विचार करता था कितनी अनर्गल थी यह घोषणा! यह उस समय कही गई थी जब हत्यारे पर मुकदमा चल रहा था। यदि वातावरण दूषित था तो गांधीजी के विरुद्ध जनता होती और कदाचित् हत्यारा हत्या कर भागकर लापता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जाता। हत्यारा पकड़ा गया। भागता हुआ नहीं, प्रत्युत चुपचाप श्रद्धा से प्रेरित वहां खड़ा हुआ।

सानन्द को उस समय का दृश्य अभी भी स्मरण था। एक ने हत्यारे के सिर पर प्रहार किया था। इस पर भी किसी ने उसको बचाने के लिए यत्न नहीं किया था। दिल्ली में और देश में सब भारतीय शोक से ग्रसित हो गये थे।

इस पर भी भारत के प्रधान मन्त्री ने कह दिया था कि वातावरण दूषित था। दोष हिन्दू-संस्थाओं को ही दिया जा रहा था, जबकि हिन्दू ही तो सबसे अधिक शोक-ग्रस्त हुए थे।

इस पर भी सानन्द भारतीय जनसंघ के प्रवक्ता के भय को समझता था। यद्यपि वह इतना मात्र कारण, नेहरूजी की विदेश-नीति का खण्डन न करने को पर्याप्त नहीं मानता था।

परन्तु क्या सत्य के प्रतिपादन में असत्य के भय से भयभीत होना ठीक है?

: 4 :

देश में समाजवाद की धूम थी। मानव की प्रत्येक गतिविधि में समाज का हस्तक्षेप स्वाभाविक प्रतीत होने लगा था। व्यक्ति पंगु हो गया था। कोई बेकार था तो दोषी समाज अर्थात् सरकार थी। यदि कोई अविवाहित था तो दोष सरकार का माना जाने लगा था। यदि किसी को कॉलेज में प्रवेश नहीं मिला था तो दोष सरकार का था और यदि किसी के घर सन्तान न होती या अधिक हो जाती तो भी दोष सरकार का था। इसी प्रकार यदि किसी के गर्भपात हो जाने से सन्तान नहीं होती, दोषी सरकार मानी जाती थी। अभिप्राय यह कि गुण-अवगुण सरकार के थे। व्यक्ति अस्तित्वविहीन बहते जल में एक तिनका मात्र था।

पंडित हरिशरणानन्द के घर में समर्थ के तीन बच्चे रहते थे। हरिशरणानन्द उनकी पढ़ाई पर सौ रुपया व्यय नहीं कर सकता था तो वह विचार करने लगा था कि दोष सरकार का है। दो लड़के तो मॉडर्न स्कूल बारहखम्बा रोड में पढ़ते थे और उनकी फीस तथा उनके अन्य खर्चे अस्सी रुपये मासिक हो जाते थे। लड़की इरविन स्कूल में पढ़ती थी। उसका खर्चा बीस रुपये महीना पड़ जाता था। इसके साथ भोजन-वस्त्रादि अलग थे। यह सब खर्चा पंडित हरिशरणानन्द दे नहीं सका और दोषी सरकार समझी जाती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह ठीक था कि सानन्द अब तीन सौ रुपया मासिक माता-पिता को दे जाता था, परन्तु हरिशरणानन्द को समस्या का यह सुझाव पसन्द नहीं था। एक दिन योगेश्वर अपने भाई-बहनों से मिलने आया। निपुणा ने उसको प्यार किया और खिलाया-पिलाया और पंडितजी ने कह दिया "यह लानती स्वराज्य है कि तुम जैसे बच्चों को काठमंडू से पैदल दिल्ली आना पड़ा।"

योगेश्वर को अपने बाबा का वाक्य बहुत मजेदार मालूम हुआ। अभी तक तो वह यही समझ रहा था कि उसकी मुसीबत का कारण वह स्वयं ही है। उसका चाचा भी उसको कहता रहता है कि उसे अपनी पहली भूलें सुधारनी चाहिए। उसको कमर्शियल कालेज में दखिल करा दिया था। उससे निरन्तर कहा जा रहा था कि उसे अपनी पढ़ाई में चित्त लगाना चाहिए।

आज उसके कान में कुछ ऐसी बात पड़ी थी जिसको वह बहुत ही मधुर अनुभव करता था।

उसने तुरन्त पूछ लिया, "इसमें सरकार क्या कर सकती थी, बाबा? मैं चाहता तो बिना टिकट के गाड़ी में चढ़कर आ सकता था। परन्तु मैं डरता था कि पकड़ा गया तो छः मास जेल में काटूंगा और बिहार तथा उत्तर प्रदेश में जेलखाने तो नरक से भी बुरे हैं।"

"यही तो मैं कह रहा हूं योगेश्वर! तुम्हारे पास एक पैसा नहीं था तो तुमको घर आने के लिए मुफ्त टिकट मिलना चाहिए था। अधिक से-अधिक टिकट के मूल्य का तुमसे कुछ काम लिया जाता।"

उसी दिन योगेश्वर सानन्द के घर लौटा तो उसने अपनी मां से बाबा की बात बताई।

सन्तोष तो सुनकर अवाक् रह गई। उसको यह एक अप्रत्याशित बात प्रतीत हुई। इस पर भी वह बता नहीं सकी कि भूल कहां पर है। रात भोजन के समय सन्तोष ने योगेश्वर की बात सानन्द और अनन्ता को बता दी।

अनन्ता खिखिलाकर हंस पड़ी। सानन्द ने अनन्ता से इसका कारण पूछा तो उसने बताया, "कुछ दिन हुए, दिल्ली विश्वविद्यालय के सभी विद्यार्थियों की यूनियन में एक 'डिबेट' हुई थी। विषय था, 'कॉलेज में प्रवेश विद्यार्थियों का हक है अथवा नहीं?"

"खूब गरमागरम बहस हुई और प्रथम पुरस्कार उस विद्यार्थी को मिला जो यह सिद्ध कर रहा था कि कॉलेज में प्रवेश सबका हक है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठीक वही बात आपके पिता कह रहे है। प्रत्येक बिना पैसे के यात्रियों को हक है कि रेल में उन्हें यात्रा करने दिया जाये।"

"हां। एक लखनऊ का किस्सा भी स्मरण आता है।" सानन्द ने कह दिया, "वे लड़के जो आयुर्वेद कॉलेज में पढ़ते थे, हड़ताल कर बैठे और बोले कि वे ऐलोपैथिक कॉलेज में पढ़ेंगे और उसी श्रेणी में जाकर पढ़ना अपना अधिकार समझते हैं जिसमें वे आयुर्वेदिक कॉलेज में पढ़ते हैं।

"स्वाभाविक रूप में उनकी मांग स्वीकार नहीं हुई तो उन्होंने जलूस निकाले, दुकानें लूटी, रिक्शे तोड़े और सरकारी इमारतों को हानि पहुंचाई। लखनऊ की विधान सभा में प्रजा सोशियलिस्ट पार्टी ने हड़ताली विद्यार्थियों पर लाठी चार्ज का विरोध किया और राज्य के मुख्य मंत्री ने घोषणाा कर दी कि आयुर्वेद कॉलेज के विद्यार्थियों को ऐलोपैथिक कॉलेज में प्रवेश मिल जायेगा।

"इस पर ऐलोपैथिक कॉलेज के प्रोफेसरों और विद्यार्थियों ने हड़ताल का नोटिस दे दिया कि सरकार ने ऐसा किया तो वे हड़ताल कर देंगे।"

"इस पर तो विधान सभा में बहुत हू-हल्ला हुआ। सो भाभी! यह समाजवाद है। इसमें व्यक्ति के कुछ कर्तव्य निश्चित नहीं, जिनको वह स्वेच्छा से करे। प्रत्येक बात जो उसने करनी है, कानून से निश्चित होनी चाहिए और उसको कराने के लिए राजदण्ड की आवश्यकता है। वैसे ही राज्य से सब काम कराने के लिए जलसे-जलूस और मार-पिटाई होनी चाहिए। यह है समाजवाद। पिताजी को भी इसकी गंध चढ़ गई प्रतीत होती है।"

"तो चाचाजी! बाबा का यह कहना गलत है कि मुझको रेल में 'फ्री लिफ्ट' मिलनी चाहिए थी?" योगेश्वर ने पूछा।

"बिल्कुल! कल को तुम कहोगे कि तुमको भोजन भी कोई आकर खिलाया करे। देखो योगेश्वर! कुछ कर्तव्य ऐसे हैं, जिनको धर्म कहते हैं वह मनुष्य स्वेच्छा से करता है। इनमें से कुछ ऐसे हैं, जिनको न करने की भी स्वतन्त्रता मनुष्य को है। उदाहरण के रूप में विवाह न करना है। कुछ ऐसे हैं कि न करो जो राजदण्ड के भागी होते हो। जैसे अस्तेय एक धर्म है। इसका अर्थ है चोरी न करना। यदि अस्तेय का पालन न किया जाय तो दण्ड मिलता है। इस पर भी चोरी न करना धर्म है। स्वेच्छा से इसका पालन करना चाहिए।

"तुमने अपने पिता के धन की चोरी की। तुमने अर्धम किया। तुम पकड़े नहीं गये, अतः राज्य से दंडित नहीं हुए। इस पर भी अधर्म तो हो गया। उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फल तुमको मिला। तुमको सुख के स्थान भारी दुःख मिला। तुम जब यहां पहुंचे थे तब एक बुद्धिविहीन पशु मात्र बने हुए थे। दो वर्ष तक तुम घोर यंत्रणा में रहे। कदाचित् तुम्हारा दण्ड समाप्त नहीं हुआ। यह हो सकता कि दण्डपूर्ण हो गया हो अब तुम चोरी करने के फल से मुक्त हो चुके हो। कुछ भी हो, भविष्य में तुमको ऐसी कोई बात नहीं करनी चाहिए, जिससे पुनः वैसी ही यंत्रण सहन करनी पड़े।''

''वे कौन-कौन-सी बातें है?''

''मुख्य रूप से उनकी गणना दस है–

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।

''इनके अतिरिक्त भी कुछ सामयिक युग, काल, आयु, देश के अनुकूल धर्म होते हैं। जैसे तुमको और प्रत्येक विद्यार्थी को पढ़ाई में चित्त लगाना चाहिए। वह सम्भव है कि तुम अपने धर्म का पालन न करते हुए पकड़े न जाओ और उसका दण्ड तुरन्त न मिल सके। इस पर भी यह निश्चय जानो कि कोई किया हुआ कर्म निष्फल नहीं जाता। अच्छे अर्थात् धर्मानुसार कर्म का फल अच्छा और धर्म विपरीत कर्म का फल बुरा होता है।''

भोजन समाप्त हो चुका था। इस पर सानन्द ने कहा, ''योगेश्वर! जाओ अपने कालेज की पढ़ाई करो। दस बजे सो जाना और चार बजे उठ शौचादि से निवृत हो पांच बजे तक फिर पढ़ना। यह तुम्हारा विद्यार्थी जीवन का धर्म है।''

योगेश्वर और अन्य बच्चे उठकर गये तो संतोष ने कह दिया, ''सानन्द! तुम कुछ अपना भी धर्म मानते हो अथवा नहीं?''

सानन्द ने हंसते हुए कहा, ''भाभी! मैं अपनी जानकारी में तो अपने सब धर्म पालन कर रहा हूं। पीछे कुछ काल तक माता-पिता की सेवा भूल गया था। अनन्ता ने याद कराया तो उनके प्रति अपने कर्त्तव्य का यथा-शक्ति पालन करता रहता हूं।''

''तुम्हारा अपनी पत्नी के प्रति भी कुछ कर्त्तव्य है अथवा नहीं?''

''देखो भाभी! जब अनन्ता का विवाह हुआ था, जब से जो-जो धर्मयुक्त कार्य उसने करने को कहा है, मैंने करने का यत्न किया है। क्यों अनन्ता? अब क्या चाहती हो तुम?''

''मैं अनन्ता के विषय में नहीं कह रही। अनन्ता के अतिरिक्त एक अन्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को भी तो पत्नी बनाकर रखे हुए हो?''

''माधवी के विषय में कह रही हो भाभी?''

''क्यों माधवी! तुम... ।'' इतना कहते-कहते उसने घूमकर माधवी की ओर दिखा और कुछ पूछना चाहा, परन्तु वह उठकर खाने के कमरे से निकल गई थी।

सानन्द ने कहा दिया, ''लो देख लो भाभी! उसको अपने विषय में कुछ भी शिकायत प्रतीत नहीं होती।''

''देखो सानन्द! मैं आज महाभारत पढ़ रही थी। उसमें एक श्लोक यह था। मैंने तुमको सुनाने के लिए कण्ठस्थ कर लिया है। लिखा था :

ऋतुं वै याचमानय न ददाति प्रमातुतम्।
भ्रूण हत्युच्यते ब्रह्मन् स इह ब्रह्मणादिभिः।।

''परन्तु भाभी! ऐसी उसने याचना की है क्या?''

''बहुत भोले बन रहे हो। यह तो वह उस दिन से कह रही है, जबसे उसने तुमको कौशल्या ब्राह्मणी की झोंपड़ी में देखा था। पहले मूक भाषा में जो लज्जाशील स्त्रियों की भाषा है। फिर प्रेम की भाषा में यह कामपीड़ित भले विचारों की स्त्रियों की भाषा है। तदुपरान्त किसी भी अन्य से विवाह न करने का निश्चय बताकर और तुम्हारे भैया से अपने मान की रक्षा में युद्ध करके और अन्त में अपने को तुम्हारी पत्नी घोषित किया जाना स्वीकार कर, उसने याचना नहीं की तो क्या किया है? और क्या चाहते हो तुम?''

''परन्तु भाभी! उसने तो मुझसे कुछ इसके विपरीत बात कही थी।''

''आज मेरी उससे इस विषय पर विस्तृत बात हुई है और अपनी पूर्ण कथा बताते हुए उसने बताया है कि अपने मुख से इस बात की कभी याचना नहीं करेगी। इसका कारण यह नहीं कि उसको किसी बात का अभिमान है, परन्तु किसी विषय में योग्यता-अयोग्यता की परीक्षा परीक्षार्थी स्वयं नही कर सकता।''

''अच्छा भाभी! मैं इस विषय में विचार करूंगा। मैंने उसको बता दिया था कि मैं किसी अन्य से वचनबद्ध हूं।''

''उसने तुमको वचनमुक्त नहीं किया क्या?''

''वचन उसके कहने पर नहीं अपितु स्वेच्छा से दिया था।''

''तो परिस्थिति की मांग है कि स्वेच्छा से अपने को वचनमुक्त कर लिया जाये।''

ज्यों-ज्यों उसके सम्बन्धियों को उसके माधवी से सम्बन्धों का ज्ञान हो रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, त्यों-त्यों वे उस पर दबाव डाल रहे थे कि वह उसको पत्नी का अधिकार दे।

अनन्ता तो उसको कई बार कह चुकी थी। आज सन्तोष के कहने पर वह इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने लगा था। रात सोने के समय अनन्ता ने फिर पूछा, "माधवी के विषय में आप किस धर्म का पालन कर रहे हैं?"

"मेरा उससे विवाह नहीं हुआ। जो सम्बन्धी जनों को धोखा देने के लिए पाप किया था, उसका फल भोग रहा हूं।"

"मैं इससे कुछ उलटा समझी थी। आपके कुछ सम्बन्धी माधवी पर बहुत अत्याचार कर रहे थे। दाताराम ने तो उसका सर्वनाश ही करना चाहा था। आपके बड़े भाई के अत्याचार का चिन्ह तो उसकी गाल पर मरणपर्यन्त बना रहेगा। आपने उनसे माधवी की रक्षा के लिए उसको अपनी पत्नी घोषित किया था। इस घोषणा का प्रभाव उस समय तो हुआ था, परन्तु मैं समझती हूं कि अब उसको आपके सम्बन्धियों से भय नहीं रहा। अब उसकी शारीरिक आवश्यकताएं उसकी शत्रु बनती जा रही हैं।

"आज उसने आपकी भाभी से यह कहा है कि वह अपनी ओर से अपनी निष्ठा पर स्थिर रहने का पूरा-पूरा यत्न कर रही है। वह नित्य परमात्मा से प्रार्थना करती है कि परमात्मा उसको शक्ति दे कि वह पथ-भ्रष्ट न हो जाये।

"इस पर भी श्रीमानजी! उसको पथ पर आरूढ़ रहने में सहायता का हाथ बड़ा दीजिए। जब तैरनेवाला दम दोड़ देगा, तब शोक होगा आपको भी और हम सबको भी।"

"परन्तु अनन्ता! उसने तो कभी मुझसे ऐसी मांग की नहीं। उसने ही मुझको वरा है। यह तो वह ही बता सकती है कि उसने केवल दूसरों से बचने के लिए ही मुझको वरा है अथवा कोई अन्य कारण भी है।"

अनन्ता चुप रही। वह समझ गई थी कि पति-पत्नी के अतिरिक्त प्राणी जितना कुछ कर सकते थे, कर दिया गया है। अब तो यह पत्नी का अपना काम है कि वह अपना सौभाग्य प्राप्त करे।

माधवी शारीरिक कष्ट भले ही भोग रही थी, अन्यथा वह एक पत्नी के सौभाग्य से अपने को वंचित नहीं मानती थी।

: 5 :

सतीश से विवाह को पांच वर्ष हो चुके थे और उसकी पत्नी ईड़ा उसको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार पुत्र दे चुकी थी। सतीश और मदनगोपाल तो अभी भी मित्र थे। मदनगोपाल भारत सरकार के प्रचार-विभाग में नौकर हो गया था। सतीश जर्नलिज्म का कार्य छोड़कर एक कम्पनी में चीफ मैनेजर का कार्य करने लगा था। सानन्द भी समाचार भेजने के स्थान लेख लिखने के काम में अधिक रुचि लेने लगा था।

एक बात सानन्द के मस्तिष्क में बैठती जाती थी कि संसार में सत्य-सत्य घटनाओं का ज्ञान प्रायः नहीं होता। इंग्लैण्ड की रानी एलिजाबेथ भारत में आईं। जनता ने उनका महान् स्वागत किया। यह स्वागत ख्रुश्चेव और चाऊ-एन-लाई के स्वागत से कहीं अधिक शानदार था।

एयरोड्रोम पर स्वागत के समय और जलूस में पंडित नेहरू के समाचार पत्रों में कई 'स्नेप्स' छपे। सानन्द इन 'स्नेप्स' की तुलना पंडितजी के उन 'स्नेप्स' के साथ करने लगा जो एक विख्यात एक्ट्रैस के स्वागत के समय लिये गये थे।

सानन्द ने अपनी पुरानी फाइल निकाली, तो उसको कुछ ऐसा समझ आया कि पंडित जी इंग्लैंड की रानी के भव्य स्वागत से अप्रसन्न हैं। संसद में भी जब डाक्टर राधाकृष्ण ने अपना स्वागत-भाषण किया था, पंडित जी के मुख पर विषाद के चिन्ह स्पष्ट थे।

उस दिन इंग्लैण्ड की रानी और नेहरू का संयुक्त वक्तव्य निकला था। उसमें दोनों देशों में मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का उल्लेख था। इस वक्तव्य को पढ़ते हुए सानन्द पंडितजी के पुराने चित्र निकालकर देखने लगा था। वह अभी चित्र देख ही रहा था और अपने मन पर इंग्लैंड की महारानी का भारत-भ्रमण की प्रतिक्रिया का विश्लेषण कर रहा था कि बाहर से किसी ने द्वार खटखटाया।

सानन्द ने बैठे-बैठे ही कह दिया, "आ जाइये।"

मदनगोपाल और सतीश भीतर आ गये। आते ही बोले, "ओह सानन्द! बीवियों की बगल में छुपकर बैठे पकड़े गये हो आखिर...।"

सानन्द ने आवाज पहचानी तो सब कुछ छोड़कर उठ बैठा और उनका स्वागत करने लगा—"आज तो अपना सौभाग्य मानना चाहिए कि तुम लोग यहां आ पहुंचे हो।"

और यह क्या कर रहे हो?" मदनगोपाल ने सामने मेज पर नेहरू के बीस-पच्चीस चित्र 'देखे' तो पूछ लिया।

"नेहरू जी के मन का अध्ययन कर रहा हूं। ये समाचार, वक्तव्यों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो खूब प्रदर्शन करते हैं, परन्तु वक्तव्यों से अधिक किसी नेता के मन के भावों को जानने के लिए ये एकाएक लिये फोटोग्राफ अधिक रहस्योद्घाटन करते प्रतीत होते हैं।

"यह देखो श्रीमति...पंडित जी को हार पहना रही है और पंडित जी कितने देदीप्यमान हो रहे है। फिर देखो पंडित जी लन्दन में अपनी एक परिचित स्त्री से मिल रहे हैं और यह देखो पाकिस्तान के प्रधान मंत्री श्री लियाकत अली से मिल रहे हैं। इनके अयूब से मिलने का भी एक चित्र है। यह आइजनहॉवर से एयरोड्रोम पर हाथ मिला रहे हैं।

"बहुत ही शिक्षाप्रद अध्ययन है पंडितजी के मन के भावों का। मैं इस पर एक लेख लिखना चाहता हूं। परन्तु कही छप सकेगा अथवा नहीं, कह नहीं सकता।"

"तुम यही लिखोगे न कि पंडित जी इंग्लैंड की रानी के यहां आने से प्रसन्न नहीं, परन्तु पंडित जी तथा रानी के संयुक्त वक्तव्य की उपस्थिति में कौन ध्यान देगा तुम्हारी बात पर?"

"यह तो देखेंगे। मैंने बहुत-सी बातें पढ़ने वालों के गले उतार दी हैं और इसको भी किसी ढंग से लिखना पड़ेगा। परन्तु आज आपके दर्शनों का सौभाग्य कैसे प्राप्त हुआ?"

"पिछले एक सप्ताह भर क्वीन एलिजाबेथ के कारण भारी काम रहा। इस कारण अब मुझको दो दिन की छुटटी मिल गई। कल सायंकाल ही सतीश से यह साजिश की थी कि तुमको अपनी पत्नियों के शयन गृह में आ पकड़ेंगे। परन्तु यहां आकर तो निराशा हुई है। पत्नियों का तो नामोनिशान नहीं और पति महोदय प्रधान मंत्री के मनोद्गारों का अध्ययन कर रहे हैं।"

सानन्द ने अपनी मेज पर रखी घंटी का बटन दबाया तो माधवी आ पहुंची। उसको आया देख दोनों मित्र खड़े हो गये और नमस्कार करने लगे। सानन्द ने कहा, "सतीश जी आज माधवी के हाथ की चाय पीने इस समय आये है।"

"सतीश भैया! ईड़ा को नहीं लाये?"

"वह चौथे लड़के को जन्म दे कल प्रसूतिगृह से बाहर आयेगी।"

"तो बहुत-बहुत बधाई हो!"

"बधाई तो कल वहां आकर देना। मैं उसका नामकरण भी कल ही कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा हूं।"

"पर भैया! पहले तीन के नाम नहीं रखे क्या? इस बार विशेष बुलाने का तात्पर्य क्या है?"

"सबको तो इस बार भी नहीं बुला रहा। केवल अनन्ता भाभी और माधवी भाभी को बुला रहा हूं।"

"पर क्यों? और इस चौथे बालक के समय ही क्यों?"

"इसलिए कि चार बहुत हैं और आप जैसी चतुर स्त्रियों से उसके सिर पर हाथ फेर आर्शीवाद देने के लिए कहूंगा जिससे आपकी भांति वह भी कुछ ईश्वर का नाम लिया करे।"

माधवी हंस पड़ी।

सानन्द ने कहा, "सतीश! बंगाली प्रथाओं के अनुसार तो चार बच्चे बहुत कम हैं और केवल लड़के-ही-लड़के हुए तो समाज के ऋण से उऋण नहीं हो सकोगे। एक-दो लड़कियां भी हो लेने दो। तत्पश्चात् प्रोफिलैक्टिक्स का प्रयोग आरम्भ कर देना।"

"यह तो व्यर्थ हैं। उनके कारण यह तो हुआ है कि पिछले बच्चे और इस बच्चे में डेढ़ वर्ष का अन्तर पड़ गया है। अन्यथा पहले तो अन्तर बारह महीने से अधिक होता ही नहीं था।"

"मित्र! ट्राई अगेन! ट्राई अगेन!!"

तीनों हंसने लगे। सानन्द ने कहा, "वास्तव में सरकार को सबसे अधिक भय ईड़ा जैसी औरतों से ही है। उनके लिए ही आपरेशन कराने पर सरकार ने इनाम घोषित कर रखा है।"

"परन्तु सानन्द! तुम कैसे कर रहे हो?"

"अपनी पत्नी को अनन्ता के पास भेज देना। वह सब बात समझा और सिखा देगी।"

"तो कोई योगासन करते हो?"

"कुछ-कुछ वैसा ही है।"

इस पर मदन ने कह दिया, "मेरी पत्नी ने तो तीन के बाद जनने बंद कर दिये हैं। मुझको तो उसका बहुत कृतज्ञ होना चाहिए।"

"यह पंजाबी लड़की है न! औसतन एक पंजाबी के घर तीन-चार बच्चे ही होते हैं और उत्तर प्रदेश की स्त्रियों के घर पांच-सात और बंगालिन के घर तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आठ से ग्यारह तक।"

"यह क्यों है?"

"इसमें चावल और मछली ही कारण प्रतीत होते है।"

सानन्द ने बात बदल दी। उसने कहा, "मैं अब समाचारपत्रों में लेख लिखने भी बन्द कर रहा हूं।"

"क्यों?" सतीश का प्रश्न था।

"मैंने जीवन का काम समाचार बटोरने से आरम्भ किया था। जब देखा कि समाचार वे छपते हैं, जिनके छापने में समाचारपत्रों के मालिकों की रुचि होती है, तो यही ज्ञान मिला कि वैसे समाचार ढूंढने पड़ेगे और न मिलने पर नकली बनाने पड़ेंगे। मुझको यह अपनी अन्तरात्मा के साथ अन्याय-सा प्रतीत हुआ।"

सानन्द ने आगे कहा, "समाचारपत्रों की रुचि दो कारणों से बनती है, एक तो पढ़नेवालों की रुचि और दूसरे देश की सरकार की रुचि से। समाचारपत्र में समाचार अथवा लेख की सच्चाई और उपयोगिता से छपने-छापने का कभी संबंध नहीं होता। इस कारण मैंने यह काम भी कम कर दिया है और एक दिन सर्वथा बन्द कर देने का विचार रखता हूं।"

"तो क्या करोगे? क्या तुम भी किसी दुकान की मैनेजरी करने का ही विचार रखते हो? सतीश को तो यह काम बहुत पसन्द आया है।" मदन गोपाल ने पूछ लिया।

"मैं तो इस काम में भी कर असफल सिद्ध हो चुका हूं। एक कारखाने में मैनेजिंग डायरेक्टर बना था। उसमें भी कुछ विशेष लाभ प्रतीत नहीं हुआ।"

"पैसा तो उसमें खूब मिलता होगा?"

"जानते हो आज भारत में सबसे अधिक लाभवाला कौन पेशा है?"

"वकील अथवा डाक्टर का।"

"नहीं मदन! सिनेमा एक्ट्रैस का। एक अभिनेत्री को एक-एक पिक्चर का दो-दो लाख और कभी-कभी तो उससे भी अधिक मिल जाता है।"

मदन गोपाल ने हंसते हुए पूछा, "तो अब यह काम ट्राई करने का विचार है?"

"भाई नहीं मैं एक्ट्रैस बन सकता ही नहीं। मैं रहूंगा तो लेखक ही। हां, समाचार लिखने, लेख लिखने बन्द कर अब उपन्यास लिखा करूंगा। कहीं कोई उपन्यास किसी स्कूल कॉलेज में लग गया तो पौं बारह हैं और कहीं अमेरिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वगैरा में चल गया तो धनवान हो जाऊंगा।''

''तो अब गप्पें हांकने का विचार है?''

''क्या किया जाये? इस युग में सत्य की तो महिमा ही नहीं। यदि मैं यह लिख दूं कि पंडित जी को आइजनहॉवर से मिलकर वह प्रसन्नता नहीं हुई जो ख्रुश्चेव अथवा चाऊ-एन-लाई से मिलकर हुई थी तो तुरन्त देश की आधी जनता कहने लगेगी कि मैं 'वार मांगर' हूं। और कहीं यह लिख दूं कि रूस भी उपनिवेशवादी है तो प्रायः पढ़नेवाले कहेंगे कि मैं अमेरिका से रुपया खाता हूं। मैंने एक बार लिख दिया था कि हमें अपने मित्र वे बनाने चाहिए जो प्रजातन्त्रवाद में विश्वास रखते हों। तो तुरन्त यह बात विख्यात होने लगी कि मैं अमैरिका का वेतनधारी लेखक हूं।

''मैं एक दिन दिल्ली के बड़े कारखानेदार के यहां चाय पर आमंत्रित था। वहां गया तो उनकी मेज पर ब्लिट्ज़ रखा था। घटनावश उसी पत्र में विज्ञ सम्पादक ने पूंजीपतियों को खरी-खरी सुनाई थीं। मैंने साधारण रूप में पूछ लिया, ''लालाजी! आप भी इस पत्र को पढ़ा करते हैं।''

लालाजी कहने लगे, ''कभी-कभी तो बहुत मजेदार बातें लिखता है यह?''

''जी!'' मैंने पत्र उठाकर पूंजीपतियों पर लिखे लेख को निकाल कर उसमें से दो पंक्तियां सुना दी। उनमें लिखा था, 'खून और पसीना एक करने वाले मजदूरों का रक्त चूस-चूसकर मोटे हुए पैसेवाले आज सरकार पर छा रहे हैं।

''साथ ही मैंने कह दिया, 'लिखने का ढंग क्या सुन्दर है!''

''इस पर लालाजी समझ गये कि मैं उन पर व्यंग कस रहा हूं, परन्तु बिना किसी प्रकार की लज्जा अनुभव किये उन्होंने चाय मंगवा ली। मैं यों ही बैठा उस पत्र को इधर-उधर से देख रहा था। मुझे यह जानकर विस्मय हुआ कि उसी पत्र में लालाजी के कारखाने का पूरे पृष्ठ का विज्ञापन था।

''चाय आई तो लालाजी सोशियलिज्म की बातें करने लगे। मैंने कह दिया, 'परन्तु लालाजी! इस युग में पैसे वालों के व्यवहार को देख कर ही तो समाजवाद की मांग बढ़ रही है।''

''परन्तु मैं तो इसके विरुद्ध नहीं हूं।' लालाजी का कहना था।

''आप क्या? कोई भी पैसे वाला सोशियलिज्म और कम्युनिज्म के विरुद्ध नहीं है। देखिये, मैं समझाता हूं। जब युवा व्यक्ति विषय-वासना में अति लीन होता है तो यही कहा जायेगा कि वह भला पुरुष बुढ़ापे के शीघ्र आने का आह्वान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रहा है। इस प्रकार जब कोई धनी अपने रुपये का दुरुपयोग करने लगे तो यही कहा जायेगा कि वह उनका ही आह्वान कर रहा है, जो उसका पैसा लाठी मार-मार छीन लेने वाले हैं।

'परन्तु,' लालाजी ने सतर्क हो पूछ लिया, 'दुरुपयोग का क्या अर्थ है?'

"मैंने उसी ब्लिट्ज में लालाजी की कम्पनी का विज्ञापन दिखाते हुए कहा, 'दुरुपयोग का इससे स्पष्ट उदाहरण मिल सकता है क्या?"

"लालाजी तो भौंचक्के हो मेरा मुख देखते रह गये। पश्चात् बोले, 'मैनेजर ने पब्लिसिटी के विचार से विज्ञापन दे दिया प्रतीत होता है।'

"मैं समझता हूं कि आपका मैंनेजर अवश्य कोई 'फैलो ट्रैवलर' है और उसने विज्ञापन के विचार से नहीं प्रत्युत अपने पंथ के विचार से यह छपवा दिया है। मैं समझता हूं कि कम-से कम दो हजार रुपया इसको दिलवा दिया होगा।

"अच्छा छोड़ो इस व्यर्थ की बात को। हम चाहते हैं कि आप एक 'ब्रोक्योर' हमारे कारखाने के विषय में लिख दें। बताइये, क्या लेंगे?'

"मैंने कह दिया, पांच हजार रुपया?"

"बहुत अधिक है।"

"इससे कम नहीं हो सकता। यह दस पृष्ठ की होगी और पांच सौ रुपया एक पृष्ठ का लूंगा। देखिये लालाजी! इस पत्र को आपने दो सहस्र दिया होगा। मैं इससे दस गुणा अधिक मैटर दूंगा। इससे तो कम दाम ही देना होगा।"

"लालाजी तैयार हो गये और कहने लगे, "परन्तु बहुत सुन्दर लिखा हुआ होना चाहिए।"

"अब बताओ सच्चाई का मूल्य है कहीं? मदनगोपाल! अब मैं उपन्यासों में गप्पें हांकूंगा। यह इतिहास नहीं होगा। वह वास्तविक पात्रों और घटनाओं से दूर होगा। इस पर भी उसमें सच्चाई होगी। नाम झूठे होंगे, स्थान असत्य होंगे, कदाचित् समय भी बदल दिया जायेगा। इस पर भी मानव-मन की यथार्थता उसके लिए एक अक्षर में परिपूर्ण होगी।"

सतीश हंस पड़ा और बोला, "हां, बात तो ठीक है। ईड़ा का नाम मत लिखना। न ही सतीश का नाम आये। परन्तु एक बंगाली युवक के अपने घर चौथी सन्तान देख, मनोद्गार तो सत्य ही लिख सकते हो।"

"हां, और यह भी लिखूंगा कि वही बंगाली बाबू अपनी पांचवीं सन्तान की हत्या करने के लिए अपने पत्नी पर बल डालने लगा, एबार्शन कराने के लिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री ने झूठ बोल दिया कि उसने दवाई खाई है। परन्तु वह दवाई खाने के लिए मन को तैयार नहीं कर सकी। फिर बच्चा हो गया तो उसने अपनी एक नौकरानी को कहा कि किसी धनी-मानी के द्वार के आगे कपड़े में लपेट फेंक आये। नौकरानी को दया आ गई और वह उसको घर ले गई। यह पांचवा बालक नौकरानी के घर में पलकर बड़ा बना। मेहनत-मजदूरी कर डाक्टर बन गया और फिर नगर में दया की मूर्ति और कार्य-कुशल धन्वतरि विख्यात होने लगा। उस डाक्टर के पहले चारों भाई अशिक्षित, प्रमादी पान चबा-चबाकर थूकने वाले और पचास-पचास रुपये की नौकरी करने वाले हो गये।"

"डाक्टर के पालने करने वाली नौकरानी ने अपने मरते समय बंगाली बाबू को रहस्य बताया तो वह उसी योग्य पुत्र की हत्या करने के प्रयास पर बहुत पश्चात्ताप करता-करता देह छोड़ गया।"

सतीश का मुख लज्जा से लाल हो गया। उसने केवल यह पूछा, "और यह सत्य होगा सानन्द?"

"हां क्यों नहीं हो सकता। टैगोर, सुभाष बोस और अनेकों अन्य महापुरुष अपने माता-पिता की पहली, दूसरी सन्तान न होकर छठी, सातवीं सन्तानें हुई हैं। मैं भी अपने माता-पिता की आठवीं सन्तान हूं। यह तो दुर्भाग्य की बात है कि आठ में से तीन ही जीवित रही हैं। उसमें भी एक हत्या के अपराध में आजन्म कैद भोग रही है, दूसरी परिवार का धन चुरा, देश को धोखा देकर विदेश भाग गई है और दक्षिणी अमेरिका में छुपकर बैठी है। और मैं हूं तीसरी। भला हो मेरी माताजी का कि उनको न तो कभी ऑपरेशन कराने का विचार आया, न ही 'प्रोफिलैक्टिक्स' का प्रयोग करने का। मैं अच्छा हूं अथवा बुरा, अपने बहन-भाई से तो अच्छा हूं।"

इस समय अनन्ता, माधवी और सन्तोष भी वहां आ गई। चाय भी आ गई। सतीश ने अनन्ता को देख कह दिया, "तो अनन्ता भाभी को करने को फिर काम दे दिया है?"

"अनन्ता ने हंसते हुए कहा, "सतीश भैया! कभी मुझको बेकार देखा है तुमने?"

"मुझको तो यही समझ आया कि सात-आठ वर्ष उपरान्त भाभी अब पुनः काम पर लग गई हैं। तनिक हमारी भी सुन लीजिये, पांच वर्ष में चार।"

सब हंसने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु माधवी!" मदनगोपाल ने पूछ लिया, "तुम क्यों बेकार बैठी हो?"

"देखिये, आपके लिए चाय बना रही हूं।" माधवी ने कह दिया।

"मैं तो उस कार्य के विषय में पूछ रहा हूं, जो अनन्ता भाभी की सानन्द ने अब दिया है।"

"ऐवरी बाडी इन इट्स टर्न।" सानन्द ने हंसते हुए कह दिया।

: 6 :

सानन्द अपने मन की सत्य बात ही कह रहा था। उसने सत्य ही एक उपन्यास लिखना शुरू कर दिया था। यह उसका उपन्यास लिखने का पहला प्रयास था। उसने लिखा सत्य, परन्तु सर्वथा काल्पनिक, प्राचीन युग का, परन्तु वर्तमान युग का रंग लिये हुए, यूनान, मिश्र और रोम की पृष्ठभूमि पर, परन्तु भारत, चीन और काश्मीर की परछाई के साथ। एन्थनी, ब्रूट्स, सीज़र और क्लियोपैट्रा के नामों पर, परन्तु ऐसा प्रतीत हुआ कि शेख, बख्शी, चाऊ-एन-लाई और नेहरूजी का चित्र-चित्रण है।

जब वह लिख चुका, उपन्यास टाइप हो गया तो वह अनन्ता को सुनाने लगा। अनन्ता के एक लड़का हुआ था। इस समय माधवी आशा से थी। वह सातवें मास में थी। दोनों सुन रही थीं और सानन्द सुना रहा था।

पांच-सौ पृष्ठ की पुस्तक सुनाने में कई दिन लगे। माधवी ने बहुत ही पसन्द की, परन्तु अनन्ता ने सिर हिला दिया।

"क्यों?" सानन्द ने पूछ लिया।

"यह इतनी रोचक है कि पाठक इसकी रोचकता में लीन पूर्ण पढ़ जायेगा, परन्तु आपके मन की बात कोई समझ नहीं सकेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की इतिहास पर रचनाएं

भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास
इतिहास में भारतीय परम्पराएं

श्री पी एन ओक की खोजपूर्ण रचनाएं

भारत का द्वितीय संग्राम "आज़ाद हिन्द फौज की कहानी"
भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें
क्या भारत का इतिहास भारत के शत्रुओं द्वारा लिखा गया है ?
विश्व इतिहास के विलुप्त अध्याय
ताजमहल मन्दिर भवन है
ताजमहल तेजोमहालय शिव मन्दिर है
भारत में मुस्लिम सुल्तान भाग (2 भाग)
आगरा का लाल किला हिन्दू भवन है
फतहपुर सीकरी हिन्दु नगर है
लखनऊ के इमामबाड़े हिन्दू भवन हैं
दिल्ली का लाल किला लाल कोट है
वैदिक विश्व गाप्ट का इतिहास (4 भाग)
कौन कहता है अकबर महान था ?
हास्यास्पद अंग्रेज़ी भाषा
क्रिश्चियनिटी कृष्ण नीति है
आरोग्य सौन्दर्य तथा दीर्घायु (व्यायाम व सूर्य नमस्कार)
ज्योतिष स्वयं शिक्षक - फल ज्योतिष
Lucknow's Imambaras are Hindu Building
Christianity is Chrisn-Nity
The Taj Mahal Is A Temple Palace
World Vedic Heritage 2 vols.
Some Missing Chapters Of World History
Some Blunders of Indian Historical Research
Who Says Akbar Was Great ?
Agra Red Fort is a Hindu Building

www.hindisahityasadan.com
2 वी डी चैम्बर्स, 10/54 डी वी गुप्ता रोड, करोल बाग पुलीस स्टेशन के पास, नई दिल्ली-05
E-mail : hindisahityasadan@gmail.com Tel : 23553624, 23551344, 09213527666
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त के सर्वाधिक चर्चित उपन्यास

स्वाधीनता के पथ पर	(स्वाधीनता आन्दोलन 1930 से 35 का काल)
पथिक	(स्वाधीनता आन्दोलन 1935 से 40 का काल)
स्वराज्यदान	(स्वाधीनता आन्दोलन 1940 से 46 का काल)
विश्वासघात	(स्वाधीनता आन्दोलन 1946 से 47 का काल)
देश की हत्या	(स्वाधीनता आन्दोलन 1947 से 48 का काल)
दासता के नए रुप	(1948 से 49 का काल)
सदावत्सले मातृभूमे	(1949-.... का काल

श्री गुरुदत्त की सामाजिक रचनाएं

अमानत
अनदेखे बन्धन
आवरण
अन्तरिक्ष में
आकाश पाताल
इक्कीस
कला
घर की बात
आशा निराशा
अपने पराए
कामना
गुंठन
चंचरीक
ज़िन्दगी
जीवन ज्वार
न्यायाधिकरण
नए विचार नई बातें
नगर परिमोहन
नास्तिक
पंकज
परिमल
परिवर्तन
पड़ोसी
प्रवंचना
प्रतिशोध
प्रारब्ध और पुरुषार्थ
प्रेयसी
बन्धन शादी का
भगवान भरोसे
भाग्य का सम्बल
भूल
भूत और भविष्य
ममता
मायाजाल
मैं न मानूँ
यह संसार
यात्रा का अंत
लालसा
विकार
विलोम गति
विकृत छाया
स्वार्थ
सब एक रंग
सभ्यता की ओर
स्नेह का मूल्य
संस्कार
सफलता के चरण
सर्वमंगला
साहित्यकार
सुमति

www.hindisahityasadan.com
2 बी डी चैम्बर्स,10/54 डी बी गुप्ता रोड,करोल बाग पुलीस स्टेशन के पास,नई दिल्ली-05
E-mail: indiabooks@rediffmail.com Tel : 23553624, 23551344, 09213527666

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की ऐतिहासिक पुस्तकें

परित्राणाय साधूनाम (महाभारत पर आधारित सम्पूर्ण उपन्यास)
वैशाली विलय (वहती रेता)
अस्ताचल की ओर (3 भाग)
खण्डहर बोल रहे हैं (3 भाग)
अमृत मन्थन (राम कथा-1)
परम्परा (राम कथा-2)
अग्नि परीक्षा (राम कथा-3)
जमाना बदल गया (4 भाग)
दो लहरों की टक्कर (2 भाग)
विक्रमादित्य साहसांक
युद्ध और शान्ति
कुमकुम
पत्रलता
दिग्विजय
वाम मार्ग
लुढ़कते पत्थर
गंगा की धारा
सागर तरंग
मेघवाहन
भैरवी चक्र
महाकाल
अवतरण

081
167951

श्री गुरुदत्त की राजनीतिक रचनाएं

वर्तमान दुर्व्यवस्था का समाधान ..... हिन्दू राष्ट्र
राष्ट्र राज्य और संविधान
हिन्दुत्व की यात्रा
धर्म संस्कृति और राज्य
मनुष्य और समाज
भारत में राष्ट्र
भगनाश
प्रजातंत्र अथवा वर्णाश्रम व्यवस्था
भारत गांधी नेहरु की छाया में
धर्म तथा समाजवाद
बुद्धि बनाम बहुमत
स्व अस्तित्व की रक्षा (2 भाग)
मैं हिन्दू हूँ (राजनैतिक संस्मरण)
भाव और भावना (संस्मरण)
भाग्यचक्र (संस्मरण)

Central Library
167951
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

www.hindisahityasadan.com
E-mail: indiabooks@rediffmail.com Tel : 23553624, 23551344, 09213527666

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुस्तकालय
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ग संख्या R089.9143 आगत संख्या 167951
GUR-B 167951
पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

भाव और भावना (संस्मरण)
भाग्यचक्र (संस्मरण)
www.hindisahityasadan.com
E-mail: indiabooks@rediffmail.com Tel : 23553624, 23551344, 09213527666
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की कुछ अन्य रचनाएँ

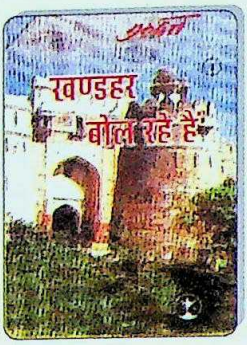

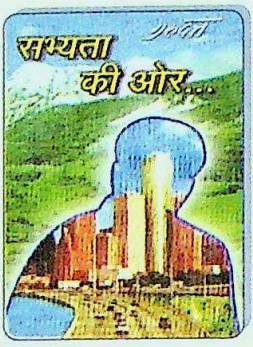

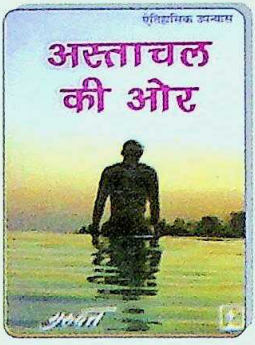

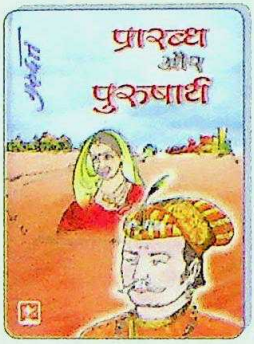

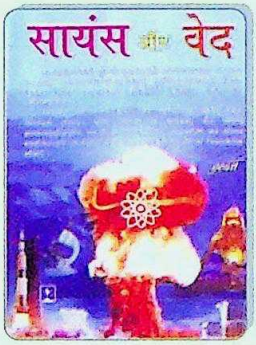

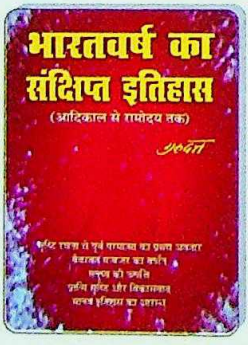

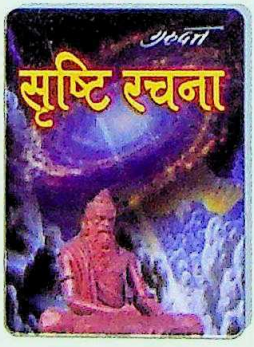

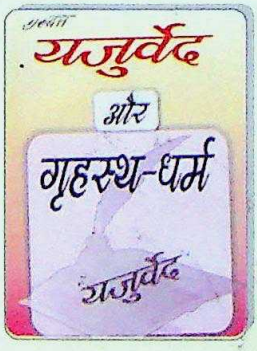

हिन्दी साहित्य सदन

2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देश बंधु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110 005. फोन : 23553624, 23551344
ई-मेल : indiabooks@rediffmail.com, hindisahityasadan@gmail.com

ISBN - 81-88388-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar